Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३७

37

श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग

संवत् २०१९

श्याम सुन्दर

1962-63

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म समय वैशाख शुदि १३ सं. २०२६ तारीख २२.२०.२६ ई २
बाद दुपहर समय ठीक से २२½ बजे
जन्म कुण्डली पं. ईश्वर सिंह जी
का बारहों भाव : ३६ - २५ पे. २२½ पल

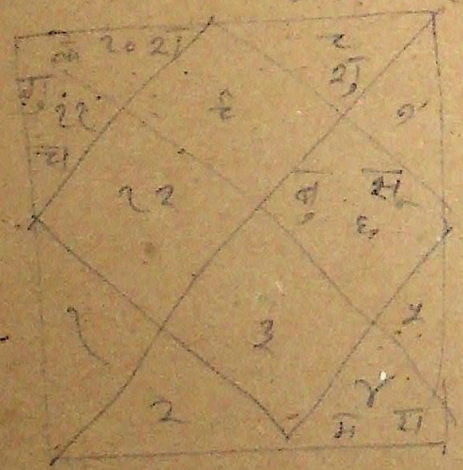

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२ ३०
६ - २२
४ - ३

२१. २.४०

२ - २०
४४ - ४६
४६ - ६
२४ - २ - ३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ ॐ ॥

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीड्यम् ।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीलक्ष्म्यै नमः

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पंवारकुलभूषण श्रीमद्राजर्षि
श्री १०५ दुर्गासिंह जी बहादुर,
C. I. E. सोलन ।

वृहज्ज्योतिष सम्मेलन के अध्यक्ष
पञ्चाङ्ग-प्रवर्त्तक

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्यौतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छो प्रकाश ॥

राजा गुरु

मन्त्री शुक्र

बघाटमहीमहेन्द्रधर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः सरक्षितम्

रूपपट्टीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयैः

—::०::—

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

BAGHAT

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम्

PANCHANG

श्री विक्रमार्कीय सं० २०१९, शाक १८८४, सन् १९६२-६३ ई०, जय हिन्द सं० १५ (१५ अगस्त से १६)

पञ्चाङ्गप्रवर्त्तकाः—स्व० गणकचक्रचूड़ामणि श्री गोविन्द सदाशिव 'आप्टे', श्री पं० केदारनाथ 'सिद्धान्तपञ्चानन' शिष्याः पं० श्री मुकुन्दवल्लभशर्माणो ज्यौतिषाचार्याः

पञ्चाङ्गकर्त्तारौ-प्रवर्त्तकतनयौः—श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्याचार्यः, श्री शक्तिधर शर्मा शास्त्री B.Sc. । संशोधकः—प्रियव्रत शर्मा शास्त्री साहित्याचार्यः, ज्यौतिषाचार्यः B. A.

बाँकीपुर पटना 卐 मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड जवाहरनगर दिल्ली-६ 卐 पो० बा० ७५ वाराणसी

वि० सं० २०२० का श्रीमार्तण्ड पंचाङ्ग हिन्दी, उर्दू व पञ्जाबी में एक साथ भाद्रपद में प्रकाशित हो जावेगा ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषयसूची

विषय	पृष्ठाङ्क
विषयसूची, ज्ञातव्य कुछ सांकेतिक शब्द एवं आवश्यक निर्देशन, ग्रहण	१–२
आकाशी कौंसिल का विचार, यंत्र-मंत्र	३–८
दैनिक लग्न सारिणियें (भारतीय स्टै. टा. में)	९–१४
दैनिक लग्न सारिणी से लग्न जानने की रीति—नवांश प्रारम्भ समाप्ति काल ज्ञान, स्थूल चन्द्रोदयास्त ज्ञान, प्रसूति लग्न विचार	१५
प्रसूति स्थान से पाकशाला, शय्याशिर पाद विचार बालारिष्ट बाण-मूकादियोग	१६–१७
भावस्थग्रहफल, स्त्रीजातक, बालकदन्तोत्पत्ति फल गण्डमूल नक्षत्र फलादि	१८–२०
बाल कष्टावली, नक्षत्र कष्टावली	२१–२४
रोगोत्पत्ती कूर्योग, रोग त्रिनाड़ी तिथि वार कष्टावली कालाङ्ग विभाग	२५
ग्रहानिष्टफलशान्त्यर्थ मन्त्रौषधादि शनिविचार गोचर फल ग्रहमैत्री ग्रहशान्त्यर्थ रत्न	२६–२७
ग्रहदृष्टयादिचक्र, पुत्रोत्पत्ति, विवाह एवं पिता की मृत्यु ज्ञान, जन्मेष्ट शुद्धि, भावी वर्षा विचार आदि वर्षा ज्ञान सारिणी अनावृष्टि शान्ति अतिवृष्टि शान्ति	२८–३०
नक्षत्र राशि ज्ञान चक्र, नक्षत्र विष घटी, जन्म कुण्डली से विशेष विचार	३१
द्वादश राशियों का मासिक फल	३२-३३
वर्षफल, श्रवणादि, सृष्टिक्रम, वर्षराजादि फल विचार	३४–३६

आशीराशंसना

जयन्ति श्री महाविद्यापादपङ्कजरेणवः।
मत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥ १ ॥
श्रीदुर्गासिंहवर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः।
सनातनीं धर्मधुरं वहन् भागवतोत्तमः ॥ २ ॥
बघाटेशः सोलनाख्य† राजधान्यामुदारधीः।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥ ३ ॥
निर्वेशात्तस्य राजर्षेरिदं पंचाङ्गमुत्तमम्।
प्रसूत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥ ४ ॥

† पुरानवपलान्यस्ति रेखातः सोलन पुरम् ।
पत्र शद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११)-मितांगुलपलप्रभा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी माँ

मात्रे भवार्तिघनपाशविमुक्तिदायै ।
श्रद्धावनम्रमनसां शरणागतानाम् ॥

विषय	पृष्ठाङ्क
२४ पक्ष तिथि वारादि एवं पाक्षिक भविष्य (सं० २०१९)	३७–६०
दैनिक ग्रह स्पष्ट एवं साम्पातिक काल	६१–७२
दैनिक चन्द्र स्पष्ट शर-क्रान्ति एवं चन्द्रोदयास्त	७३–७८
मंगलादि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर	७९–८१
सूर्य क्रान्ति, अक्षांश भेद से चन्द्रदर्शन एवं वृष्टि आदि	८२–८३
भद्रा-मुखपुच्छ घटी ज्ञान, वर्जितकाल, आवश्यक मुहूर्त	८४–८६
योनिनाड्यादिचक्र, मेलापक सारिणी	८७–८९
ग्रह मेलापक–मंगली आदि विचार एवं त्रिबल-शोधन	९०–९१
विवाह मास–दस दोष एवं लग्न शुद्धिविचार	९२
लग्न भङ्गयोग गोधूलि, वधूप्रवेश, द्विरागमन विचार	९३
सम्मुख दक्षिण शुक्र का निषेध एवं अन्य मुहूर्त विचार	९४
गृहादि निर्माण में आय विचार, नूतन गृह प्रवेश	९५
खात चक्र, कूपतडाग चक्र, हल प्रवहण, दिवशूलादि	९६–९७
योगिनीवास, चन्द्रवास, चतुर्घटिका मुहूर्तादि	९८
पल्लीपतन–अङ्ग स्फुरण–उत्पात फल	९९–१००
स्वप्नफल, विंशोत्तरीदशाचक्र, योगिनी चक्र एवं वर्ष कुण्डली में ग्रहों के फल	१०१–१०२
केरल प्रश्नविचार, रोगोत्पत्ति, सन्तानप्रतिबन्धादि विचार	१०३
सुगम प्रश्न विचार, तेजी मन्दी ध्रुवा	१०४–१०६
[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ष प्रवेश सारिणी	....	....	[illegible]
अक्षांश ०° से ६०° तक के सूर्योदयास्त	....	....	११०–११७
अक्षांशादि सारिणी	....	....	११८–११९
लघुरिक्थ सारिणी	....	....	१२०
साम्पातिक काल की सारिणियें	....	....	१२१–१२५
सूक्ष्म दशम लग्न स्पष्ट करने की सरल विधि	....	....	१२६
लग्न चन्द्रोदयास्त परिवर्तन विधि एवं विश्व के किसी भाग के सूर्योदयास्त निकालना लग्न चन्द्रोदयास्त परिवर्तन सारिणी	....	....	१२७–१३०
ग्रहों के नक्षत्र राशि चार काल	....	....	१३१
विवाहादि मुहूर्त	....	....	१३२–१३४

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.=अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र), अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.=अंग्रेजी (तारीख—मास), अंश।
आव=आवश्यकता में।
उ.=उपरान्त, उदित, उत्तर।
क.=करण, कर्क, कला।
कृ.=कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)।
क्रां.सा.=क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.=गोधूलि (लग्न)।
घ.=घड़ी।
घं.=घण्टा।
चौ.=चौर (बाण)।
ति.=तिथि।
द.=दक्षिण।
दा.=दान-पूजन।
दि.=दिन।
दि. मा.=दिनमान।
न.=नक्षत्र।
नि.=निम्बार्कों के लिए।
नृ.=नृप (बाण)।
प.=पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प.=पर्व।
प्र.=प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा.=प्रारम्भ।
भ.=भद्रा, भरिणी (नक्षत्र)।
भा.=भारतीय, भाद्रपद।
मा.=मार्गी।
मि.=मिनट, मिथुन।
मृ.=मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.=यावत् (=तक)।
रा.=राष्ट्रीय (भारतसरकार द्वारा संचालित तारीख-मास), रात्रि, राशि, राहु।
रो.=रोग (बाण), रोहिणी
ल.=लग्न।
व.=वक्री, वक्रगति से, वणिक्-वज्र-वरीयान् (योग), वरुण (ग्रह)।
वा.=वार।
वि.=विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि.मु.=विवाह मुहूर्त।
वै.=वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र.=व्रत,
व्र.स.=व्रत सब के लिए।
शु.=शुक्ल पक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ-शुक्ल (योग ३)।
श.=समाप्त।
सं.=संक्रान्ति (सौर), संवत्।
सा.का.=साम्पातिक काल।
सा.=सायन।
स्मा.=स्मार्तों के लिए।

नोटः—जिस सांकेतिक शब्द को अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया गया है, उसका विशेष स्थल पर उपयुक्त अर्थ प्रसंगवश जाना जा सकता है।

इस पञ्चाङ्ग के प्रयोग के लिए आवश्यक निर्देश

(१) इस पंचांग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ७६°।३०' एवं उत्तर अक्षांश ३१° के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहां सर्वत्र निरयण पद्धति को अपनाया गया है, जहां सायन गणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक मान हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सम्मुख दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ५ चन्द्रवार के आगे २६।४८ लिखा है। इसका अभिप्राय है—यह तिथि (पंचमी) चन्द्रवार को सूर्योदय के २६ घड़ी ४८ पल बाद समाप्त होगी और उसी समय षष्ठी प्रारम्भ हो जाएगी।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) "चन्द्र संचार" वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ५ चन्द्रवार (सं. २०१९) को चन्द्र सञ्चार' में मिथुन ४५।४३ लिखा है। इसका अभिप्राय है कि चन्द्रमा इस दिन सूर्योदय के ४५ घड़ी ४३ पल बाद मिथुन में प्रविष्ट होगा और उससे पूर्व वह वृष में ही था।

(६) चन्द्र संचार से आगेवाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जो कि भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। ये काल सूर्यकेन्द्र के उदयास्त को बतलाते हैं।

(७) सूर्योदयास्त वाले कालमों के आगे अन्तिम कालम में दिया गया दैनिक स्पष्ट सूर्य सूर्योदयकालिक एवं सूर्यसिद्धान्तीय है। पंक्तियों वाले दृश्य सूर्य से इसका कुछ अन्तर रहता है।

(८) लस्टर में पंचक एवं भद्रा की समाप्ति तथा प्रारम्भ, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-पादप्रवेश आदि के सभी काल घटी पलों में हैं, जो सूर्योदय के बाद का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ४ रविवार को लस्टर में रेव० में बुध १७।१२ लिखा है। इसका अभिप्राय है—इस दिन सूर्योदय के १७ घड़ी १२ पल बाद बुध रेवती में प्रविष्ट होगा।

(९) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य स्पष्ट हैं।

(१०) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्ट ग्रहों के नीचे दैनिक गति, उससे नीचे मार्गी या वक्री, उससे नीचे उदित या अस्त, फिर चरणसहित नक्षत्र (जिसमें ग्रह है) और फिर सबसे नीचे ग्रह जिस नाड़ी में है उसका निर्देश किया गया है।

(११) पंक्तियों की सभी कुण्डलिएं सूर्योदयकालिक हैं।

(१२) दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया साम्पातिक काल उक्त रेखांश एवं अक्षांश-सम्बन्धी स्थल के स्थानीय मध्यमकाल ० घं. ० मि. का है।

—प्रकाशकीय—

"श्री मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग" ३५वें वर्ष में प्रविष्ट हो रहा है। इस व्यतीत कालावधि में इसने जो प्रगति की है वह आपके सम्मुख ही है। अपनी यथार्थ भविष्य वाणियों शुद्ध परमोपयोगी अद्वितीय गणित तथा अन्य बहुत से नवीन विषयों के कारण यह हिन्दी पञ्चाङ्गों में प्रमुख स्थान रखता है। चौंका देने वाली भविष्य वाणिएं इसकी अपनी एक विशिष्टता है। सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट ग्रह-ग्रहों की क्रान्ति एवं शर ६-६ घन्टे के अन्तर पर स्पष्ट सूक्ष्म चन्द्र, भारत के विभिन्न स्थलों पर चन्द्र दर्शन की तिथि का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

और भी महत्व बढ़ जाता है। यह अपने पाठक वर्ग को प्रति वर्ष सरलतम शैली द्वारा नए-नए विषयों से अवगत करवाता आ रहा है जिससे उपयोगिता के साथ २ इसकी लोकप्रियता भी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है।

इस पञ्चाङ्ग के प्रति पाठकवृन्द के चिरागत असीम अनुराग से प्रोत्साहित सम्पादक वर्ग इसे भविष्य में और भी उपयोगी बनाने के पूर्ण प्रयत्न में हैं। ज्योतिष जगत में नवयुग का प्रवर्तक यह पञ्चाङ्ग भारत विश्रुत विद्वान् सम्पादकों के अथक परिश्रम से यथापूर्व सदैव प्रगति की ओर बढ़ता हुआ "यथा नाम तथा गुणः" सिद्ध होगा—यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

प्रकाशक—सुन्दर लाल जैन

शुभ विवाह

श्री जगन्माता की असीम अनुकम्पा से मेरी सुपुत्री सौ० सुमति देवी प्रभाकर का पाणिग्रहण संस्कार सानेहवाल (लुधियाना) निवासी मान्यवर श्री पं० लछमन दास जी पाठक महोदय के सुपुत्र चि० बाबू श्री बलवन्तराय B. Sc. B. Ed. से गत २-१२-६० को यथा विधि स्नेह सौजन्य के साथ सुसम्पन्न हुआ

इस अवसर पर भारत के श्रद्धेय श्री राष्ट्रपति, पंजाब के गवर्नर श्री गाडगिल महोदय, पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री प्रताप सिंह जी कैरों तथा पंजाब विधान सभा के स्पीकर श्री गुरुदयाल सिंह जी ढिल्लों आदि अनेक सज्जनों ने पत्रों द्वारा वर कन्या को आशीर्वाद के साथ शुभ कामनाएँ भेजी।

विशेष कर सोलन (हि० प्र०) से धर्म मार्तण्ड श्री १०५ श्री बघाट नरेश जी ने परम कृपा पूर्वक इस उत्सव में कुराली स्वयं पधार कर वर कन्या को शुभ आशीर्वाद से कृतकृत्य किया। एतदर्थ मैं श्री बघाट नरेश एवं न सभी महानुभावों का हृदय से आभारी हूं।

विनीत :—
मुकुन्द वल्लभ

महापर्व कुम्भ हरिद्वार

"कुंभ राशि गते जीवे यद्दिने मेषगे रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम्॥"
अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानिच।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्॥"

इस वर्ष मे संक्रान्ति के दिन (१३ अप्रैल शुक्रवार सन् १९६२) को बृहस्पति के कुंभ राशि में होने के कारण हरिद्वार में कुंभमहापर्व का योग बना है, सो धर्मप्राण हिन्दु जनता को चाहिये कि हरिद्वार पहुंच कर इस महापर्व में स्नान दानादि द्वारा पुण्योपार्जन करते हुए बड़े २ संत महात्मा एवं विद्वानों के दर्शन तथा सदुपदेशों द्वारा अपनी आत्मा को पवित्र करें। इस पर्व में तिल वा तण्डुल पूरित कुंभ वा लोटे तथा यथा शक्ति अन्न, सुवर्ण, वस्त्रादि के दान करने का विशेष फल है।

सन्दिग्ध व्रतोत्सवों का निर्णय

दीपावली:—इस वर्ष दीपावली लक्ष्मीपूजन चतुर्दशी शनिवार (२७ अक्टूबर) को [illegible] है, क्योंकि 'जयसिंह कल्पद्रुम' आदि धर्मशास्त्र के प्रामाणिक ग्रन्थों में लिखा अर्धरात्रि व्यापिनी (दोनों) मिले तो वह मुख्य है उसी दिन दीपावली मनानी चाहिए। यदि पहले दिन अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या हो परन्तु प्रदोष व्यापिनी न हो तो दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी अमावस्या में दीपावली मनानी चाहिए, "तस्य कर्मकालत्वोक्तेरिति वचनात्।" यदि दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी अमावस्या न हो तो अर्धरात्रि व्यापिनी ही ग्राह्य है ("उभय दिने प्रदोष व्याप्त्यावेऽर्धरात्र व्यापिनी ग्राह्या तस्या लक्ष्म्यागमन कालत्वाभिधानात्।") इस वर्ष पूर्ण प्रदोष व्यापिनी एवं अर्धरात्रव्यापिनी अमावस्या शनिवार को ही है अतः इसी दिन दीपावली, लक्ष्मी पूजा करनी चाहिए। दूसरे दिन रविवार को अमावस्या प्रदोष में कुछ ही मिनट रहेगी अतः उस दिन दीपावली मनाना अशास्त्रीय होने के कारण निष्फल होगा।

होलिका दहन:—फाल्गुन शुक्ल १४ शनिवार (९ फरवरी) को प्रदोष में भद्रा है अतः भद्रा के पुच्छ में ही होलिका दहन करना चाहिए। भद्रा का पुच्छ इसदिन सायं ७ बजकर १३ मिनट से ८ बजकर २५ मिनट तक है।

ग्रहण निर्णय (सं २०१९)

इस वर्ष भूमण्डल पर केवल दो सूर्य ग्रहण ही होंगें, और वे दोनों भारतवर्ष में कहीं भी नहीं दिखाई देंगे। इन दोनों ग्रहणों का विवरण इस प्रकार है—

(१) **सूर्य ग्रहण** (३१ जुलाई १९६२):—यह ग्रहण अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका के अन्तिम दक्षिणी भाग, दक्षिणी अमेरिका (दक्षिण भाग को छोड़ कर), एवं अरब सागर में दृष्टिगत होगा। इसे अफ्रीका एवं दक्षिणी अमेरिका में कङ्कण के रूप में देखा जा सकेगा।

(२) **सूर्यग्रहण** (२५ जन. १९६३):—यह ग्रहण पेसिफिक समुद्र, दक्षिणी अमेरिका, अटलान्टिक समुद्र, अफ्रीका एवं मेडागास्कर में दिखाई देगा। भा० स्टैं० टा० के अनुसार यह ग्रहण भूमण्डल पर १६ बजकर २७ मि० पर प्रारम्भ होकर २१ बज कर ४९ मि० पर समाप्त होगा। इस ग्रहण को भी दक्षिणी अमेरिका एवं अफ्रीका के दक्षिण प्रान्त तथा मेडागास्कर में कङ्कण के रूप में देखा जा सकेगा।

नोट:—इन दो सूर्यग्रहणों के अतिरिक्त चन्द्रमा के तीन उपच्छाया सम्बन्धी (Penumbral) ग्रहण भी होंगे। उपच्छाया वस्तुतः ग्रहण नहीं माना जाता, क्योंकि उपच्छाया में चन्द्रमा पृथ्वी की वास्तव छाया में प्रविष्ट न होकर उसकी उपच्छाया में प्रविष्ट होता है जिससे चन्द्र बिम्ब किञ्चन्मात्र धूमिल सा हो जाता है। ध्यान रहे—उपछाया में दान, स्नान पूजा आदि का कोई माहात्म्य नहीं है और न ही इसका सूतक ही माना जाता है। ता० १७-७-६२, ता० १५-८-६२ एवं ता० १०-१-६३ को चन्द्रमा भूमि की उपच्छाया में प्रविष्ट होगा।

भूल सुधार

(१)—पृष्ठ ४० पर ज्येष्ठ कृष्ण ३० की पंक्ति में प्रूफ संशोधक के दृष्टि दोष से गुरु शुक्र के राश्यादि गलत छप गए हैं। यहां स्पष्ट गुरु १०।१८।०।६ एवं स्पष्ट शुक्र २।१९।३२।२५ शुद्ध हैं।

(२)—पृष्ठ ४४ पर पंक्ति स्थ ग्रहों के ऊपर श्रावण कृ० ८ के स्थान पर श्रावण कृ० ३० एवं श्रावण कृ० ३० के स्थान पर श्राव० कृ० ८ गलती से छप गया है इसे ठीक करलें। [illegible] वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभु

आकाशी कौंसिल का विचार सं० २०१९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आकाशी कौंसिल का विचार सं० १९९२

स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न

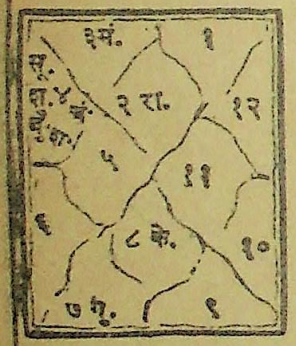

ता. १५ अगस्त शुक्रवार
सन् १९४७ इष्ट ४५।२०

विमृश्य ग्रहसंस्थिति मुनिवचः
सिद्धान्तयित्वा स्फुटम् ।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरा-
मालोच्य सत्संहिताः ॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये
हृद्भाविनी या स्थितिः ।
सा शम्भोः कृपया यथामति
मया प्रागेव निर्णीयते ॥

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुण्डली

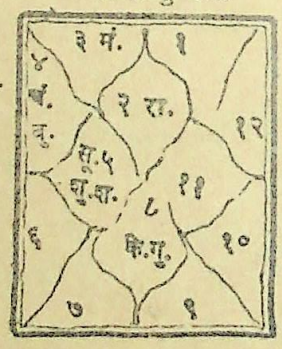

ग्रह भावस्पष्टानुसार यहां सू. शु. गु. श. चल गये हैं

स्वतन्त्र भारत के १६ वें वर्ष-प्रवेश की कुण्डली

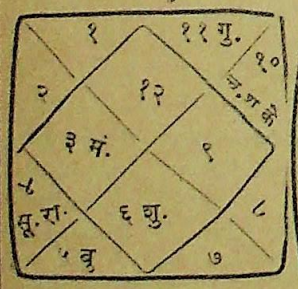

मुस्लिम राष्ट्रों के नववर्ष प्रवेश की कुण्डली

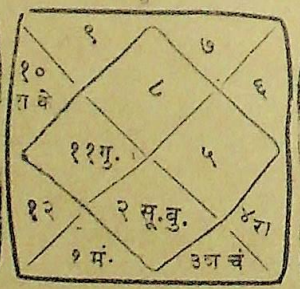

यूरोपीय राष्ट्रों के नववर्ष-प्रवेश की कुण्डली

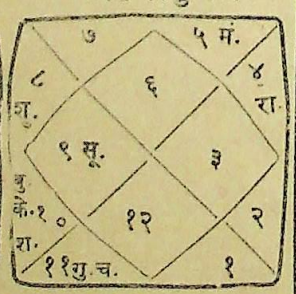

पाठको ! जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासन-मण्डलमें प्रधानमन्त्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत-प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है, और उन अधिकारप्राप्त व्यक्तियों की योग्यता अयोग्यता सच्चरित्रता दुश्चरित्रता निःस्वार्थता एवं स्वार्थपरायणतादि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासनयन्त्र पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहोंकी परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुतशक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशी कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अघटित घटनाएँ घटित होती हैं। वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती है।

वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभु कृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजमन्त्री आदि पदाधिकारियों तथा आर्ष विचारपूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों की राशि का आधिपत्य तथा सूक्ष्म रीत्या उस देश का लग्न कितने अंश में है, यह भी भली प्रकार जान करके विश्व के राष्ट्रीय फल सहित यह आकाशी-कौंसिल ग्रहपरिषद् का विचार लिखा गया है। और जहां जहां वर्ष में क्रूर मन्द गति ग्रहों की युति हुई है उनके दक्षिणोत्तर शर आदि से जो जो फल आचार्य वराह मिहिरादकों एवं श्री जैनाचार्यों ने लिखा है, उनको भी यथामति स्फुट रीत्या समझकर इसी आकाशी-कौंसिल में श्रद्धापूर्वक अन्तर्हित कर दिया है—

इस वर्ष की ग्रह स्थिति धर्म शून्य राष्ट्रों के लिए संकट का कारण बनती दीख पड़ती है। अन्नाभाव, विधर्मी, विदेशियों के आक्रमण, गृह युद्ध तथा नए-नए रोगों का फलना आदि अन्य विपत्तियों से विश्व की स्थिति संकट मयी बन सकती है, इधर हमारे धर्मप्राण भारत में हो रहे अखण्ड कीर्तनों, असंख्य लघुयज्ञों तथा विश्व शान्ति यज्ञों के कारण ग्रह स्थिति जन्य यह कुफल प्रायः नष्ट हो जायेगा। तथा हम भारतीयों पर प्रभु का मंगल मय वरदहस्त अवश्य रहेगा। विश्व के इस आशङ्कित भय सकुल वातावरण को शान्त करने के हेतु भारतीयों का और भी कर्तव्य हो जाता है कि वे वैदिक विधान से और विशेष यज्ञादि-अनुष्ठान कर। समस्त बाधाओं के निवारण तथा अभीष्ट प्राप्ति के लिए यज्ञों का परम महत्व शास्त्र प्रतिपादित है—**"सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रस विष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्ट-काम धुक् ॥"** अपनी उपासना के विनिमय में देवों से निःस्वार्थ विश्वशान्ति की याचना निष्फल नहीं हो सकती। यदि हम तपः साध्य अनुष्ठानों से देवों को सन्तुष्ट करदें तो इसके विनिमय में वे भी हमारे कल्याणकारी अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में पूर्ण सहायक होंगे।—**"देवान् भावयता तेन ते देवा भावयन्तुवः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परम वाप्स्यथ ॥"**

विश्व भविष्य

इस वर्ष की आकाशी कौंसिल के प्रभाव से विश्व के अनेक देशों के शासकों में परस्पर मनोमालिन्य उत्पन्न होगा, जो अच्छा वातावरण बनने में बाधक सिद्ध होगा। विश्व ३भागों में परिपक्व रूप से बट जावेगा। अनहोनी घटनाएँ घटेंगी। रक्तपात, नर-संहार होगा। ग्रह स्थिति भी "प्लावयंति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा" करेगी। गुरु के वक्री होने के बाद विश्व के संपूर्ण मानवों के हृदय में महान् परिवर्तन होंगे। कई प्रदेशों के शासक लोग पतन के गढ्ढे में गिरकर अपयश के भागी बनेंगे।

इस वर्ष एक बार ऐसी स्थिति बनेगी कि संयुक्त राष्ट्र सङ्घ भी निर्बलता का अनुभव करेगा। राष्ट्रों के झगड़ों से विश्व क्षुब्ध हो उठेगा। संसार के कई भागों पर भारी अचिन्तित विपत्तियें आने से विश्व में विकट स्थिति उत्पन्न होगी। कहीं सैनिक शासन कहीं राष्ट्रपति शासन लागू करना पड़े। विश्व में कहीं शासकों के विरुद्ध विद्रोह भी होंगे। मार्गशीर्ष तक कहीं विशिष्ठ व्यक्तियों व बड़े शासकों को दुष्टकृत भय के योग भी बनते हैं सावधान रहना चाहिए। यहां सभी छोटे बड़े राष्ट्रों की राजनीति में उथल पुथल होगी। महत्व के परिवर्तन होंगे।

विश्व की जनता को सन् १९६२ से सन् १९६५ ईस्वी तक का समय चिरकाल तक स्मरण रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

भारत सरकार

इस वर्ष स्वतन्त्र भारत की वर्ष कुण्डली को देखते हुए ज्ञात होता है कि विश्व में भारत के प्रधान महापुरुषों का मान तो उत्तरोत्तर बढ़ेगा परन्तु इधर भारत की अपनी राजकीय स्थिति नाजुक व नैतिक संकट की परिस्थिति में से गुजरेगी। फिर भी भारत सरकार देश की आन्तरिक व बाह्य अनेक समस्याओं व कष्टों का सामना बड़ी हिम्मत से करेगी, और नेपाल, भूटान, सिक्किम से नई नीति बर्तने को बाध्य होगी। किसी सत्तारूढ़ देश से संबंध विच्छेद करने तक की नौबत पहुँचेगी। अतः यहाँ की राजनीति में महत्व के परिवर्तन होंगे। धार्मिक क्षेत्रों में भी हलचल होगी किसी को अपना पद भी त्याग करना पड़ेगा।

वर्ष में धनेश भौम नीचे की ओर जा रहा है और गु बारहवें में है अतः इस वर्ष आर्थिक स्थिति अच्छी होने के योग नहीं हैं, संचालित योजनाओं में बाधा होगी उनकी पूर्णता में नियत समय के अतिरिक्त और समय भी लगेगा। राज्येश गुरु बारहवें शनि की राशि में है जो किसी बड़े शासक की इच्छा के विरुद्ध कार्य होने से उनकी आत्मा में महाखेद उत्पन्न करेंगे। मंगल शुक्र के प्रभाव से सरकार को अपने किसी देश तथा सीमा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में, संभव है कि विशेष सैनिक संघर्ष भी करना पड़े। कर्क, मकर की संक्रान्तियें एक बार की हैं तथा बुध गुरु का दृष्टि सम्बन्ध भी है अतः उच्च पदाधिकारी शासकों को यह वर्ष मृत्यु वा महाभय देने वाला है; अतः सावधान।

आश्विन के बाद सिक्के में कुछ रद्दोबदल हो तथा कहीं मंत्रिमंडल में फेरफार एवं कोई नया मंत्री बने।

कांग्रेस कुण्डली

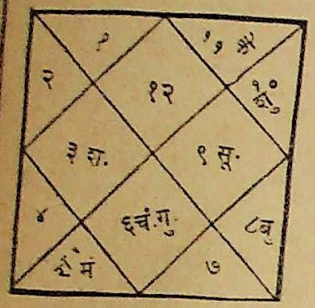

कांग्रेस की जन्म कुण्डली देखते हुए ज्ञात होता है कि इस वर्ष वह अपनी राज्य सत्ता में से कुछ खो बैठेगी। अन्य विरोधी पक्ष पहिले से उच्च स्तर पर रहेंगे।

आषाढ़ शुक्ल या आश्विन शुक्ल के बाद कुंभ के वक्री गुरु का फल राजा प्रजा के लिए शुभ है। तद्यथा—

"कुंभ राशि गतो जीवः करोति यदि वक्रताम्।
आरोग्यं सर्व स्वास्थ्यं च राज्ञां श्रीर्जय सम्भवः॥"

अर्थात्—प्रजा में आरोग्य, शान्ति तथा शासकों को जय और लक्ष्मी की प्राप्ति हो।

ता० १८-१२-१८८५ ई० बम्बई

—विश्व के अन्य राष्ट्र—

रूस—इस वर्ष स देश के लिए शनि अशुभ है। जो किसी अन्य राष्ट्र से शत्रुता की वृद्धि व भयोत्पादक है। किसी उच्च पदाधिकारी की मृत्यु वा मृत्यु तुल्य परिस्थिति हो, तथा किसी को मजबूरन अपना पद त्याग करना पड़े।

अमेरिका—गर्मी के खनिज पदार्थों के लिये खदानों में कार्य करने वालों में असंतोष

ब्रिटेन—यहाँ के राजपरिवार के लिये यह वर्ष अशुभ है। जनता में भी भय चिन्ता व्यापे।

पाकिस्तान—पड़ोसी देशों से बिगाड़, प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट और हैरानी कहीं सैनिक संघर्ष हो। उत्तर से भय व्यापे। समु के किनारे के स्थानों में भारी जन धन की हानि से गंभीर स्थिति उत्पन्न हो।

चीन—इस वर्ष कुंभ का गुरु कर्क का राहु चीन के शासक मण्डल में परिवर्तन करेगा। जनता में शासकों के विरुद्ध विष फैलेगा। भूख व उत्पातों के कारण जनता मरेगी। यहाँ की सरकार एशिया में अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिये उचित अनुचित सभी प्रयत्न करेगी।

नेपाल—इस देश तथा एतद्देशीय नरेश के लिये यह वर्ष संकट का सूचक है। विद्रोह, उत्पात भय।

काश्मीर—शनि-राहु का भ्रमण कहीं तोड़ फोड़ से कहीं अग्नि प्रकोप से व आन्तरिक विद्रोह से भय देता है। सरकार को यहाँ वर्ष के पूर्वार्द्ध में व्यय विशेष करना पड़ेगा।

इटली आदि—उत्पात, हिमपात तूफानों से हानि होगी। आस्ट्रेलिया में साम्यवाद बढ़ेगा। बौद्ध, यहूदी उन्नति करेंगे।

राष्ट्रीय भविष्य अवलोकनार्थ चक्र

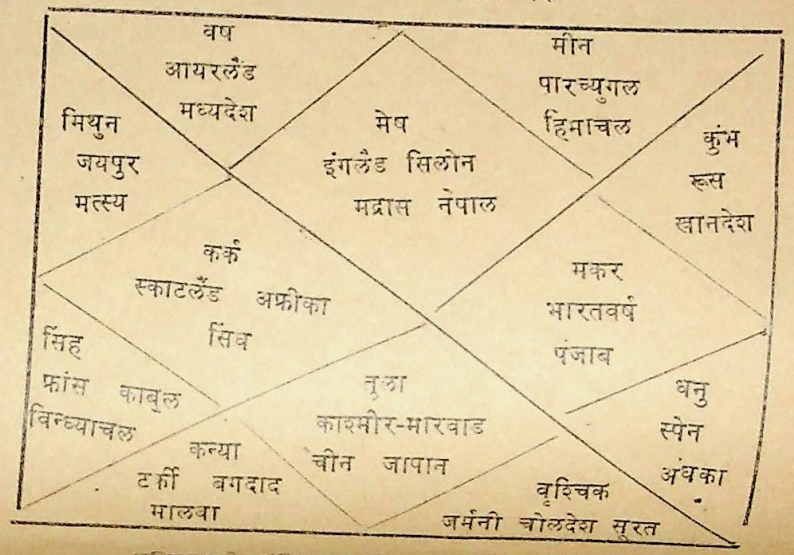

—व्यापारिक जगत्—

इस वर्ष व्यापारेश बुध तथा शनि शुक्र के भ्रमण को देखते हुए ज्ञात होता है कि ... करने वाले मिलों के मालिकों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। पहिले की अपेक्षा ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस वर्ष व्यापारेश बुध तथा शनि गुरु के भ्रमण को देखते हुए ज्ञात होता है कि वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही व्यापारिक क्षेत्र में भारी उथल पुथल होगी। सरकार की ओर से नये-नये कानून एवं नियंत्रण लगेंगे।

अन्न—इस वर्ष शनि केतु की स्थिति सभी अन्नों के भावों में भारी तेजी उत्पन्न करेगी। वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही कई प्रदेशों में भूखी गरीब जनता घरबार छोड़ देशान्तर में भ्रमण करेगी। कहीं "त्यजतिपुत्रं च जननी॥" वाली कहावत चरितार्थ होती देखी जावेगी।

श्रावण से माघ तक अकाल से कष्ट हो। प्राकृतिक प्रतिकूलता के कारण अन्नोत्पादन में भारी कमी रहेगी। कर्क के राहु, चावलों की खेती में भी प्रायः हानि करेंगे। ज्वार, भारी तेज होगी।

अलसी सरसों मूंगफली—इस वर्ष अलसी के संग्रह कर्ता अच्छा लाभ उठावेंगे। क्योंकि तेजी के योग हैं। ९ जुलाई के बाद एरंड, मूंगफली, अलसी, सरसों, बिनौला तेज रहेगा। १५ मार्च तथा ६ अक्टूबर के करीब खल, तैल, तिलहन में एक मंदी का झटका आवेगा।

२१ जून से १४ जुलाई के अन्दर खल में ॥।) सरसों मूंगफली में लगभग ३) की तेजी आवेगी। २३ अगस्त से २७ सितम्बर तक खल में १॥।) मूंगफली में ७) अलसी में ४) और तेल में २॥।) के करीब तेजी आवेगी। मार्गशीर्ष मास में तिल संग्रह करने से आगे अच्छा लाभ मिलेगा।

रुई—इस वर्ष मार्गशीर्ष के बाद रुई के व्यापारी हमारे प्रदर्शित मार्ग से काम करेंगे तो भारी लाभ में रहेंगे। बिना विचारे ठीक समय पर काम न करने से लाभ के स्थान में हानि होगी।

१२ जून से २२ जून तक रुई में मन्दी होवेगी। १९ जुलाई से २ अगस्त के अन्दर ई के वायदे में मंदी ५० टके आवेगी। २९ सितम्बर से करीब १४ दिन तक रुई में तेजी चलेगी। कार्तिक शुदी तथा पौष शुदी में रुई की मन्दी का ध्यान रखकर काम करें तो लाभ होगा।

सुवर्ण चांदी आदि धातु—इस वर्ष राहु चैत्र में कर्क राशि के २१ अंश में चलेगा। जो यहां से प्रायः सभी सोना, चांदी-तांबा लोहा आदि धातुओं को तेजी की ओर चलावेगा। लिखा भी है—"कर्क स्थिते चन्द्ररिपौ धातवो दुर्लभा मताः।"

११ अगस्त से १ अक्टूबर तक घटाबढ़ी होते हुए पित्तल में २) तांबा में ३) सुवर्ण में ७) और चांदी में १२) के करीब तेजी आवेगी।

७ अक्टूबर के आसपास चांदी सोने में एक मंदी का झटका आवेगा।

खांड गुड़—वर्षारम्भ में रस गड़ादि तेज चलेगा। वैसे इस वर्ष खांड, गुड़ादि की पैदायश अच्छी होगी। २०१९ मार्गशीर्ष, पौष में गुड़ का भाव नीचा रहकर फिर जल्दी ही अच्छी तेजी की ओर चलेगा।

दुग्ध-घृत—इस वर्ष पशुओं की खुराक में तंगी तथा बिमारी के कारण दुग्ध-घृत के भाव तेज रहेंगे।

शेयर—२२ मई से २४ दिन के भीतर प्रायः शेयर बाजार तेजी की ओर रहेगा। २२ सितम्बर से २९ सितम्बर तक भी तेजी रहेगी। तदनन्तर ८ अक्टूबर से ११ दिन के अन्दर शेयर बाजार मंदे रहेंगे।

वस्त्र—इस वर्ष वस्त्र बिक्री करने वाले मिलों के मालिकों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। पहिले की अपेक्षा उन्हें माल निकालने में कुछ हानि का भी अनुभव होगा, फिर भी वस्त्रों में कोई खास मंदी का योग नहीं है, कुछ तेजी ही रहेगी। १९ नवम्बर के बाद रेशमी व रंगीन वस्त्रों के भाव तेज रहेंगे।

करयाना—इस वर्ष कुंभ के गुरु करयाना के भावों को तेजी की ओर रखेंगे। गर्म मसाला, तज, लौंग तथा सुपारी, पिस्ता, अखरोट तेज होंगे। १८ नवम्बर के बाद नारियल तेज होंगे।

इस वर्ष लाल मिर्च के व्यापारी लाभ में रहेंगे लाल मिर्च से विशेष लाभ उठाना हो तो पत्र व्यवहार करें। लकड़ी, कोयला भी तेज रहेगा।

भय रोगोपद्रव

इस वर्ष विश्व में कहीं रक्त विकारादि से, कहीं गले के ऊपर के, कहीं हृदरोग से कष्ट होगा। भारत के वायव्य कोण तथा पश्चिमी पाकिस्तान, काबुल, ईरान में भय हो। बिहार, आसाम, बंगाल, उड़ीसा, व नर्मदा के किनारे तथा कहीं कहीं उत्तर भारत में जलसे या प्रकृति कोप से भय हो। १७ जून से २७ जून तक कहीं अग्नि प्रकोप कहीं विस्फोट से भय हो। २४ जुलाई से १७ अगस्त तक समुद्र तीरवर्ती देशों में दूषित वायु व तूफानादि से हानि हो। २८ सितंबर के बाद किसी देश पर अचिन्तित भय व्यापे। १७ अक्टूबर से ३१ दिन के अन्दर कहीं राज से कहीं उत्पात से भय हो। आश्विन से सभी प्रकार के यानों की दुर्घटनाओं से भय हो।

सन् १९६३ के फरवरी मार्च में कई प्रदेशों में भारीशीत से फल फसल तथा जीव जन्तुओं का नाश हो।

भारत की वर्षा वायु

इस वर्ष कई प्रदेशों में "सुभिक्षं वापि दुर्भिक्षं वृष्टयधीनं प्रजायते" कुछ ऋतु वैपरीत्य के लक्षण देखने में आयेंगे। वर्षा ऋतु में देश भेद से वर्षा का प्रारंभ तथा अंत होता है, वर्षा का हाल पहिले ही जान लेने से व्यापारी व कृषक वर्ग विशेष लाभ व संतोष प्राप्त करता है। इस वर्ष भारत की वर्षा का विचार ग्रहगत्यनुसार निम्न लिखित है, यदि इस विचार के साथ अर्क मार्तण्ड ग्रन्थोक्त ज्येष्ठ की अमावस्या का सूर्यास्त विचार एवं स्व स्व देशीय आषाढ़ी पूर्णमासी की वायु का विचार कर लिया जावे तो शत-प्रतिशत ठीक सही तौर पर अपने अपने देश की वर्षा का हाल जाना जा सकता है।

इस वर्ष भारत में १७ मई तक ग्रीष्म ऋतु का ताप मान बढ़ेगा। बाद में भारत के किसी न किसी प्रदेश में वर्षा का प्रारंभ हो जायेगा। २८ जून के बाद भारत में कई जगह वर्षा होकर शांति करेगी। तदनन्तर १९ जुलाई तक वर्षा में कहीं कहीं रुकावट होगी, जिससे वहां के कृषक वर्ग को कुछ चिन्ता व्यापेगी, तदनन्तर २० जुलाई से १५ अगस्त तक वर्षा बहुत जगह अच्छी होगी, नदी नाले उछलेंगे, कहीं जल भय होगा, और इसी समय में कई प्रदेशों में वर्षा की रुकावट भी होगी बाद में फिर श्राद्धों में वर्षा अच्छी होगी, नवरात्रों में कहीं कहीं खंड वृष्टि होकर वर्षा ऋतु बिदा हो जावेगी, इस वर्ष भारत में कहीं कहीं टिड्डी फसल की हानि करने वाले कीड़े आदि का भय होगा।

हमने अपने विक्रमी संवत् २०१८ के श्री मार्तण्ड पंचांग में माघ कृष्ण ३० की अष्टग्रही (जो कि सायन व निरयण दोनों मानों से बनी है) के भयंकर फल का सप्रमाण उल्लेख किया था, जो सबको विदित ही है, वह संवत् २०१९ का पंचांग, क्योंकि अष्टग्रही

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से ४ मास पूर्व ही प्रकाशित हो रहा है, एतदर्थ इस अष्टग्रही के विषय में कुछ और प्रकाश डालने की इच्छा से निम्नलिखित पंक्तियें लिख रहा हूँ।

पाठको! गत शताब्दियों में जो भी सप्तग्रही गोल-योग वि० सं० १९५६ आदि में बने थे। उस समय में कहीं चन्द्र कहीं शनि कहीं गुरु पृथक रहे हैं, और उपग्रह राहु या केतु ने ही उस समय अन्य ६ ग्रहों से मिलकर सप्तग्रही योग बनाया था। परन्तु वि० सं० २०१८ तथा चिरगत वि० सं० १२४३ को अष्टग्रही व सप्तग्रही में ऐसी बात नहीं। पूर्व प्रकाशित वि० सं० २०१८ के पंचांग में हमने स्थूलमान से बारहवीं शताब्दी ईस्वी की अष्टग्रही का राहु के साथ बनने का जिकर किया था। परन्तु अब मेरे छोटे सुपुत्र चिरंजीव शक्तिधर की गणित से ज्ञात हुआ कि वह अष्टग्रही सायनमान से राहु के साथ नहीं बल्कि केतु के साथही हुई थी।

देखिये—— विक्रमी संवत् १२४३ (ईस्वी सन् ११८६) आश्विन कृष्ण ३० तात्कालिक सूक्ष्म अयनांश १२°।५०

उज्जयिनी मध्यमार्कोदय कालिक निरयण स्पष्ट ग्रह सं० १२४३ आश्विन कृ० ३०

	सू.	चं	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	५	५	५	५	५	५	०	६
अं.	५	१८	२५	२५	१८	२८	२२	२	२
के.	५	१७	५१	४३	१२	५२	४६	१८	१८

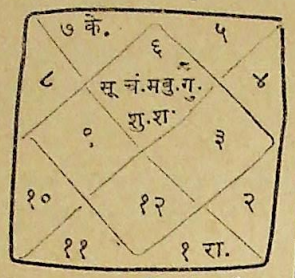

यहां निरयण मान से सप्त ग्रही बनी थी। परन्तु इस निरयण सप्त ग्रही में २ दिन बाद ही आश्विन शुक्ल द्वितीया को सायन अष्टग्रही योग बना था। जैसे नीचे स्पष्ट है।

उज्जयिनी मध्य मार्कोदये कालिक सायन स्पष्ट ग्रह सं० १२४३ आश्विन शु. २ कं.

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु	श.	रा.	के.
रा.	६	६	६	६	६	६	६	०	६
अं.	०	२८	१०	१३	१	१४	५	१५	१५
क.	४५	१९	६	१५	३९	१०	५०	२	२

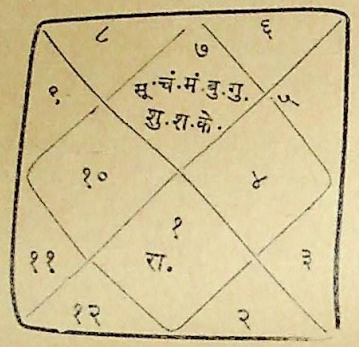

ध्यान रहे कि——यहां सायनमान से केतु ने अष्टग्रही बनाई थी जिसके बाद इतिहास से पता चलता है कि इस सप्तग्रही तथा सायन अष्टग्रही के फल स्वरूप भारत पर मुसलमानों के आक्रमणों में [illegible]

सप्तग्रही वा अष्टग्रही योग तो करीब सवा दो दिन ही रहता है, परन्तु इस कुयोग का फल योग के कुछ मास पूर्व और पश्चात् चिरकाल तक होता रहता है। अष्टग्रही के बाद राष्ट्रों की शासन पद्धति में तथा विश्व में भारी परिवर्तन हुआ करते हैं। इस योग का कुफल हमने संवत् २०१८ के पंचांग में विशेष रूप से लिख दिया था। पुनः पिष्ट पेषण की जरुरत नहीं है।

इस अष्टग्रही के समय अर्थात ईसवी १९६२ की ३ फरवरी से ५ फरवरी तक तथा बाद में कुंभ के मंगल, गुरु, शुक्र के सम्बन्ध से ३ मार्च से ३१ दिन तक विश्व में और भय प्रद स्थिति रहेगी। भारत में यज्ञानुष्ठान कीर्तन तथा श्री महाकाली माता के रात्रि जागरणादि करने से कल्याण रहेगा, इसमें सन्देह नहीं।

हमारे विचार में ग्रहगति को देखते हुए ईस्वी सन् १९७१ के बाद विश्व का कोई भी देश महाशक्तियों की गणना के योग्य नहीं रहेगा। उस शिवशक्ति की इच्छा से कोई ऐसा कारण बनेगा कि विश्व की सभी बड़ी शक्तियें क्षीण हो जायेंगी। तदनन्तर आगे पांच सौ वर्ष तक कोई भी शक्ति किसी देशपर प्रभुत्व व प्रभाव न रख सकेगी।

विज्ञ महोदयो! इस वर्ष घटित होने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संसार से सम्बन्धित घटनाओं का ज्योतिर्विज्ञान दृष्ट्या और श्री प्रभु कृपा वशात्, जो शुभाशुभ दीख पड़ा है वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार यहां उल्लेख कर दिया है आगे "कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुंसमर्थः" भविष्य के निर्माता सर्वेश्वर श्री प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख अस्मदादि अल्पज्ञ व्यक्ति भविष्य लेखन का क्या क्षमता रख सकता है। "तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन,"

अन्त में:——

अनहोनी प्रभु कर सके होन हार मिट जाय।
ऐसे दीनानाथ से काहू की न बसाय॥

श्री मार्तण्ड भवन
कुराली
भाद्र शु० ५ भृगुवार
(सं० २०१८)

विनीत
श्री बघाट नरेशाश्रित
मुकुन्दवल्लभ

नोट——

आगामी सं० २०२० में १४० वर्षों के बाद क्षय मास आ रहा है। जिसका विशेष फलादि वहीं लिखेंगे।

शनैश्चर की लघुकल्याणी बृहत्कल्याणी (ढैया, साढसाती) का विचार

बृहत्कल्याणी (साढेसाती) साढे सात वर्ष की होती है, जो जन्मराशि से बारहवीं राशि में शनि के आने पर २॥ वर्ष तक सिरपर (चढ़ती), जन्मराशि में आने पर २॥ वर्ष हृदय पर एवं जन्मराशि से दूसरी राशि में आने पर पैरों पर (उतरती) मानी जाती है।

लघुकल्याणी (ढैया) अढाई वर्ष की होती है, जो जन्म राशि से चौथी एवं आठवीं राशि में शनि के आने पर मानी जाती है।

जिसकी जन्म कुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा [illegible] शनि की साढेसाती व ढैया का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र शनि [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

तिहास से पता चलता है कि इस सप्तग्रही तथा सायम शनिग्रह के कारण रखने मात्र पर मुसलमानों के आक्रमणों में भयंकर का संकट उपस्थित कर राज्य आदि उलटाने इस के बनता है। शान्त्यर्थ इष्टदेव के मन्त्र का संकल्प कर राज्य आदि उलटाने इस के को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए। महावीर जी पर सिन्दूर तेल चढ़ाना भी अच्छा है।

शनि—सं० २०१८ आश्विन शुक्ल द्वितीया बुधवार को १६ घ० १० पल पर पुनः मकर में आकर इस २०१९ पूरे भवत् में इसी राशि पर रहेगा उस दिन चन्द्रमा तुला राशि का होने के कारण किस राशि को किस पाए पर कैसा शुभाशुभ है वह नीचे लिखा है—

मिथुन—ढैया (लघुकल्याणी) चांदी के पाए कुछ शुभ है।

तुला—ढैया सुवर्ण के पाए हानि प्रद है।

धनु—साढसती रोंपर उतरती सुवर्ण के पाए हानिप्रद है।

मकर—साढसती हृदय पर तांबे के पाए कुछ शुभ है।

कुम्भ—साढसती सिरपर चांदी के पाए कुछ शुभ है।

सूचना—इस वर्ष मेष, वृष, कर्क, सिंह कन्या, वृश्चिक तथा मीन राशि वालों को शनि का ढैया साढसती नहीं है।

मन्त्रों का अद्भुत चमत्कार

मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः॥

मंत्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह होता है कि जिनके दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण मात्र से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं, थोड़े शब्दों में इसी का नाम मंत्र है। इसमें शब्दों का ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कंपन (स्वर लहरी) उत्पन्न होता है। जिसमें रचना करने की तथा इच्छित वस्तु को आकर्षित करने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है और वह मानसिक तथा भौतिक आकृति पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालने के साथसाथ जिन कामों को हम असम्भव समझते हैं या वर्षों में भी नहीं कर सकते। उन्हें वह दिव्य-शक्ति चन्द मिनटों में पूर्ण कर सकती है।

मन्त्र शास्त्रज्ञों का कथन है कि वेद मन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तांत्रिक मन्त्रों को भगवान् शिव ने शक्तिमान बनाया। इसी तरह कलियुग में शिवावतार श्री शाबर नाथ जी ने शाबरमंत्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की है। मंत्र का पुरश्चरण करते हुए गुप्त रखे, प्रकट करने से उस किये हुए पुरश्चरण का प्रभाव कम वा नहीं बराबर रह जाता है। ऐसी गलती होने पर पुनः गुप्त रीति से पुरश्चरण करें अत्युत्कट प्रभाव होगा।

शाबरी मंत्रों के चमत्कार—कलियुगी क्षुद्रजीवों के उपकारार्थ श्री शाबरनाथजी ने शाबरीमन्त्रों का निर्माण किया है। शाबरी मंत्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है जिसके प्रायः कोई अर्थ नहीं होते परन्तु श्री शंकर जी के प्रताप से वह असर से खाली नहीं है श्री गो० तुलसीदासजी ने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है—

अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू॥

नोट—स्मरण रहे इन मंत्रों को जैसा लिखा व बतलाया गया हो वैसा ही जपना और बोलना चाहिये। अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ा कर किसी शब्द वा अक्षर को न्यूनाधिक न करें।

दाद कनेड़ू नहरुवा और कछराली का मन्त्र—

"दाद कनेड़ू नहरवा कछराली पकलूट दोहै शाह फ़कीर की पाँचौ भस्माभूत।"

है। यदि चन्द्र शनि जन्म में अथवा गोचर में [illegible] शनि की साढसाती व ढैया का अशुभ फल कम होता

के नीचे का फोड़ा) या कछराली (कोख के फोड़े) आदि का कष्ट दूर करना हो तो उपले की शुद्ध राख पर ३ बार मंत्र पढ़ कर राख लगावें दिन में २ बार। तीन दिन में कष्ट बिल्कुल दूर होवे।

कल्याणमार्ग दर्शक मंत्रः—"ॐ कार्पण्य दोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ़चेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहितन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥"

किसी कार्यारम्भ की असमंजसता में किंकर्तव्य विमूढ़ होने पर रात्रि को शुद्ध मन एवं अत्यन्त भक्तिभाव और तार स्वर से १०८ बार या ११ बार उपरिलिखित गीतोक्त मंत्र को पढ़कर एकान्त में शुद्धासन पर शयन करे। प्रातः जागने पर जो आपके लिये कल्याणप्रद मार्ग होगा, वही मन में आवेगा उसी के अनुसार का करना उचित है। यदि कोई सत्पुरुष इस मंत्र को ग्रहण या दिवाली में जप करके फिर उपयोग में लावेगा तो उसे अचूक सफलता मिलेगी।

गर्भ रक्षा यन्त्र

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	ल	छि

जिस स्त्री का गर्भपात होता हो उसकी कमर में उपरोक्त यंत्र अनार की कलम अष्टगन्ध या रक्तचन्दन से लिखकर तांबे धूपादि से सुपूजित कर रविवार के दिन बांधे और साथ ही रविवार को पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे की लाई हुई जड़ को भी कुमारी छोटी कन्या के हाथ के काते सूत से कमर में बांध दें तो निश्चय ही गर्भ न गिरे ९ मास बाद उपरोक्त यंत्र और धतूरे की जड़ को कमर से खोलकर जल में प्रवाह दें। काम लेने से पहले उपरोक्त यंत्र को भी दिवाली और ग्रहण में अष्टगंध से लिख कर सिद्ध करलें।

घर में लक्ष्मी स्थिर रखने का मंत्र—ओ३म् ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

यदि किसी मनुष्य के पास अच्छा लाभ होते हुए भी धन संचय न होता हो पैसा साथ ही साथ खर्च होता चला जाता हो तो उसे चाहिये कि शुभ मुहूर्त में स्नानादि से शुद्ध होकर एकान्त स्थल में वटवृक्ष पर बैठकर उपरोक्त मंत्र का जप करे तो घर में लक्ष्मी स्थिर हो जावे इसमें संशय नहीं। जप १ लाख करना, अन्त में हवनादिक भी विधि पूर्वक करे।

सट्टा लाटरी जीतने का विजय यंत्र

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

विधि—इस यंत्र को अनार की कलम और लालचन्दन से ग्रहण या दिवाली की रात में लिखना प्रारम्भ करे जब तक ३१ हजार पूरा न हो तब तक ब्रह्मचर्य से रहे किसी के घर भोजन भी न करे, यंत्रों को श्री लक्ष्मीजी का ध्यान करके चलते जल में प्रवाहित करके कन्या और बालकों को मिष्टान्न भोजन करावे। तदनन्तर यह यंत्र शुक्ल पक्ष स्वाति नक्षत्र में अनार की नई कलम से भोजपत्र पर पवित्र होकर लालचन्दन द्वारा लिखे और अष्ट धातु के तावीज में रखकर दक्षि भुजा में बांधे तो लाटरी सट्टा आदि में लाभ होगा।

नोट—इस धारण किये हुए यंत्र को कभी भूमि पर न रखें और न इसे अपवित्र होने दें। प्रायः दैनिक गंधपुष्पधूपादि से पूजन अवश्य कर लिया करें।

नजर झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—"ओं नमो सत्यनाम आदेश गुरु को-ओं नमो नजर जहाँ पर पीर न जानी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ले छल सों अमृतवानी कही नजर कहां ते आई, यहां की ठोर तोहि कौन बताई, न को जात तेरो, कहां ठाम, किसकी बेटी, कहां तेरो नाम, कहां से उड़ी, कहां जाय, अब ही बन कर ले, तेरी माया मेरी बात सुनो चितलाय, जसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहड़ो चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी, राजा की रानी जाको दोष ताही के सिर पड़े जाहर पीर नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ।।"

जिसे नजर लगी हो उसे इस मन्त्र द्वारा मोर के पंख से छाड़ देने से नजर का दोष दूर हो।

सर्पविषनाशक गारुडास्त्र मन्त्र

ओ३म् सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्माच्छन्दां स्यङ्गानि यजूंषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याऽशफा सुपर्णोसिग रुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ओ३म्। विधि—यह यजुर्वेद का गारुड़ास्त्र मंत्र है इस मन्त्र को सूर्य ग्रहण के समय स्पर्श से मोक्ष तक किसी पवित्र नदी के किनारे कम्बल के आसन पर बैठकर सूर्याभिमुख होकर रुद्राक्ष की माला द्वारा जप करे। जप के समय गरुड़ के साथ श्री चतुर्भुजी नारायण का ध्यान करता रहे बस ग्रहण के अनन्तर मंत्र सिद्ध है। तदनन्तर रोजाना सन्ध्या पूजा के समय इस मन्त्र को सात बार जप लिया करे फिर जब किसी को सर्प काटे तो नीम की लकड़ी या पुठकंडा (अपामार्ग) की जड़ से शनैः शनैः झाड़े विष दूर होगा।

बच्चे के पसली (डिब्बा) रोग का मन्त्र

डिब्बा रोग से सैंकड़ों बच्चे अकाल काल के ग्रास बनते हैं। इस रोग के लिये यह मन्त्र अद्भुत प्रभाव रखता है।

समुद्र किनारे सुरागाय, सुरागाय के पेट में बच्चा, बच्चे के पेट में डिब्बा। डिब्बा काटे सरकंडा बड़े दुहाई लूनिया चमारी को छूत ।। **विधि**—एक सरकंडा १४ अंगुल जिसमें जड़ भी हो, जड़ की ओर से मन्त्र पढ़कर छू कहते हुए फूक मारकर ३ बार नापो, सरकंडा बढ़ जावेगा, बढ़े भाग को काट दो, यह किया दिन में तीन बार करो जब तक रोग रहे उतने दिन करो बच्चा इस भयानक रोग से बच जावेगा, ग्रहण में जप करके पहिले सिद्ध कर ले।

आधे सिरदर्द का मन्त्र—आधे सिर दर्द बड़ा ही भयानक है। निम्नलिखित मन्त्र से दर्द दूर हो जावेगा और वह आपका कृतज्ञ रहेगा।

मन्त्र यह है— ॐ बन में फिरे अंजनी कच्चे फल खाय, हांक मारूं हनुमन्त की "अमुक" का आधा सीसी जाय, फुरो मन्त्र ईश्वर बिचे मेरे गुरु का शब्द सांचा ।। **विधि**—सारे मस्तक पर अगूंठा अंगुली से बीच की खाल खींचे विभूति लगावे और मन्त्र पढ़ता जावे ७ बार।

पहले दिवाली को जप करके सिद्ध कर लेवे।

यंत्र आधे सिर का इस यंत्र को ग्रहण में लिख कर चलते जल में गेर कर सिद्ध करले पीछे अनार की कलम स्याही से लिखकर धूप दे सिर में बांधे तो आधा शिर दर्द दूर हो। बच्चों को मिठाई देवे।

५३	४२
३११	७०

दांतदाढ़ के दर्द का अद्भुत मन्त्र—जिस मनुष्य की दांत या दाढ़ में दर्द होता है उसे दिन रात चैन नहीं पड़ता बहुत से मनुष्य दांत या दाढ़ को निकलवा देते हैं। यह मन्त्र दर्द को शीघ्र दूर करके रोगी को सुख की नींद सुला देता है।

मन्त्र—डांक कीलें डिक वाली कीलें सात तरह की दाढ़ कील और कील ... लोहे की कील से झाड़ कर उस कील को जमीन में गाड़ दे या दबा दे।

सूचना—इस मन्त्र को भी दिवाली या ग्रहण में जप लेवे तो चलेगा।

यंत्र गौ भैंस दूध देवे।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	१३

विधि—इस यंत्र को दिवाली की रात को लिख लिखकर धूप देता रहे पीछे जल में प्रवाह दे उसके बाद जब किसी की गौ या भैंस दुग्ध न देवे और ना ही बच्छा लगावे तो इस यंत्र को शुद्ध केशर अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर गौ हो तो गले में और भैंस हो तो दायें सींग में गुग्गल की धूप देकर बांधे तो गौ भैंस खूब दूध देने लगेगी।

शीतला का मंत्र

ॐ अस्य श्री शीतलामन्त्रस्य उपमन्यु ऋषिः बृहतीछन्दः श्री शीतला देवता विस्फोटकशान्त्यर्थे जपे विनियोगः ।।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि। ॐ बृहती छन्दसे नमो मुखे। ओ३म श्री शीतलादेवतायै नमो हृदि। ओ३म् विस्फोटकशान्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। मूलेन करौ प्रमृज्य ।। करषडङ्गन्यासौ ।। ओ३म् ह्रां श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः। ओ३म् ह्रीं श्री तर्जनीभ्यां (शिर से) स्वाहा। ओ३म् ह्रूं श्रूं मध्यामाभ्यां (शिखायै) वषट्। ओ३म् ह्रैं श्रैं अनामिकाभ्यां (कवचाय) हुम्। ओ३म् ह्रौं श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां (नेत्रयाय) वौषट्। ओ३म् ह्रः श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां (अस्त्राय फट्) ।। ब्रैकट् का हृदयादि न्यास करन्यास से पीछे करे।

ध्यानम्—

दिग्वास सम्मार्जनिकाञ्च सूर्पं करद्वये संदधतीं घनाभाम्। श्रीशीतलां सर्वरुजार्तिनाशांरक्ताङ्गरागस्रजमर्चयामि ।।१।। इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य १२५००० सपादलक्षं जपेत् दशांश पायसेन जहुयात्। मंत्र—ओ३म् ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः ।।

सवा लक्ष प्रयोग कर के बाद नाभिमात्र जल में खड़ा होकर १ सहस्र मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर बुहारी से शीतला के फफोलों पर मार्जन करने से तत्काल आराम होगा।। अनुभूत है।

मंत्र, वर प्राप्ति के लिए—

यदि किसी वर योग्य कन्या को पिता के प्रयत्न करने पर भी वर न मिलता हो तो, शीघ्र सुन्दर वर लाभार्थ निम्नलिखित मंत्र अनुष्ठान कन्या स्वयं करे तो जल्दी ही सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है। मंत्र यह है—

कात्यायनि महामाये महायोगिन्य धीश्वरि।
नंद-गोप सुते देवि, पतिं मे कुरुते नमः।।

विधि—स्नानोत्तर पवित्र वस्त्र धारण कर प्रातः सायं दोनों समय धूप ज्योति जगाकर जप करे। प्रत्येक बैठक में कम से कम तीन माला फेरनी चाहिए। अर्थात ६माला एक दिन में। मालाओं का हिसाब अवश्य रखना चाहिए। जब एक लाख जप हो जाय तब किसी शुक्रवार ... शुभ दिवस में माता श्री पार्वती का पूजन कर कन्या ... को भोजन कराना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तीसरी पंचवर्षीय योजना

(१९६१-६६)

तीसरी पंचवर्षीय योजना, आत्मनिर्भर तथा आत्म-चालित अर्थ-व्यवस्था की दिशा में और अधिक तीव्र विकास की दशाब्दी का प्रथम चरण है। तीसरी योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

१—राष्ट्रीय आय में ५ प्रतिशत से अधिक की वार्षिक वृद्धि करना;

२—खाद्यानों के सम्बन्ध में देश को स्वावलम्बी बनाना और कृषि की उपज इतनी बढ़ाना ताकि उससे उद्योग और निर्यात दोनों ही की आवश्यकताएं पूरी हो सकें;

३—इस्पात, ईंधन और बिजली सरीखे बुनियादी उद्योगों का विस्तार करना और यन्त्र सामग्री बनाने की क्षमता इतनी बढ़ाना ताकि दस वर्षों के अन्दर भावी उद्योगीकरण की समस्त आवश्यकताएं स्वदेशी साधनों से ही पूरी हो सकें;

४—देश की जन-शक्ति का यथासम्भव पूरा-पूरा उपयोग करना और रोजगार के अवसरों में पर्याप्त वृद्धि करना; तथा

५—अवसरों की क्रमशः अधिकाधिक समता प्रदान करना, आय और धन की विषमता में कमी करना और आर्थिक शक्ति का अधिक सामान वितरण करना।

तीसरी योजना में सम्मिलित भौतिक कार्य-क्रमों का सरकारी क्षेत्र में कुल व्यय ८,००० करोड़ रुपये से अधिक और निजी क्षेत्र में ४१०० करोड़ से अधिक का होगा।

साधनों के वर्तमान अनुमान के आधार पर सरकारी क्षेत्र के लिए ७,५०० करोड़ रुपये के खर्च की वित्तीय व्यवस्था रखी गई है। मुख्य-मुख्य कार्यों के लिए व्यय का वितरण इस प्रकार है :—

क्षेत्र	व्यय (करोड़ रुपयों में)	कुल का प्रतिशत
कृषि और सामुदायिक विकास	१०६८	१४
सिंचाई और बिजली	१६६२	२२
ग्राम्य और लघु उद्योग	२६४	४
उद्योग, खनिज, परिवहन और संचार	३००६	४०
समाज सेवाएं और विविध	१३००	१७
रिजर्व	२००	३
योग	७,५००	१००

खाद्यानों के उत्पादन में ३२ प्रतिशत वृद्धि होने की सम्भावना है। यानी १९६०-६१ के ७६० लाख टन से बढ़ कर १९६५-६६ में १० करोड़ टन हो जायेगा। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए २०० लाख एकड़ भूमि में सिंचाई की सुविधाएं बढ़ायी जायेंगी ताकि कुल सिंचित क्षेत्र ९०० लाख एकड़ तक पहुंच जायेगा। खाद्य उत्पादन बढ़ाने के अन्य उपायों के साथ ही रासायनिक उर्वरकों तथा खादों का अधिकाधिक प्रयोग करने और खेती के नये ढंग अपनाने को प्रोत्साहन दिया जायेगा। ग्रामीण विकास के ढांचे में सेवा सहकारी समितियों को इस तरह गठित किया जायेगा कि वे ग्राम समुदाय की प्रमुख प्राथमिक इकाई के आधार के रूप में काम कर सकें।

तीसरी योजना में सम्मिलित प्रमुख औद्योगिक योजनाएं धातुकर्म, औद्योगिक मशीनरी, मशीनी औजार, उर्वरक, बुनियादी रसायन, आवश्यक दवाइयां और पैट्रोलियम शोधन के क्षेत्रों की हैं। तैयार इस्पात का उत्पादन १९६०-६१ के २२ लाख टन से बढ़ कर १९६५-६६ तक ६८ लाख टन तक पहुंच जाने की सम्भावना है।

१९६५-६६ में बिजली की संस्थापित क्षमता को १२७ लाख किलोवाट बढ़ा दिया जायेगा जबकि दूसरी योजना के अंत तक यह क्षमता ५७ लाख किलोवाट की है। परिवहन और संचार के विकास के सम्बन्ध में भी काफी महत्वपूर्ण कार्यक्रम तीसरी योजना में शामिल किया गया है।

तीसरी योजना के अंतर्गत सभी स्तर की शिक्षण सुविधाएँ बढ़ाने का इरादा है। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बात यह होगी कि ६ से ११ वर्ष के आयु समूह के बालकों के लिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा तथा बड़े पैमाने पर छात्रवृत्तियां देने की योजना शुरू की जायगी।

स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में तीसरी योजना का उद्देश्य आस-पास के क्षेत्रों की सफाई को और अधिक व्यवस्थित करना, संचारी रोगों की रोक-थाम, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार नियोजन के क्षेत्र में और अधिक काम करना, चिकित्सा और स्वास्थ्य सम्बन्धी कर्मचारियों को प्रशिक्षण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ जल की व्यवस्था आदि कार्यक्रमों को और अधिक बढ़ाना है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में जो कार्यक्रम सम्मिलित किये गये हैं, आशा है कि उनसे देश में बढ़ने वाली संख्या के सभी मजदूरों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

योजना के लिए छोटी बचतें

हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत जो देश में विभिन्न परियोजनाएं और कार्य चल रहे हैं उन्हें पूरा करने के लिए बहुत बड़ी रकम की जरूरत है। इसके लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र अधिक से अधिक बचत करे। अल्प-बचत योजना, छोटी-बड़ी सभी प्रकार की रकमों को लाभदायक और आकर्षक मदों में लगाने का सर्वश्रेष्ठ अवसर प्रदान करती है।

(१) **१२-वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत पत्र**

ये बचत पत्र ५, १०, ५०, १००, ५०० और १००० रुपये के मिलते हैं। खरीदने के १२ वर्ष बाद बीतने पर इसका मूल्य क्रमशः ८, २५, १६.५०, ८२.५०, १६५, ८२५ और १६५० रुपये हो जाता है।

(२) **१०-वर्षीय राजकोष बचत जमा पत्र (ट्रेजरी सेविंग्स डिपाजिट सर्टिफिकेट)**

इन बचत-पत्रों पर ४ प्रतिशत प्रति वर्ष ब्याज मिलता है तथा यह ५० रू० और ५० ० की गुणक राशि के २५,००० रुपये तक मिल सकते हैं।

(३) **बढ़नेवाली सावधिक-जमा योजना**

इसमें यदि आप ५, १०, २०, ५० या १०० रुपये मासिक जमा करवाते रहें तो ५ या १० वर्ष की निश्चित अवधि पूरी होने के बाद आपको आकर्षक ब्याज सहित रकम वापिस मिल जाती है।

(४) **डाकघर बचत बैंक खाता**

१०,००० रुपये तक के बैलेंस पर २॥ प्रतिशत और १०,००० रुपये से अधिक के बैलेंस पर २ प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज मिलता है। संयुक्त खाते में उपवर्णित रकमों की दुगुनी राशि तक यह ब्याज मिलता है।

(५) **भारत सरकार के इनामी बाण्ड—१९६५**

५ और १०० रुपये के ये बाण्ड रिजर्व बैंक के किसी दफ्तर, स्टेट बैंक, सरकारी खजाने या मुख्य और विभागीय उप-डाकघरों से प्राप्त किये जा सकते हैं। नामों की लाटरी हर तिमाही निकाली जाती है और इनाम में मिली राशि पर आयकर नहीं लगता। १ मार्च, १९६५ के बाद इन बाण्डों की रकम सम मूल्य पर वापस मिल जायेगी।

तरल पदार्थ मापने के मैट्रिक पैमाने

देश में माप-तौल की एक समान सरल व प्रामाणिक प्रणाली लागू करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। परिवर्त्तन के प्रथम चरण में ट्रिक बाटों का प्रयोग शुरू किया है। देश के कुछ निर्धारित क्षेत्रों में मैट्रिक बाटों का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया है। और बाकी क्षेत्रों में भी पुराने बाटों के स्थान पर न बाट प्रयोग में लाने के लिए २ वर्ष की अंतरिम अवधि रखी गयी है। यह अवधि मार्च, १९६२ में समाप्त हो जायेगी। इसके बाद जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश के सभी भागों में मैट्रिक बाटों का प्रयोग अनिवार्य हो जायेगा।

इसके दूसरे चरण में तरल पदार्थ मापने के मैट्रिक पैमानों का प्रयोग आरम्भ किया गया है। तेल उद्योग ने १ अप्रैल, १९६० से मैट्रिक पैमानों का प्रयोग शुरू कर दिया है। देश के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में अप्रैल, १९६१ से तरल पदार्थ मापने के मैट्रिक पैमानों के प्रयोग की अनुमति दे दी गयी है और साथ ही एक वर्ष तक पुराने पैमानों का इस्तेमाल करने की भी रियायत दी गयी है।

तरल पदार्थ मापने के मैट्रिक पैमानों का प्रयोग धीरे-धीरे समस्त देश में लागू हो जायेगा। अप्रैल, १९६३ से तरल पदार्थ मापने के मैट्रिक पैमानों का ही प्रयोग कानूनी रूप से अनिवार्य होगा।

पैमानों के प्रकार

तरल पदार्थ मापने के मैट्रिक पैमाने ३ प्रकार के हैं। शंकु आकार वाले मैट्रिक पैमाने, डुबोकर मापने वाले माने, उड़ेल कर मापने वाले पैमाने। ऐसे पैमानों की बुनियादी इकाई लिटर है। उप इकाई मिलिलिटर है। तरल पदार्थ मापने के वास्तविक प्रयोग में आने वाले मैट्रिक पैमाने ये हैं:

	लिटर के पैमाने	मिलिलिटर के पैमाने
शंकु आकार के पैमाने	२०	५००
	१०	२००
	५	१००
	२	
	१	
उड़ेल कर मापने वाले पैमाने	२	५००
	१	२००
		१००
		५०
		२०
डुबा कर मापने वाले पैमाने	१	५००
		२००
		१००
		५०
		२०

१ लिटर= १,००० मिलिलिटर

नये पैमानों के लगभग पुराने पैमाने इस प्रकार हैं:

१ लिटर= ¾ गैलन (लगभग)

=१.१ सेर (")

मैट्रिक प्रणाली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आयुर्वेद के गौरव-ग्रन्थ

श्री गोविन्द दास विरचित—कविराज नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा संशोधित
और परिवर्धित—सरल हिन्दी अनुवाद सहित

भैषज्य रत्नावली

संशोधित—परिवर्धित सातवां संस्करण—बड़े साइज के आठ सौ पृष्ठ—
ग्लेज कागज—बढ़िया छपाई—मूल्य १२)

आयुर्वेद के दिग्गज विद्वान् और वीयूषपाणि चिकित्सक कविराज नरेन्द्रनाथ जी मित्र द्वारा संशोधित, परिवर्धित और गम्भीर विद्वान् श्री जयदेव जी विद्यालंकार द्वारा सरल हिन्दी में किये गये अनुवाद सहित 'भैषज्य रत्नावली' का पहला संस्करण हमने आज से बीस वर्ष पहले प्रकाशित किया था। गोविन्ददास जी ने अपने जीवन भर के अनुभव से सिद्ध योगों को इस रत्नहार में गूंथ दिया था, इसलिए चिकित्सा-जगत् में इसका आदर पहले ही हो गया था परन्तु ग्रन्थ की रचना सौ वर्ष पहले हुई थी। समय ने मनुष्यों के रहन-सहन आदि में आकाश-पाताल का अन्तर कर दिया था जिससे ग्रन्थ में दी गई औषधियों की मात्रायें अनुपयुक्त हो गई थीं। प्रवीण चिकित्सक तो इस त्रुटि को संभाल लेते थे परन्तु नवीन अभ्यास करने वाले चूक जाते थे। कविराजजी ने अपने विशाल अनुभव के बल पर काल और पात्र के अनुसार मात्रायें ठीक कर दीं तथा अपने अनेक सिद्ध योग सम्मिलित करके रत्नहार में कई लड़ियां बढ़ा दीं। विद्यालंकार जी के सुबोध अनुवाद ने ग्रन्थ को सर्वसाधारण के लिए भी परमोपयोगी बना दिया। यही कारण है कि जब हमारी 'भैषज्य-रत्नावली' प्रकाशित हुई तब चिकित्सा-जगत् आनन्दमग्न हो गया। इतने बड़े ग्रन्थ के संस्करण, भारी संख्या में छापने के बाद भी, हाथों-हाथ समाप्त होने लगे। चिकित्सा के मर्मज्ञ आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्तजी ने बीच में अपने विशेष वचन जोड़कर ग्रन्थ की शोभा और भी बढ़ा दी।

प्रसन्नता की बात है कि हमारी 'भैषज्य रत्नावली' का इतना आदरमान देख कर कुछ प्रकाशक मित्र भी उत्साहित हुए और यत्र-यत्र 'भैषज्यरत्नावलियां' दीख पड़ीं। परन्तु दुःख की बात है कि उनके टीकाकारों ने कुछ ऐसी भूलें कर दी हैं जिससे रोगियों का अनिष्ट हो सकता है और चिकित्सक को अपयश मिल सकता है। इन लोगों की भूलों को हमारे सातवें संस्करण में यत्र-तत्र बताया गया है और उनके जो ठीक अनुभव सिद्ध अर्थ थे वह अर्थ दिये गये हैं।

हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का परिवर्धित सातवां संस्करण उपस्थित है। अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय, काशी के प्रधानाचार्य, परम प्रवीण और सहस्रों रोगियों को आरोग्य प्रदान करने वाले पं० लालचन्द्रजी वैद्य ने इस संस्करण में पथ्यापथ्य, त्रयोदश शीताङ्गों की चिकित्सा के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के चिकित्सक परमाननीय श्री सत्यनारायण जी शास्त्री के अनुभव आदि और बढ़ा दिए हैं। साथ ही साथ कालाजार, निमोनिया, एस्प्रीन, एक्स-रे, थर्मामीटर और मेडिकल सर्टिफिकेट आदि के वर्णन देकर ग्रन्थ सर्वविधि से सर्वाङ्गपूर्ण एवं अद्यतनीय (अप-टू-डेट) कर दिया है। इस संस्करण में जितने अनुभव सिद्धयोग दिये हैं वह अन्य किसी में नहीं है।

ऐसी सर्वांग सुन्दर परमोपयोगी और सर्वांग सम्पूर्ण 'भैषज्यरत्नावली' आपको अन्यत्र नहीं मिल सकती। आज की आर्थिक अवस्था को देखते हुए हमने इस बृहत्काय ग्रन्थ का मूल्य भी सबसे सस्ता केवल १२) लागत मात्र रख दिया है।

हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालङ्कार कृत तंत्रार्थ दीपिका नामक विवेचनात्मक तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिए उक्त वैद्यजी का यह अनुवाद अत्यन्त लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है। ऐसा हिन्दी अनुवाद आज तक कहीं भी किसी भाषा में नहीं छपा है। यही कारण है कि इतने थोड़े समय में यह इसका पाँचवाँ संस्करण छपा है। कागज की कठिनाई के कारण यह बहुत थोड़ा छपा है। इसलिये शीघ्रता करें ताकि फिर अगले संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े। बढ़िया पक्की कपड़े की दो जिल्दों में बड़े साइज के १००० पृष्ठ में छपा है। मूल्य केवल लागत मात्र सबसे सस्ता सम्पूर्ण ग्रन्थ का ३०) रु०। पृथक २ भाग भी मिलते हैं, हर एक भाग का मूल्य १५)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, (पो० बा० १५८६,) दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यूनानी चिकित्सा सागर (हिंदी)

लेखक—श्री हकीम मनसाराम जी शुक्ल,
(वाइस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालिज, दिल्ली)

बढ़िया कागज—मोटे अक्षरों में—नए टाइप, पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य केवल १०)

यूनानी चिकित्सा वास्तव में आयुर्वेद से ही ली गई है। इसमें अनेक अचूक नुस्खे हैं जो रोगों पर बड़ा असर रखते हैं। यही कारण है कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध हकीम अजमल खां साहिब संसार में एक प्रसिद्ध हकीम हो गये हैं। उनके तथा अन्य यूनानी के नामी हकीमों के प्रायः सभी गुप्त नुस्खे पहली बार इस पुस्तक में छाप दिये गये हैं। ये नुस्खे इतने सरल तथा इतने अचूक हैं कि इनके बल पर हकीम लोग हजारों रुपये कमा रहे हैं। इस पुस्तक में अतिसार (संग्रहणी) पर २९ योग, अनिद्रा पर ७, मृगी पर १८, लकवा (आर्दित पर १४, पक्षाघात पर २५ दर्द के रोग पर १६, आनाह (कब्ज) पर १५, उदर रोग (इमराज्महदा) पर ८८, सुजाक पर १७, कण्ठ माला पर १८, कण्ठरोग पर ३, कर्ण रोग पर ५, कृमि रोग पर ५, कशबल्य पर ५, कास-स्वास (खासी-दमा) पर ५६, कुष्ठ रोग पर ५, चर्म रोग पर ४, जलोदर पर ९, ज्वर (बुखार) पर २६, दन्तरोग पर १६, नेत्र रोग पर ३६, पित्त रोग पर २१, पाण्डु (यरकान) पर ९, प्रतिश्याय (जुकाम नजला) पर २४, प्रवाहिका (पेचिश) पर १०, प्रमेह जरयान पर ३३, प्लीहा पर १२, प्लेग महामारी पर ४, बाल रोग पर १०, बल्य तथा वाजीकरण (General Tonics and Sexual Tonics) पर १२०, व्रण (जख्म) पर १५, मुख रोग पर ७, मूत्र विकार पर १० मेदरोग (मोटापा) पर २, मधुमेह पर ७, मस्तिष्क विकार पर ३१, यकृत रोग पर ३६, रक्त पित्त पर ९, रक्तविकार पर २६, वातरोग पर ५३, वातरक्त पर ५, विषविकार पर ७, विसूचिका (हैजा) पर ४, वृक्कविकार पर १२, वमन (कै) पर १८, शीतला (चेचक) पर १४, शूलरोग पर २०, शोथ रोग पर १७, स्त्री रोग पर १०३, हिचकी पर ३, क्षय (तपेदिक) पर १७, क्षुद्ररोग पर अर्थात् सब प्रकार के रोगों पर लगभग १२०० योग दिए हैं। रोगों में काम आने वाले हर एक के अतरीफल, अवलेह, माजून, याकूती, नोशादर, मफरदात, मुरब्बा, मल जोबन, मरहम, चटनी, लबूब, गुलकंद, भस्म (कुश्ताजात) मुरब्बा, लेप, टिकिया, अर्क, तिला, शनाफ, शरबत, मंजन, सकंजबीन, सफूफ, सिरका, रोगन, खमीरे-हलवे, चूर्ण आदि यूनानी चिकित्सा पद्धति में जो भी जानने योग्य दवाइयां हैं सबके बनाने और इस्तेमाल करने के तरीके भी बताये गये हैं। अन्त में यूनानी औषधियों का विस्तृत परिचय भी सरल हिन्दी में है जिसे वैद्य लोग नहीं जानते।

यूनानी चिकित्सा का खजाना दो पुस्तकों में

यूनानी तिब्ब का फार्माकोपिया

(सरल हिन्दी में)

मसीह-उल मुल्क हकीम अजमल खां साहिब केवल भारत के लीडर होने की वजह से मशहूर नहीं थे वह एक चमत्कारी हकीम भी थे। इनके पास विदेशों के अनेकों निराश रोगी आकर स्वास्थ्य लाभ करते थे। हकीम साहिब और उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आने वाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खे भी श्री हकीम मनसारामजी शुक्ल वाइस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालेज दिल्ली ने इस पुस्तक में लिख दिये हैं तथा हर रोग का खुलासा तथा पथ्य भी साथ दिया है। पुस्तक सर्व साधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी है तथा नुस्खे भी बड़ी आसानी से मिलने वाले हैं। मूल्य ५)।

विवाह पद्धति

चतुर्थी कर्म सहित

कविरत्न पं० भैयाराम शर्मा कृत

कर्म सुबोधिनी भाषा टीका सहित स्थूलाक्षर बढ़िया सफेद कागज

मूल्य २)

जितनी विवाह पद्धतियें वह छपी हैं प्रायः संस्कृत में ही संकल्पादि की पद्धति रखती हैं जो आजकल अनेकों कर्मकर्ताओं को समझ नहीं आती इसलिए इस पं. रामदत्त संकलित विवाहपद्धति की सब जगह संकल्प लिखकर व कर्म की प्रक्रिया सहित विस्तार पूर्वक मंत्रार्थ और भावार्थ अलंकार हिन्दी भाषा की है। पुस्तक देखने योग्य है।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मोतीलाल बनारसीदास, Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न साधनी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु°	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१४।५१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।४७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।४३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।३९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।३५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।३१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।२७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।२३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।१९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।१५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न साधनी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।१४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।२०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।१०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५७	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५३	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४९	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४५	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।४१	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३७	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३३	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२९	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२५	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।२१	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१७	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।१३	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।९	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।५	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	१०।५९	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५८
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२५	५।२८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।२३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।१९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।१५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।११
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	४।५८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	४।५४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	४।५०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।४६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।४२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।३८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।३४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।३०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।२५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।२१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।१७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।१३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।१
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	३।५७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	३।५२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।४८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।४४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।४०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।३६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।३२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।२८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।२४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।४८	१८।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।४४	१८।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।४०	१८।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५५	२२।२८	०।२३	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५३	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२५	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।४६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२२।१८	२३।२२	१।५२	४।१४	६।३८
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२०	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	१।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	१।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	१।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	१।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।०	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	०।५६	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	०।५२	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	०।४८	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	०।४४	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	०।३९	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	०।३५	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	०।३१	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	०।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	०।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	०।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	०।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	०।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	०।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२०	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।४६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१९।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१९।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१९।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१९।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१९।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१९।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१९।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१९।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१९।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१९।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१९।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१९।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१९।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४७	११।१३	१२।३५	१४।८	१९।२	१८।१७	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१९।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१९।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१९।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१९।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१९।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१९।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१९।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१९।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१९।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	[illegible]	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३८	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।१६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१७	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।१२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४५	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है. उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेलवे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये है। जैसे रात के १ को १ लिया गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं कहीं अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो, उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घण्टा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो, उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सेकेंड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो, उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों, उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़े तो ९३ मिनट हुए। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सेकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारंभकाल का ज्ञान करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेण्ड) को ४ से गुणा किया, तो ४१ मिनट २० सेकेण्ड हुआ। इस (४१ मिनट २० सेकेण्ड) को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भकाल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेण्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सेकेण्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सेकेण्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपयुक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमानं च युतं भुजाभ्याम् ॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभवतनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो, तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्ण पक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द करण" से जानें।

अथ प्रसूतिलग्नविचारः

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्रान्न भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।-३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल, छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन से बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य-नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैर्ऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया छींक भी किया, दीर्घकेश, घरके पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक दीर्घवर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया. और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला, भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, २ स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों [illegible] शान्तिहवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय
रविस्थान में दीप कहीं शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैर्ऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादिविचारः

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दो०—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो, तो बहुत ही कम तेल कहना। सो०-तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और [illegible] लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडन्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो तो वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह। वाम कण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांच भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

बालारिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशीजो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, बेगि ताहि यमलीन।

बसे चन्द्रमा द्वादसै अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लनाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसिंह अज, दशम भानु कुज बास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस। पापग्रहयुत लग्नपति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसे कारागार।

जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीव (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्क षट बस विलव भानु॥

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रजि कहि दून।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय॥ केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमलजन्मयोगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हो तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिनका लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिए किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातःसूर्योदय से पहिले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे,। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे तब कष्ट को मिटाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ट्या भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह घड़ियां नन्दा, भद्रा जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटयादि मान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जानो ।

तीस का यन्त्र

१६।	५।	८
२।	१०।	१८
१२।	१४।	४

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	शूरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु	८	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	१०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिवान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११	धनी	धनी	धनो	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	१२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	२	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुत
पति	७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोक
कर्म	१०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
लाभ	११	सधना	गुणज्ञा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथमातृसुखनाशयोगः—(१) पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो ; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाशयोगः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाशयोगाः— भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

सन्तानसुखनाशयोग

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ।

रोगिणी स्त्रीयोगा :—शुक्र और सूर्य सप्तम पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पाँचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल । जिनके बुध भृगु राहु संग सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज ।

जारजयोग :—भानु चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।५।८ स्थान में [illegible] हो, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । [illegible] तो कार्तिक शात ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कर्म	१० सुकर्मा	धर्मजा	कुपुत्रा	सत्कर्म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
लाभ	११ सम्पन्ना	गुणजा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामि दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल हैं भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु ॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच ॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर ॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेछाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहें पति को तजे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करि है भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पाप ग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल बृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ॥

वैधव्यविषकन्यायोगा :—चौ० रविवार द्वितीया, जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार ॥ साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय ॥४॥ जन्म लग्न द्वैशुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्यविषकन्याभंगयोगाः—जन्म लग्नया चन्द्र तें शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादियोगाः—जे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई-केन्द्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवें धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षटवर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई। ऐसे योग जन्म सुकुमारी ॥ रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूर युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचारः—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

स्त्री आदि के लिए अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्मे तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कातिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखलजन्मफल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चाँदी, सोना, ताँबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शांति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवे में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९ में धनी, १० वें में सुख, ११ वें में सुख, १२ वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते है कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुख	कण्ठे	हृदये	बाह्वाः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वाः	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घड़ी
पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला	दयाव	कामिनी	मातना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वसुरहानि	२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः ॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी । आश्लेषा । मघा । ज्येष्ठा । मूल । रेवती

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, त्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	"	मातृनाश	३	"	मातृनाश
३	"	धननाश	२	"	धननाश
४	"	शान्ति से सुख	१	"	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मु.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. माग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पताले	भूमौ	स्वर्ग
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृती। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने [illegible] कुलं सर्वं तस्मात् कर्तीत शान्तिकम्।

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निर्भृतेन जलेन हि॥
बालकम्बापितृस्नान विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम्॥
विरुद्धावयवे मूल विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेमीसुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये०	मू० श्ले०	रे० अश्वि०	फल
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापादफलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों

कृष्ण चतुर्दशी जन्मफलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुलहानि	कुलनष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जानें, अशुभ हो तो शान्ति करें। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होता है। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों, कुहू—जिसमें चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि; वैधृति में [illegible] हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, व्याधि [illegible]

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

बालकष्टावली

प्रत्येक मंत्र को २१ बार पढ़े और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे।

किस समय कौन	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजामार्जनमन्त्र	धूप
पूतना ग्रहण करती है?						राई, खस, आक के फल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गोघृत।
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, खेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, श्वेतभात, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ४ आटे के सतिये,	५ पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्चरुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥ ॐ नमश्चामुण्डाय विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टा ग्रहां गच्छन्त्वत स्थानद्र दाज्ञायांस्वाहा।	
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना, संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता।	एक सेर चावल का आटा	कपूर, लोबान, १० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलके आटे के सतिये १०, रक्तचन्दन, रक्त-पुष्प, श्वेतध्वजादीपक १०,	भात, १ सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम में चौरास्ते पर रखना	सुनन्दनाविधानोक्त	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हडफूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावल का आटा	गेहूँ के आटे के सतिये १०।	१ सेर लालभात, आधेसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन, गोशृंग सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५ दीपक मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात १सेर, आटे के पूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।		
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंचरक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्ड सर्वारिचण्डिके ठः ठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हडफूटन, हंसना, कभी२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, एक पहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा।	भात, ७ पूड़ियाँ, सायंकाल पश्चिम में चौरस्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झन्डी, ५ दीपक।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चन्दन, पुष्प ५, दीपक५, रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य, मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलि मादाय हन्हन्हुं फट्स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में खेती	ज्वर, हडफूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प २५, दीपक २५, सफेद झण्डी २५, आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७पूड़े, सुहाली ७ सायं को प्रातः दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐनमोनारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहनशोषय २ मर्दय२ शोषय २ हूं३ हन २ दुष्टानां ह्लं ह्लं फट् स्वाहा।	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा। तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिंगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः।
वस्त्रा तैर्गुग्गुलधूपदीपै र्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक्। पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं धनञ्च॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम् होमद्रव्यम् दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जप-संख्या
अश्विनी (दस्त्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भङ्ग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध. गुग्गुलधूपघृतदीप मोदक गुड़ नैवेद्य	कमलपुष्प घृत- गुडौदन खण्ड क्षीर यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐअश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥१॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दिरोग।	अगरगंध धूप घृतदीप नैवेद्य	करवीरपुष्प घृतगुग्गुल कृसरान्न गडौदन (खिचड़ी)	घृतमधु गोमहिषीघृत तिलाक्षत शर्करा छायापात्र ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा-सवितामध्वानक्तु। पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोऽसि। ॐयमाय नमः।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम.	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प धूप घृतदीपतिलमाषान्नबडाधीकानैवेद्य	घृतगुग्गुल पायस तिल घृतयव	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। ॐअग्नये नमः॥३॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीड़ाकुक्षि शूरशिरःपीड़ा प्रलाप	श्वेतचंदनगंधकमलपुष्प धूप घृतदीपपायस नैवेद्य	दशांग- शाल्यान्न यव क्षीर	मध्वाज्यक्षौद्र तिलाज्य सप्तधान्य कृष्णगोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः। सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च-योनिमसतश्च विव्वः। ॐब्रह्मणे नमः॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीड़ा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध. धूप घृतदीपपायस नैवेद्य	कमलपुष्प दशांग अपूपमध्वोदन शर्करा शाल्य	दधि दधिपायस सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐइमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यविषएषवोऽभीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा। ॐचन्द्रमसे नमः॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेत चंदनगंध धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	सौरभपुष्पदशांग मध्वाज्य	दध्योदन घृतमधु कृष्णवृषभकृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐरुद्रायनमः॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदितिः)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्धधूपघृतदीप पीतवर्णान्न	साज्य- घृत घृतावत पीततण्डुल तण्डुल नैवेद्य	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐअदितिरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वदेवा अदितिःपंचजना अदिति जातमदितिजनित्वम्। ॐअदितये नमः॥७॥	१० हजार
४ (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुपार-मूलम्	ज्वर शूल महाकुंकुमगन्ध कष्ट	कमलपुष्प धूपघृतदीपघृतपायसशर्करा नैवैद्य	घृतगुग्गुल- समण्डक घृत मोदक पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐबृहस्पतेअदितिर्यज्ञहर्दिद्युमद्विभातिक्रतुम-ज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजातदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। [illegible]	१० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वाङ्गपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत हवि गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य दध्योदन	शर्करा संवत्साकृष्णागौ घृत छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीममु येअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्र पीड़ा तथा शिर पीड़ा	श्वेतचन्दनगन्ध चम्पकपुष्प घृत सतिलाज्य गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न दुग्धान्न	तिलाज्य सवस्त्रतिलमाष तण्डुल दान ब्राह्मणभोजन	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमः अन्नक्षपितरोमोमदन्तपितरोऽतीतृपन्नपि पितरः पितरःसुन्धध्वम्। ॐपितृभ्योनमः।	१०ह०
पू. भा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वर शिरपीड़ा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालती पुष्प घृत घृतौदन बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन पायस मोदक नैवेद्य	प्रियंगु पित्तलयवमाषान्न केगनी स्वर्णगोदान भोजन तिल	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवादन्न० भगप्रणोजनगो गभिरश्वर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ ॐ भगायनमः ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल शिरशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा तिलाज्य सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न शाल्यन्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐ देव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा।मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रम्। ॐ अर्यम्णे नमः ॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा उरु शूल सर्वाङ्ग पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृत नैवेद्य	मिष्टान्न दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्रा० भोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम्। वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति। ॐसवित्रे नमः॥	हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक-रोग, अतिकष्ट	केसर अगरगन्ध विचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गलधूपघृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न तिलाज्यतिलगुड़विचित्र वृ. घृत तण्डुल	प. छा. पा. ब्रा. भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रयमक्षागौनवियोदधुः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥	१० हजार
स्वाती. (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगन्धदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्यस्वर्ण रक्तधेनुदान यव पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान सोमपीतये॥ ॐवायवे नमः ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नी)	१५	०	४	१३	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूल सर्वाङ्गपीड़ा	चन्दनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु सहवि घृत धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	आज्य रक्तपीतवस्त्र कृ. वृ. चित्रान्न पायस	छायापा. दा. ब्रा. भो.	ॐइन्द्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् अस्यपात धियाषिता॥ ॐइन्द्राग्निभ्यां नमः॥	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिरपीड़ा	केसरगन्ध कमलपुष्प चन्दन धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य गुड़ माषान्न यवाज्य	स्वर्णगोछाया पात्र दान ब्रा० भोजन	ॐनमोमित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महादेवाय तदृतं सपर्यतं दूरदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत॥ ॐमित्राय नमः॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५५	९	६	४	अपामार्ग मूलम्	व्याकुलता पित्त रोगकम्पन	श्वेतचन्दन गंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन तण्डुलतिल सुपुष्प घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्रा० भोजन	ॐत्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रं हवेहवे सुहवंशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ शक्राय नमः॥१८॥	१० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार मूलम्	उदरतथामुख रोगसन्नि-मय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृत-सहवि कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	घृत स्वर्ण व. कु. गौछा माषान्न कन्दमल पात्र दा. कु. पू. वि	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वीपुरीष्यमग्निं स्वेयौनाव ५ भारुखा। ताविश्वदेवऋतुभिः संवदानः प्रजा-हजार पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतये नमः॥१९॥
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पासि मूलम	शिरपीड़ाकम्पन महाकष्ट	श्वेतचंदन गंधकमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप दीप घृत पायस नैवेद्य	घृतपायस तिलतण्डुल स्वर्णाव. ति.त.ज. भिष्ठान्न घृत कु. गो. दा. ब्रा. भो.	ॐअपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः । अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्यं सुव ॥ ॐअद्भ्योनमः ॥२०॥ ५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवाः)	३०	२४	२६	१६	कार्पासि मूलम्	उरुशल कटि-पीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दन गन्धकमलपुष्प घृतगग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य आमान्नस्वर्णदान तिलाज्य यव ब्राह्मण भोजन	ॐविश्वेदेवाः शृणुतम हवंयम अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयध्वम्। ॐविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥ १० हजार
श्रवणः (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वाङ्ग पीड़ात्रि. भय	श्वेतचन्दनगन्धमालतीपुष्पकर्पूरगु. धूप घृतदीपषड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि तिलाज्य स्वर्णगोछायापा. पायस यवं ब्राह्मण भोजन	ॐविष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि १० विष्णवे त्वा। ॐविष्णवे नमः॥२२॥ हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृङ्गराज मूलम्	मूत्रकच्छ ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दन गन्ध कमलपुष्प गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. तिलाज्य छत्रोपानत्अश्वस्व पूपतिपि पायस गो. दा. ब्रा. भो.	ॐवसोःपवित्रमसि शतधारं वसोःपवित्रमसि १० सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु हजार वसोःपवित्रणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥वसुभ्योनमः
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल मूलम्	सन्नि पातभय वातज्वर कष्ट	केसर अगरगन्ध कमलपुष्प कर्पूर चं. घृत. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	आज्य स्वर्णतिलान्नघट चित्रान्न दध्योदन छायापात्र गोदान कु. पू. ब्रा. भो.	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसियसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसि वरुणस्य-ऋतसदनमसि वरूणस्यऋतसदनमासीद ॐवरुणाय नमः ॥२४॥ १० हजार
पू. भा. (अजैकपाः)	०	१२	२१	११	भृङ्गराज मूलम्	शरीरपीड़ार्ति व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगन्ध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायस नैवेद्य	दध्योदन क्षीराज्य स्वर्णरजतअन्नश्वेत शर्करा छ. पात्र. दान ब्रा. भोजन	ॐउतनो हिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी- १० समुद्रः। विश्वेदेवाः ऋतावधीनहुवानः हजार स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः।
उ. भा. (अहिर्बुध्न्यः)	१०	२	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चन्दनकर्पूरगन्ध कमलपुष्प विल्व गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य तिलाज्य स्वर्ण रजत तिल मुद्गमाष यव कृष्णवस्त्र दान ब्रा. भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिंसीः। निवर्तयाम्यायषेऽ १० न्नाद्याय प्रजननायसयस्योपायसुप्रजास्त्वा- हजार यसुवीर्याय। ॐअहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ मूलम	चित्तभ्रम उ ज्वर वा.पि.	रक्तचन्दनगंधमन्दारपुष्प घृतगुग्गुल	सहवि तिलाज्य रजतवस्त्रपत्तल	ॐपूषन् तवव्रते वयंन रिष्येम कदाचन

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पर्वा ३ विशा. ३ ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान, तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	उ. फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०–१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयंत्र

ॐ

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यन्त्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिखकर आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान	
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि	उत्तमान्नभो.

बारकष्टावलीयन्त्रम्

बा.	बारेश	क. दि.	बलि व दान	
सू.	रुद्र	५	पायसबलि	सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि	चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि	भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि	बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि	गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि	शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि	शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के सिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहगोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः

													जपनीय मन्त्राः	समय-समिधः	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहुं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्यायनमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेत तैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रायनमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	प्र. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	प्र. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	सन्ध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुश
मन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	ॐ मन्थेशमंत्रः	मन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि---(यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचंदन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	बमनी	गजदन्त	गजदन्त
खश	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लाँ		
रक्तकनेर								

शनिविचार:—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधिं बन्धुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं, लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ वृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादो द्वितीये (२) शनिः, नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्पशून्नीडयेत् । हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी२. कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ५, धान्य (तंदुल) ६, कंकनी७

अष्टागन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कर्पूर, दोनों चन्दन ।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा [illegible] की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम, तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देश-भेद से दशानिर्णय ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा । कृष्णे चन्द्रस्य होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता ॥
अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थ—दश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, युक्तप्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है, किन्तु विशेष निर्णय में तथा समय के फल विकास कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी । कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना । अन्यथा योगिनी दशा में विचार करना ।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे । यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो । ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे । ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे । २।८अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

॥ श्रीरामायणादि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि लाभप्रद, २४ तक मृत्यु, राजभयप्रद, २७ तक मोक्षप्रद होता है । शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देखलीजिये

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधचक्रम्

ग्रहः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनलाभ	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी.	पत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों को अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. बु.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. मं. चं	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	म. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	० ०	बु.	चं	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

यह यन्त्र शनिवार को भोजपत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

शनि यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

अथग्रहाणामेकराशेर्भोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहाः
मा. १	दि.२।	मा१॥	मा१	मा.१२	मा.१	मा३०	मा.१८	एकर्क्षभोगः
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
दि.५	घ. ३	दि. ८	दि.७	मा.१	दि.७	मा.	मा.६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्टयर्थं धारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालः	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
ताम्रम्	रौप्यम्	ताम्रम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	लाजवर्दः	लाजवर्दः

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्लाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैयाकी दुःखद पीड़ा नहीं होती। अथ शनैश्चरपादविचारः—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनि रवे रुद्रसुवर्णहानिः) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना, फल-हानि॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना, फल-शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना, फल-कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना, फल-शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्र शुभञ्च) अथ सुवर्णपादफलम्—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजनैर्विरोधम्॥ अथ रजतपादफलं—व्यापारसूत्रं धनधान्यसम्पन्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मङ्गलं वै यदि रौप्यपादे॥२२॥ अथ ताम्रपादफलं—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादः॥३॥ अथ लोहपादफलं शरीरपीड़ां रुधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां पशुपुत्रपीड़ां। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम्॥४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध	प. शुक्र	आ. चन्द्र
पन्ना	हीरा	मोती
उ. बृ.	मध्येसू	दे. भौम
पुखराज	मणि	मूंगा
वा. केतु	प. शनि	नै. रा.
वैडूर्य	नीलम	गोमेद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनानि
कृ. उ. फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ. पू.फा. पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. बु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ. ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु.	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्त्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पश	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊपर	ऊपर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
बन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें. शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करे। पल १४५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चार गुणी की हुई इष्ट घड़ी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहे उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घड़ी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना, शेष राशि अंश बचे उन में स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि में हो तो ज्यों के त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान-पूर्वक देखकर कापी में लिख रखें, यदि इन दोनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्र में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हो तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढ़ा से पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा., उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाती और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें विचारपूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहें॥

(२) माघशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादल से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इन दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी के बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अतिवृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास का निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खैंच जरूरी होती है।

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता। रोहिणी में तपे, कृतिका में छींटे बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली के छींटे न हों, मृगशीर्ष तपता हो तो वर्षा काल में खैंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है।

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है अतः कृत्तिका में सूर्य में बूंदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है॥

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिए, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खैंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खैंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिए, रोहिणी में बूंदा-बांदी होने पर वर्षा की खैंच जरूरी होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु अच्छी होने पर भी इसके खैंच का अवसर तो पहिले होता ही है।

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है. यदि वायु न चले तो वर्षा देर में आती है और कम भी होती है॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।
एक सूद्र दो बैस असार। तीनि बिप्र औ छत्री चार।
सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ बिचार॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर॥
तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये॥
बैस पाँच षट् स्वान, एक बैल यक बकरा जान॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करौ पयान।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दरि ते दूरि निकट ते निकट, समझौ फल भरपूर॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे। जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य के प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि वर्षा अधिक हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसम्बर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जुलाई																		जु.													
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई																		जु.													
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त																		अ.													
सितम्बर	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितम्बर																		सि.													
अक्टूबर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर																				न.											
नवम्बर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञानसारिणी से वर्षा जानने की रीति—दिसम्बर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन-जिन तारीख में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चारों मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षाऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारिणी यह बता देगी कि वर्षाऋतु में वहाँ २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। इसमें ज्योतिषशास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन २ तारीखों में शतभिषा, श्लेषा, मघा, स्वाती, आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और इन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारिणी में आकर पड़ेंगी उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जल वाले माने जाते हैं। इसी प्रकार शीतकाल में जिन २ तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पाँच नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो तो आगे वर्षाऋतु में जिन महीनों की जो तारीख सारिणी में पड़ेगी उनमें कई दिनों की वर्षा की झड़ी लगेगी। वर्षाज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा को तारीखवार टाइम सहित नोट करके देखने से

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़कर अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब, बन वा शिव-मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यन्त्र बनाकर उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजा करे। (मेघों के नाम और आवाहन मन्त्र) ॐ ह्रीं मेघदूतायनमः आगच्छ२ स्वाहा॥१॥ ओं ह्रीं मेघदूती कमलोदभवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रींमहानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामशृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ२ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्द-राजाय दक्षिणशृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभिमात्र जलमें खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मन्त्र को १०००-१००० बार जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मन्त्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे। अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग—"ॐनमो हनवन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सतखण्ड जापसी"। अति वर्षा के समय इस मन्त्र का ७—७बार जाप करके तीन बार तालो बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावे। इसी मन्त्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा करदे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले॥

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्र—ॐ तत्स-वितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं धियो योनः प्रचोदयात् उर्वा-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहिला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे [1]नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	आ	ओ	वे	उ	कु	के	हु	डी	हो	डा	मो	टे	पू	पे	रू	तो	ना	नी	ये	भू	भे	जू	खा	गा	गा	सि	दू	दे	थ	दी	चू	चे	चो	ला
द्वितीय च०	चे	लू	०	वा	वी	वे	घ	को	हे	डू	मी	टा	०	टो	प	पो	रे	तू	नी	वा	यो	ध	०	जे	खू	गो	सा	सी	थ	दो	झ	दा	चे	चो	ला	ली
तृतीय च०	चो	ले	०	बी	०	वो	ङ	ह	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रो	ते	तू	यी	भा	फ	०	जो	खे	खो	सी	दा	झ	चि	ञ	दी	चे	चो	ला	लो
चतुर्थ च०	ला	लो	०	वू	व	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	रो	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक्[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते। चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शङ्कितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्योः प्रधानता निर्णीयत–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गवृद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहवटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः— वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वाँ भाग जोड़कर उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ कर जो शेष रहें उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधानकल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये। १।) रु०।

नक्षत्रविषघटीज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिए। क्योंकि 'नक्षत्रगुणज्ञानचक्र' में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनको स्पष्ट ऐसे करना, यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिनके सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्रके ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है। इनको भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण---रवि के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देनेसे लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघुभ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उसपर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्य राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ० शे। द×मं.=यो. शे.—यो.=शे.) शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(३) लग्नेश तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना— (१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इसके साथ वाला ग्रह, सुखस्थ ग्रह, चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह, इनमें जो माता के लिए विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट जानना।

टिप्पणी—(१) जर्जर्जः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कपसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं धालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा-ऋषभदवः, ऋतकरामः, लतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोको विवाहः षोडशी क्रिया॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and Gangotri Foundation by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फल सं० २०१२ वि०

राशि	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	लाभ अच्छा, जमीन जायदाद की चिन्ता, उदर विकार, शुभ यात्रा, धर्म में व्यय।	यात्रा कष्ट, नेत्र या मस्तक में पीड़ा, कारोबार की चिन्ता, वृथा व्यय।	पित्त या रुधिर विकार, लाभ अच्छा, राजपक्ष शुभ, बन्धु विरोध।	उदर विकार, कारोबार ठीक, व्यय विशेष, मित्र समागम, शुभ विचार।	बन्धु चिन्ता, शत्रु भय, लाभ अच्छा, जोखम के कामों से दूर रहना ठीक।	वातविकार, उदर में खराबी, प्रिय वस्तु का लाभ, बन्धु-कष्ट, कारोबार ठीक।
वृष	बन्धु विरोध, तीर्थ यात्रा, सन्त समागम, कारोबार मध्यम, सन्ततिचिन्ता।	लाभ होते हुए भी हाथ तंग, नए उद्योग का विचार, मान-वृद्धि, बन्धु कष्ट।	उदर विकार, बन्धुओं के कारण व्यय, नित्य नियम में बाधा, लाभ अच्छा।	पित्त पीड़ा, कोष वृद्धि, जायदाद की चिन्ता, बन्धु-कष्ट, कारोबार ठीक।	सोचा हुआ काम बने, मनोरञ्जन के कामों में दिल रहे, खर्च अधिक।	कोष में कमी, व्यय ज्यादा, शत्रु का भय, प्रभु चिन्तन में वृत्ति।
मिथुन	लाभ व्यय सम, शुभ में खर्च, सुखद यात्रा, सन्तति चिन्ता, धर्म में प्रवृत्ति।	व्यवसाय की अड़चन दूर, व्यय विशेष, स्वास्थ्य खराब, पुत्रादि से संतोष।	उत्साह वृद्धि, लाभ कम, शत्रु हानि, पुत्र-स्त्री-चिन्ता, जल या अग्नि से भय।	कष्ट प्रद यात्रा, रोग भय, धर्म में रुचि, सन्तान सुख, लाभ व्यय बराबर।	अचानक लाभ, शुभ में प्रवृत्ति, शुभ सन्देश मिलने से खुशी, स्वास्थ्य खराब।	उन्नति में रुकावट, पारिवारिक सुख ठीक, बोलवानी के कारण कष्ट, लाभ कम।
कर्क	वायुविकार, बन्धु वर्ग के कारण व्यय, अचानक यात्रा, कारोबार ठीक।	कार्य सफल, घरेलू जीवन सन्तोषप्रद, स्वास्थ्य में गड़बड़, राज्य भय।	स्त्री या सन्तान की चिन्ता, व्यवसाय वृद्धि की योजना, स्वास्थ्य मध्यम, व्यय अधिक।	धर्म लाभ, वायु विकार, बन्धु सुख, कारोबार मध्यम, चित्त उदास।	रोजगार का नया सिलसिला जमे, थोड़े परिश्रम से ही सोचा हुआ काम बने, रोग भय।	शत्रु भय, वृथा यात्रा, गृहादि पर व्यय, राज पक्ष शुभ, वायुविकार।
सिंह	कारोबार ठीक, नए काम का विचार, वायु विकार, स्त्री सुख, मित्र वियोग।	शत्रुभय, स्त्री-पुत्र से सन्तोष, कारोबार मध्यम, स्वास्थ्य ठीक व्यय अधिक।	चित्त अशान्त, अचानक यात्रा, शत्रु हानि, विवाद में विजय, लाभ अच्छा।	स्वास्थ्य ठीक, सन्तान सुख, शुभ में व्यय, सन्त समागम, लाभ मध्यम।	आशा पूर्ण होने की सम्भावना, समीप की यात्रा, स्त्री सुख, यश लाभ, पशु भय।	मानसिक अशान्ति, अपने लोगों से ही विश्वास घात, लाभ मध्यम, राज पक्ष शुभ।
कन्या	चित्त भ्रम, नई योजना की सूझ, बन्धु सुख, शुभ यात्रा, धर्म लाभ, पशु लाभ।	स्त्री-पुत्र चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, व्यर्थ की दौड़ धूप, मित्र वियोग, लाभ अच्छा।	यात्रा में कष्ट, लाभ साधारण, बुद्धि भ्रम, धर्म में रुचि, सन्त समागम।	स्त्री या पुत्र की ओर से चिन्ता, कारोबार ठीक, शुभ में व्यय, राज्य पक्ष शुभ।	आर्थिक संकोच, लाभ कम, उद्विग्नता बढ़े, शत्रु भय, स्त्री-सन्तति से सुख।	पारिवारिक तथा शारीरिक कष्ट, कारोबार ठीक, सन्तान की ओर से सन्तोष।
तुला	शत्रु भय, लाभ कम, व्यय अधिक, सिर या मस्तक में पीड़ा, यात्रा चिन्ता।	रोग भय, व्यवसाय में उथल पुथल, बन्धु सुख, सत्पुरुष समागम।	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, शत्रु वृद्धि, वृथा यात्रा, विवाद भय।	लाभ हो परन्तु खर्च ज्यादा, बन्धु कष्ट, शत्रु भय, जल या अग्नि से डर।	बनते हुए कार्यों में विघ्न, मासान्त में लाभ, पुत्र व मित्र से सन्तोष, बुद्धि भ्रम।	वृथा व्यय, सहयोगियों से प्रतिद्वन्द्विता, व्यवसाय में अनेक अड़चनें।
वृश्चि.	शुभ में खर्च, मित्र मिलाप, धर्म में प्रवृत्ति, कुल वृद्धि, कारोबार अच्छा।	जमीन जायदाद की चिन्ता, कारोबार में लाभ, किसी जन्तु से भय, सन्तान कष्ट।	उत्साह वृद्धि, विवाद में जय, लाभ मध्यम, प्रियजन से खुशी, पशु लाभ।	गृह भूमि आदि की चिन्ता, स्त्री के कारण, कारोबार ठीक, देवयजन में वृत्ति।	कार्य सफल, स्थायी कारोबार में उन्नति के आसार, जल या आग से भय।	रोग या चोट का डर, लाभ के साधनों में वृद्धि, शुभ में व्यय, राजपक्ष शुभ।
धनु	शोक चिन्ता, स्त्री-सन्तान की ओर से कष्ट, कारोबार मध्यम, पशु भय।	बन्धु सुख, अपरिचित से भय, लाभ कम, व्यवसाय की चिन्ता, पशु पीड़ा।	बन्धु सुख, यात्रा में कष्ट, कारोबार में विवाद, कोष में कमी, सन्तति चिन्ता।	लाभ मध्यम, शत्रु नाश, मित्र वियोग, अचानक चिन्ता, पशु पीड़ा, धर्म में रुचि।	स्त्री चिन्ता, अचानक अच्छा लाभ, राज पक्ष से चिन्ता, कार्य में रुकावट।	मित्र-बन्धु यथाचित्त सहयोग न दें, लाभ कम, काम में विघ्न, पशु पीड़ा।
मकर	लाभ अच्छा, धर्म में रुचि, महापुरुषों से मिलाप, जल या अग्निभय।	कुसंगति से हानि, गृह क्लेश, स्थानान्तर या कार्यान्तर का विचार।	कारोबार की चिन्ता, स्वास्थ्य मध्यम, पशु भय, वृथा विवाद, व्यय अधिक।	वाजिब खर्च करते हुए भी तंगी, कार्यान्तर का विचार, वायुविकार।	पशु पीड़ा, लाभ अच्छा, कारोबार मध्यम, नीच से विवाद, वृथा खर्च।	स्वास्थ्य मध्यम, लाभ अच्छा, राजपक्ष की ओर से शुभ आशा।
कुम्भ	कारोबार की चिन्ता, घरेलू झंझट, अकारण झगड़े, सन्त-समागम।	वृथा खर्च, वाहन भय, लाभ का मौका बने, अकस्मात् कष्ट-चिन्ता।	अचानक लाभ, पुत्र-स्त्री द्वारा व्यय, दौड़ धूप, बन्धु-कष्ट, कुल वृद्धि।	आत्मीय जनों की तरफ से चिन्ता, जल या अग्नि से भय, अकस्मात लाभ।	स्वास्थ्य में गड़बड़ी, कारोबार व सन्तान की चिन्ता, लाभ मध्यम, गृह कलह।	चित्त उच्चाट, धर्म में रुचि, कारोबार कुछ ठीक, सेवकों से वैमनस्य।
मीन	आशा से अधिक लाभ, प्रिय मिलाप, लाभ यात्रा, स्वास्थ्य	पित्त पीड़ा, बन्धु कष्ट, नए कार्य का विचार, शुभ में	शुभ में प्रवृत्ति, मस्तक या	लाभ की योजना का विचार	शुभ में व्यय, स्त्री पुत्र चिन्ता,	कारोबार में अनेक उलझनें,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का [illegible]

राशि	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	यशवृद्धि, लाभ अच्छा, शुभ में प्रवृत्ति, अकस्मात् किसी से शत्रुता, स्त्री सुख ।	लेनदेन की चिन्ता, कारोबार ठीक, कार्य सिद्धि, वाहन भय ।	स्थायी सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद, मित्र से द्वेष, स्त्री-सुख, लाभ अच्छा, रोग भय ।	लाभ होकर हानि का भय, नए कारोबार का विचार, राजपक्ष मध्यम ।	शत्रुभय, सन्तति सुख, लाभ अच्छा, वायुविकार यात्रा में कष्ट ।	कार्यवश अचानक यात्रा स्वास्थ्य में विकार, मानवृद्धि कारोबार ठीक ।
वृष	पारिवारिक जनों में मतभेद, स्वास्थ्य मध्यम, बन्धु चिन्ता, सन्तति-सुख व लाभ अच्छा ।	लाभ की नई सूझ, पराक्रम वृद्धि, शत्रु या रोग भय, कारोबार पूर्ववत् ।	थोड़े खर्च से कार्य सिद्धि, धर्म में अरुचि, शुभ संदेश मिलने से प्रसन्नता ।	शत्रु भय, बन्धु विवाद, लाभ अच्छा, वायु-कफ का विकार, सन्तति सुख ।	कारोबार ठीक, शुभ में वृत्ति, सुखद यात्रा, सिर या उदर पीड़ा ।	उत्साह वृद्धि, कारोबार में शनैः शनैः तरक्की, मित्र-मिलाप, पशु लाभ, जीववृद्धि ।
मिथुन	खर्च अधिक, बन्धु मिलाप, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक होते हुए भी तंगी ।	यात्रा में कष्ट, कोष में कमी, स्त्री पुत्र से सन्तोष, प्रिय वियोग, मानवृद्धि ।	कमर तोड़ खर्च, लाभ में बाधा, कारोबार की चिन्ता, धर्म में रुचि, पशु भय ।	सहयोगी से हैरानी, कारोबार में उलझनें, लाभ में रुकावट, पशु की चिन्ता ।	गृह कलह, लाभ होते हुए भी खर्च पूरा न हो, सुखद यात्रा ।	वृथा विवाद, नए कार्य का श्री गणेश, वायु विकार, प्रिय व्यक्ति से मन खिन्न ।
कर्क	मास के पूर्वार्ध में रोग भय, बन्धु सुख, कारोबार मध्यम पशुपीड़ा, दुःस्वप्न ।	निजी व्यक्ति से कष्ट, उन्नति में बाधा, कारोबार साधारण, रोगभय ।	परिश्रम करने पर भी लाभ कम, स्वास्थ्य विकार, राजपक्ष शुभ, स्त्री पुत्र चिन्ता ।	शुभ कृत्यों की ओर प्रवृत्ति, लाभ मध्यम, स्वास्थ्य में गड़बड़, बन्धु मिलाप ।	औषधियों पर व्यय, शत्रुभय, यात्रा कष्ट, कार्यान्तर का विचार ।	व्यवसाय ढीला, विवाद में हानि, किसी के सहयोग से लाभ, धर्म में रुचि ।
सिंह	लाभ अच्छा, मस्तक या उदर में विकार, राजद्वारी मामलों में जय, सन्तति सुख ।	प्रिय जन से वैमनस्य, कारोबार में उलझन, कमर में पीड़ा, लाभ मध्यम ।	समीप की यात्रा, सिर में पीड़ा बन्धु, सुख, कारोबार में लाभ, राजपक्ष में जय ।	अभीष्ट कार्य सिद्धि में विलम्ब, कारोबार मध्यम, मान वृद्धि, गुप्त-शत्रु भय ।	अचानक हानि, बन्धु चिन्ता, वंश वृद्धि, कारोबार में कुछ उन्नति, वायु विकार ।	अभीष्ट कार्य में रुकावट, बन्धु सुख, वृथा दौड़ धूप लाभ मध्यम, स्त्री सुख ।
कन्या	वृथा व्यय, स्वास्थ्य ठीक, गुप्त शत्रुभय, समीप की यात्रा, धर्म में रुचि, उत्साह वृद्धि ।	कोष वृद्धि, पुत्रादि की चिन्ता कारोबार ठीक, स्थायी कामों में खर्च, व्यर्थ विवाद ।	शत्रु के कारण काम में रुकावट, स्वास्थ्य में सुधार, गुप्त चिन्ता ।	बुद्धि भ्रम, मास के उत्तरार्ध में लाभ, मित्र से संतोष, महापुरुषों से सम्पर्क ।	लाभ अच्छा, सुख वृद्धि, स्थायी कार्य में खर्च, रोग तथा चोर का भय, दुःस्वप्न ।	आर्थिक सुधार, पराक्रम-वृद्धि, पुत्रादि की चिन्ता, सिर या पैर में कष्ट ।
तुला	लाभ से व्यय अधिक, गृह कलह से खिन्नता, स्वास्थ्य खराब, मित्र से सन्तोष ।	मित्र-बन्धु के विचार से लाभ, नए काम का विचार, शत्रु भय, स्वास्थ्य मध्यम ।	स्वास्थ्य ठीक, धन की कमी से कार्य के, मास के अन्त में लाभ ।	व्यवसाय में हानि हो, नया काम करने का विचार, मित्र द्वारा लाभ हो ।	शोक चिन्ता, आर्थिक कठिनाई से हैरानी, किसी के सहयोग से कुछ लाभ ।	कहीं से कुछ लाभ, वायु विकार, दुःस्वप्न, शुभ सन्देश, पशु चिन्ता ।
वृश्चिक	उत्साह वृद्धि, प्रियजनों से सुख, जायदाद की चिन्ता, धर्म में अरुचि ।	शुभ कार्य में व्यय, चोट या रोग का भय, लाभ कम, व्यर्थ यात्रा ।	सोचा हुआ आर्थिक लाभ हो, निर्मूल विवाद से खेद राज्य में विजय से खुशी ।	शत्रु नाश, बन्धु चिन्ता, स्वास्थ्य ठीक, अकस्मात् अच्छा लाभ, उन्नति का मौका मिले ।	कारोबार में लाभ, गुप्त-शत्रु-भय, धर्म में वृत्ति, महापुरुषों के दर्शन ।	उत्साह वृद्धि, अचानक अच्छा लाभ, राज्य कार्यकर्त्ताओं से मेल, अशुभ विचार ।
धनु	बन्धुओं का सुख ठीक, लाभ मध्यम, कारोबार में किसी की सहायता, मित्र मिलाप ।	अपमान का भय, ऋण लेने का कारण बने, गृह क्लेश, छाती या सिर में पीड़ा ।	कारोबार में कुछ लाभ, शत्रु भय, बन्धु सुख, शुभ कार्य की चिन्ता, सन्तति कष्ट ।	गत मास की अपेक्षा यह मास लाभ प्रद है, कुटुम्ब में वृद्धि, धर्म में बाधा ।	कारोबार की चिन्ता, शत्रु-भय, अचानक लाभ, वृथा दौड़ धूप, स्वास्थ्य ठीक ।	व्यय अधिक, नए कार्य का विचार, बन्धु सुख, यात्रासुख, अच्छा खान पान ।
मकर	शत्रुओं से सावधान, व्यर्थ व्यय, वायु विकार, नए कार्यारम्भ से हानि ।	व्यापार में उलझन, पुत्र-स्त्री द्वारा व्यय, मित्र से सहायता, विजय की चिन्ता ।	कारोबार में हानि का भय, अपरिचित जन से डर, मित्र की सलाह से लाभ ।	बने बनाए काम में विघ्न, लाभ मध्यम, सेवक या मित्र से विरोध ।	कार्यान्तर का विचार, स्त्री-पुत्र-चिन्ता, धर्म में वृत्ति, किसी की सहायता से लाभ ।	मित्रों से चिन्ता, लाभ होकर भी हाथ न लगे, उदर पीड़ा, लेनदेन का संकट ।
कुम्भ	सन्तति चिन्ता, हृदय में विकार, लाभ मध्यम, विवाद चिन्ता ।	अपरिचित व्यक्ति से भय, कारोबार कुछ ठीक, स्वास्थ्य मध्यम, निष्फल यात्रा ।	व्यवसाय में लाभ कम, नए कार्य का विचार, सिर या छाती में पीड़ा ।	उद्योग में कुछ सफलता, वृथा विवाद, कारोबार की चिन्ता, उन्नति में बाधा ।	कारोबार खराब, सम्पत्ति-सम्बन्धी चिन्ता, साधारण लाभ भोहो, प्रिय जन को कष्ट ।	स्वास्थ्य मध्यम, लाभ की हिस्सेदारी में विवाद, अकस्मात् यात्रा, नवीन मैत्री ।
मीन	शुभ में व्यय, स्त्री सुख, उत्साह वृद्धि, अचानक विवाद से भय, लाभ अच्छा ।	कारोबार ठीक, घरेलू झंझट से हैरानी, कुटुम्ब वृद्धि, वस्त्र लाभ ।	गत मास की अपेक्षा लाभ कम, चिन्तित कार्य की सिद्धि से खुशी, गुप्त चिन्ता ।	शुभ में खर्च, सन्त समागम, पुत्र-स्त्री चिन्ता, लाभ मध्यम निजी जन से अनबन ।	यथा समय अच्छा लाभ, बड़ों से मान, सन्तति चिन्ता, वायु पीड़ा विवाद में विजय ।	अचिन्तित लाभ, बन्धु कष्ट, राजपक्ष शुभ, किसी कार्य की सिद्धि से प्रसन्नता ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥ सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम्। मुकुन्दवल्लभेदेनं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥ अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना। तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्यवयाच्यते ॥४॥ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत्॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारंभ होता है, उस दिन प्रतिघर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगलस्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियाँ शिशु आदि वस्त्र-आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें। प्रातःकाल कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिला कर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शांति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बिमारी नहीं होती)।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्ठान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य

ये चैत्रशुक्लप्रतिपित्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याढ्यतां राज्ञां राजकुले जयो विजयते मन्त्रीफलं बुद्धिदम्। धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इतिसंवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रमवर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन की १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौर मान से वर्ष संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है। ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुदसंख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८ वां कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—**सतयुग**—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् ने चार शेषाशुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारणकर शेषनाग की डोर से दैवदैत्यों द्वारा समुद्र-मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्री वराह जी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्यकपशपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेदों के जानकार तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियाँ पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चंद्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्री वामन, श्री परशुराम और श्री रामचंद्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी कर्त्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएँ त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रिय का राज्य था। विचित्र विमान द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। **द्वापर**—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा-नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण, श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएँ दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र, पितल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप-यज्ञ-देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ संखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चन्द्र-वंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री, परद्रव्य [illegible] तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। **कलियुग**—भाद्रपद कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) है। जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएँ दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कर्नज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान संध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे। शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्णवालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियाँ ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या विक्रय करेगा। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ कारण प्रेम रहेगा। राज व्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रवर्जितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योजितम्। राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः, सायुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथिवी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गगताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणः हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीशाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति ॥ **कलौ गंगायाः स्थितिः**—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदनीं नरपुंगवः ॥ **भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रवाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्षराजादिफलविचार सं० २०१९

श्री विक्रम सं० २०१९, शक संवत् १८८४, श्री कृष्ण जन्म सं० ५१९८, श्री महावीर जैन निर्माण सं० २४८८-८९, ईस्वी सन् १९६२-६३, हिजरी सन् १३८१-८२, फसली सन् १३६९-७० वर्षादि में गुरुमान से प्रभव आदि साठ संवत्सरों से "रुद्र विंशति" का 'राक्षस' नामक संवत्सर है। जिसका फल इस प्रकार है—"स्वस्व-कार्यरताः सर्वे मध्यमस्यार्घवृष्टयः। राक्षसाब्देऽखिला लोका राक्षसा इव निष्कृपाः ॥" अर्थात्—इस वर्ष सब लोग अपने-अपने कार्यों में संलग्न हों। धान्य एवं वृष्टि मध्यम रहें। लोग राक्षसों के समान निर्दय हों। एवं—राक्षसे शुक्रः स्वामी, धान्य संग्रहः कार्यः, चैत्रे कर्कटाः पतन्ति, वैशाखे ज्येष्ठे तैलं महर्घम्, ज्येष्ठे आषाढ़े गुड़ खण्डादिकं द्रव्यं महर्घम्, श्रावणेऽल्प मेघः अन्नमहर्घता, भाद्रपदे महामेघः, अन्न समर्घता, आश्विने समता, कार्तिके रोगातिः, मार्गशीर्षादिषु चतुर्षु मासेषु धान्य समर्घता, राजा सुखी, प्रजा राजमान्या, फाल्गुने समर्घता, वृक्षा नवपल्लवाः, मार्गशीर्षे सुखं सुभिक्षम् ॥

इस वर्ष का राजा गुरु, मन्त्री शुक्र, सस्येश चन्द्र, धान्येश शनि, मेघेश शुक्र, रसेश बुध, नीरसेश चन्द्र, फलेश गुरु, धनेश चन्द्र एवं दुर्गेश शुक्र है। इन सबका फल इस प्रकार है—

राजा गुरु का फल—"गुरौ नृपे वर्षति कामदर्कलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः। यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्व जनेषु वर्तते।"—वर्षा उचित हो। गाय पर्याप्त दूध दें। देश में सर्वत्र सुख शान्ति दीख पड़े।

दूध दें। देशमें सर्वत्र सुख शान्ति दीखापड़े।

मंत्री शुक्र का फल—"भृगु सुते ननु मन्त्रिपदं गते शलभ-मूषककीर वृता धरा। भवति धान्य महर्घता भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम् ॥"—टिड्डी चूहे आदि से खेती को हानि हो। अन्न तेज हो। वर्षा से नदियाँ भरी हुई चलें।

सस्येश चन्द्र का फल—"सस्याधिपे शीत करे प्रजा सुखं मेघः पयोमुञ्चति गोपगोधुक्। देव-द्विजाराधनतत्परानृपाधरा भवेद्धान्य धनौघपूर्णा ॥"—वृष्टि अच्छी हो। शासकवर्ग प्रजाराधन में तत्पर हों। देश धनधान्य से पूर्ण हों।

धान्येश शनि का फल—"निर्बलाः क्षितिभुजो रणादराः सस्यमल्प मतिरोगिणो नराः। नैव वर्षति जलं सुरेश्वरः स्याद्यदान्य काणपः शनैश्चरः ॥"—युद्ध के कारण शासकों की आर्थिक स्थिति दुर्बल हो। अन्न की कमी हो एवं मनुष्य रोगी हों। वर्षा की कमी हो।

मेघेश शुक्र का फल—"भृगुसुतो जलदस्य पतिर्यदा जलमुचो जलदादि विशोभनाः। धन-विधान युता द्विजपालका नृपतयो जनता-सुख दायकाः।"—वर्षा अच्छी हो। शासक प्रजारञ्जन में प्रवृत्त हों।

रसेश बुध का फल—"रसपतौद्विजराजसुते मही सुलभ धान्य घृतादि युता जनाः। प्रमुदिता वरनायक पालिता बहु जलाखिल देश सुरक्षिताः ॥"—धान्य-घी सुलभ हों। वृष्टि अच्छी हो। राष्ट्र सुरक्षित रहे।

नीरसेश चन्द्र का फल—"शुक्ल वर्णादि वस्तूनां भुक्ता रजत-वाससाम्। अर्धवृद्धिः प्रजायेत् शशांके नीरसाधिपे ॥"—सफेद रंग की वस्तुएँ, सोना, चांदी एवं वस्त्रों में अर्धवृद्धि हो।

फलेश गुरु का फल—"सुर गुरुः फल नायकलां गतो गतभया। वनराशि महाद्रुमाः। यजन—याजनकोत्सव-मन्दिरा, श्रुति विचार परा द्विज पूर्वकाः ॥"—वृक्ष अधिक हों। भय मिटे। धर्म की ओर प्रवृत्ति हो। विद्वान् ब्राह्मण वेद विचार में तत्पर रहें।

धनेश चन्द्र का फल—"धनपतिर्मृग लांछन को यदा रसचय क्रय विक्रयतो धनम्। वसन शालि सुगन्ध रसं बहु द्रविण तैल यतं नृप सौख्यदम् ॥"—रस पदार्थों के क्रय विक्रय, एवं वस्त्र, शालि, सुगन्धित तेल, घी में लाभ हो। राजाओं को सुख मिले।

दुर्गेश शुक्र का फल—"नगरदेश विशेष-पतिर्यदा भृगु सुतो बहु सौख्य करो यतः। विनय वाणि जगद्दसमः सुखो नगवने निकटेऽपि चदूरतः।"—वाणिज्य में सुख मिले। देश सुखी हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवमेघों में 'नील' नामक मेघ का फल—वर्षा अच्छी हो। कपासादि की उपज अधिक हो।

द्वादश नागों में नन्दसारी नाग का फल—वर्षा अधिक हो। जनता सुखी रहे।

रोहिणी वास—इस वर्ष रोहिणी का वास तट पर है, अतः वृष्टि अच्छी हो। समय का वास धोबी के घर तथा समय का वाहन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुरुवार होने से घातक है। शनि की दृष्टि उत्तर में है, अतः उत्तरीय प्रदेशों में दुर्भिक्षादि उपद्रवों का भय रहे। इस वर्ष सोमवती ३० केवल १ है चैत्र में। बुधाष्टमी भी एक ही है श्रावण में।

वर्षा आदि के विश्वामान—वर्षा विश्वा ११, धान्य १७, तृण १७, शीत ५, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा १५, निद्रा १५, आलस्य ३, उद्यम ७, शान्ति ५, क्रोध ५, दम्भ ५, पाखण्ड ३, लोभ १५, मैथुन ९, रस १३, फल ११, उत्साह ३, उग्रत्व १३, पाप १, पुण्य ११, व्याधि ३, व्याधिनाश ९, आचार १, अनाचार १७, मृत्यु ९, जन्म १३, देशोपद्रव ५, देश स्वास्थ्य १५, चौर ११, चौरनाश ११, अग्नि १७, अग्नि शान्ति १३, उद्भिज्ज १३, जरायुज ३, अण्डज ७, स्वेदज ११, टिड्डी ९, तोता ११ मूषक १९, सोना ९, ताम्बा ५, स्व चक्र ५, परचक्र १३, वृष्टि ७, अनावृष्टि ७, संवत् विश्वा २०।

वर्षस्तम्भचतुष्टय-विचार—जल स्तम्भ रुपए में १३ आने है अतः वृष्टि पर्याप्त हो। तृण स्तम्भ रुपए में ८ आने है, अतः घास मध्यम रहे। वायु स्तम्भ पए में १२ आने है अतः वायु काफी चले। अन्न स्तम्भ रुपए में ११ आने है, अतः अन्न की उपज पर्याप्त हो।

आर्षमान (वर्ष रक्षा के लिए ४ दुर्ग)—पहिला आर्ष गतवर्ष की पौष ३० को मूल नक्षत्र ६ विश्वा, द्वितीय आर्ष अक्षय ३ को रोहिणी नक्षत्र १२ विश्वा, तीसरा आर्ष श्राव० शु० १५ को श्रवण नक्षत्र १२ विश्वा एवं चौथा आर्ष कत्ति० शु० १५ को कृत्तिका नक्षत्र का अभाव है। अतः आर्ष मान से यह वर्ष मध्यम रहेगा।

"अर्ष तीज रोहिणी नहीं होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारों, कार्त्तिक पुण्यों कृत्तिका टारी॥"
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहे भड्डली साख विनाशै॥"

नव वर्ष प्रवेश—गत सं० २०१८ वि० चैत्र कृ० ३० बुधवार को इष्ट ४७।२ पर धनु लग्न के १४ अंश पर नव वर्ष प्रारम्भ होगा। फल—उत्तर पूर्व में सुख हो, मध्य देश में प्रबल वर्षा से दुर्भिक्ष तथा रोग फैले। पश्चिम में ५ मास के भीतर घी अन्न सस्ते हों।

वर्षेशलग्न—सं० २०१९ वि० चैत्र शु० ९ शुक्रवार को इष्ट ४०।१४ पर वृश्चिक लग्न के १३ अंश पर सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होगा। फल—खेती अच्छी हो। सुभिक्ष रहे।

आर्द्रा प्रवेश-कालिक लग्न—सं० २०१९ वि० आषाढ़ कृ० ५ शुक्रवार को इष्ट ५।६ पर कर्क लग्न के ३ अंश पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा।

फल—फलों की उपज अच्छी हो। अन्न पर्याप्त हो। पूर्व में सुख, उत्तर में दुःख एवं पश्चिम में दुर्भिक्ष हो।

सूचना—राजा का फल काश्मीर व अफगानिस्तान में, मंत्री का वाल्हीक और मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र विदर्भ, में धान्येश का नर्मदा के तटवर्त्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध में, रसेश का कोंकण व मगध में, तीरसेश का मालवा देश में एवं फलेश, धनेश तथा दुर्गेश का फल सब जगह विशेष होता है।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादितिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत॥"

—लाभ व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

लाभ व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ व्यय के अंकों को जोड़ कर एक घटावे और शेष को ८ से भाग देने पर १।२।६।७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम हो एवं चिंता भी रहे॥

वर्षलग्न

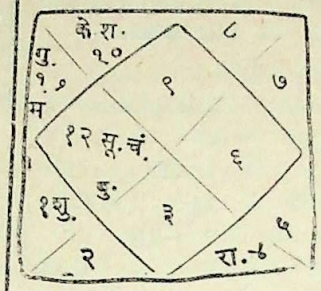

वर्षेश (जगत्)—लग्न

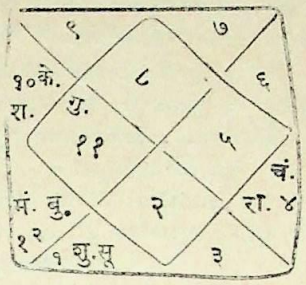

आर्द्राप्रवेश लग्न

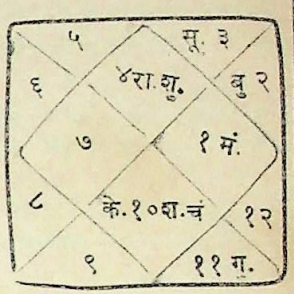

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—अपने जन्मलग्न से जगल्लग्न जिस स्थान में आवे वह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो और बलवान् हो तब वर्ष में उस भाव की वृद्धि यदि पापी ग्रह की दृष्टि अथवा योग होवे तो उस भाव की हानि होगी और जन्मलग्न, जन्मराशि और वर्षलग्न से यदि वर्षेश (जगल्लग्न) ८वें, १२ वें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

जन्मलग्न से जगल्लग्न का फल—१. देहसुख, २. धनलाभ, ३. कुटुम्बवृद्धि, ४. मित्र-सौख्य, ५. पुत्रसौख्य, ६. शत्रुजय, ७. स्त्रीसुख ८. रोगभय, ९. धर्मलाभ,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. चैत्र	अं. अंगुल	रा. राशि	मु. घंटा	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहदर्शन—बु. अस्त है। सूर्योदय से पूर्व मं. गु. पूर्व क्षितिज से ऊपर एवं शनि ख मध्य के आसन्न होगा। सूर्यास्त बाद शु. पश्चिम में दिखाई देगा। (उत्तर अयन, वसन्त ऋतु)
३१	१०	१	भा.	४१	३२	रे.	२३	५१	ऐं.	३	१३	कि	१४	१७	२३	५	१५	२९	मि.२३।५१	६	१३	६	४१	११	२१	२७	१२	पञ्चक स.२३।५१, चान्द्र संवत्सर एवं नवरात्र प्रा., वर्षफलश्रवण
३१	१४	२	शु.	३६	३२	अ.	२०	३४	वि.	४१	२३	वा	९	२	२४	६	१६	३०	मेष	६	११	६	४१	११	२२	२९	१	चन्द्र दर्शन उ. भा. उ.,
३१	१९	३	श.	३२	२४	भ.	१७	५९	प्री.	४३	२४	वै.	४	२८	२५	७	१७	जि.	वृ.३२।३३	६	१०	६	४२	११	२३	२९	२	गणगौरी पूजा, जिल्काद, भु. ११ प्रा.,
३१	२३	४	र.	२९	३	कृ.	१६	१४	आ.	३८	७	व.	०	४३	२६	८	१८	२	वृष	६	९	६	४३	११	२४	२६	५२	भ. ०।४३ उ. २९।३ या., रेव. में बुध १७।१२
३१	२८	५	चं	२६	४८	रो.	१५	३०	सौ.	३३	४२	बा.	२६	४८	२७	९	१९	३	मि.४५।४३	६	८	६	४३	११	२५	२५	४२	भरि. में वृक्ष १८।५२
३१	३२	६	मं.	२५	४५	मृ.	१५	५६	शो.	३०	१५	तै.	२५	४५	२८	१०	२०	४	मिथुन	६	७	६	४४	११	२६	२४	३०	शत. २ मे गुरु ४२।१५, मेला माई सरखाना,
३१	३७	७	बु.	२५	५९	आ.	१७	३७	अ.	२७	५१	व.	२५	५९	२९	११	२१	५	मिथुन	६	६	६	४४	११	२७	२३	१४	भ. २५।५९ उ. ५६।४९ या., मीन में मङ्गल १०।१२, श्रव.
३१	४१	८	गु	२७	३९	पुन.	२०	३२	सु.	२६	२८	ब.	२७	३९	३०	१२	२२	६	कर्क।४	६	५	६	४५	११	२८	२१	५७	श्री दुर्गाष्टमी, मेला, श्री मनसा देवी,
३१	४६	९	शु.	३०	१७	पु.	२४	३७	बृ.	२५	४५	को.	३०	१७	वै१	१३	२३	७	कर्क	६	३	६	४५	११	२९	२०	४०	सं. अश्वि. मेष में सूर्य ४०।१४. मु. १५, पुष्यनक्षत्राष्टोत्तर,*
३१	५०	१०	श.	३४	७	आश्ले.	२९	५१	शू.	२६	१०	सं.	२	१२	२	१४	२४	८	सिं२९।५१	६	२	६	४६	०	०	१९	२०	अश्वि. मेष में बुध ५८।४५,
३१	५४	११	र.	३८	४५	म.	३५	४९	ग.	२७	११	ब.	६	२६	३	१५	२५	९	सिंह	६	१	६	४७	०	१	१७	५७	भ. ६।२६ उ.३८।४५ या.,उ.भा. में मंगल २७।३०,कामदा११व्र.स.
३१	५९	१२	चं.	४३	५२	पू.फा.	४२	१९	वृ.	२८	३८	व.	११	१८	४	१६	२६	१०	कं.५८।५८	६	०	६	४८	०	२	१६	३२	*मेलावशाखी—श्री राजनवमी, महापर्व कुम्भ हरिद्वार,
३२	३	१३	मं.	४९	६	उ. फा.	४८	५४	ध्रु.	३०	१४	का	१६	२९	५	१७	२७	११	कन्या	५	५९	६	४८	०	३	१५	५	भौम प्रदोष व्र., जैन महावीर जयन्ती, (वि. मु. उ. फा.)
३२	८	१४	बु.	५३	५५	ह.	५५	८	व्या	३१	४०	ग.	२१	३०	६	१८	२८	१२	कन्या	५	५८	६	४९	०	४	१३	३५	भ. ५३।५५ उ., ३ में शनि १९।१२,
३२	१२	१५	गु.	५८	४	चि	६०	०	ह.	३२	३९	वि.	२५	५९	७	१९	२९	१३	तु.२७।५४	५	५७	६	४९	०	५	१२	४	भ. २५।५९ या., अगस्त्य अस्त ५५।०, सत्य व्र., वैशाख ‡
																												‡स्ना. प्रा., (वि. मु. नि.)

चैत्र शुक्ल ८ गुरुवार इष्ट ४४।४८,

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
११	११	११	१०	०	९	३	९
२९	१	२५	१०	१७	१६	२१	२१
३	१३	२१	२४	३३	४५	१७	१७
४५	३९	३८	४०	३७	३१	३२	३२
५८	४६	१२६	११	७३	३	३	३
४८	३९	४५	५२	५०	४६	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४	४	३	२	२	३	२	२
रेव.	पू.भा.	रो.	शत.	म.	श्रव.	आश्ले.	श्रव.
अग्नि	तोय	अग्नि	जल	चण्ड	अमृ.	अमृ.	अमृ.

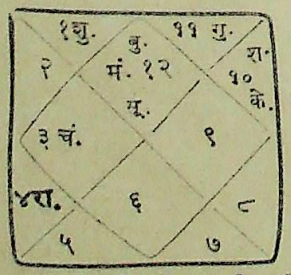

इस पक्ष में पशुओं को रोग भय, कहीं दक्षिणी प्रदेशों में उपद्रव भय व्यापे। नेपाल, असम, बिहार तथा उत्तर भारत में भी कहीं आन्तरिक कलह हो। चावल, चना, उड़द, तिल, तेल व ऊनी वस्त्रों में मन्दी का रुख रहे। नमक और कुसुम्भा में तेजी हो। रुई में घटा बढ़ी चल कर बाद में तेजी आए। १० अप्रल से खाण्ड, चान्दी, तृण लकड़ी में तेजी रहे। १४ अप्रैल से चन्दन कपूर, गेहूँ, जौ, चना, तथा चान्दी आदि धातुओं में तेजी रहेगी। रस पदार्थ खाण्ड, गुड़, घी आदि तथा सरसो, तिल, तेल, कपास में मन्दी रहे। गाय, भैंस आदि पशुओं की ग्राहकी अधिक रहे।

आकाशलक्षण—१० अप्रैल के बाद पूर्वी भारत बिहार, आसाम, बंगाल आदि में कीं-कहीं बुन्दा बान्दी के योग हों।

शकुन विचार—यदि द्वितीया को चंद्र श्याम रंग के बादलों से ढका हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाय, तो घृतादि वस्तु की कीमत बढ़े। चैत्र शुदी जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय, वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज विकाय॥"

चैत्र शुक्ल १५ गुरुवार इष्ट ४५।७,

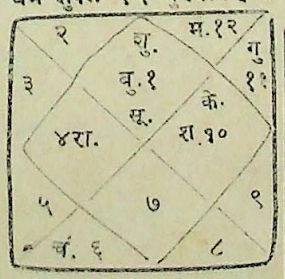

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
०	११	०	१०	०	९	३	९
५	६	१०	११	२६	१७	२०	२०
१४	३९	७	४५	१०	१०	५५	५५
३६	४५	३८	११	०	५	१६	१६
५८	४६	१२६	११	७३	३	३	३
२५	३१	१	३	३८	१०	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
२	१	४	३	४	२	४	४
अश्वि.	उ.भा.	अश्वि.	शत.	भ.	श्रव.	आश्ले.	श्रव.
वायु	ताम्र	वायु	जल	चण्ड	अमृत	अमृत	अमृत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. अं.	रा. मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२	१६	१	शु.	६०	०	चि.	०	३९	व.	३२	५०	बा.	२९	३६	८ २०	३० १४	तुला	५	५६	६	५०	०	६	१०	३२
३२	२१	१	श.	१	९	स्वा.	५	१२	सि.	३२	१७	कौ.	१	९	९ २१	ब१ १५	वृ.५२।४७	५	५५	६	५१	०	७	८	५७
३२	२५	२	र.	३	११	वि.	८	३०	व्य.	३०	४४	गा.	३	११	१० २२	२ १६	वृश्चिक	५	५३	६	५१	०	८	७	१८
३२	२९	३	चं.	३	५०	अनु.	१०	४७	व.	२८	१२	वि.	३	५०	११ २३	३ १७	वृश्चिक	५	५२	६	५२	०	९	५	३८
३२	३४	४	मं.	३	९	ज्ये.	११	३९	प.	२४	३०	बा.	०	९	१२ २४	४ १८	व.११।३९	५	५१	६	५३	०	१०	३	५६
३२	३८	५	बु.	१	१६	मू.	११	२२	श.	२०	६	तै.	१	१६	१३ २५	५ १९	धनु	५	५०	६	५३	०	११	२	१३
अव	म	६	बु.	५८	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	४२	७	गु.	१४	२६	पू. षा.	९	५७	सि.	१४	४१	वि.	२३	२२	१४ २६	६ २०	म.२४।२४	५	४९	६	५४	०	१२	०	२७
३२	४६	८	शु.	४९	४०	उ षा.	७	०५	सा.	८	४०	बा.	२२	३	१५ २७	७ २१	मकर	५	४८	६	५४	०	१२	५८	३९
३२	५१	९	श.	४४	१४	श्र.	४	४१	शु.	५ ५७	५७	तै.	१६	५७	१६ २८	८ २२	कुं.३२।५२	५	४७	६	५५	०	१३	५६	४९
३२	५५	१०	र.	३८	२५	ध.	५ ४	४६	ब्र.	४७	१४	व.	११	१९	१७ २९	९ २३	कुम्भ	५	४६	६	५६	०	१४	५४	५८
३२	५९	११	चं.	३२	२१	पू. भा.	५२	५६	ए.	३९	३३	ब.	५	२३	१८ ३०	१० २४	मी३८।५९	५	४५	६	५७	०	१५	५३	४
३३	३	१२	मं.	२६	१५	उ. भा.	४८	५१	वं.	३१	५३	तै.	२६	१५	१९ १म	११ २५	मीन	५	४४	६	५७	०	१६	५१	८
३३	७	१३	बु.	२०	१६	रे.	४४	५९	वि.	२४	१९	ब्र.	२०	१६	२० २	१२ २६	न.४४।५९	५	४३	६	५८	०	१७	४९	११
३३	११	१४	गु.	१४	४०	अ.	४१	३३	प्री.	१७	४	श.	१४	४४	२१ ३	१३ २७	मेष	५	४३	६	५९	०	१८	४७	१३
३३	१	३०	गु.	९	३९	भ,	३८	४९	आ.	१०	१९	ना.	९	३९	२२ ४	१४ २८	वृ.५३।२०	५	४२	७	०	०	१९	४५	१२

ग्रहदर्शन—२७ अप्रै. का बुध पश्चिम में उदित होगा। सूर्योदय से पहिले पूर्व में गु. मं. ऊपर नीचे एवं शनि याम्योत्तर वृत्त पर होगा। सूर्यास्त बाद शु को पश्चिम में देखें। (उत्तर अयन, ग्रीष्म ऋतु)

सा. वृ. में सूर्य ३२।५८, ग्रीष्म ऋतु प्रा., कृत्ति. में शुक्र ९।३२,*

भरि. में बुध १४।३०, रा. वैशाख प्रा.,

भ. ३३।३० उ., बुध में शुक्र ५३।०, ईस्टर सण्डे,

भ. ३।५० या., श्री गणेश ४ व., (वि. मु. अनु)

भ. ५८।१८ उ.,

* गुडफ्राइडे, (वि. मु. स्वा.)

भ. २६।२२ या., (वि. मु. उ. षा.)

भरि. में सूर्य २१।५८, कृत्ति. में बुध ३४।३५, बुध पश्चिम में >

पंचक प्रा. ३२।५२, शत. ३ में गुरु ३८।३५,

भ. ११।१९ उ. ३८।२५ या., बुध से बुध २३।१८,

वरूथिनी ११ व. स., >उदित ३३।७, (वि. मु. उ. षा.)

रोहि. में शुक्र ४।२०, भौम प्रदोष व., मई ५ प्रा.,

भ. २०।१६ उ. ४७।३० या., पंचक स. ४४।५९, रे व. में ×

×मंगल ४३।१२, श्री १००८-आनन्दमयी मातृ जन्मोत्सव प्रा.,

वैशाख कृ. ८ शुक्रवार, इष्ट ४५।३०

गु.	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	१०	१	९	३	९
३	१२	२६	१३	५	१७	२०	२०
२	५१	५४	१०	५७	३१	२९	२९
६	१४	२९	५७	२१	३२	५०	५०
८	४६	९	१०	३३	२	३	३
८	१५	०	१४	१८	१५	११	११
	मा.	मा.	मा.	म.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	९	९	९	९	९	९	९

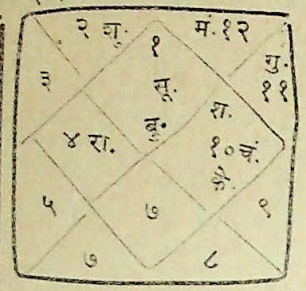

इस पक्ष में कहीं टिड्डी आदि से भय तथा देश में कहीं गृह कलह भी हो। २१ अप्रैल से रुई में मन्दी एवं अनाजों के भावमें कुछ तेजीका असर रहेगा। सोना, चान्दी में घटा बढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहेगी। २७ अप्रैल से वस्त्र, अनाज में मन्दी, सरसों, गुड़, राई, खाण्ड, घी में तेजी आए। २६ अप्रैल के करीब चान्दी में साधारण मन्दी का रिएक्शन आकर बाद में यकायक तेजी आएगी। २९ अप्रैल से प्रायः सभी वस्तुओं में घटा बढ़ी चले। तिल, तेल, सूत, रुई, गेहूँ, जौ, चना, मटर में तेजी हो, और वायदा बाजार में विशेष घटा बढ़ी चलने के कारण अनुभव हीन एवं असावधान व्यापारियों को हानि उठानी पड़े। २ मई से चान्दी में तेजी का झटका आएगा। गेहूँ, जौ, चना, बाजरा में मन्दी आए।

आकाशलक्षण—२०-२६-२७-२८ अप्रैल को उड़ीसा, उत्तर भारत, मद्रास, हिमांचल में कहीं-कहीं बुन्दा बान्दी हो और वाय का जोर रहे।

वैशाख कृ. ३० शुक्रवार, इष्ट ४५।४५,

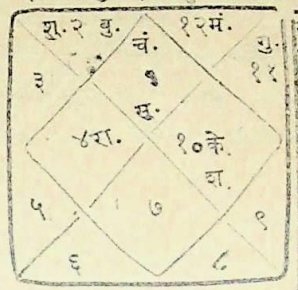

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१	१०	१	९	३	९
२०	१८	९	१४	१४	१७	२०	२०
२९	१३	१९	२०	३०	४५	७	७
४७	५९	८	१३	७	१७	३५	३५
५८	४५	१३	९	७३	१	३	३
१०	५६	२३	२७	१२	३७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	९	९	९	९	९	९	९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. अं. घं.	रा. घं.	मु. मि.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि
३३	१०	१	श.	५	२६	कृ.	३६	५५	पौ.	४ ५८	१३ ४६	ब.	५	२६	२३	५	१५	२९	वृष	५	४१	७	१	०	२०	४३	११
३३	२३	२	र.	२	१	रो.	३५	५५	अ.	५४	११	को.	२	१	२४	६	१६	३१	वृष.	५	४०	७	१	०	२१	४१	६
अव	म	३	र.	५९	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	२७	४	चं.	५८	३३	मृ.	३६	५	मु.	५०	३१	ब.	२९	७	२५	७	१७	२	मि. ६।०	५	३९	७	२	०	२२	३८	५९
३३	३१	५	मं.	५८	४२	आ.	३७	२६	बृ.	४७	५५	ब.	२८	३८	२६	८	१८	३	मिथुन	५	३८	७	२	०	२३	३६	४९
३३	३४	६	बु.	६०	०	पुन	४०	७	ग.	४६	१९	का.	२९	२६	२७	९	१९	४	क. २४।२७	५	३७	७	२	०	२४	३४	३९
३३	३८	६	गु.	०	११	पु	४३	५९	गं.	४५	४३	ते.	०	११	२८	१०	२०	५	कर्क	५	३७	७	४	०	२५	३२	२८
३३	४१	७	शु.	२	४६	आश्ले.	४८	५९	बृ.	४६	०	ब.	२	४६	२९	११	२१	६	वि. ४८।५१	५	३६	७	४	०	२६	३०	१६
३३	४४	८	श.	६	३०	म.	५४	४८	ध्र.	४६	२८	ब.	६	३०	३०	१२	२२	७	सिंह	५	३५	७	५	०	२७	२८	०
३३	४८	९	र.	११	२	पू. फा.	६०	०	व्या.	४८	२७	का.	११	२	३१	१३	२३	८	सिंह	५	३५	७	५	०	२८	२५	४३
३३	५१	१०	चं.	१६	५	उ. फा.	१	१४	ह.	५०	८	ग.	१६	५	ज्ये.	१४	२४	९	क. १७।५३	५	३४	७	६	०	२९	२३	२३
३३	५४	११	मं	२१	११	उ. फा.	७	४९	ब.	५१	३९	वि.	२१	११	२	१५	२५	१०	कन्या	५	३३	७	७	१	०	२१	२
३३	५८	१२	बु.	२५	५९	ह.	१४	११	वि.	५२	४६	बा.	२५	५९	३	१६	२६	११	तु. ४७।२	५	३२	७	७	१	१	१८	३८
३४	०	१३	गु.	३०	२	चि	१९	५३	व्य.	५३	१८	वै.	३०	२	४	१७	२७	१२	तुला	५	३२	७	८	१	२	१६	१४
३४	३	१४	शु.	३३	६	स्वा.	२४	३०	व.	५२	५६	ग.	१	३२	५	१८	२८	१३	तुला	५	३२	७	९	१	३	१३	५०
३४	५	१५	श.	३५	२	वि.	२८	१९	ध	५१	४०	वि.	४	२	६	१९	२९	१४	व. १२।२४	५	३१	७	९	१	४	११	२३

ग्रह दर्शन—सूर्योदय से पहिले पूर्व में गु. मं. ऊपर नीचे एवं शनि याम्योत्तर वृत्त में कुछ पश्चिम में होगा। सूर्यास्त बाद परस्पर आसन्न श. बु. पश्चिम में होंगे। (उत्तर अयन, ग्रीष्म ऋतु)

चन्द्रदर्शन उ. शु. उ., रोहि. में बुध १२।५, वरुण मार्गी ४५।५०,

जिल्हिज मु. १२ प्रा., अदाय ३, श्री परशुराम जयन्ती,

भ. २९।७ उ. ५८।३३ या., आश्ले. १ में राहु अव. ३ में*
*केतु ८।४८, सूरजयं.,

श्री गङ्गाजन्म ७,

भ. २।४६ उ. ३४।३८ या., कृत्ति. में सूर्य १०।७,

मृग. में शुक्र ०।३२,

श्री जानकी जयन्ती,

भ. ४८।३८ उ., मं. बुध में सूर्य ३८।७, मु. ४५ पुष्य मध्यान्होत्तर,

भ. २१।११ या., मोहिनी ११ व. स., इदुज्जुहा, (वि. मु. ह.)

मृग में बुध ३१।२८, प्रदोष व्र., (वि. मु. चि.)

मिथुन में शुक्र ३१।४७, श्री नृसिंह जयं.,

भ. ३३।३ उ.,

भ. ४।२ या., सत्यव्र. वैशाख स्ना. स., श्री बुद्ध जयं. (वि. मु. अ.)

वैशाख शुक्ल ८ शनिवार, इष्ट ४६।२,

मू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	१	१०	१	९	३	९
२८	२४	१९	१५	२४	१७	१९	१९
१३	२०	५४	३२	१४	५५	४२	४२
४८	२१	५६	३८	१२	४०	८	८
५७	४५	६०	८	७२	०	३	३
५७	३८	१२	२८	४४	५१	११	११
इष्ट	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
९	८	८	८	९	८	९	८
कृ.	रो.	रो.	उत्त.	मृग.	श्रव.	आश्ले.	श्रव.
चण्ड	अग्नि	वाय	जल	अग्नि	अमृ.	अमृ.	अमृ.

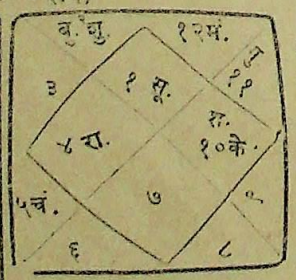

इस पक्ष में विश्व के किसी विख्यात पुरुष को भय, म्लेच्छ देशों में रोग भय हो। चना, चावल, मूंगी मोठ, सूत, वस्त्र, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों में भारी तेजी के योग हों। १२ मई से गेहूँ, चना के भाव में मन्दी आए। १७ मई से अरहर, गुवारा, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों में मन्दी आए। गुड़, घी में काफी घटा बढ़ी चलेगी। काले रंग का भाव तेज और काले वस्त्र के व्यापारी, बनवासी, लोगों को कष्ट हो। १०-११ मई को यदि पूर्व की वायु चले और आकाश मेघाच्छन्न रहे या कुछ वर्षा हो जाए तो सब प्रकार के अन्न-संग्रह से आगे चलकर लाभ रहे।

आकाशलक्षण—५-६-७ मई को तापमान बढ़े। ८ से १८ मई तक पंजाब के उत्तरी भाग, हिमाचल श्रेणी एवं ढाका के आसपास कहीं-कहीं बून्दा बान्दी होगी।

शकुनविचार—शुक्ल पक्ष वैशाख की तिथि दशमी दिन देख। बादल हो पावन बिसे जल नहीं पड़े विशेष॥

वैशाख शुक्ल १५ शनिवार इष्ट ४६।१२,

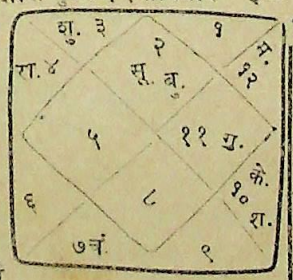

मू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	११	१	१०	२	९	३	९
४	२९	२५	१६	२	१७	१९	१९
५८	३८	२८	२८	४२	५९	१९	१९
४६	५८	१	५४	१८	२४	५३	५३
५७	४५	२७	७	७२	०	३	३
४५	२२	५२	२८	२२	७	११	११
इष्ट	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
८	४	४	१	२	३	३	२
कृ.	रो.	मृग.	उत्त.	मृग.	श्रव.	आश्ले.	श्रव.
चण्ड	अग्नि	अग्नि	जल	अग्नि	अमृ.	अमृ.	अमृ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ (२० मई से २ जून तक सन् १९६२ ई.

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	तारीखें प्र. अं.	रा. मु.	संचार	चन्द्र भा. स्टे. टाईम सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	उदयकालिक स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं.	क.	वि.
३४	८	१	र.	३५ ३७	अनु	३० ४५	शि	४९ २२	बा.	५ १९	७ २०	३० १५	वृश्चिक	५ ३१	७ १०	१ ५	८	५३
३४	११	२	चं.	३४ ५४	ज्ये.	३१ ५३	सि.	४६ ५	तै.	५ १५	८ २१	३१ १६	ब.३१।५३	५ ३०	७ १०	१ ६	६	२१
३४	१३	३	मं.	३३ ०	मू	३१ ५०	सा.	४१ ४७	व.	३ ५७	९ २२	३१ १९	धनु	५ ३०	७ ११	१ ७	३	४७
३४	१६	४	ब.	२९ ५९	पू.षा.	३० ३९	शु	३६ ४१	ब.	१ २९	१० २३	२ १८	म ४५।८	५ २९	७ ११	१ ८	१	१३
३४	१९	५	गु.	२६ २	उ षा.	२८ ३७	गु	३० ४७	तै.	२६ २	११ २४	३ १९	मकर	५ २८	७ १२	१ ८	५८	३८
३४	२१	६	शु.	२१ १४	श्रव.	२५ ४४	ब्र.	२४ १६	व.	२१ १४	१२ २५	४ २०	क५३।५८	५ २८	७ १२	१ ९	५६	३
३४	२४	७	श.	१५ ४८	ध.	२२ १३	ऐं.	१७ १२	ब.	१५ ४८	१३ २६	५ २१	कुंभ	५ २८	७ १३	१ १०	५३	२६
३४	२६	८	र.	९ ५५	श.	१८ १७	वै.	९ ४९	को.	९ ५५	१४ २७	६ २२	कुंभ	५ २७	७ १४	१ ११	५०	४७
३४	२९	९	चं.	३ ४७	पू.भा.	१४ १०	वि.	५४ २१ ३३	ग.	३ ४७	१५ २८	७ २३	मी. ०।१२	५ २७	७ १५	१ १२	४८	६
अव	म	१०	चं.	१७ ३०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	०	०
३४	३१	११	मं.	५१ ३३	उ.भा.	१० १	आ.	४७ २	ब.	२४ ३३	१६ २९	८ २४	मीन	५ २७	७ १५	१ १३	४५	२५
३४	३३	१२	बु.	४५ ५४	रेव	६ ६	सौ.	३९ ४६	को.	१८ ४४	१७ ३०	९ २५	मे ६।६	५ २७	७ १६	१ १४	४२	४३
३४	३६	१३	गु.	४० ४४	अ.	२ ३३ ४२ ३२	शो.	३२ ५९	ग.	१३ १९	१८ ३१	१० २६	मेष	५ २६	७ १६	१ १५	३९	५८
३४	३८	१४	शु.	३६ २६	कृ.	५७ ३६	अ.	२६ ४७	वि.	८ ३३	१९ जू१	११ २७	वृ. १४।८	५ २६	७ १७	१ १६	३७	१२
३४	४०	१०	श.	३२ ५१	रो.	५६ २३	सु.	२१ १४	च.	४ ३७	२०	२ १२	२८	वृष	५ २५	७ १७	१ १७	३४	२६

ग्रहदर्शन—२९ मई को बुधवार में अस्त होगा। प्रातः पूर्व में गु. म. ऊपर नीचे एवं श. पश्चिम क्षितिज से ऊपर होगा। सायं शु. को पश्चिम में देखें। (उत्तर अयन, ग्रीष्म ऋतु)

अश्वि. मेष में मंगल १४।२, (वि. मु. अनु.)
सा. मिथुन में सूर्य २७।३०, शनि. ४ में गुरु १६।२, शनि वक्री‡
भ. ३।५७ उ. ३३।०या., श्री गणेश ४ ब्र. रा. ज्ये. प्रा., श्री १००८>
आर्द्रा में शुक्र ३।३०, ‡ ४६।१५, (वि. मु. मू.)
<आनन्दमयी मातृ जन्म दिन (प्रवासोत्सव) एवं उत्सव विसर्जन
भ. २१।१४ उ. ४८।३१ या., पंचक प्रा. ५३।५८, रोहि. में सूर्य ४।७,
बुध वक्री ११।४५,

भ. ३०।४० उ. ५७।३४ या., बुध पश्चिम में अस्त ४८।२७,

अपरा ११ ब्र. स्मा., (वि. मु. उ. भा., रे व.)
पंचक स. ६।६ अपरा ११ ब्र. वै नि
भ. ४०।४४ उ., प्रदोष ब्र.,
भ. ८।३३ या., जून ६ प्रा.,
भावुका ३०, शनैश्चरी ३०, वट सावित्री ब्र.,

ज्येष्ठ कृ. ८ रविवार इष्ट ४६।२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	१०	२	९	३	९
१२	५	२६	१७	१२	१७	१८	१८
४०	४०	४९	२५	२०	५७	५४	५४
४	२९	३४	०	१९	३१	२७	२७
५७	४४	९	६	७२	०	३	३
३३	५८	२८	१८	१०	४०	११	११
मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
२	२	४	४	२	३	२	३
मृग.	अश्वि.	मृग.	मृग.	अश्वि.	रेव.	अश्वि.	रेव.

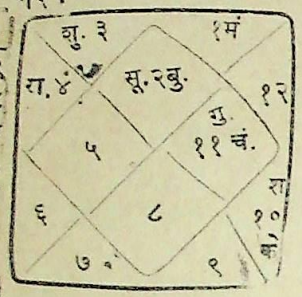

इस पक्ष में कहीं शासकों में परस्पर विरोध, पश्चिमी प्रदेशों में जल भय, एवं पूर्वी भाग में कहीं- भूकम्प आदि उत्पात की आशंका है। गेहूँ, जौ, चना, मोठ, मूंगी, बाजरा, ज्वार में मन्दी एवं घी के भाव में निश्चित रूप से तेजी आएगी। सोना, चान्दी आदि धातु, मोती, मूंगा आदि रत्न, रस पदार्थ एवं रूई पाट बारदाना में मन्दी आए। २६ मई से चान्दी में घटा बढ़ी चलकर तेजी आए और गुड़, खाण्ड आदि में मन्दी आए। २८ मई के लगभग रूई में एकाएक १५-२० टका की मन्दी का झटका आएगा। यहाँ प्रतिपदा को रविवार है जो प्रजा में रोग भय करता है। २४ मई को यदि दक्षिण का वायु चले तो तिल, तेल, घी, का आश्विन में संग्रह से आगे चलकर लाभ हो।

ज्येष्ठ कृ. ३० शनिवार इष्ट ४६।२७,

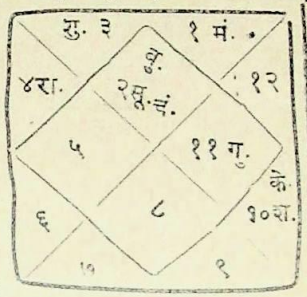

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	९	१०	९	३	९
१८	१०	२४	१३	१८	१७	१८	१८
२५	९	४८	४९	०	५२	३५	३५
९	४३	४	४२	६	१३	२२	२२
५७	४४	३०	५	७१	१	३	३
२८	४३	१७	१२	३८	११	११	११
मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
२	४	२	४	४	३	२	३
रा.	अश्वि.	मृग.	शत.	आर्द्रा	रेव.	अश्वि.	शत.

आकाश लक्षण—इस पक्ष में आकाश प्रायः धूल-धूसरित रहेगा। तापमान विषुव रूप से बढ़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आकाश लक्षण—इस पक्ष में आकाश प्रायः धूलि-धूसरित रहेगा। तापमान [illegible] बढ़ेगा।

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. अ. रा. मु.				सञ्चार	सू. उ.		सू. अ.		रात्रि मान और सूर्य				
घ.	प.										ज्ये.	जन्म	ज्येष्ठ	जिल्हि		वं.	मि.	धं.	सि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४२	१	र.	३०	२५	मृ.	५६	१५	धृ.	१६	३१	कि.	१	३८	२१	३	१३	२९	मि.	२६	१९	५	२५	७	१८
३४	४४	२	चं.	२९	१०	आ.	१७	२०	शु.	१२	४५	को.	२९	१०	२२	४	१४	३०	मिथुन			५	२५	७	१९
३४	४५	३	मं.	२९	१०	पुन.	५९	४४	गं.	९	५९	ग.	२९	१०	२३	५	१५	मु.	क.	४४	८	५	२५	७	१९
३४	४७	४	बु.	३०	२७	पु.	६०	०	ब.	८	१३	चि.	३०	२७	२४	६	१६	२	कर्क			५	२५	७	२०
३४	४९	५	गु.	३२	५८	पु.	३	२१	ध्र.	७	२७	ब.	१	४२	२५	७	१७	३	कर्क			५	२५	७	२१
३४	५०	६	शु.	३६	३५	आश्ले.	८	६	व्या.	७	३५	का.	४	४६	२६	८	१८	४	सिं.	८	१६	५	२५	७	२१
३४	५२	७	श.	४१	०	म.	१३	४३	हृ.	८	२८	ग.	८	४७	२७	९	१९	५	सिंह			५	२५	७	२२
३४	५३	८	र.	४६	०	पू.फा.	२०	०	ब.	९	५२	वि.	१३	१०	२८	१०	२०	६	क.	३६	३८	५	२५	७	२२
३४	५४	९	चं.	५१	५	उ.फा.	२६	३४	सि.	११	३६	बा.	१८	३२	२९	११	२१	७	कन्या			५	२५	७	२३
३४	५५	१०	मं.	५५	४७	ह.	३३	०	व्य.	१३	११	तै.	२३	२६	३०	१२	२२	८	कन्या			५	२५	७	२३
३४	५६	११	बु.	५९	५२	चि.	३८	५१	ब.	१४	२४	व.	२७	४९	३१	१३	२३	९	तु.	५	५५	५	२५	७	२३
३४	५७	१२	गु.	६०	०	स्वा.	४३	४९	प.	१५	६	ब.	३१	२२	३२	१४	२४	१०	तुला			५	२५	७	२३
३४	५८	१२	शु.	२	५२	वि.	४७	४०	शि.	१४	५५	बा.	२	५२	अ१	१५	२५	११	वृ.	३१	४२	५	२५	७	२४
३४	५९	१३	श.	४	४९	अनु.	५०	२३	सि.	१३	५३	तै.	४	४९	२	१६	२६	१२	वृश्चिक			५	२४	७	२४
३४	५९	१४	र.	५	२७	ज्ये.	५१	४८	सा.	११	४९	ब.	५	२७	३	१७	२७	१३	ध.	५१	४८	५	२४	७	२४
३५	०	१५	चं.	४	४४	मू.	५१	५८	श.	८	४२	ब.	४	४४	४	१८	२८	१४	धनु.			५	२५	७	२५

ग्रहयुति—१२ जून को बुध पूर्व में उदित होगा। प्रातः मं. पूर्व में गु. याम्योत्तर वृत्तासन्न एवं शनि पश्चिम में होगा। सायं शुक्र पश्चिमस्थ होगा (उत्तर अयन ग्रीष्म ऋतु)

पुन. में शुक्र ९।२०,
चन्द्र दर्शन उ., शृं. उ., मघा २ में वरुण १०।२०, रम्भा व्र.,
भ. ५९।४८ उ., व बुध रोहि. में ४७।८, मुहर्रम मु. १, हिजरी
भ. ३०।२७ या., हिजरी सन् १३८२ प्रा.,
भरि. में मंगल २।५,
मृग. में सूर्य २।४४,
भ. ४१।० उ.,
भ. १३।३० या., (वि. मु. उ. फा.)
कर्क में शुक्र ३३।२२,
श्री गङ्गा दशहरा, (वि. मु. ह. चि.) * मणिकर्ण,
भ. २७।४९ उ. ५९।५२ या., निर्जला ११ व्र. स्मा. वै. मेला*
पुष्य में शुक्र २१।४५, निर्जला ११ व्र. नि., मुहर्रम (ताजिया)
सं. मिथुन में सूर्य ३।४०, मु. ४५ पुष्य १९।४० तक, प्रदोष व्र.,
बुध पूर्व में उदित ४१।१४,
भ. ५।२७ उ. ३५।५ या., सत्यव्र.,
(वि. म. म.)

ज्येष्ठ शुक्ल ८ रविवार इष्ट ४६।२७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	१०	२	९	३	९
२६	१६	२०	१८	२९	१७	१८	१८
४	६	५३	३७	४	४०	९	९
२४	११	४८	२०	१६	५	५६	५६
५७	४४	२६	४	७१	१	३	३
२०	१५	४४	४०	११	५६	११	११
दृश्य	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
९	१	४	४	३	३	३	३
मृग.	म.	रो.	शत.	पुन.	ध्र.	आश्ले.	ध्रुव.
अग्नि	चण्ड	वायु	जल	नीर	अम.	अम.	अम.

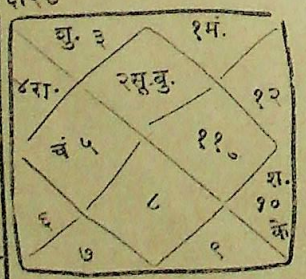

इस पक्ष में जनता में सुख समृद्धि रहे। गुड़, खाण्ड, सूत रूई, सोने, में तेजी रहे। ७ जून से अनाज के भाव में कुछ तेजी आए और शण, कपूर, उड़द, मोठ, मूग, बाजरा, अलसी भी तेज हों। रूई में मन्दी का झटका आएगा। १४ जून से अनन्तर चान्दी में भी तेजी का ख्याल करते हुए व्यापार करने से लाभ रहे। यदि ति. ५ को दक्षिण पवन चले और आकाश मेघाच्छन्न हो। तो तत्काल अनाज का संग्रह करके आगे आश्विन में बेचने से लाभ रहे। यदि ति. ७ को मेघ गर्जन हो एवं आकाश मेघावृत रहे तो तिल का संग्रह करके कार्त्तिक में बेचने से लाभ हो।

आकाशलक्षण—४ से १३ जून तक बम्बई, गोवा, सूरत, मध्यभारत, आसाम में कहीं-कहीं बून्दा बान्दी के योग हैं। १५ से १८ जून तक आन्धी बालद और कहीं बून्दाबान्दी हो।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ चन्द्रवार इष्ट ४६।२७,

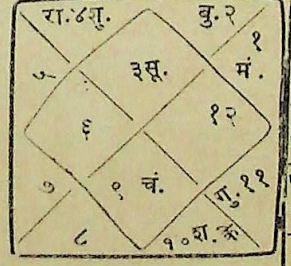

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	१	१०	३	९	३	९
३	२१	१८	१९	८	१७	१७	१७
४२	५८	२५	४	३३	२२	४४	४४
५०	११	३७	५९	१७	२२	३०	३०
५७	४३	१	२	७०	२	३	३
१६	४५	२७	३१	४५	३४	११	११
दृश्य	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	३	३	४	२	३	३	३
मृग.	म.	रो.	शत.	पुष्य.	ध्रुव.	आश्ले.	ध्रुव.
अग्नि	चण्ड	वायु	जल	जल	अम.	अम.	अम.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ आषाढ़ कृष्णपक्ष ६

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीख प्र. अं.	रा.	मु.	सञ्चार	भा. स्टं. टाईम सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	१९ जून से १ जुलाई तक सन् १९६२ ई.
३५	१	१	मं.	२	५१	पू. षा.	५१	१	शु.	४ ५६	३७ ४०	को.	२	५१	५	१९	२९	१५	धनु	५	२५	७	२५	२	३	४४	२२	ग्रहदर्शन—प्रातः बु. मं. गु. श. क्रमशः पूर्व से पश्चिम तक फैले देखने में आएंगे। सायं शु. पश्चिम में होगा। (उत्तर-दक्षिण अयन, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु)
अव	म	२	मं.	५९	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	बुध मार्गी १९।३८,
३५	१	३	बु.	५५	५२	उ. षा.	४९	८	ऐं.	५३	५७	ब.	२७	५१	६	२०	३०	१६	म. ५।३३	५	२५	७	२५	२	४	४१	१९	भ. २७।५१ उ. ५५।५२ या.,
३५	२	४	गु.	५१	३	श्र.	४६	२२	वै.	४७	३३	ब.	२३	२७	७	२१	३१	१७	मकर	५	२५	७	२६	२	५	३८	१५	सा. कर्क में सूर्य ५३।८, दक्षिण अयन वर्षाऋतुप्रा., श्री गणेश ४व.,
३५	२	५	शु.	४५	३७	ध.	४२	५७	वि.	४०	३४	कौ.	१८	२०	८	२२	अ१	१८	कुं. १४।३९	५	२५	७	२६	२	६	३५	१०	पंचक प्रा. १४।३९, आर्द्रा म सूर्य ५।६, रा. आषाढ़ प्रा.,
३५	२	६	श.	३९	४३	श.	३९	६	प्री.	३३	१५	ग.	१२	४०	९	२३	२	१९	कुम्भ	५	२६	७	२७	२	७	३२	४	भ. ३९।४३ उ.,
३५	१	७	र.	३३	३५	पू. भा.	३५	१	आ.	२५	४४	वि	६	३९	१०	२४	३	२०	मी. २१।२	५	२६	७	२७	२	८	२८	५७	भ. ६।३९ या.,
३५	१	८	चं.	२७	२४	उ. भा.	३०	४९	सौ.	१८	२	बा.	०	२९	११	२५	४	२१	मीन	५	२६	७	२७	२	९	२५	५०	कृत्ति. में मंगल १४।२८, आश्ले. में शुक्र ४०।२२,
३५	०	९	मं.	२१	१९	रे.	२६	४६	शो.	१०	३२	ग.	२१	१९	१२	२६	५	२२	मे. २६।४६	५	२७	७	२७	२	१०	२२	४३	भ. ४८।२६ उ., पंचक स. २६।४६,
३५	०	१०	बु.	१५	३३	अ.	२३	७	अ.	३ ५६	१५ २१	वि.	१५	३३	१३	२७	६	२३	मेष	५	२७	७	२७	२	११	१९	३६	भ. १५।३३ या.,
३४	५९	११	गु.	१०	१७	भ.	२०	२	धू.	५०	१	बा.	१०	१७	१४	२८	७	२४	वृ. ३४।२८	५	२७	७	२७	२	१२	१६	२८	योगिनी ११ व. स.,
३४	५८	१२	शु.	५	५३	कृ.	१७	४७	शू.	४४	२१	तै.	५	५३	१५	२९	८	२५	वृष	५	२७	७	२७	२	१३	१३	२२	वृष मे मंगल ५१।५०. प्रदोष व.,
३४	५७	१३	श.	२	१६	रो.	१६	१६	गं.	३९	३०	व.	२	१६	१६	३०	९	२६	मि ४६।४	५	२८	७	२७	२	१४	१०	१४	भ. २।१६ उ ३०।५८ या, मृग में बुध ४१।०
अव	म	१४	श.	५९	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३४	५७	३०	र.	५८	१८	मू.	१५	५३	वृ.	३५	३४	च.	२८	५९	१७	जु१	१०	२७	मिथुन	५	२८	७	२७	२	१५	७	६	जुलाई ७ प्रा,

आषाढ़ कृष्ण ८ चन्द्रवार, इष्ट ४६।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	१	१०	३	९	३	९
१०	२७	१९	१९	१६	१७	१७	१७
२३	३	५५	१८	४७	२	२२	२२
३१	८	१६	३२	९	२८	१५	१५
१७	४३	३२	१	७०	३	३	३
२२	२०	४५	१५	१८	११	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

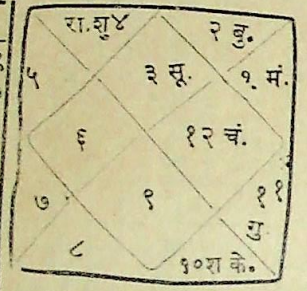

इस पक्ष में पहिले अलसी आदि तिलहन और कपूर, चन्दन, रेशम मन्दे हों और बाद में १३ दिन के भीतर तेजी आए। २२ जून से सोने के भाव में घटा बढ़ी चलकर तेजी रहे। गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौ, चान्दी तेज हों, और सरसों में भी तेजी आए। २५ जून से मसूर, मोठ, राई, मूंग, घी, तेज हों। रुई में पहिले तेजी बाद में मन्दी आए। ३० जून से गुड़, शक्कर, लाल वस्त्र, लाल, चन्दन, कपास, सभी प्रकार के अनाज, जूट, पाट, बारदाना, केसर, ताम्बा, जस्त, और शेअर तेज हों। आषाढ़ कृष्ण ६ को शनिवार है इसलिए गेहूं का संग्रह करने से आगे कार्तिक में लाभ रहे—"आषाढ षष्ठी दिवसे कृष्णे पक्षे शनिर्यदा। तदा गोधूमका ग्राह्या द्विगुणायस्तु कार्त्तिके॥"

आकाशलक्षण—१९ से २२ जून तक तापमान बढ़।

आषाढ़ कृष्ण ३० रविवार, इष्ट ४६। २०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	१	१०	३	९	३	९
१६	१	२४	१९	२३	१६	१७	१७
६	२२	२०	२२	४७	४२	३	३
४३	६	८	५३	३७	३९	१०	१०
५७	४२	६१	०	६९	३	३	३
१२	५६	०	१	४८	२८	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आकाशलक्षण—१९ से २२ जून तक तापमान बढ़े। २५ जून से १ जुलाई तक सिलीगुड़ी, भूटान, दार्जिलिंग

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जुला.	रा. आषा.	मु. मृह.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	५६	१	चं.	५८	१०	आ.	१६	४३	ध्रु.	३२	३४	कि.	२८	१४	१८	२	११	२८	मिथुन	५	२९	७	२७	२	१६	३	५७
३४	५५	२	मं.	५९	२०	पुन.	१८	४६	व्या.	३०	३७	वा.	२८	४५	१९	३	१२	२९	क. ३।१५	५	२९	७	२७	२	१७	०	४८
३४	५४	३	बु.	६०	०	पु.	२२	७	ह.	२९	४२	तै.	३०	३०	२०	४	१३	स१	कर्क	५	२९	७	२७	२	१७	५७	३२
३४	५३	३	गु.	१	४१	आश्ले	२६	३४	व.	२९	३७	ग.	१	४१	२१	५	१४	२	सि२६।३४	५	३०	७	२७	२	१८	५४	३०
३४	५१	४	शु.	५	१३	म.	३२	४	सि.	३०	२४	वि.	५	१३	२२	६	१५	३	सिंह	५	३१	७	२७	२	१९	५१	२१
३४	५०	५	श.	९	३४	पू. फा.	३८	१२	व्य.	३१	४०	वा.	९	३४	२३	७	१६	४	कं.५४।५०	५	३१	७	२७	२	२०	४८	१३
३४	४८	६	र.	१४	२७	उ. फा.	४४	४३	व.	३३	१७	तै.	१४	२७	२४	८	१७	५	कन्या	५	३१	७	२६	२	२१	४५	५
३४	४६	७	चं.	१९	३०	ह.	५१	१०	प.	३४	५६	व.	१९	३०	२५	९	१८	६	कन्या	५	३२	७	२६	२	२२	४१	५६
३४	४४	८	मं.	२४	१५	चि.	५७	९	शि.	३६	१६	ब.	२४	१५	२६	१०	१९	७	तु.२४।९	५	३२	७	२६	२	२३	३८	४८
३४	४२	९	बु.	२८	२३	स्वा.	६०	०	सि.	३७	३	को.	२८	२३	२७	११	२०	८	तुला	५	३२	७	२५	२	२४	३५	४४
३४	४०	१०	गु.	३१	२८	स्वा.	२	२४	सा.	३७	२	ग.	३१	२८	२८	१२	२१	९	वृ.५०।२८	५	३३	७	२५	२	२५	३२	३५
३४	३८	११	शु.	३३	२९	वि.	६	२९	शु.	३६	११	ब.	२	२८	२९	१३	२२	१०	वृश्चिक	५	३४	७	२५	२	२६	२९	२९
३४	३६	१२	श.	३४	११	अनु.	९	२८	शु.	३४	१६	ब.	३	५०	३०	१४	२३	११	वृश्चिक	५	३४	७	२४	२	२७	२६	२५
३४	३३	१३	र.	३३	३२	ज्ये.	११	९	ब्र.	३१	२०	को.	३	५२	३१	१५	२४	१२	ध.११।९	५	३५	७	२४	२	२८	२३	१९
३४	३१	१४	चं.	३१	४३	मू.	११	३८	ऐं.	२७	२६	ग.	२	३८	अ१	१६	२५	१३	धनु	५	३६	७	२४	२	२९	२०	१६
३४	२९	१५	मं.	२८	४७	पू. षा.	१०	५४	वै.	२२	३९	वि.	०	१५	२	१७	२६	१४	म.२५।२८	५	३६	७	२४	३	०	१७	१३

ग्रहदर्शन—प्रातः पूर्व क्षितिज में बु. उससे ऊपर मं. एवं पश्चिम क्षितिज में श. को आगे किए गु. दिखलाई देगा। सायं शु. पश्चिम में होगा। (दक्षिण अयन, वर्षा ऋतु)

गुरु वक्री ४४।५१, व. शनि श्रव. २ में ३२।२२,

चन्द्रदर्शन उ. भा. उ., जगदीश रथोत्सव

सफर मु. २ प्रा.,

अ. ३३।२७ उ.,

भ. ५।१३ या., पुष्य में सूर्य ९।८, मिथुन में बुध ४३।३२,

मघा सिंह में शुक्र ७।१५ [वि. मु. उ. फा.]

[वि. मु. उ. फा.]

भ. १९।३० उ. ५१।५२ या., पुष्य ४ में राहु श्रव. २ में केतु§

[वि. मु. चि.] §३।८, (वि. मु. ह.)

आर्द्रा में बुध २२।४३, (वि. मु. स्वा.)

भ.२।२८ उ. ३३।२९ या., रोहि. में मंगल १७।५५, देवशयनी ११✠

शनिप्रदोषव्र., ✠व्र.स., चातुर्मास्य-व्रत-नियमप्रा., (वि. म.अनु.)

भ.३१।४३ उ, सं कर्क में सूर्य ४१।५२ मु ३०, पुष्य ११।५२ उ‡

भ. ०।१५ या, श्री गुरु व्यासपूजा, †सत्य व्र. वायु परीक्षा,

आषाढ़ शुक्ल ८ सोमवार इष्ट ४६।१०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	१०	४	९	३	९
२४	७	५	१९	४	१६	१६	१६
४१	४५	४४	१५	१२	९	३४	३४
२८	३६	३१	२५	३६	२९	३३	३३
५७	४२	९१	१	६९	३	३	३
११	४	९	४४	३	५५	११	११
दृश्य	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	४	४	२	२	४	२
पुन.	रो.	मृग.	शत.	मघा	श्रव.	पुष्य	श्रव.
नीर	वायु	अग्नि	जल	अम.	अमृ.	जल	अमृ.

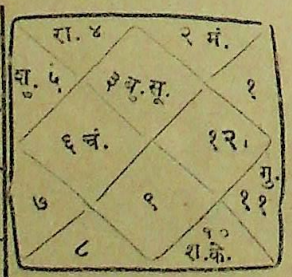

इस पक्ष में बहुत स्थानों पर वर्षा की कमी रहेगी, एवं वायु का जोर रहेगा। २ जुलाई को गुरु कुम्भ राशि में वक्री हो रहा है जो राजा-प्रजा के लिए शुभ कारक है, और बाद में सभी प्रकार के अनाज की उत्पत्ति के लिए भी अच्छा है, इसलिए अनाज का स्टाक समय देखकर निकाल देना चाहिए। घी, तेल, आज से ८ माह के भीतर मन्दे होने पर स्टाक करके तेजी आने पर बेचने से लाभ रहे। ७ जुलाई से लाल वस्तुएं, रस-पदार्थ, सोना, चान्दी, ताम्बा, गेहूँ, जौ, चना, मजीठ में तेजी आए। यहाँ पूर्णमासी को पू. षा, नक्षत्र है, जो अन्न की अच्छी उत्पत्ति का सूचक है। लिखा है—"आषाढ्यां पूर्वकाषाढा वर्षं यावच्छुभंकरी। "आवर्षवान्य निष्पत्तिः प्रजासौख्यमविग्रहात् ॥" यति ति. १४ को कुछ वर्ष हो तो टिड्डी का खतरा रहे।

आकाशलक्षण—७ से १७ जुलाई तक वर्षा के योग हैं। कई स्थानों में वर्षा में रुकावट भी होगी। भूटान, सिक्किम दार्जिलिंग, उड़ीसा, मद्रास में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा हो।

आषाढ़ शुक्ल १५ भौमवार इष्ट ४६।०

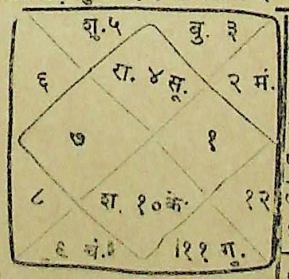

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	१०	४	९	३	९
१	१२	१७	१८	१२	१५	१६	१६
२१	३९	४६	५९	१३	४१	१२	१२
५९	२०	३२	३०	३२	१३	१७	१७
५७	४१	१२८	२	६८	४	३	३
१५	४०	४२	५९	१०	२०	११	११
दृश्य	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	४	४	४	४	२	२
पुन.	रो.	आर्द्रा	शत.	मघा	श्रव.	पुष्य	श्रव.
नीर	वायु	साम्य	जल	अम.	अमृ.	जल	अमृ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ श्रावण कृष्णपक्ष ८

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीखें प्र. अं. (श्रावण)	रा. (भाद्रपद)	मु. (आश्विन)	सञ्चार	चन्द्र भा. स्टं. टाईम सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	१८ से ३१ जुलाई तक सन् १९६२ ई,
३४	२६	१	बु.	२४	५१	उ. पा.	९	१०	वि.	१७	२	को.	२४	५१	३	१८	२७	१५	मकर	५	३७	७	२३	३	१	१४	१०	ग्रहदर्शन—१८ जुलाई का बु. पूर्व में अस्त होगा। प्रातः में पूर्व क्षितिज से ऊपर एवं पश्चिम में गु. श. क्रमशः ऊपर नीचे होंगे। सायं शु. पश्चिम में होगा। (दक्षिण अयन, वर्षा ऋतु)
३४	२४	२	गु.	२०	५	श्र.	६	३८	प्री.	१०	४३	ग.	२०	५	४	१९	२८	१६	कुं. ३४।५८	५	३७	७	२३	३	२	११	७	पुन. में बुध ४८।१०, पू. फा. में शुक्र ४४।३०, बुध पूर्व में +
३४	२२	३	शु.	१४	३९	ध.	५९	१६ ३२	आ.	५६	३ ५१ ३१	वि.	१४	३९	५	२०	२९	१७	कुम्भ	५	३८	७	२३	३	३	८	४	भ. ४७।२२ उ., पंचक प्रा. ३४।५८, +अस्त १५।४५,
३४	१९	४	श.	८	४६	पू. भा.	५५	२८	शो.	४९	३	बा.	८	४६	६	२१	३०	१८	मी ४१।२९	५	३८	७	२२	३	४	५	३	भ. १४।३९ या., पुष्य में सूर्य १२।३४, श्री गणेश ४ ब्र.,
३४	१७	५	र.	२	३८	उ. भा.	५१	१३	अ.	४१	२१	तै.	२	३८	७	२२	३१	१९	मीन	५	३९	७	२२	३	५	२	२	भ. ५६।२५ उ.,
अव	म	६	र.	५६	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३४	१४	७	चं.	५०	१९	रे.	४७	१०	सु.	३३	४८	वि.	२३	२२	८	२३	श्र १	२०	मे. ४७।१०	५	३९	७	२१	३	५	५९	४	भ. २३।२२ या., पंचक स. ४७।१०, सा. सिंह में सूर्य १९।४८, ≠
३४	१२	८	मं.	४४	३०	अ.	४३	२५	बृ.	२६	२५	बा.	१७	२४	९	२४	२	२१	मेष	५	४०	७	२१	३	६	५६	६	≠कर्क में बुध ३०।२५, इन्द्रमार्गी ४५।५०, रा. श्रावण प्रा., चेल्हम,
३४	९	९	बु.	३९	१५	भ.	४०	९	शु.	१९	२३	तै.	११	५२	१०	२५	३	२२	वृ. ५४।३१	५	४०	७	२०	३	७	५३	८	पुष्य मे बुध, ५।१५
३४	६	१०	गु.	३४	४५	कृ.	३७	३६	गं.	१२	५४	व.	७	०	११	२६	४	२३	वृष	५	४१	७	१९	३	८	५०	१३	भ. ७।० उ. ३४।४५ या.,
३४	३	११	शु.	३१	५	रो.	३५	५८	वृ.	७	४	ब.	२	५५	१२	२७	५	२४	वृष	५	४२	७	१९	३	९	४७	१९	कामिका ११ ब्र. स.,
३४	०	१२	श.	२८	२५	मृ.	३५	१७	ध्रु.	२ ५७	४ ५०	तै.	२८	२५	१३	२८	६	२५	मि ५।३८	५	४२	७	१८	३	१०	४४	२५	शनि प्रदोष ब्र.,
३३	५७	१३	र.	२६	५७	आ.	३५	४९	ह.	५४	३९	व.	२६	५७	१४	२९	७	२६	मिथुन	५	४३	७	१८	३	११	४१	३१	भ. २६।५७ उ. ५६।५१ या.,
३३	५४	१४	चं.	२६	४५	पुन.	३७	३५	व.	५२	२६	श.	२६	४५	१५	३०	८	२७	क. २२।९	५	४४	७	१८	३	१२	३८	३९	उ. फा. में शुक्र ३५।४०
३३	५०	३०	मं.	२७	५०	पु.	४०	३८	सि.	५१	१९	ना.	२७	५०	१६	३१	९	२८	कर्क	५	४५	७	१७	३	१३	३५	४८	आश्ले. में बुध २९।२२, हरियाली ३०,

श्रा. व. कृ. ३० मङ्गलवार, इष्ट ४५।५०,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	१०	४	९	३	९
८	१७	२	१८	२०	१५	१५	१५
८	२९	३९	३४	८	१०	५०	५०
५५	५०	१०	४०	२७	७	२	२
१७	४१	५९	४	६७	४	३	३
१८	१९	०	१८	२८	३२	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	व.	व	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

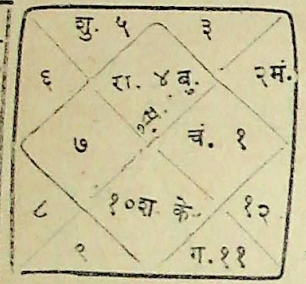

इस पक्ष में जनता सुखी रहे। पश्चिमी शासक वर्ग में कोई विशेष चिन्ता हो। १८ जुलाई से चान्दी, रुई, सूत, कपास, शण, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द में पहिले मन्दी आकर बाद में तेजी आए। घी, गुड़ आदि में तेजी रहे। २३ जुलाई से तेल, मूंगफली, सरसों, सोना, में अस्थिर तेजी आए, तुरन्त लाभ उठाना चाहिए। ति. ८ को वर्षा हो तो फसल अच्छी हो। ति. १० को जहाँ वर्षा हो वहाँ आगे भी वर्षा से सुभिक्ष रहे। जहाँ इस दिन वर्षा न हो, आकाश सर्वथा निर्मल रहे तो वहाँ दुर्भिक्ष हो।

श्राव. कृ. ८ मंगलवार, इष्ट ४५।३७,

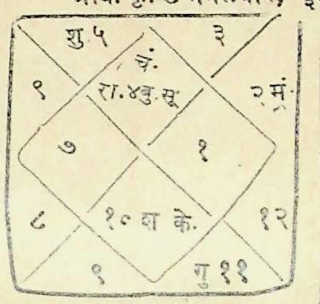

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	१०	४	९	३	९
१४	२२	१७	१७	२७	१४	१५	१५
४४	१७	१३	५९	५७	३८	२७	२७
१७	२७	१४	४८	४७	१४	४७	४७
५७	४०	५०	५	६६	४	३	३
२४	४२	०	३०	२७	३०	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

आकाशलक्षण—१८ से २[illegible] वृष्टि भी होगी। २४ से २८ जुलाई तक प्रायः सर्वत्र वर्षा हो। [illegible]

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आकाशलक्षण—[illegible] वृष्टि भी होगी। २४ से २८ जुलाई तक प्रायः सर्वत्र वर्षा हो। बम्बई, गोवा, नेपाल, [illegible] की ओर अधिक वृष्टि हो।

| वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ श्रावण शुक्लपक्ष ९ | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ.	प.	ति	वा.	घ.	प.	न.	घ	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	तारीख प्र. अ.	रा. मु.	चन्द्र सञ्चार	भा. स्टै. टाईम सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदयकालिक स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२	५२	१	गु.	४४	४	ध.	२३	१४	श.	२६	७	बा.	१६	४४	३२ १६	२५ १४	कुम्भ	५	५४	७	३	३	२८	५३	१२
३२	४८	२	शु.	३८	१६	श.	१९	३३	अ.	१८	५२	तै.	११	१०	भ१ १७	२६ १५	कुम्भ	५	५५	७	२	३	२९	५०	४०
३२	४४	३	श.	३२	७	पू. भा.	१५	३४	सु.	११	२२	व.	५	११	२ १८	२७ १६	मी १।३४	५	५५	७	१	४	०	४८	२०
३२	४०	४	र.	२५	५५	उ. भा.	११	१६	धृ.	३ ५५	४० ५७	बा.	२५	५५	३ १९	२८ १७	मीन	५	५५	७	०	४	१	४५	५६
३२	३६	५	चं	१९	५१	रे.	७	९	गं.	४८	२७	तै.	१९	५१	४ २०	२९ १८	मे. ७।९	५	५५	६	५८	४	२	४३	३४
३२	३२	६	मं.	१४	९	अ.	३ ५९	१७ ३३	बृ.	४१	१६	व.	१४	९	५ २१	३० १९	मेष	५	५६	६	५७	४	३	४१	१४
३५	२८	७	बु.	८	४९	कृ.	५७	८	ध्रु.	३४	३७	ब.	८	४९	६ २२	३१ २०	वृ. १४।१२	५	५७	६	५६	४	४	३८	५६
३२	२३	८	गु.	४	१८	रो.	५५	१६	व्या	२८	३६	कौ.	४	१८	७ २३	भ१ २१	वृष	५	५८	६	५५	४	५	३६	३९
३२	१९	९	शु.	०	३४	मृ.	५४	१८	ह.	२३	१९	ग.	०	३४	८ २४	२ २२	मि २४।४७	५	५८	६	५४	४	६	३४	२४
अव	म	१०	गु.	५७	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	१५	११	श.	५६	२२	आ.	५४	३१	व.	१८	११	ब.	२७	७	९ २५	३ २३	मिथुन	५	५९	६	५३	४	७	३२	११
३२	११	१२	र.	५६	६	पुन.	५५	५८	सि.	१५	२३	कौ.	२६	१४	१० २६	४ २४	क. ४०।३६	६	०	६	५२	४	८	२९	५९
३२	६	१३	चं.	५७	११	पु.	५८	४०	व्य.	१२	५५	ग.	२६	३८	११ २७	५ २५	कर्क	६	०	६	५१	४	९	२७	४८
३२	३	१४	मं.	५९	२५	आश्ले.	६०	०	व.	११	३१	वि.	२८	१८	१२ २८	६ २६	कर्क	६	०	६	५०	४	१०	२५	४०
३१	५७	३०	बु.	६०	०	आश्ले.	२	३२	प.	१०	५५	च.	३१	९	१३ २९	७ २७	सिं २।३२	६	१	६	४८	४	११	२३	३४
३१	५३	३०	गु.	२	५३	म.	७	३३	शि.	११	१६	ना.	२	५३	१४ ३०	८ २८	सिंह	६	२	६	४७	४	१२	२१	२९

१६ से ३० अगस्त तक सन् १९६२ ई.,

ग्रहदर्शन—प्रातः मं.पू. क्षितिज से काफी ऊपर एवं गुरु पश्चिम में डूब रहा होगा। सायं पश्चिम में बु. शु. तथा पूर्व में श. दिखलाई पड़ेगा। (दक्षिण अयन, वर्षा शरद् ऋतु)

सं. मघा सिंह में सूर्य ९।३८ मु. ३०, पुण्य २५।३८ या.,
भ. ५।११ उ. ३२।७ या., व.शनि श्रव. १ में५९।२५,π
π श्री गणेश ४ व्र.
पंचक स. ७।९, चन्द्र ६,
भ. १४।९ उ. ४१।२९ या., ∓श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्र.,
आर्द्रा में मंगल २७।२, उ. फा. में बुध ४०।१३,∓
सा. कन्या में सूर्य ३६।३७, शरदृतु प्रा. रा. भाद्रपद प्रा.,
भ. २९।१३ उ. ५७।२२ या., कन्या में बुध ५१।२८, चित्रा में ♈
♈शुक्र २५।४८,गुग्गा ९,
अजा ११ व्र. स्मा.,
अजा ११ व्र. वै. नि.,
भ. ५७।११ उ.,सोम प्रदोष व्र.,
भ. २८।१८ या.,
कुशोत्पाटिनी ३०

भाद्र. कृ. ८ गुरुवार, इष्ट ४५।५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	४	१०	५	९	३	९
६	७	२८	१५	२२	१३	१४	१४
४८	३०	१९	२६	३८	०	१४	१४
५७	१९	४१	४४	५	४५	३८	३८
५७	३८	९०	७	६१	३	३	३
१०	२७	४५	४३	४७	४४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	३	४	२	४	२	२
मघा	आर्द्रा	उ.फा.	हस्त	मृ.	चित्रा	पुष्य	श्रव.
मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.

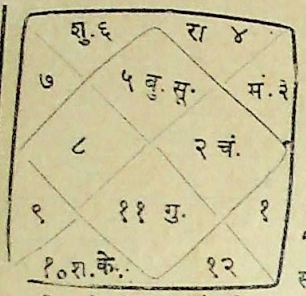

इस पक्ष में जनता में सुख समृद्धि हो, वायु का जोर रहे। अन्न का भाव पहिले मन्दा एवं बाद में १९ अगस्त से तेजी की ओर रहे। २२ ,गस्त से अलसी, रुई, सूत, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, में तेजी और चान्दी में मन्दी आए। २५ अगस्त से रुई में मन्दी गेहूँ, जौ, चना, हल्दी और सोने में तेजी आए। ति. २ को यदि चन्द्रमा बादलों से ढका रहने से न दिखाई दे तो आगे वर्षा अच्छी होने से अनाज की उत्पत्ति अच्छी है— "भाद्रे मासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते। तदा वृष्टिः समीचीना चान्न निष्पत्तिरुत्तमा ॥" यदि ति. २ अगस्त को वृष्टि हो तो रोग फैलने का डर रहे। इस पक्ष में तिल, तेल, सोना, चान्दी, मोती आदि का संग्रह करे तो छठे मास में लाभ मिले किन्तु आगे रखने से हानि उठानी पड़े।

भाद्र. कृ. ३० गुरुवार, इष्ट ४४।५५,

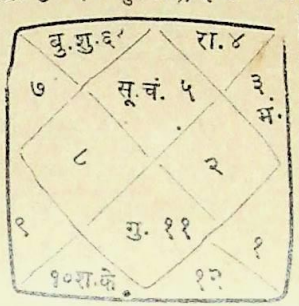

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	१०	५	९	३	९
१३	११	८	१४	२९	१२	१३	१३
३४	५७	१९	३१	४४	३५	५२	५२
२४	५४	५७	३१	१०	४	२३	२३
५८	३७	७८	७	५९	३	३	३
३	५९	३१	५९	३०	३१	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	४	३	२	४	२	२
पू.फा.	आर्द्रा	उ.फा.	शत.	चि.	श्रव.	पुष्य	श्रव.
मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.

आकाशलक्षण—१७-१८-२६-३४ [illegible] के योग पाए जाते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आकाशलक्षण—[illegible] योग पाए जाते हैं। बम्बई, मोर्वी, सूरत, कालिकट, आसाम के सभी समीपस्थ प्रदेशों में अच्छी वर्षा होगी।

वि० संवत् २०१९ शाक १८८४ भाद्रपद शुक्लपक्ष ११

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. भाव.	अं. अग.	रा. भाद्र.	मु. र.उ.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३१	४८	१	शु.	७	१३	पू.फा.	१३	२३	सि.	१२	१५	व.	७	१३	१५	३१	९	२९	क.२९।५८	६	३	६	४६	४	१३	१९	२७
३१	४४	२	श.	१२	७	उ.फा.	१९	४५	सा.	१३	४०	कौ.	१२	७	१६	स१	१०	२१	कन्या	६	३	६	४५	४	१४	१७	२७
३१	३९	३	र.	१७	१७	ह.	२६	१७	शु.	१५	१३	ग.	१७	१७	१७	२	११	२	तु.५९।२३	६	४	६	४४	४	१५	१५	२९
३१	३५	४	चं.	२२	८	चि.	२२	२९	शु.	१६	३७	वि.	२२	८	१८	३	१२	३	तुला	६	५	६	४३	४	१६	१३	३४
३१	३०	५	मं.	२६	२३	स्वा.	३८	३	ब्र.	१७	३६	बा.	२६	२३	१९	४	१३	४	तुला	६	५	६	४१	४	१७	११	४१
३१	२५	६	बु.	२९	४४	वि.	४२	४०	ऐं.	१७	५२	तै.	२९	४४	२०	५	१४	५	वृ.२६।३१	६	६	६	४०	४	१८	९	५०
३१	२१	७	गु.	३१	५४	अनु.	४६	१२	वै.	१७	१३	ग.	०	४९	२१	६	१५	६	वृश्चिक	६	७	६	३९	४	१९	८	१
३१	१६	८	शु.	३२	५०	ज्ये.	४८	२८	वि.	१५	४१	वि.	२	२२	२२	७	१६	७	ध.४८।२८	६	७	६	३७	४	२०	६	१३
३१	१२	९	श.	३२	३२	मू.	४९	२६	प्री.	१३	८	बा.	२	४१	२३	८	१७	८	धनु	६	७	६	३६	४	२१	४	२६
३१	७	१०	र.	३०	५८	पू. षा.	४९	१२	आ.	९	३३	तै.	१	४५	२४	९	१८	९	धनु	६	८	६	३५	४	२२	२	४२
३१	३	११	चं.	२८	१३	उ. षा.	४७	५३	सौ.	५	४०	वि.	२८	१३	२५	१०	१९	१०	म.३।५२	६	८	६	३३	४	२३	१	२
३०	५८	१२	मं.	२४	३१	श्र.	४५	४५	अ.	५३	३२	बा.	२४	३१	२६	११	२०	११	मकर	६	९	६	३२	४	२३	५९	२४
३०	५४	१३	बु.	१९	५४	ध.	४२	४१	सु.	४६	५१	तै.	१९	५४	२७	१२	२१	१२	कुं.१४।१३	६	९	६	३१	४	२४	५७	४७
३०	४९	१४	गु.	१४	४०	श.	३९	६	वृ.	३९	३६	व.	१४	४०	२८	१३	२२	१३	कुम्भ	६	१०	६	३०	४	२५	५६	१३
३०	४४	१५	शु.	८	५६	पू.भा.	३५	६	शु.	३२	१	व.	८	५६	२९	१४	२३	१४	मी.२१।६	६	११	६	२९	४	२६	५४	४०

तारीखें | चन्द्र | भा.स्टै. टाईम | उदयकालिक

३१ अगस्त से १४ सितम्बर तक सन् १९६२ ई.,

ग्रहदर्शन----प्र तः मं. पूर्व क्षितिज से ऊपर एवं गु. पश्चिम में डूबा। सायं पश्चिम में श. बु. ऊपर नीचे तथा श. पूर्व क्षितिज में हुआ। (दक्षिण अयन, शरद् ऋतु)

चन्द्रदर्शन उ.भ्रु. उ., पू फा. में सूर्य ०।३४, तुला में शुक्र ०।५०, हस्त में बुध १.४२, रवि उलाखर मु. ४ प्रा. सितम्बर ९ प्रा.‡

भ. ४९।४२ उ., हरितालिकाव्र., कलंक ४,

भ. २२।८ या., ‡मेला बाबा गुसाईं कुराली,

ऋषि ५ अगस्त्य उदित १४।४५,

सूर्य षष्ठी व्र.,

भ. ३१।५४ उ., स्वा. में शुक्र ५३।५०,

भ. २।२२ या.,

व. गुरु शत. २ में ५२।०, श्री चन्द्र ९, (उदासीन सम्प्रदायोत्सव)

भ. ५९।३५ उ., पुष्य ३ में राहु श्रव. १ में केतु ५६।०

भ. २८।१३ या., पद्मा ११ व्र. स.,

भीम प्रदोषव्र., वामन १२,

पंचक प्रा. १४।१३, पुन. में मंगल ४५।५,

भ.१४।४०उ. ४१।४८ या., उ.फा. म सूर्य ४४।५७, चित्रा में ×

×बुध ८।१५ सत्यव्र., अनन्त, १४, मेला छपार,

भाद्र शुक्ल ८ शुक्रवार, इष्ट ४८।४३,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	१०	६	९	३	९
२१	१६	१८	१३	७	१२	१३	१३
१९	५७	११	२८	२७	२	२६	२६
३२	२	२०	३६	१९	२४	५७	५७
५८	३६	६२	७	५५	२	३	३
१४	४६	१५	४०	५५	५०	११	११
इष्य	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	३	३	२	२	४	२
पू.फा.	आश्ले.	मघा	शत.	स्वा.	श्रव.	पुष्य	श्रव.
जल	सौम्य	सौम्य	जल	वायु	अमृत	जल	अमृत

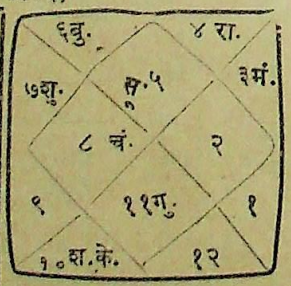

इस पक्ष में चना, चावल, उड़द, गेहूँ, सरसों, तिल, तेल, ऊनी वस्त्रों में मन्दी का वातावरण रहेगा। घी, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे। चान्दी में घटाबढ़ी और सोना, ईं में तेजी आकर मन्दी आए। ६ सितंबर को जहाँ वर्षा न हो वहाँ आगे भी वर्षा की कमी रहेगी। भा. १५ के दिन बादल बिजली गरजे तो अनाज शीघ्र ही बेच देना चाहिए यदि आकाश निर्मल रहे तो अन्न संग्रह करने से निश्चय ही लाभ रहे, लिखा है— "पूर्णा भाद्रपदे साभ्रा शुभा धान्यस्य विक्रयात्। नर्मल्ये धान्य संग्रहे लाभो भवति नान्यथा॥" ति. ११ की रात्रि को मेघगर्जन हो तो टिड्डी का भय हो।

आकाशलक्षण:—३१ अगस्त से ४ सितंबर तक बादल चाल रहे वायु भी चले। ७ से १४ सितंबर तक कहीं-कहीं खण्ड वृष्टि भय हो। यहाँ पुंछ, काश्मीर, पेशावर की ओर वर्षा अच्छी होगी। पूर्वी ऐं पूर्वोत्तरी भारत में अपेक्षाकृत अधिक वृष्टि होगी।

भाद्र. शुक्ल १५ शुक्रवार, इष्ट ४४।३३,

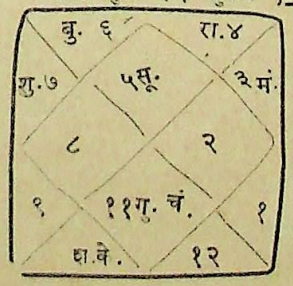

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	५	१०	६	९	३	९
२८	२१	२४	१२	१३	११	१३	१३
७	१२	४२	३५	५०	५१	४	४
१४	१३	१४	५०	८	१२	४२	४२
५८	३६	४६	७	५२	२	३	३
२८	८	४६	१३	३५	१९	११	११
इष्य	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	१	२	३	१	३	१
उ.फा.	पुन.	चि.	शत.	स्वा.	श्रव.	पुष्य	श्रव.
नार	नीर	अग्नि	जल	वायु	अमृत	जल	अमृत

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि.मा. १९८० कार्तिक कृष्णपक्ष १४ | शाके | गा. रा. दर्शन | अयनांशादि | १ मार्च-१९ अक्तू. तक, सन् १९६२ ई.,

घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आदित्य	अं. अक्तू.	रा. आदित्य	मु. अ.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२८	२५	१	र.	२३	२९	अ.	४२	२०	इ.	२७	२२	कौ.	२३	२९	२८	१४	२२	१४	मेष	६	२९	५	५१	५	२६	२५	३३
२८	२१	२	चं.	१७	५३	भ.	३८	४०	व.	१९	५८	ग.	१७	५३	२९	१५	२३	१५	वृ. ५।२४	६	३०	५	५०	५	२७	२५	१०
२८	१६	३	मं.	१२	४२	कृ.	३५	३५	सि.	१२	४९	वि.	१२	४२	३०	१६	२४	१६	वृष	६	३१	५	४९	५	२८	२४	४८
२८	१२	४	बु.	८	१६	रो.	३३	२०	व्य.	६	१७	बा.	८	१६	३१	१७	२५	१७	वृ	६	३१	५	४८	५	२९	२४	२८
२८	७	५	गु.	४	३९	मृ.	३१	५१	व.	५	३५	तै.	४	३९	२	१८	२६	१८	मि. २।३५	६	३२	५	४७	६	०	२४	११
२८	३	६	शु.	२	०	आ.	३१	२७	शि.	५१	१६	व.	२	०	३	१९	२७	१९	मिथुन	६	३३	५	४६	६	१	२३	५८
२७	५८	७	श.	०	३६	पुन.	३२	१८	सि.	४८	६	ब.	०	३६	४	२०	२८	२०	क. १७। ५	६	३४	५	४५	६	२	२३	४५
२७	५४	८	र.	०	२५	पु.	३४	२३	सा.	४५	५७	कौ.	०	२५	५	२१	२९	२१	कर्क	६	३४	५	४४	६	३	२३	३४
२७	४९	९	चं.	१	३५	आश्ले.	३७	४५	शु.	४४	४९	ग.	१	३५	६	२२	३०	२२	सिं ३७।४५	६	३५	५	४३	६	४	२३	२९
२७	४४	१०	मं.	४	१	म.	४२	१३	शु.	४४	३४	वि.	४	१	७	२३	क१	२३	सिंह	६	३६	५	४२	६	५	२३	२९
२७	४०	११	बु.	७	३५	पू. फा.	४७	४१	व.	४५	५	बा.	७	३५	८	२४	२	२४	सिंह	६	३६	५	४०	६	६	२३	१७
२७	३५	१२	गु.	१२	५	उ. फा.	५३	५०	ऐं.	४६	८	तै.	१२	५	९	२५	३	२५	क. ४।१३	६	३७	५	३९	६	७	२३	१६
२७	३१	१३	शु.	१७	९	ह	६०	०	वै.	४७	३७	व.	१७	९	१०	२६	४	२६	कन्या	६	३८	५	३९	६	८	२३	१६
२७	२६	१४	श.	२२	२९	ह.	०	१९	वि.	४८	५६	श.	२२	२९	११	२७	५	२७	तु. ३३।३१	६	३९	५	३७	६	९	२३	१८
२७	२२	३०	र.	२७	३४	चि.	६	४४	प्री.	४९	५८	ना.	२७	३४	१२	२८	६	२८	तुला	६	४०	५	३७	६	१०	२३	२४

ग्रहदर्शन—प्रातः म. याम्योत्तरवृत्त लग्न एवं बु. पूर्व में दीखेगा। सायंपश्चिम में शु. याम्योत्तर वृत्तासन्न श. एवं उससे कुछ पूर्व की ओर गु. होगा। (दक्षिण अयन, शरद्-हेमन्त ऋतु)

भ. ४५।१७ उ., बुध मार्गी ३२।२, अनु. में शुक्र २५।५५,
भ. १२।४२ या., कारक चतुर्थी (करवा चौथ) व्र.,
सं. तुला में सूर्य ३५।४० मु. ३०, पुण्य १९।४० उ.,

भ. २।० उ, ३१।१८ या.,
अहोई ८

भ. ३२।४८ उ.,
भ. ४।१ या., सायन वृश्चिक में सूर्य ५१।१०, हेमन्त ऋतु
स्वा. में सूर्य १६।४३, रमा ११ व्र. स.,
प्रदोष व्र., यम को पिंडदान धन. १३
भ. १७।९ उ. ४९।४९ या., श्री हनुमज्जयन्ती,
चित्रा में बुध ३२।५७. तरक १४, श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली,
प्रा., शुक्र वक्री १८।२७ रा. का तिक ।.,

कार्त्ति. कृ. ८ रविवार, इष्ट ४३।२१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	५	१०	७	९	३	९
४	११	१६	९	४	११	११	११
३३	४१	१०	३८	२९	२८	७	७
३१	५४	८	२१	४०	४८	३	३
५९	२९	६१	१	१	१	३	३
४४	३४	३४	२७	५७	१६	११	११
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
८	८	८	८	८	८	८	८
पुष्य							
ध्रुव	ध्रुव	शुक्ल	ध्रुव	शुक्ल	ध्रुव	शुक्ल	शुक्ल

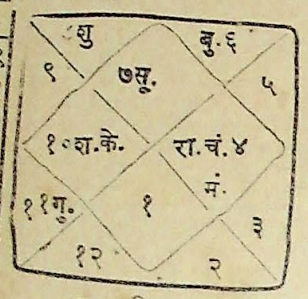

इस पक्ष में लकड़ी के भावों में तेजी आए। कपूर, अगर, चन्दन, इत्र आदि सुगन्धित द्रव्य, रेशम में घटा बढ़ी चलकर मन्दी आए। जौ, गेहूँ, चना आदि के भाव पहिले सम और पीछे तेज, हों। सोना, चान्दी, ईंट, शण, जूट, पाट, कोयला, तिल, तेल, सरसों, चावल में मन्दी और कस्तूरी, लौंग, इलायची, लाल मिर्च, हल्दी में घटा बढ़ी चले। २४ अक्तू. से सोना, चान्दी, ईंट, कपड़ा, सूत, बिनौला, गुड़, शक्कर, सुपारी, लाल मिर्च, अलसी, राई, हींग, सरसों में तेजी का रुख रहेगा।

इस प्रतिपदा को सूर्य के चारों ओर परिवेष (कुण्डल) पड़े तो तेल, तिल का व्यापार करना हानिप्रद रहता है। इस प्रतिपदा ति. ४ को यदि वर्षा हो जाए तो तिल, तेल, मूंग, उड़द और मूंज का संग्रह करने से पांचवें मास में लाभ हो। यहाँ ति. ११ को यदि मेघ दीखें तो आगे के आषाढ़ में उत्तम वर्षा हो।

आकाश लक्षण:—१४ से १७ और २० से २३ अक्तू. तक कहीं-कहीं बन्दा-बान्दीय, बादल चाल रहे। इन दिनों भूटान, सिक्किम आदि में अच्छी वर्षा होगी।

कार्त्ति. कृ. ३० रविवार, इष्ट ४३।२०

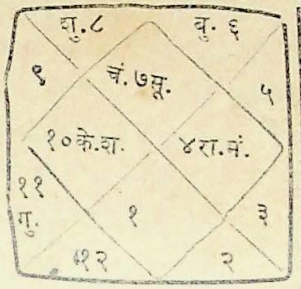

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	५	१०	७	९	३	९
११	१५	२५	९	३	११	१०	१०
३२	४	२	३२	५१	३९	४४	४४
१४	१	३८	२५	९	४३	४७	४७
५९	२७	९०	०	१५	१	३	३
५७	५७	९	३	२७	५७	११	११
मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ	
९	९	९	९	९	९	९	९
स्वा.	पुष्य	चित्रा	शत.	अनु.	शत.	पुष्य	अनु.
शुक्ल	ध्रुव	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	ध्रुव	शुक्ल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ कार्तिक शुक्लपक्ष १५ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं. टाईम | उदयकालिक | २९ अक्तु. से ११ नवं. तक, सन् १९६२ ई.,

दि. मा. घ.	प.			घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. अं. रा. सु. कार्ति.				सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२७	१८	१	चं.	३२	०	स्वा.	१२	३८	आ.	५०	३२	ब.	३२	०	१३	२९	७	२९	तुला	६	४०	५	३५	६	११	२३	३१
२७	१३	२	मं.	३५	३१	वि.	१७	४१	सौ.	५०	१५	बा.	३	४५	१४	३०	८	३०	वृ. १।३१	६	४१	५	३४	६	१२	२३	४१
२७	९	३	बु.	३७	५५	अन.	२१	५०	शो.	४९	११	ते.	६	४३	१५	३१	९	ज१	वृश्चिक	६	४१	५	३३	६	१३	२३	५२
२७	५	४	गु.	३९	१	ज्ये.	२४	४३	अ.	४७	२	ब.	८	२८	१६	न१	१०	२	ध. २४।४३	६	४२	५	३२	६	१४	२४	४
२७	१	५	शु.	३८	५०	मू.	२६	२१	धु.	४३	५३	ब.	८	५५	१७	२	११	३	धनु	६	४३	५	३१	६	१५	२४	१९
२६	५७	६	श.	३७	२४	पू. षा.	२६	४५	वृ.	३९	४६	को.	८	७	१८	३	१२	४	म. ४१।३३	६	४३	५	३१	६	१६	२४	३६
२६	५३	७	र.	३४	४७	उ. षा.	२५	५८	सू.	३४	४२	ग.	६	५	१९	४	१३	५	मकर	०	४४	०	३०	६	१७	२४	५४
२६	४९	८	चं.	३१	१३	श्र.	२४	१०	गं.	२८	५१	वि.	३	०	२०	५	१४	६	कुं. ५२।५१	६	४५	५	२९	६	१८	२५	१४
२६	४५	९	मं.	२६	४६	ध.	२१	३३	वृ.	२२	१७	कौ.	२६	४६	२१	६	१५	७	कुम्भ	६	४६	५	२८	६	१९	२५	३६
२६	४१	१०	बु.	२१	४१	श.	१८	१२	ध्रु.	१५	११	ग.	२१	४१	२२	७	१६	८	कुम्भ	६	४७	५	२७	६	२०	२६	२
२६	३७	११	गु.	१६	५	पू. भा.	१४	२३	व्या.	७	३७	वि.	१६	५	२३	८	१७	९	मी. ०।२०	६	४८	५	२७	६	२१	२६	२९
२६	३३	१२	श.	१०	११	उ. भा.	१०	१६	व.	५१	५७	बा.	१०	११	२४	९	१८	१०	मीन	६	४९	५	२६	६	२२	२६	५९
२६	३०	१३	श.	४	१३	रेव.	६	१	सि.	४४	८	ते.	४	१३	२५	१०	१९	११	मे. ६।१	६	५०	५	२६	६	२३	२७	३१
अव	म	१४	श.	५८	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	२६	१५	र.	५२	४९	अ.	५८	४६ ५०	व्य.	३६	२८	वि.	२५	३४	२६	११	२०	१२	मेष	६	५१	५	२५	६	२४	२८	४

ग्रहदर्शन—४ नवं. का बु. पूर्व में एवं ६ नव. को शु. पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्त लग्न दीखेगा। सायं+ (दक्षिण अयन, हेमन्त ऋतु)

गुरु मार्गी १३।२० अन्नकूट, गोवर्धन पूजा,
चन्द्रदर्शन उ., शुं. उ., व. शुक्र विशा. में ३५।५२, यम २. भाई दूज,
तुला में बुध ५५।४२, जमादि उलाखर मु. ६ प्रा.,
भ. ८।२८ उ. ३९।१या., आश्ले. में मंगल, १२।३५नवम्बर ○
○११ प्रा.,
बुध पूर्व में अस्त ४४।१५ शुक्र वाद्वीय प्रा. ७।४८
भ. ३४।३७ उ.
भ. ३।० या., पंचक प्रा. ५२।५१, स्वा. में बुध २।१०,
विशा. में सूर्य ३४।७, शुक्र पश्चिम में अस्त ७।४८, कष्माण्ड ९
भ. ४८।२३ उ., व. शुक्र तुला में २०।२२, विशा. १ में इन्द्र ८।३७;
भ. १६।५या., बोधिनी ११व्र.त., भीष्म पंचक ा., [शु. अ.]
प्रदोष व्र.,
भ. ५८।२० उ., पंचक स. ६।१, वैकुण्ठ १४,
(अजमेर), रामतीर्थ व काल मोक्षत, श्री गुरु नानक जयं.,
भ. २५।३४ या., पुष्य २ में राहु उ. पा. ४ में केतु ४७।५२†
†सत्यव्र. भीष्म पंचक एवं—कार्त्ति. स्ना. स. मेला पुष्कर

कार्त्ति. शुक्ल ८ चन्द्रवार, इष्ट ४३।८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	१०	७	९	३	९
१९	१८	७	९	०	११	१०	१०
३२	३८	४६	३७	५१	५८	१९	१९
३७	२४	३७	१२	५१	२५	२१	२१
६०	२५	९७	१	३१	२	३	३
१३	३६	१५	३५	३१	४५	११	११
दृश्य	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	२	२	४	२	३	२
स्वा.	आश्ले.	स्वा.	शत.	वि.	ध्रव.	पुष्य.	ध्रव.
वायु	अमृत	वायु	जल	चण्ड	अमृत	जल	जल

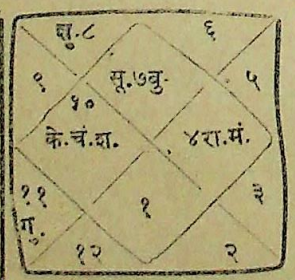

इस पक्ष में कहीं टिड्डी के उत्पात का एवं कहीं रोग के फैलने का भय है। गेहूँ आदि अन्न, उड़द, मूंग, मोठ, तिल के भाव तेजी की ओर रहे। सोना-चान्दी में घटा बढ़ी के बाद तेजी होगी। ई में पहिले मन्दी आकर बाद में तेजी आए। १ नवंबर से अलसी, सरसों, मूंगफली, बिनौला में मन्दी का प्रभाव रहेगा। गुड़, खाण्ड, में तेजी होगी। ४ नवम्बर से घी आदि में मन्दी आए। शुक्र की गति देखते हुए ज्ञात होता है कि कहीं समुद्री जहाजों का विध्वंस हो और कहीं किसी शासक के अपमानित होने का भय है।

आकाश लक्षणः—३ से ८ नवं. तक और १०-११ नवं. को कहीं-कहीं बून्दा बान्दी, बादल चाल के योग हैं। पूर्वी तट, उत्तर पूर्वी लंका में कुछ वर्षा भी होगी।

+शनि याम्योत्तर वृत लग्न तथा उस से कुछ पूर्व की ओर गुरु दिखाई देगा।

कार्त्ति. शुक्ल १५ रविवार, इष्ट ४२।५३

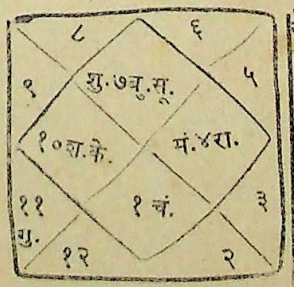

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	१०	६	९	३	९
२५	२१	१७	९	२७	१२	१०	१०
३४	७	२८	४९	३०	१६	०	०
१५	४३	२८	५९	४४	८	१६	१६
६०	२३	९५	२	३६	३	३	३
२२	५७	५	५३	४६	१५	११	११
दृश्य	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ
२	२	४	२	३	१	३	१
वि.	आश्ले.	स्वा.	शत.	वि.	ध्रव.	पुष्य.	ध्रव.
चण्ड	अमृत	वायु	जल	चण्ड	अमृत	जल	जल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०१९ शाक १८८४ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष १६ | सौरमास | चन्द्र | भा. स्टैंडर्ड टाइम | उदयकालिक | १२ से २७ नवम्बर तक, सन् १९६२ ई., †अयन.हेमन्त ऋतु)

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	प्र. अं. रा. मु. घं. मि.	सम्वार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
२६	२३	१	चं.	४७ ४३	कृ.	५४ ५५	ब.	२९ १२	बा.	२० १६	२७ १२ २१ १३	बु १२।२१	६ ५२	५ २५	६ ०५ २८ ३८
२६	१९	२	भौ.	४३ २२	रो.	५२ २३	प.	२२ २७	तै.	१५ ३२	२८ १३ २२ १४	बुध	६ ५२	५ २४	६ २६ २९ १४
२६	१५	३	बु.	३९ ५२	मृ.	५० ४२	शि.	१६ २१	व.	११ ३७	२९ १४ २३ १५	मि २१।३२	६ ५३	५ २३	६ २७ २९ ५२
२६	१२	४	गु.	३७ २१	आ.	५० ९	सि.	११ ३	ब	८ ३६	३० १५ २४ १६	मिथुन	६ ५४	५ २३	६ २८ ३० ३३
२६	८	५	शु.	३६ ४	पुन.	५० ३५	सा.	६ ३१	कौ	६ ४२	म१ १६ २५ १७	क.३५।२७	६ ५५	५ २२	६ २९ ३१ १५
२६	५	६	श.	३६ १	पु.	५२ १९	गु.	३ ०	बा.	६ २	२ १७ २६ १८	कर्क	६ ५६	५ २२	७ ० ३१ ५९
२६	२	७	र.	३७ २०	आश्ले.	५५ २३	शु.	० ३ ५८ ५७	वि.	६ ४०	३ १८ २७ १९	सि५५।२३	६ ५६	५ २१	७ १ ३२ ४३
२५	५९	८	चं.	३९ ४७	म.	५९ ३३	ऐं.	५८ २०	बा.	८ ३३	४ १९ २८ २०	सिंह	६ ५७	५ २१	७ २ ३३ २८
२५	५६	९	मं.	४३ २९	पू फा.	६० ०	वै.	५८ ३५	तै.	११ ३८	५ २० २९ २१	सिंह	६ ५८	५ २०	७ ३ ३४ १५
२५	५३	१०	बु.	४८ ५	पू. फा.	४४ ७	वि.	५९ २६	व.	१५ ४७	६ २१ ३० २२	कं.२१।१७	६ ५९	५ २०	७ ४ ३५ ६
२५	५०	११	गु.	५३ १८	उ. फा.	१० ४९	गं.	६० ०	ब.	२० ४१	७ २२ म१ २३	कन्या	७ ०	५ २०	७ ५ ३५ ५९
२५	४७	१२	शु.	५८ ४१	ह.	१७ १७	प्री.	० ४२	कौ.	२५ ५९	८ २३ २ २४	तु.५०।३१	७ १	५ २०	७ ६ ३६ ५३
२५	४४	१३	श.	६० ०	चि.	२३ ४५	आ.	२ ४	ग.	३१ १५	९ २४ ३ २५	तुला	७ १	५ १९	७ ७ ३७ ४८
२५	४२	१३	र.	३ ४९	स्वा.	२९ ५०	सौ.	३ १४	व.	३ ४९	१० २५ ४ २६	तुला	७ २	५ १९	७ ८ ३८ ४४
२५	३९	१४	चं.	८ १९	वि.	३५ ११	शो.	३ ५७	श.	८ १९	११ २६ ५ २७	वृ.१८।५१	७ ३	५ १९	७ ९ ३९ ४२
२५	३७	३०	मं.	११ ५२	अन.	३९ ३१	अ.	३ ५६	ना.	११ ५२	१२ २७ ६ २८	वृश्चिक	७ ४	५ १९	७ १० ४० ३९

ग्रह दर्शन—बुध अस्त है। १९ नव. को श. पूर्व में उदित होगा प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्त लग्न होगा। सायं ग. याम्योत्तर वृत्त-लग्न एवं उससे कुछ पश्चिम की ओर श. दीखेगा। (दक्षिणा)

विशा. में बुध १६।२७,
भ.११।३७उ. ३९।५२ या., शत. २ में गुरु ५४।१७,जन्मदिन ()
श्री गणेश ४ व्र., ()श्री जवाहरलाल नेहरू, बाल दिवस,
सं. वृश्चिक में सूर्य २८।२२, मु. ४५, पुष्य १२।२२ उ.,
भ. ३६।१ उ., निर्वाणदिवस ला. लाजपतराय
भ. ६।४० या.,
अनु. में सूर्य ४५।५५, वृश्चिक में बुध २७।३०, शुक्र पूर्व में <
<उदित ७।४८ श्री महाकाल भैरव ८ [ग. उ.]
भ. १५।४७ उ. ४८।५ या., अनु. में बुध ३१।२२,
सा.धनु में सूर्य ४३।२८, शुक्र बाल्य स. ७।४८, उत्पन्ना ११ ∫
उत्पन्ना ११ व्र. नि., मल १२, (वि. मु. चि.)
शनि प्रदोष व्र., ∫व्र. स्मा. वै.रा. मार्गशीर्ष प्रा.[वि.मु.ह.]
भ. ३।४९ उ. ३६।४ या.,
व. शुक्र. स्वा. में २२।३०, मेला पुरमण्डल,

मा. कृ. ८ रवि, ई. ४२।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	७	१०	६	९	३	९
३	२४	०	१०	२२	१२	९	९
१७	७	२४	१८	३७	४४	३४	३४
३	३८	२९	११	४४	४८	५१	५१
०	२०	९६	४	२९	४	३	३
४	२२	५०	१७	३२	०	११	११
मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
४	४	४	४	४	४	४	
आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.

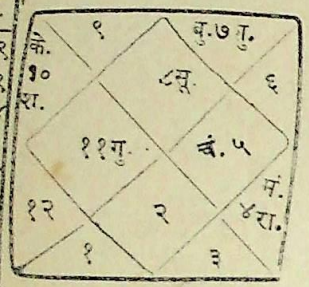

इस पक्ष में गेहूँ आदि अन्नों के भाव में मन्दी, रुई, सूत में तेजी हो और उड़द, मूंग, अरहर, मोठ के भाव सम रहें। अलसी, सरसों पहिले मन्दी और बाद में तेज हों। गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं में पहिले मन्दी और बाद में तेजी होगी। १९ नवंबर से घी, तिल, तेल, में मन्दी, आए। सोना, चान्दी के भाव में सम हों। रुई में घटा बढ़ी चले। गुजरात में कोई भय व्यापे। अन्न तेज और रेशम, सूत भारी तेज हों। १६ नवं. से ४० दिन के भीतर किसी श्रेष्ठ मान्य पुरुष की मृत्यु हो और वायदा बाजार प्रायः तेज में रहे। ति. ५ को वर्षा हो जाए तो सोना, पीतल, घास, मूंग, मोठ के संग्रह से आगे चलकर ८ वें मास में लाभ मिले। इस पक्ष में तिथि वृद्धि कहीं युद्ध, सैनिक संघर्ष की सूचक है।

मार्ग कृ. ३०म मंगलवार, इष्ट ४२।२०,

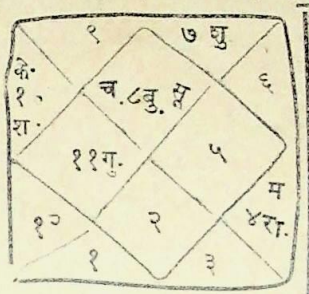

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	७	१०	६	९	३	९
११	२६	१३	१०	१९	१३	९	९
४३	३९	७	५७	३९	१८	९	९
९	२	५	५४	१२	३३	२४	२४
६०	१७	९४	५	१२	४	३	३
४७	४	३३	५०	२	३२	११	११
दग्ध	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	४	४	४	४	४	४
अनु.	आश्ले.	अनु.	उत्त.	मघा	श्रव.	पुष्य	मघा

आकाशलक्षणः—१२ नवं. और १५ से २० नवं. तक बादल चाल बता बारिश के योग हैं। इन दिनों विक्रिम कालिम्पोंग में साधारण वर्षा हो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १७ | तारीख | चन्द्र | मा. स्टं. टाइम | उदयकालिक

दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.	न	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ.प.	प्र. अं.	रा. मु.	सम्वार	सू. उ.	सू. अ.	स्पष्ट सौर सूर्य
घ.	प.										घं. मि.	घं. मि.		घं. मि.	घं. मि.	रा. अं. क. वि.
२५	३४	१	बु.	१४ १८	ज्ये.	४२ ४३	सु.	३ १	ब.	१४ १८	१३ २८	७ २९	ध.४२।४३	७ ५	५ १९	७ ११ ४१ ३९
२५	३२	२	गु.	१५ २५	मू.	४४ ४०	बृ.	१ ५८ १२ १९	को.	१५ २५	१४ २९	८ र.१	धनु	७ ५	५ १८	७ १२ ४२ ४०
२५	२९	३	शु.	१५ १४	पू. षा.	४५ १९	गं.	५४ २६	ता.	१५ १४	१५ ३०	९ २	धनु	७ ६	५ १८	७ १३ ४३ ४५
२५	२७	४	श.	१३ ४८	उ. षा.	४४ ४८	बृ.	४९ ३८	वि.	१३ ४८	१६ ३१	१० ३	म.०।११	७ ७	५ १८	७ १४ ४४ ५१
२५	२४	५	र.	११ १२	श्र.	४३ १३	ध्रु.	४३ ५८	बा.	११ १२	१७ २	११ ४	मकर	७ ८	५ १८	७ १५ ४५ ५७
२५	२२	६	चं.	७ ३७	ध.	४० ५१	व्या.	३७ ४१	तै.	७ ३७	१८ ३	१२ ५	कु.१२।२	७ ९	५ १८	७ १६ ४७ ५
२५	२०	७	मं.	३ १०	श.	३७ ३९	हर्ष.	३० ४२	व.	३ १०	१९ ४	१३ ६	कुम्भ	७ १०	५ १८	७ १७ ४८ १५
अव	म	८	न.	१८ ५	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	७ ०	० ०	० ० ० ०
२५	१७	९	बु.	५२ ३३	पू. भा.	३३ ५६	व.	२३ १५	बा.	२५ १९	२० ५	१४ ७	मी.१९।५२	७ ११	५ १८	७ १८ ४९ २६
२५	१५	१०	गु.	४६ ४३	उ. भा.	२९ ५१	वि.	१५ ३२	तै.	१९ ३८	२१ ६	१५ ८	मीन	७ १२	५ १८	७ १९ ५० ३७
२५	१३	११	शु.	४० ४९	रे.	२५ ३८	व्य.	७ ३५ ५६ ४३	व.	१३ ४८	२२ ७	१६ ९	मे.२५।३८	७ १३	५ १८	७ २० ५१ ४९
२५	११	१२	श.	३५ ३	अ.	२१ ३०	व.	५१ ५९	व.	७ ५७	२३ ८	१७ १०	मेष	७ १४	५ १८	७ २१ ५३ २
२५	१०	१३	र.	२९ ३३	भ.	१७ ३८	शि.	४४ ३१	को.	२ १८	२४ ९	१८ ११	वृ.३१।४७	७ १४	५ १८	७ २२ ५४ १५
२५	८	१४	चं.	२४ ३९	कृ.	१४ १४	सि.	३७ ३२	व.	२४ ३९	२५ १०	१९ १२	वृष	७ १५	५ १८	७ २३ ५५ २९
२५	७	१५	मं.	२० २६	रो.	११ ३०	सा.	३१ १३	व.	२० २६	२६ ११	२० १३	मि४०।३३	७ १५	५ १८	७ २४ ५६ ४४

ग्रहदर्शन—बृ. अस्त है। प्रातः म. याम्मात्तर वृत्त से पश्चिम की ओर लम्बित एवं गु. पूर्व क्षितिज में होगा। सायं गु. श. याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम की ओर जा रहे होंगे। (दक्षिण अयन, + हेमन्त ऋतु)

चन्द्र दर्शन उ. भृं. उ., श्रव. २ में शनि १।३२ [वि. मु. मू.]

ज्ये. में बुध ५७।२५, रजब मु. ७ प्रा., [वि. मु. मू.]

भ. ४४।३१ उ.,

भ. १३।४८ या., दिसम्बर १२ प्रा.,

ज्ये. में सूर्य ५३।५, नाग ५, चम्पा ६,

पंचक प्रा. १२।२, शुक्र मार्गी ९।५२,

भ. ३।१० उ. ३०।३७ या.,

श्री व्र. स्मा वै., श्रीगोला जयन्ती, [वि.मु.रे. अश्वि.]

[वि. मु. उ. भा.]

भ. १३।४६ उ., ४०।४९ या., पंचक स.२५।३८, मोक्षदा ११ श्री

मू. धनु में बुध ५६।२५, मोक्षदा ११ व. नि.,

प्रदोष व.,

भ. २४।३९ उ. ५२।३२ या., सत्यव., विशाख लोचन श्राद्ध, →

विशा., में शुक्र ७।१२, वरुण वक्री ११।५२,

→श्री दत्त जयं.,

मार्ग. शुक्ल ७ मंगलवार. इष्ट ४।।५

मू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	७	१०	६	९	३	९
१८	२८	२४	११	१८	१३	८	८
४८	२८	८	४२	५७	५२	४७	४७
५८	५	१६	३	५५	१८	८	८
६०	१३	९४	६	३	५	३	३
५१	१०	१३	५४	४८	१०	११	११
दृश्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	२	२	४	२	२	४
उच्चे.	आश्ले.	उच्चे.	उत्त.	ध्वा.	श्रव.	पुष्य	उ.षा.
वायु	अमृत	वायु	जल	वायु	अमृत	जल	जल

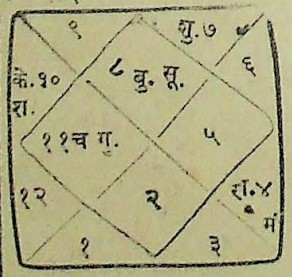

इस पक्ष में घोड़ा आदि पशुओं में रोग फैलने का भय रहे। घी व अनाज के भावों में समता तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर, सूत, धान, वस्त्र, रुई, चान्दी, सोना में मन्दी का रुख रहे। २ दिसम्बर के बाद सूत, चावल, घी व हाथीदन्त का संग्रह करने से १ मास के बाद लाभ हो। ति. १० को दिन रात उत्तर की वायु चले तो आगे वर्षा उत्तम हो। ९ दिसम्बर से सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत, वस्त्र, में तेजी का योग है।

मार्ग शीर्ष शुक्ल में तिथि क्षय हो। राजा प्रजा के लिए अशुभ है।

आकाशलक्षण:—३० नवं. से ३ दिसं. और ७ से ९ दिसं. तक बादल चाल के योग हैं। आसाम तथा तिब्बत में वर्षा भी हो। मद्रास—एवं पश्चिमी पाकिस्तान में भी वर्षा हो सकती है।

मार्ग. शुक्ल १५ मंगलवार, इष्ट ४१।५३

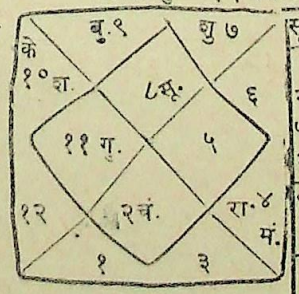

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	३	८	१०	६	९	३	९
२५	२९	५	१२	२०	१४	८	८
५५	४७	६	३३	९	२९	२४	२४
२६	८	५	३८	३८	३५	५३	५३
६१	८	९३	७	१८	५	३	३
१	४८	५५	५९	५०	३२	११	११
दृश्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	४	२	२	१	२	२	४
उच्चे.	आश्ले.	मूल	शत.	नि.	श्रव.	पुष्य	उ.षा.
वायु	अमृत	अग्नि	जल	चण्ड	अमृत	जल	जल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	नक्षत्र प.	अं.	रा.	मु.	चन्द्र सञ्चार	भा. स्टे. टाइम सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. मं.	ति.	उदयकालिक स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	६	१	बु.	१७	३	सू.	९	३०	शु.	२५	३३	को.	१७	२	२७	१२	२१	१४	मिथुन	७	१६	५	१८	७	२५	५८	०
२५	४	२	गु.	१४	४४	आ.	८	४१	शु.	२०	४४	ग.	१४	४४	२८	१३	२२	१५	क.५३।५२	७	१७	५	१९	७	२६	५९	१७
२५	३	३	श.	१३	३६	पुन.	८	५५	बृ.	१६	५०	वि.	१३	२९	२९	१४	२३	१५	कर्क	७	१८	५	१९	७	२८	०	३५
२५	२	४	श.	१३	४५	पु.	१०	२४	ऐ.	१३	५८	वा.	१३	४५	पो१	१५	२४	१७	कर्क	७	१८	५	१९	७	२९	१	५४
२५	१	५	र.	१५	११	आश्ले.	१३	११	वै.	१२	४	ते.	१५	११	२	१६	२५	१८	सिं.१३।११	७	१९	५	१९	८	०	३	१६
२५	०	६	चं.	१७	५१	म.	१७	७	वि.	११	७	व.	१७	५१	३	१७	२६	१९	सिंह	७	२०	५	२०	८	१	४	३७
२५	०	७	मं.	२१	४०	पू. फा.	२२	१०	शी.	११	४	ब.	२१	४०	४	१८	२७	२०	कं.३८।३९	७	२१	५	२१	८	२	५	५९
२४	५९	८	बु.	२६	२२	उ. फा.	२८	५	आ.	११	४३	को.	२६	२२	५	१९	२८	२१	कन्या	७	२१	५	२१	८	३	७	२१
२४	५९	९	गु.	३१	३७	ह.	३४	३०	सौ	१२	४९	ग.	३१	३७	६	२०	२९	२२	कन्या	७	२२	५	२२	८	४	८	४२
२४	५९	१०	शु.	३७	६	चि.	४१	३	शो.	१४	११	व.	४	२५	७	२१	३०	२३	तु.७।४६	७	२२	५	२२	८	५	१०	५
२४	५८	११	श.	४२	१४	स्वा.	४७	१७	अ.	१५	२६	ब.	९	४०	८	२२	पो१	२४	तुला	७	२३	५	२२	८	६	११	२८
२४	५८	१२	र.	४६	४१	वि.	५२	५२	सु.	१६	१५	को.	१४	२६	९	२३	२	२५	वृ.३६।२८	७	२४	५	२३	८	७	१२	५२
२४	५९	१३	चं.	५०	११	अनु.	५७	३१	धृ.	१६	२९	ग.	१८	२६	१०	२४	३	२६	वृश्चिक	७	२४	५	२४	८	८	१४	१६
२४	५९	१४	मं.	५२	३६	ज्ये.	६०	०	गू.	१५	५०	वि.	२१	२३	११	२५	४	२७	वृश्चिक	७	२४	५	२४	८	९	१५	४१
२५	०	३०	बु.	५३	३८	ज्ये.	१	३	गं.	१४	२१	च.	२३	७	१२	२६	५	२८	ध. १।३	७	२५	५	२५	८	१०	१७	६

ग्रह दर्शन—१९ दिस. का बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः मं. पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर एवं गु. पूर्व क्षितिज में दीखेगा। सायं गु. श. पश्चिम में ऊपर नीचे स्थित होंगे। (दक्षिण उ.अयन,*

भ. ४४।१० उ., मघा सिंह में मंगल ११।४०,

भ. १३।३६ या., श्री गणेश ४ व.,

सं. मू. धनु में सूर्य ५६।५०. मु. १५ पुष्य दूसरे दिन,

पू.षा. में बुध ५७।२२,

भ. १७।५१ उ. ४९।४५ या., चत. ३ में गुरु १४।२२,

बुध पश्चिम में उदित ४३।४२,

भ. ४।२१ उ. ३७।६ या.,

सा. मकर में सूर्य १५।२०, उत्तर अयन-शिशिर ऋतु प्रा.,

सफला ११ व. स., रा. पौष प्रा.,

भ. ५०।११ उ., मंगल वक्री १८।२२, सोम प्रदोष व.,

भ. २१।२४ या., उ.षा. में बुध ३९।४२, किसमिस डे

पौष कृ. ३० बुधवार, इष्ट ४१।३८,

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	८	१०	६	९	३	९
४	०	१७	१३	२३	१५	७	७
३	४०	३४	४२	३८	१५	५९	५९
१७	४७	२६	११	२०	५५	२७	२७
६१	३	९२	९	३३	६	३	३
६	४०	२२	१६	३२	१०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	मघा	पू.फा.	उत.	चि.	अनु.	पुष्य	उ.षा.

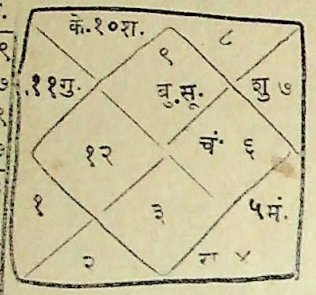

इस पक्ष में २४ दिसम्बर के बाद कहीं युद्ध संघर्ष या अन्य किसी उपद्रव की स्थिति बनेगी। सोना, चान्दी, आदि धातुएँ, गेहूँ आदि अनाज, लाल मिर्च, लाल वस्त्र, अलसी, रुई, गुड़, शक्कर, खाण्ड, लोहा, शस्त्र, तिल, तेल, मूंगफली, राई, मूंग, मोठ, सरसों, उड़द में तेजी आए। १६ दिसम्बर से गाय, भैंस के भाव मन्दे और घोड़ा, ऊँट, खच्चर आदि पशुओं के भाव तेज हों। १८ दिसं. से ई, कपास, वस्त्रों में मन्दी का वातावरण बनेगा। इस पक्ष में कई जगह खड़ी फसल को किसी प्रकार की हानि पहुँचेगी : ति. ९ को यदि पूर्व दिशा में बादल हों और गर्जना भी करें तो आगे, घास, अन्न की कमी रहे।

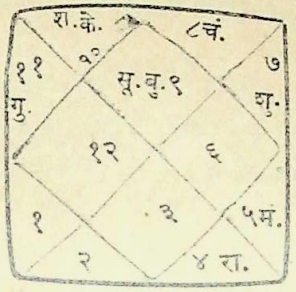

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	८	१०	६	९	३	९
११	०	२८	१४	२७	१५	७	७
११	४७	१०	४९	५८	५९	३७	३७
४९	५५	५८	१७	२०	२१	११	११
६१	१	८७	१०	४१	६	३	३
९	२०	७	१	५७	१५	११	११
	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पू.षा.	उ.षा.	उत.	चि.	अनु.	पुष्य	उ.षा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आकाश लक्षणः—१२ से १९ दिसं. तक कहीं कहीं वर्षा के साथ सारा भारत के पूर्वी तट एवं उत्तरपूर्वी

दि.मा. घ. प.		ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. अ.	रा. मु.	सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
२५	१	१	गु.	५३ २१	मू.	३ १९	व.	११ ५०	क.	२३ २९	१३ ४७	६ २९	धनु	७ २५	५ २५	८ ११ १८ ३१
२५	२	२	शु.	५१ ५२	पू. षा.	४ १८	ध्रु.	८ २०	बा.	२१ ३६	१४ ४८	७ ३०	म. १३।१५	७ २५	५ २६	८ १२ १९ ५५
२५	२	३	श.	४९ १४	उ. षा.	४ ५	व्या.	३ ४६ ५८ ३०	तै.	२० ३३	१५ २९	८ श१	मकर	७ २६	५ २७	८ १३ २१ २०
२५	३	४	र	४५ ३५	श्र.	२ ४६	व.	५२ २२	व.	१७ २४	१६ ३०	९ २	कुं. ३१।४३	७ २६	५ २७	८ १४ २२ ४६
२५	४	५	चं.	४१ ७	ध.	० ५७	ध्रु. ३६	सि.	४५ ३६	ब.	१३ २१	१७ ३१	१० ३	कुम्भ	७ २६	५ २८	८ १५ २४ १२
२५	५	६	मं.	३६ ३	पू. भा.	५४ ३	व्य.	३८ १९	कौ.	८ ३५	१८ ज१	११ ४	मी. ३९।५६	० २७	५ २९	८ १६ २५ ३८
२५	६	७	बु.	३० २६	उ. भा.	५० ३	व.	३० ४०	ग.	३ १५	१९ २	१२ ५	मीन	७ २७	५ २९	८ १७ २७ ४
२५	७	८	गु.	२४ ३७	रे.	४५ ५३	ध.	२२ ४२	व.	२४ ३७	२० ३	१३ ६	मे. ४५।५३	७ २७	५ ३०	८ १८ २८ ३०
२५	९	९	शु.	१८ ४४	अ.	४१ ४५	शि.	१४ ५४	कौ.	१८ ४४	२१ ४	१४ ७	मेष	७ २७	५ ३१	८ १९ २९ ५६
२५	१०	१०	श.	१२ ५८	भ.	३७ ४९	सि.	७ ५८ ३५	ग.	१२ ५८	२२ ५	१५ ८	वृ. ५१।५६	७ २७	५ ३१	८ २० ३१ २२
२५	१२	११	र.	७ ३३	कृ.	३४ १८	गु.	५२ २४	वि.	७ ३३	२३ ६	१६ ९	वृष	७ २७	५ ३२	८ २१ ३२ ४८
२५	१४	१२	चं	२ ३८	रो.	३१ २४	शु.	४५ ४८	बा.	२ ३८	२४ ७	१७ १०	वृष	७ २७	५ ३३	८ २२ ३४ १४
अव	म	१३	चं.	५८ ३४	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२५	१६	१४	मं.	५५ १८	मृ.	२९ २५	श.	३९ ५२	ग.	२६ ५६	२५ ८	१८ ११	मि. ०।२४	७ २८	५ ३४	८ २३ ३५ ३९
२५	१८	१५	बु.	५३ ५	आ.	२८ १६	तै.	३४ ४९	वि.	२४ ११	२६ ९	१९ १२	मिथुन	७ २८	५ ३५	८ २४ ३७ ४

ग्रह दर्शन—प्रातः मं. पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर एवं शु. पूर्व क्षितिज में होगा। सायं गु. श. बु. पश्चिम में ऊपर नीचे दीखने में आएंगे। (उत्तर अयन, शिशिर ऋतु)

मकर में बुध ५६।४५, मेलाबाबा हर बल्लभ (जालन्धर) प्रा.,
चन्द्र दर्शन उ. भ्रु. उ., पूर्वा. में सूर्य ५८।४२,
वृश्चिक में शुक्र ३२।१५, शावान मु. ८प्रा.,
भ. १७।२४ उ. ४५।३५ या., पंचक प्रा. ३१।४३,
सन् १९६२ ई. समाप्त, न्यू इयर ईव,
अभि. में बुध ५४।४०, जन. १ सन् १९६३ प्रा.,
भ. ३०।२६ उ.५७।३१या., श्रव. ३ में शनि१३।२०,अनु.मेंशुक्र×
पंचक म.४५।५३, ×४४।५०जन्मदिन श्री गु गोबिन्द सिंहजी,
श्रव. में बुध ५३।४५,
भ. ४०।१५ उ.,व. मं. आश्ले. कर्क में २९।५,बुध अभि. से+
भ. ७।३३ या., शत. ४ में गु ८।५२, पुत्रदा ११ ध्र. स.,
सोमप्रदोष व.,
+निवृत—५३।३०,

भ. ५५।१८ उ.,
भ. २४।११ या., सत्यव्र., माघ स्नान प्रा.,

पौष शुक्ल ८ गुरुवार, इष्ट ४१।३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	९	१०	७	९	३	९
१९	०	८	१६	४	१६	७	७
२१	१२	४६	१२	६	५०	११	११
५	५५	३२	४०	२६	१३	४६	४६
६१	६	६२	११	४९	६	३	३
१०	५०	५	३	५६	२५	११	११
दृश्य	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
८	९	४	८	८	८	८	४
सौम्य	पू.षा.	रेवा	उ.षा.	अनु.	अनु.	अनु.	उ.षा.
	अमृत	जल	जल	चण्ड	अमृत	जल	जल

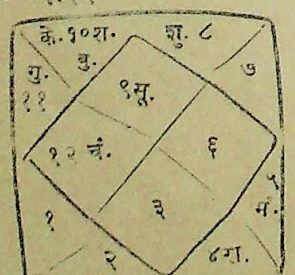

इस पक्ष में कहीं कोई राजनैतिक उलट फेर हो। लोहा, मटर, मूंग, उड़द, घी, मेवा, तिल, तेल, ऊनी वस्त्रों तथा घोड़ा ऊंटों के भाव मन्दे हों। ई में घटा बढ़ी चलकर बाद में तेजी रहे। सोना, चान्दी के भाव अचानक तेज हों। सरसों, हल्दी, गुग्गुल, कपूर, शण में तेजी आए। २९ दिसम्बर से ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ में मन्दी का रुख रहे और गुड़ में घटा बढ़ी चले। ५ जन. से गेहूं, अलसी के भावों में घटा बढ़ी चलेगी। यहां एकादशी को कृत्तिका नक्षत्र है, अतः लाल रंग की चीजों के व्यापारियों को लाभ हो और वर्षा ऋतु की पहिली वर्षा तक अब से भी लाभ हो। लिखा है—
"एकादश्यां पौषशुक्ले कृत्तिकायोगतः स्मृतः। रक्त वस्तु महालाभः सुधान्यात्प्रथमाम्बुदे॥" ति. १५ को बिजली चमके, ओले गिरें, चन्द्र या सूर्य पर कुण्डल पड़े तपकेतर, मोती, मूंगा के संग्रह से छठे मास में लाभ हो।

आकाशलक्षणः—२७ दिसं. से ७ जन. तक कांगड़ा हिमाचल प्र. व उत्तर प्रदेश में बहुत खण्ड वृष्टि हो।

माघ शुक्ल १५ बुधवार, इष्ट ४१।२१

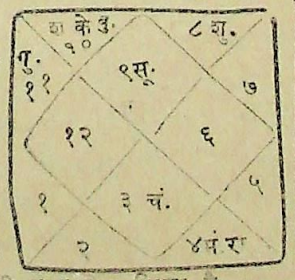

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	३	९	१०	७	९	३	९
२५	२९	१२	१७	९	१७	६	६
२८	१४	५९	२०	१६	३०	५२	५२
०	४३	५२	१९	१५	२९	४१	४१
६१	११	१४	११	५४	६	३	३
९	४४	१९	३६	१	५०	११	११
दृश्य	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	.	अ.	अ.
४	४	२	४	२	३	२	४
साध्य	पू.षा.	आश्ले.	श्रव.	अन.	अन.	श्रव.	पू.षा.
	अमृत	अमृत	जल	चण्ड	अमृत	जल	जल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. अं. रा. मु. सूर्य	चन्द्र	भौ. स्टे. टाइम	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	२१	१	गु.	५२	६	पुन	२८	१५	वै.	३०	३४	बा.	२२	३५	२७	१०	२०	१३	क. १३।१५	७	२८	५	३५	८	२५	३८	२८
२५	२३	२	शु.	५२	२२	पु.	२९	२४	वि.	२७	२०	वै.	२२	१४	२८	११	२१	१४	कर्क	७	२७	५	३६	८	२६	३९	५४
२५	२६	३	श.	५३	५९	आश्ले.	३१	५३	शी.	२५	६	व.	२३	१०	२९	१२	२२	१५	सि ३१।५३	७	२७	५	३७	८	२७	४१	२०
२५	२८	४	र.	५६	४४	म.	३५	३७	आ.	२३	५४	ध.	२५	२१	३०	१३	२३	१६	सिंह	७	२७	५	३८	८	२८	४२	४६
२५	३१	५	चं.	६०	०	पू. फा.	४०	२६	सौ.	२३	३२	कौ.	२८	४३	म १	१४	२४	१७	कं. ५६।२२	७	२७	५	३९	८	२९	४४	११
२५	३३	५	मं.	०	४२	उ. फा.	४६	९	शो.	२४	१	तै.	०	४२	२	१५	२५	१८	कन्या	७	२७	५	४०	९	०	४५	३५
२५	३६	६	बु.	५	३०	ह.	५२	३६	अ.	२४	५६	ब.	५	३०	३	१६	२६	१९	कन्या	७	२७	५	४१	९	१	४६	५७
२५	३८	७	गु.	१०	४९	चि.	५९	५	सु.	२६	१५	ब.	१०	४९	४	१७	२७	२०	तु. २५।५०	७	२७	५	४२	९	२	४८	१७
२५	४०	८	शु.	१६	१६	स्वा.	६०	०	शु.	२७	३४	कौ.	१६	१६	५	१८	२८	२१	तुला	७	२६	५	४२	९	३	४९	३६
२५	४३	९	श.	२१	२२	स्वा.	५	२७	शु.	२८	३५	ग.	२१	२२	६	१९	२९	२२	वृ. ५४।४७	७	२६	५	४३	९	४	५०	५३
२५	४६	१०	र.	२५	४९	वि.	११	१३	मं.	२९	८	वि.	२५	४९	७	२०	३०	२३	वृश्चिक	७	२६	५	४४	९	५	५२	१०
२५	४८	११	चं.	२९	१०	अनु.	१६	८	वृ.	२८	५०	जा.	२९	१०	८	२१	म १	२४	वृश्चिक	७	२५	५	४४	९	६	५३	२७
२५	५१	१२	मं.	३१	२८	ज्ये.	१९	५७	ध्रु.	२७	४४	कौ.	०	१९	९	२२	२	२५	ध. १९।५७	७	२५	५	४५	९	७	५४	४२
२५	५४	१३	बु.	३२	२६	मू.	२२	३०	व्या.	२५	३४	ग.	१	५७	१०	२३	३	२६	धनु	७	२५	५	४६	९	८	५५	५६
२५	५७	१४	गु.	३२	१	पू. षा.	२३	४६	ह.	२२	२४	वि.	२	१३	११	२४	४	२७	म. ३८।४७	७	२४	५	४७	९	९	५७	८
२६	०	३०	शु.	३०	२६	उ. षा.	२३	५१	व.	१८	१६	व.	१	१३	१२	२५	५	२८	मकर	७	२४	५	४८	९	१०	५८	१९

ग्रह दर्शन—१४ जन. को बु. एवं १७ जन. को शनि पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः मं. पश्चिम में, शु. पूर्व में दीखेगा। सायं पश्चिम क्षितिज में गुरु होगा। (उत्तर अयन, शिशिर ऋतु)

उ.षा. में सूर्य ०।५, बुध वक्री ४७।५८,
भ. २३।१०, उ. ५३।५९ या., शब-ए-बरात,
बुध पश्चिम में अस्त ५६।४५, पुष्य १ में राहु उ.षा. ३ में केतु
सं. मकर में सूर्य १५।२७, मु. ३०, पुष्य मध्यान्होत्तर,
(वि.मु.उ.फा.) ४०।४५, लोहड़ी (पंजाब में), संकट हारिणी,
भ. ५।३०उ.३८।९ या., व.बुध.अभि. में ३३।३५, (वि.मु.ह.चि.)
व.बुध उ.षा. में २१।५५, ज्ये. में शुक्र ३३।४७ शनि अस्त २८।५२*
(वि.मु.स्वा.) *श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयं., (वि.मु.चि.)
भ. ५३।३५ उ. + व.बुध अधि. से निवृत्त ५३।२०, (वि.मु.अनु.)
भ. २५।४९ या., अभि. में सूर्य ४६।५०, सा. कुम्भ में सूर्य ४१।३५, +
रा. माघ. प्रा., षट्तिला ११ ब्र. स., (वि. मु. अनु.)
पू. भा. १ में गुरु ५१।५२,
भ. ३२।२६ उ., प्रदोष व्र., जन्म दिन नेता जी श्री सुभाष,
भ. २।१३ या., श्रव. में सूर्य २।४७, सूर्य अभि. से निवृत्त ५५।७,
व. बुध धन में ५१।१७, मौनी ३०,

माघ कृष्ण, ८ शुक्रवार, इष्ट ४१।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	९	१०	७	९	३	९
४	२७	८	१९	१७	१८	६	६
३८	२	१९	७	४६	३२	२४	२४
८	३६	२३	५५	५२	४९	४	४
६१	१७	८	३	१२	५९	७	३	३
५	४६	४०	२३	३१	४	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

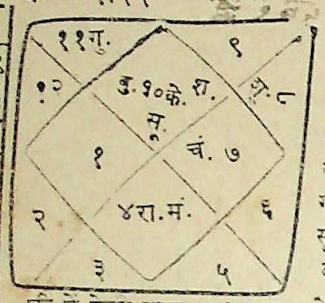

इस पक्ष में उत्तर व मध्य भारत की जनता में कहीं रोग-भय हो। मूंगफली, सरसों अलसी आदि में तेजी और अनाजों में मन्दी आए। १२ जनवरी से ३ दिन के भीतर रुई में यकायक १५-२० टका की मन्दी आएगी। १४ जन. से ज्वार, बाजरा, अरहर, मूंग, मोठ, मक्का का भाव सम हो। गेहूँ, खाण्ड, गुड़, शक्कर, सोना में कुछ मन्दी रहे। रुई, सूत, वस्त्र, एवं लाल रंग की चीजें मन्दी हों। कोयला, लकड़ी आदि में पहिले तेजी आकर बाद में मन्दी आएगी। मेवा घी में तेजी आए। १७ जन. से तेल व तिल, चावल, सोना, चान्दी में मन्दी आए। ति. ८ का यदि वायु अच्छा चले और आकाश स्वच्छ हो तो तेल, सुगन्धित पदार्थों का तुरन्त संग्रह करे, इससे आगे अच्छा लाभ मिले।

आकाशलक्षण:—१३ से १९ जन. तक आसाम, लद्दाख और लङ्का के दक्षिणी तट पर वृष्टि होगी। पूर्वोत्तर भारत में भी इन दिनों खण्ड वृष्टि होगी।

माघ कृष्ण ३० शुक्रवार, इष्ट ४१।३०

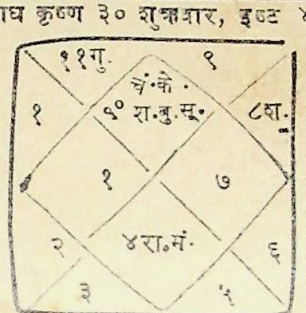

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	९	१०	७	९	३	९
११	२४	०	२०	२४	१९	६	६
४५	५२	८	३६	५०	२२	१	१
३५	४८	११	०	४७	२१	४८	४८
६१	१९	५२	१२	६१	७	३	२
१	४८	१०	५०	५७	९	११	११
	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दि. मा. घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र. अं. रा. मु. माघ	कृष्ण	माघ	शाबा.	सञ्चार	सू. उ. वं.	मि.	सू. अ. वं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि
२६ ३	१	श.	२७	४५	श्र.	२२	४६	सि.	१३	१५	ध.	२७	४५	१३	२६	६	२१	कुं.	५१	४७	७	२४
२६ ६	२	र.	२४	३	ध.	२०	४८	व्य.	७	२५	शौ.	२४	३	१४	२७	७	३०	कुम्भ			७	२४
२६ १०	३	चं.	१९	३१	श.	१८	०	ध.	७	५५	श.	१९	३१	१५	२८	८	२१	कुम्भ			७	२३
२६ १३	४	मं.	१४	२१	पू. भा.	१४	३२	शि.	४६	१६	वि.	१४	२१	१६	२९	९	२	मी.	०१	२४	७	२३
२६ १७	५	बु.	८	४७	उ. भा.	१०	३८	सि.	३८	३०	वा.	८	४७	१७	३०	१०	३	मीन			७	२२
२६ २०	६	गु.	२	५५	रे.	६	३०	सा.	३०	३७	ते.	२	५५	१८	३१	११	४	मे.	६	३०	७	२२
अव म	७	ग.	५७	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०
२६ २४	८	शु.	५१	१७	अ.	६ ५८	३३ २२	गु.	२२	४८	वि.	२४	१	१९	फ	१	१२	५	मेष		७	२१
२६ २८	९	श.	४५	५५	कृ.	५४	४५	श.	१५	१०	वा.	१८	३६	२०	२	१३	६	वृ.	१२	२८	७	२१
२६ ३१	१०	र.	४१	६	रो.	५१	४३	ब्र.	७	५३	ते.	१३	३०	२१	३	१४	७	वृष			७	२०
२६ ३५	११	चं.	३७	३	मृ.	४९	३३	ऐं.	१ ५५	१० ३	व.	९	४	२२	४	१५	८	मि.	२०	३८	७	१९
२६ ३९	१२	मं.	३३	५०	आ.	४८	१०	वि.	४९	४४	व.	५	२६	२३	५	१६	९	मिथुन			७	१८
२६ ४३	१३	बु.	३१	४२	पुन.	४७	५३	प्री.	४५	१०	शौ.	२	४६	२४	६	१७	१०	क.	३२	५७	७	१८
२६ ४७	१४	गु.	३०	४७	पु.	४८	५०	आ.	४१	४१	श.	१	१४	२५	७	१८	११	कर्क			७	१७
२६ ५१	१५	शु.	३१	८	आश्ले	५१	०	सौ.	३९	९	वि.	०	५८	२६	८	१९	१२	सिं.	५१	०	७	१६

हदशन—श. अस्त ह। २६ जन. का बु. पूर्व में उदित होगा। प्रातः मं. अस्ताभिमुख एवं शु. उदित दीखेंगे। सायं गु. पश्चिम में होगा। (उत्तर अयन. शिशिर ऋतु)

पञ्चक प्रा. ५१।४७, बुध पूर्व में उदित २४।३२, भारतीय* चन्द्रदर्शन, उ. थुं. उ., *गणतन्त्र दिवस,

भ. ४६।५६ उ., तिल ४, रवज्ञान मु. ९ प्रा.

भ. १४।२१ या., (वि. मु. उ. भा.)

मू. धनु में शुक्र ३७।३७, श्रव. ४ में शनि ५५।२७, निर्वाण∓

भ. ५७।१ उ., पञ्चक स. ६।३०, व. बुध पू. षा. में १८।१०, +

भ. २४।९ या., फरवरी २ प्रा., भीष्म ८

∓दिवस म. गान्धी, वसन्त (श्री) ५, (वि. मु. उ. भा., रे.)

(वि. मु. रो.) +बुध मार्गी २२।८ उ. वा. में बुध १३।३२ रथ ७

भ. ९।४ उ. ३७।३ या., जया ११ ब्र. स.,

भीष्म १२,

धनि. में सूर्य, ८।३०, प्रदोष त्र.,

भ. ३०।४७ उ., मकर में बुध ५५।५, पू. भा. २ में गुरु १।५,

भ. ०।५८ या., सत्यत्र., माघस्नान स.,

माघ शुक्ल ८ शुक्रवार, इष्ट ४१।३८

मू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	८	१०	८	९	३	९
१८	२२	२६	२२	२	२०	५	५
५२	२५	४७	७	११	१२	३९	३९
६	५८	११	३२	५८	४६	३३	३३
६०	२२	१६	१३	६४	७	३	३
५२	१३	२५	२३	२६	१४	११	११
दृष्य	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
३	१	१	१	१	१०	१	३
श्रव.	आश्ले.	उ.फा.	पू.भा.	मृ.	श्रव.	पुष्य	उ.षा.
अमृत	अमृत	नार	नीर	अग्नि	अमृत	जल	नार

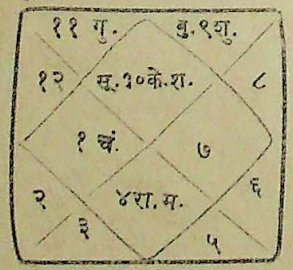

इस पक्ष में किसी राष्ट्र को अपने प्रतिवेशी राष्ट्र की दुर्नीति से क्षुब्ध एवं चिन्तित होना पड़े एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में उथल-पुथल मचे। ई, सोना, चान्दी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड व ऊनी वस्त्रों में कुछ मन्दी आए। ३० जन. से गेहूँ, जौ, चना, चावल तथा सूती वस्त्रों में तेजी आकर मन्दी आए। शेअर बाजार में भारी घटा बढ़ी चले। बाजरा, मूंगफली, तोरिया, में मन्दी का वातावरण बने। इस प्रतिपदा का शनिवार है जो आगे दुष्काल का सूचक है। ति. ५ को जहां वर्षा के साथ उत्तर का पवन चले वहां आगामी भाद्रपद में अनावृष्टि के कारण अन्न तेज हो। यदि ति. ६ को दिन भर सूर्य मेघों से ढका रहे तो आगामी आषाढ़ में अच्छी वर्षा हो।

आकाशलक्षण:—२६-२८-२९ ज. तथा ४ से ८ फरवरी तक कहीं वायु के साथ साधारण वर्षा होगी। अफगानिस्तान, हिमाचल प्रदेश, शिलांग में अपेक्षाकृत कुछ अधिक वृष्टि होगी।

माघ शुक्ल १५ शनिवार, इष्ट ४१।५०

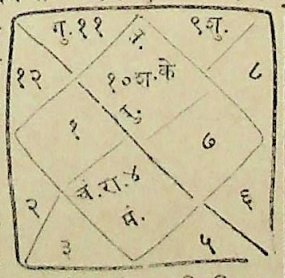

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	९	१०	८	९	३	९
२५	२०	०	२३	९	२२	५	५
५७	३	३२	४३	५३	३	१७	१७
५४	२	२६	८	१७	३८	१८	१८
६०	१८	४५	१३	६६	७	३	३
४६	३९	२४	४८	२९	११	११	११
दृष्य	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
१	१	२	२	३	४	१	३
धनि.	आश्ले.	उ.षा.	पू.भा.	मृ.	श्रव.	पुष्य	उ.षा.
अमृत	अमृत	नार	नार	अग्नि	अमृत	जल	नीर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शाक १८८४ फाल्गुन कृष्णपक्ष २२ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्ट टाईम | उदयकालिक | ९ मे. २४ फरवरी तक सन् १९६३ ई.

वि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. अं. (घ. प.)	रा. मु. (घ. प.)	सञ्चार	सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	५५	१	श.	३२	५२	म.	५४	३०	गो.	३७	३८	बा.	२	०	२७ ९	२० १३	सिंह	७	१५	६	१	९	२६	१४	३
२७	०	२	र.	३५	४१	पू.फा.	५९	५	अ.	३७	३	तै.	४	१६	२८ १०	२१ १४	सिंह	७	१४	६	२	९	२७	१४	५४
२७	४	३	चं.	३९	४३	उ. फा.	६०	०	सु.	३७	१७	व.	७	४२	२९ ११	२२ १५	कं.१५।२९	७	१३	६	३	९	२८	१५	४३
२७	८	४	मं.	४४	३१	उ. फा.	४	४१	बु.	३८	७	व.	१२	७	क१ १२	२३ १६	कन्या	७	१३	६	४	९	२९	१६	३०
२७	१३	५	बु.	४९	५२	ह.	१०	५४	शु.	३९	२८	कौ.	१७	११	२ १३	२४ १७	तु.४४।११	७	१२	६	५	१०	०	१७	१५
२७	१७	६	गु.	५५	१७	चि.	१७	२९	शं.	४०	५७	ग.	२२	३४	३ १४	२५ १८	तुला	७	११	६	६	१०	१	१७	५९
२७	२१	७	शु.	६०	०	स्वा.	२३	५८	वृ.	४२	१०	वि.	२७	४७	४ १५	२६ १९	तुला	७	१०	६	६	१०	२	१८	४२
२७	२६	७	श.	०	१८	वि.	२९	५२	भृ.	४२	५५	व.	०	१८	५ १६	२७ २०	वृ.१३।२४	७	९	६	७	१०	३	१९	२४
२७	३०	८	र.	४	३८	अनु.	३५	२	व्या.	४३	०	कौ.	४	३८	६ १७	२८ २१	वृश्चिक	७	८	६	८	१०	४	२०	५
२७	३५	९	चं.	७	५२	ज्ये.	३९	५	ह.	४२	१०	ग.	७	५२	७ १८	२९ २२	ध.३९।५	७	७	६	९	१०	५	२०	४४
२७	३९	१०	मं.	१०	४	मू.	४१	५८	व.	४०	२४	वि.	१०	४	८ १९	३० २३	धनु	७	६	६	१०	१०	६	२१	२०
२७	४३	११	बु.	१०	५०	पू. षा.	४३	३४	ति.	३७	३९	बा.	१०	५०	९ २०	क१ २४	म.५८।३९	७	५	६	१०	१०	७	२१	५४
२७	४८	१२	गु.	१०	१९	उ. षा.	४३	५५	व्य.	३३	५१	तै.	१०	१९	१० २१	२ २५	मकर	७	४	६	११	१०	८	२२	२६
२७	५२	१३	शु.	८	३५	श्र.	४३	८	व.	२९	९	व.	८	३५	११ २२	३ २६	मकर	७	३	६	१२	१०	९	२२	५७
२७	५७	१४	श.	५	४३	ध.	४१	२१	प.	२३	३६	श.	५	४३	१२ २३	४ २७	कुं.१२।१४	७	२	६	१३	१०	१०	२३	२६
२८	२	३०	र.	१	५९	श.	३८	४२	शि.	१७	२३	ना.	१	५९	१३ २४	५ २८	कुम्भ	७	१	६	१४	१०	११	२३	५२

ग्रह दर्शन—२० फर. का शनि उदित होगा। प्रातः शु. बु. पूर्व में ऊपर नीचे दिखेंगे। सायं गु. अस्ताभिमुख एवं मं. उदित होता हुआ दिखलाई देगा। उत्तर अयन, शिशिर, वसन्त ऋतु)

भ. ७।४२ उ. ३९।४३ या., पू. षा. में शुक्र ४९।२०,
सं.कुम्भमें सूर्य ४२।५७,मु.३०,पुण्य मध्यान्होत्तर, श्रीगणेश ४ व्र.
[वि. मु. ह.]
भ. ५५।१७ उ., (वि. मु. स्वा.)
भ. २७।४७ या., अभि. में बुध २०।१५, इन्द्र वक्री १२।५
व. वरुण मघा ३ में २३।५५ (वि. मु. अनु.)
(वि.मु.अनु.) ‡वसन्तऋतुप्रा,बुधअभि.सेनिवृत्त३।२२ (वि.म.मु.)
भ. ३८।५८ उ., श्रव. में बुध १८।१७,
भ. १०।१४ या., शत में सूर्य १८।३०, सा. मीन. में सूर्य १७।५२,‡
रा. फाल्गु न प्रा., व. मंगल पुष्य में, ३४।४७, विजया ११ . स., *
पू. भा. ३ म गु ,२४।१५, प्रदोष व्र., *शनि उदित ०।३५,
भ.८।३५उ.३७।१०या.,श्री महाशिवरात्रि व्र., जमत-उल-विदा,
पंचक प्रा. १२।१४, उ. षा. में शुक्र ४३।५२,

फाल्गु. कृष्ण. ८ रविवार, इष्ट ४२।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	१०	८	९	३	९
५	१७	९	२५	१९	२२	४	४
३	२६	१७	४७	५१	७	४८	४८
५८	३९	१८	५४	३४	२३	४२	४२
६०	१६	७०	१३	६६	६	३	३
३२	२५	२६	५८	५५	५८	११	११
बु.	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	
आश्ले.	उ.षा.	पू.भा.	पू.षा.	श्रव.	पुष्य	उ.षा.	

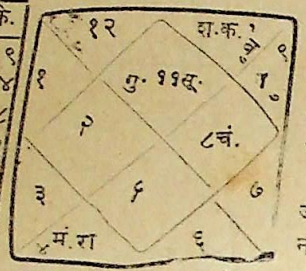

इस पक्ष में प्रजा में चोर भय हो एवं नए-नए उपद्रव हों। राजनैतिक नेताओं में परस्पर अविश्वास बढ़े। सोना, चान्दी तेज और गेहूँ, जौ, चना, का भाव नरम रहे। ११ फर. से उड़द, मूंग, नमक, सरसों, तिल, तेल में मन्दी का असर रहेगा। १८ फर. से चावल, चना, गुड़, खाण्ड में तेजी का रुख रहे। १९ फर. से सूत, कपास, सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, रेशम, गुग्गुल में तेजी आए और सूखा मेवा, नारियल, इलायची, हल्दी के व्यापारी लाभ में रहें। कहीं यान दुर्घटना या राजनैतिक हत्या का भी योग है। २१ फर. से चान्दी, ई में घटबढ़ और सोने में तेजी रहेगी फाल्गु. कृष्ण तृतीया को वायु के साथ मेघ दिखें तो आगे आश्वि. शुक्ल में अच्छी वर्षा हो।

फाल्गु. कृष्ण. ३० रविवार, इष्ट ४२।२७

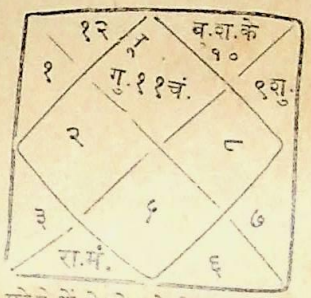

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
१०	३	९	१०	८	९	३	९
१२	१५	१८	२७	२७	२२	४	४
६	३५	७	२७	४६	५६	२६	२६
५६	२०	२४	३	५८	१	२५	२५
६०	१४	८१	१४	६८	६	३	३
१९	५०	४५	१६	४२	५४	११	११
व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. सं. २०१९ शा. १८८४ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ | तारीख | चन्द्र | भा.स्ट टाइम | उदयकालिक | २५ फर. से. १० मार्च तक. सन् १९६३ ई.

दि. मा. व.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ग्र. अं. रा. मु. हि. फ. मं. फ. हि. फ. मु. फ.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
अव	म	१	र.	५७	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	६	२	चं.	५२	५	पू. भा.	३५	२३	वि.	१०	३०	बा.	२४	४२	१४ २५ ६ २९	मी २१।१३	७	०	६	१४	१०	१२	२४	१६
२८	११	३	मं.	४६	२६	उ. भा.	३१	३७	सा.	५५	२९	ते.	१९	१५	१५ २६ ७ श १	मीन	६	५९	६	१५	१०	१३	२४	२९
२८	१५	४	बु.	४०	३२	रे.	२७	३०	शु.	४७	४०	व.	१३	२९	१६ २७ ८ २	मे. २७।३०	६	५८	६	१६	१०	१४	२५	१
२८	२०	५	गु.	३४	३७	अ.	२३	१९	ब.	३९	५४	व.	७	३४	१७ २८ ९ ३	मेष	६	५७	६	१७	१०	१५	२५	२२
२८	२५	६	शु.	२८	५०	भ.	१९	१७	ऐ.	३२	१३	कौ.	१	४३	१८ म १ १० ४	वृ. ३३।२२	६	५५	६	१७	१०	१६	२५	४१
२८	२९	७	श.	२३	३०	कृ.	१५	३५	वै.	२४	५१	व.	२३	३०	१९ २ ११ ५	वृष	६	५४	६	१८	१०	१७	२५	५८
२८	३४	८	र.	१८	४१	रो.	१२	२५	वि.	१७	५९	ब.	१८	४१	२० ३ १२ ६	मि ४१।१५	६	५३	६	१९	१०	१८	२६	१४
२८	३८	९	चं.	१४	३७	मृ.	१०	५	प्री.	११	४४	कौ.	१४	३७	२१ ४ १३ ७	मिथुन	६	५२	६	१९	१०	१९	२६	२७
२८	४३	१०	मं.	११	२५	आ.	८	३१	आ.	६	११	व.	११	२५	२२ ५ १४ ८	क. ५३।७	६	५१	६	२०	१०	२०	२६	३७
२८	४८	११	बु.	९	१७	पुन.	७	५९	सौ.	७	३५	वि.	९	१७	२३ ६ १५ ९	कर्क	६	५०	६	२१	१०	२१	२६	४५
२८	५२	१२	गु.	८	२३	पु.	८	४१	अ.	५४	५४	बा.	८	२३	२४ ७ १६ १०	कर्क	६	४९	६	२२	१०	२२	२६	४९
२८	५७	१३	शु.	८	४६	आश्ले.	१०	३७	सु.	५३	८	मं.	८	४६	२५ ८ १७ ११	सिं १०।३७	६	४८	६	२३	१०	२३	२६	५२
२९	२	१४	श.	१०	३०	म.	१३	५१	बृ.	५२	१८	व.	१०	३०	२६ ९ १८ १२	सिंह	६	४७	६	२४	१०	२४	२६	५१
२९	६	१५	र.	१३	२१	पू. फा.	१८	१२	शु.	५२	२६	ब.	१३	२१	२७ १० १९ १३	क. ३४।३३	६	४६	६	२४	१०	२५	२६	४९

ग्रहदशा—७ मार्च को गु. अस्त पूर्व में होंगे। सायं मं. पूर्व दिशि होगा। प्रातः शु. श. बु. पूर्व तज से ऊपर दीखेगा।
(उत्तर अयन, वसन्त ऋतु)

चन्द्रदर्शन उ. मृ. उ., मकर में
शकाल मु. १० प्रा., इंदुलग्न
भ. १३।२९ उ. ४०।३२ य
धनि. में बुध २५।२५
मार्च ३ प्रा.,
भ. २३।३० उ. ७

पू. भा. में सूर्य
भ. ४०।२१
भ. ९।१७ य
पू. भा. ४
शुक्र अ
भ. १०
धूलेंडी

शुक्र ४६।१७, [वि. मु. उ. भा.]
कितर, [वि. मु. उ. भा., रे.]
पञ्चक स. २७।३० [वि. मु. रे., अश्वि
धनि. १ मैशनि १२।२०,
पू. १।५ या., होलाष्टक प्रा.,
३३।२७, कुम्भ में बुध ५६।२२, अभि. में शुक्र
उ. १२५।५०, गुरु वार्द्धक्य
., आमला ११ व. म.,
मीन में गुरु २७।७, श्रव. में शुक्र १८।१२ गुरु अस्त
भ. से निवृत्त ४।७,
।३० उ. ४१।५५ या., शत. में बुध १०।४२, सत्यव्र.,
होलिका दहन,

फाल्गु. शुक्ल ८ रविवार, इष्ट ४२।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	९	१०	९	९	३	९
१९	१४	२८	२९	५	२३	४	४
८	१०	७	६	५०	२३	४	४
४६	५९	३६	४७	९	४०	१०	१०
६०	९	९१	१४	६९	६	३	३
८	३३	३१	१४	३१	४१	११	११
हिब्रू	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	४	४	४	४	४	४
शत.	पू.	वि.	मा.	पू.	वि.	पू.	वि.
जल	जल	अमृत	नीर	नीर	अमृत	जल	नीर

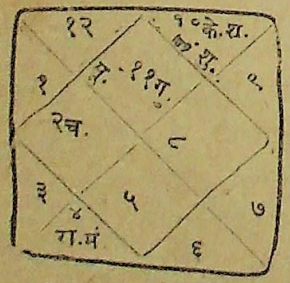

इस पक्ष में सरसों, तेल, घी, रुई, रंग, सूत, वस्त्र, सोना में तेजी रहे। चान्दी में घटाबढ़ी और अनाजों के, भाव में तेजी हो। २८ फर. से गुड़, खाण्ड में मन्दी और चावल, उड़द, मसूर, ज्वार, बाजरा में तेजी हो। घी, तेल और अनाजों के भाव मन्दे हों। सरसों तेल का स्टाक, पड़ा हो तो ५ मार्च से पहिले देना चाहिए और मन्दी आने पर खरीदने से आगे यहाँ फाल्गुन में गु का अस्त आगे अन्न में तेजी है। यहा त्रयोदशी शुक्रवारी है जो आगे ज्येष्ठ में रोगकारक है। ति. गरजे तो अन्न संग्रह करने से आगे ७ वें मास में लाभ हो।

आकाशलक्षण:—२६ से २८ फरवरी और ५ से ८ मार्च तक वायु गर्जेगा। तिल छोड़ लाभ हो। का सूचक। १५ को बादल या वर्षा हो अथवा मेघ जोर रहेगा। कहीं-कहीं बूंदाबांदी भी होगी।

फा. शुक्ल. १५ रविवार इष्ट ४३।५

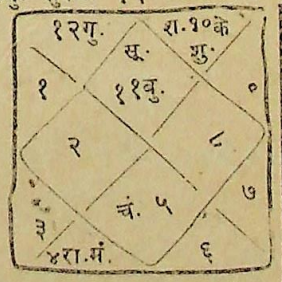

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१०	३	१०	११	९	९	३
२६	१३	९	०	१३	२४	३
९	१८	७	४६	५८	२९	४१
३	५३	३०	४३	५१	४०	५४
५९	४	९७	१४	७०	६	३
५४	४९	५५	२५	११	२६	११
हिब्रू	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.
४	४	४	४	४	४	४
पू.भा.२	पू.	शत.	पू.भा.२	शत.	वि.	पू.
नीर	जल	जल	नीर	अमृत	अमृत	जल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि. संवत् २०१९ शक १८८४ चैत्र कृष्णपक्ष २४

| मा. | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बिना गुणा भाग के इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करने की सरल विधि :—

इस पञ्चाङ्ग में अन्यत्र कहीं "लघुरिक्थ कोष्ठक" दिया गया है। उसके आधार पर दैनिक स्पष्ट ग्रहों से इष्टकालिक ग्रह बनाना अत्यन्त सरल है। इस कोष्ठक द्वारा ग्रह स्पष्ट करने की विधि जानने से पूर्व इष्ट घण्टा-मिनट एवं अंश-कला-विकलाओं का लघुरिक्थ प्राप्त करने की विधि समझ लीजिए—अभीष्ट घण्टा मिनटों का लघुरिक्थ "लघुरिक्थकोष्ठक" में से अभीष्ट घण्टे के नीचे एवं अभीष्ट मिनट के आगे प्राप्त करें। जैसे ६ घण्टा ४० मिनट का लघुरिक्थ ५५६३ है। इसी प्रकार कोष्ठक में दिए गए घण्टों को कला एवं मिनटों को विकला मान कर २४ कला से कम ग्रहगति का लघुरिक्थ प्राप्त किया जा सकता है। २४ कला या इससे अधिक ग्रहगति का लघुरिक्थ कोष्ठक में दिए गए घण्टों को अंश एवं मिनटों को कला मानकर पूर्ववत् प्राप्त किया जा सकता है। (शेष पृ० ७२ पर)

तारीख अप्रैल सन् १९६२	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं मि. से.	दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं.मि. ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) (५ अप्रैल को अयनांश २३°।१८'।५२")								
		सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (क्री) रा. अं. वि.
५	१२।५०।२६	११।२१।१२।१०	१०।२५। ०। ०	११। ९।४१।३५	१०। ८।४६।३०	०। ७।४१।२०	९।१६।१३।१९	३।२१।४२।५८	४। ३।१६।१२	६।१९।।३२
६	१२।५४।२२	११।२३।११।११	१०।२५।४६।४५	११।११।३४।३१	१०। ८।५८।५२	०। ८।५५।३०	९।१६।१७।३१	३।२१।३९।४७	४। ३।१४।५३	६।१९।३ ९
७	१२।५८।१९	११।२३।१०।१२	१०।२६।३३।३०	११।१३।२८।२८	१०। ९।११।१४	०।१०। ९।३९	९।१६।२१।४०	३।२१।३६।३७	४। ३।१३।३४	६।१९।३४२
८	१३। २।१५	११।२४। ९।१३	१०।२७।२०।१४	११।१५।२३।४८	१०। ९।२३।३६	०।११।२३।४५	९।१६।२५।४६	३।२१।३३।२६	४। ३।१२।१६	६।१९।३२५
९	१३। ६।१२	११।२५। ८।११	१०।२८। ६।५७	११।१७।२०।२९	१०। ९।३५।५६	०।१२।३७।४८	९।१६।२९।४८	३।२१।३०।१५	४। ३।१०।५८	६।१९।३८७
१०	१३।१०। ८	११।२६। ७। ८	१०।२८।५३।४०	११।१९।१८।३२	१०। ९।४८।१४	०।१३।५१।५०	९।१६।३३।४८	३।२१।२७। ४	४। ३। ९।४३	६।१९।२९०
११	१३।१४। ५	११।२७। ६। ३	१०।२९।४०।२३	११।२१।१८।१२	१०।१०। ०।३०	०।१५। ५।४८	९।१६।३७।४५	३।२१।२३।५४	४। ३। ८।३१	६।१९।२७।
१२	१३।१८। १	११।२८। ४।५५	११। ०।२७। १	११।२३।१९।१४	१०।१०।१२।४०	०।१६।१९।४३	९।१६।४१।४०	३।२१।२०।४३	४। ३। ७।२१	६।१९।२६।
१३	१३।२१।५८	११।२९। ३।४५	११। १।१३।३९	११।२५।२१।३८	१०।१०।२४।४०	०।१७।३३।३७	९।१६।४५।३१	३।२१।१७।३२	४। ३। ६।१२	६।१९।२४।५
१४	१३।२५।५४	०। ०। २।३३	११। २। ०।१८	११।२७।२५।२३	१०।१०।३६।३२	०।१८।४७।२७	९।१६।४९।१७	३।२१।१४।२१	४। ३। ५। ६	६।१९।२३।२
१५	१३।२९।५१	०। १। १।१७	११। २।४७। ०	११।२९।३१। २	१०।१०।४८।१४	०।२०। १।१५	९।१६।५२।५९	३।२१।११।१०	४। ३। ४। २	६।१९।२१।५५
१६	१३।३३।४७	०। २। ०।१	११। ३।३३।३१	०। १।३७।१४	१०।१०।५९।५१	०।२१।१५। २	९।१६।५६।३६	३।२१। ७।५९	४। ३। ३। १	६।१९।२०।२२
१७	१३।३७।४४	०। २।५८।४३	११। ४।२०। ६	०। ३।४४। ०	१०।११।११।२१	०।२२।२८।४८	९।१७। ०। ६	३।२१। ४।४८	४। ३। २। २	६।१९।१८।४६
१८	१३।४१।४०	०। ३।५७।२३	११। ५। ६।४०	०। ५।५१।१८	१०।११।२२।४४	०।२३।४२।३३	९।१७। ३।३०	३।२१। १।३८	४। ३। १। ५	६।१९।१७।११
१९	१३।४५।३७	०। ४।५६। ०	११। ५।५३।१३	०। ७।५९।१२	१०।११।३४। ०	०।२४।५६।१७	९।१७। ६।५०	३।२०।५८।२७	४। ३। ०।११	६।१९।१५।३६
२०	१३।४९।३३	०। ५।५४।३६	११। ६।३९।४५	०।१०। ७।३८	१०।११।४५।११	०।२६।१०। ०	९।१७।१०। ५	३।२०।५५।१६	४। २।५९।१९	६।१९।१४। २
२१	१३।५३।३०	०। ६।५३।११	११। ७।२६।१६	०।१२।१६।३९	१०।११।५६।१४	०।२७।२३।३८	९।१७।१३।१५	३।२०।५२। ५	४। २।५८।२६	६।१९।१२।२७
२२	१३।५७।२६	०। ७।५१।४४	११। ८।१२।४७	०।१४।२६।१३	१०।१२। ७।१२	०।२८।३७।१०	९।१७।१६।१६	३।२०।४८।५५	४। २।५७।३९	६।१९।१०।५२
२३	१४। १।२३	०। ८।५०।१४	११। ८।५९।१७	०।१६।३७।५२	१०।१२।१८। ६	०।२९।५०।३६	९।१७।१९। ६	३।२०।४५।४४	४। २।५७। ०	६।१९। ९।१७
२४	१४। ५।२०	०। ९।४८।४२	११। ९।४५।४६	०।१८।४६।४५	१०।१२।२८।५३	१। १। ४। ०	९।१७।२१।४६	३।२०।४२।३३	४। २।५६।३६	६।१९। ७।४२
२५	१४। ९।१७	०।१०।४७। ८	११।१०।३२।१२	०।२०।५२।५०	१०।१२।३९।३३	१। २।१७।२२	९।१७।२४।१७	३।२०।३९।२२	४। २।५६।१२	६।१९। ६। ७
२६	१४।१३।१३	०।११।४५।३३	११।११।१८।३६	०।२२।५६।१०	१०।१२।५०। ९	१। ३।३०।४२	९।१७।२६।४५	३।२०।३६।११	४। २।५५।४९	६।१९। ४।३२
२७	१४।१७।१०	०।१२।४३।५६	११।१२। ४।५६	०।२४।५६।४२	१०।१३। ०।३६	१। ४।४४। २	९।१७।२९।११	३।२०।३३। ०	४। २।५५।२६	६।१९। २।५५
२८	१४।२१। ६	०।१३।४२।१६	११।१२।५१।१४	०।२६।५४।२९	१०।१३।१०।५७	१। ५।५७।२१	९।१७।३१।३२	३।२०।२९।५०	४। २।५५। ४	६।१९। १।१८
२९	१४।२५। ३	०।१४।४०।३४	११।१३।३७।२९	०।२८।४९।२९	१०।१३।२१।११	१। ७।१०।३९	९।१७।३३।४७	३।२०।२६।३९	४। २।५४।४३	६।१८।५९।४१
३०	१४।२९। ०	०।१५।३८।५१	११।१४।२३।४२	१। ०।४१।४२	१०।१३।३१।१९	१। ८।२३।५६	९।१७।३५।५६	३।२०।२३।२८	४। २।५४।२५	६।१८।५८। ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मई को अयनांश २३°।१८'।५६")

तारीख मई सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१४।३२।५७	०।१६।३७। ४	११।१५। ९।५०	१। २।३१।५५	१०।१३।४१।१८	१। ९।३७।१२	९।१७।३७।५७	३।२०।२०।१८	४। २।५४।१५	६।१८।५६।२५
२	१४।३६।५३	०।१७।३५।१५	११।१५।५५।५६	१। ४।१९।२२	१०।१३।५१।१२	१।१०।५०।२७	९।१७।३९।५७	३।२०।१७। ७	४। २।५४। ८	६।१८।५४।४५
३	१४।४०।५०	०।१८।३३।२५	११।१६।४१।५९	१। ६। २।३३	१०।१४। ०।५९	१।१२। ३।४१	९।१७।४१।५०	३।२०।१३।५७	४। २।५४। १	६।१८।५३। ३
४	१४।४४।४७	०।१९।३१।३६	११।१७।२८। १	१। ७।४२।५८	१०।१४।१०।४०	१।१३।१६।५५	९।१७।४३।३७	३।२०।१०।४६	४। २।५३।५७	६।१८।५१।१८
५	१४।४८।४३	०।२०।२९।४७	११।१८।१३।५९	१। ९।१९। ८	१०।१४।२०।१३	१।१४।३०। ७	९।१७।४५।१७	३।२०। ७।३५	४। २।५३।५४	६।१८।४९।३०
६	१४।५२।४०	०।२१।२७।५७	११।१८।५९।५५	१।१०।५२।३१	१०।१४।२९।४०	१।१५।४३।१९	९।१७।४६।५४	३।२०। ४।२४	४। २।५३।५३	६।१८।४७।३८
७	१४।५६।३६	०।२२।२६। ४	११।१९।४५।४७	१।१२।२१।३८	१०।१४।३९। ०	१।१६।५६।३०	९।१७।४८।२६	३।२०। १।१३	४। २।५३।५४	६।१८।४५।४५
८	१५। ०।३३	०।२३।२४। ७	११।२०।३१।३७	१।१३।४८। ०	१०।१४।४८।१४	१।१८। ९।४०	९।१७।४९।५२	३।१९।५८। २	४। २।५४। ६	६।१८।४३।५५
९	१५। ४।२९	०।२४।२२।०५	११।२१।१७।२६	१।१५।१०।१०	१०।१४।५७।२३	१।१९।२२।४१	९।१७।५१।१३	३।१९।५४।५१	४। २।५४।३३	६।१८।४२। ९
१०	१५। ८।२६	०।२५।१९।५९	११।२२। ३।१३	१।१६।२७।५७	१०।१५। ६।२५	१।२०।३५।३८	९।१७।५२।३०	३।१९।५१।४०	४। २।५५।११	६।१८।४०। ३
११	१५।१२।२२	०।२६।१७।५५	११।२२।४८।५७	१।१७।४१।२०	१०।१५।१५।१७	१।२१।४८।३२	९।१७।५३।४०	३।१९।४८।३०	४। २।५५।४९	६।१८।३८।५५
१२	१५।१६।१९	०।२७।१५।५२	११।२३।३४।४०	१।१८।५०।२०	१०।१५।२४। २	१।२३। १।२३	९।१७।५४।४३	३।१९।४५।१९	४। २।५६।२७	६।१८।३७।२३
१३	१५।२०।१६	०।२८।१३।४८	११।२४।२०।२१	१।१९।५४।५६	१०।१५।३२।३८	१।२४।१४।१२	९।१७।५५।४०	३।१९।४२। ८	४। २।५७। ६	६।१८।३५।५४
१४	१६।२४।१२	०।२९।११।४५	११।२५। ५।५९	१।२०।५५। ८	१०।१५।४१। ६	१।२५।२६।५६	९।१७।५६।३१	३।१९।३८।५८	४। २।५७।४६	६।१८।३४।२५
१५	१६।२८। ९	१। ०। ९।४१	११।२५।५१।३४	१।२१।५०।५७	१०।१५।४९।२५	१।२६।३९।३८	९।१७।५७।१५	३।१९।३५।४७	४। २।५८।२७	६।१८।३[illegible]।५
१६	१६।३२। ५	१। १। ७।३६	११।२६।३७। ८	१।२२।४२।२२	१०।१५।५७।३६	१।२७।५२।१६	९।१७।५७।५४	३।१९।३२।३६	४। २।५९। ८	६।१८।३[illegible]
१७	१६।३६। २	१। २। ५।२७	११।२७।२२।३९	१।२३।३२।११	१०।१६। ५।३८	१।२९। ४।५२	९।१७।५८।२६	३।१९।२९।२५	४। २।५९।५०	६।१८।३ ०। ३
१८	१६।३९।५८	१। ३। ३।१५	११।२८। ८। ८	१।२४।१६।२४	१०।१६।१३।३२	२। ०।१७।२३	९।१७।५८।५२	३।१९।२६।१४	४। ३। ०।३३	६।१८।२८ ।३७
१९	१६।४३।५५	१। ४। १। १	११।२८।५३।३४	१।२४।५५। ०	१०।१६।२१।१७	२। १।२९।५१	९।१७।५९।११	३।१९।२३। ३	४। ३। १।१६	६।१८। २ ७।११
२०	१६।४७।५१	१। ४।५८।४६	११।२९।३८।५८	१।२५।२८। १	१०।१६।२८।५४	२। २।४२।१८	९।१७।५९।२४	३।१९।१९।५३	४। ३। २। ०	६।१८ ।२ ।५४६
२१	१६।५१।४८	१। ५।५६।३१	०। ०।२४।२०	१।२५।५५।५३	१०।१६।३६।२२	२। ३।५४।४०	९।१७।५९।३१	३।१९।१६।४२	४। ३। २।४५	६।१८ ।। २४।२१
२२	१६।५५।४४	१। ६।५४।१५	०। १। ९।४०	१।२६।१८।१०	१०।१६।४३।४१	२। ५। ७। ०	९।१७।५९।३१	३।१९।१३।३१	४। ३। ३।३०	६।१ ८ ।२२।५६
२३	१६।५९।४१	१। ७।५१।५८	०। १।५४।५७	१।२६।३४।५०	१०।१६।५०।५४	२। ६।१९।१६	९।१७।५९।२५	३।१९।१०।२१	४। ३। ४।१६	६।१ . ८।२१।३२
२४	१६। ३।३८	१। ८।४९।४०	०। २।४०।१२	१।२६।४५।५४	१०।१६।५७।५८	२। ७।३१।३१	९।१७।५९।१३	३।१९। ७।१०	४। ३। ५। ६	६। १ .८।२०। ८
२५	१६। ७।३५	१। ९।४७।१८	०। ३।२५।२१	१।२६।५३। ३	१०।१७। ४।५८	२। ८।४३।४५	९।१७।५८।५६	३।१९। ३।५९	४। ३। ६। २	६ ।। १८।१८।४४
२६	१६।११।३१	१।१०।४४।५२	०। ४।१०।२५	१।२६।५६। ३	१०।१७।११।५०	२। ९।५५।५८	९।१७।५८।३३	३।१९। ०।४८	४। ३। ७।१०	६ ।१८।१७।२०
२७	१६।१५।२८	१।११।४२।२८	०। ४।५५।२८	व१।२६।५४।५३	१०।१७।१८।३१	२।११। ८। ९	९।१७।५८। ५	३।१८।५७।३८	४। ३। ८।२१	६।१८।१५।५६
२८	१६।१९।२४	१।१२।४०। ४	०। ५।४०।२९	१।२६।४९।३४	१०।१७।२५। ०	२।१२।२०।१९	९।१७।५७।३१	३।१८।५४।२७	४। ३। ९।३५	६।१८।१४।३२
२९	१६।२३।२१	१।१३।३७।३७	०। ६।२५।२७	१।२६।४०। ६	१०।१७।३१।१८	२।१३।३२।२९	९।१७।५६।५१	३।१८।५१।१६	४। ३।१०।५	६।१८।१३। ८
३०	१६।२७।१७	१।१४।३५। ९	०। ७।१०।२३	१।२६।२६।२८	१०।१७।३७।३६	२।१४।४४।३६	९।१७।५६। ७	३।१८।[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।०

(१ जून को अयनांश २३°।१९'।०")

तारीख जून सन् १९६२	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१६।३५।११	११६।३०।१०	०। ८।४०। ८	१।२५।४६।४४	१०।१७।४९। ८	२।१७। ८।४६	९।१७।५४।२२	३।१८।४१।४४	४। ३।१४।५३	६।१८। ८।५६
२	१६।३९। ७	११७।२७।४०	०। ९।२४।५६	१।२५।१८।२४	१०।१७।५४।४२	२।१८।२०।३९	९।१७।५३।२१	३।१८।३८।३३	४। ३।१६।२१	६।१८। ७।३२
३	१६।४३। ४	११८।२५। ९	०।१०। ९।४३	१।२४।४८। ४	१०।१८। ०। ६	२।१९।३२।२५	९।१७।५२।१३	३।१८।३५।२२	४। ३।१७।५०	६।१८। ६। ८
४	१६।४७। ०	११९।२२।३७	०।१०।५४।२६	१।२४।१७।४७	१०।१८। ५।१८	२।२०।४४। ३	९।१७।५१। २	३।१८।३२।११	४। ३।१९।२३	६।१८। ४।४४
५	१६।५०।५७	१।२०।२०। ५	०।११।३९। ८	१।२३।४८।३२	१०।१८।१०।२१	२।२१।५५।४०	९।१७।४९।४६	३।१८।२९। ०	४। ३।२०।५६	६।१८। ३।२०
६	१६।५४।५३	१।२१।१७।३१	०।१२।२३।४७	१।२३।२०।२०	१०।१८।१५।१२	२।२३। ७।१२	९।१७।४८।२३	३।१८।२५।५०	४। ३।२२।३४	६।१८। १।५६
७	१६।५८।५०	१।२२।१४।५५	०।१३। ८।२४	१।२२।५१।१०	१०।१८।१९।५३	२।२४।१८।४१	९।१७।४६।५४	३।१८।२२।३९	४। ३।२४।१४	६।१८। ०।३२
८	१७। २।४६	१।२३।१२।१९	०।१३।५२।५८	१।२२।२२। २	१०।१८।२४।२२	२।२५।३०। ७	९।१७।४५।२०	३।१८।१९।२८	४। ३।२५।५८	६।१७।५९।१०
९	१७। ६।४३	१।२४। ९।४२	०।१४।३७।२८	१।२१।५१।५५	१०।१८।२८।४५	२।२६।४१।३२	९।१७।४३।४१	३।१८।१६।१८	४। ३।२७।४५	६।१७।५७।५०
१०	१७।१०।३९	१।२५। ७। ३	०।१५।२१।५२	१।२१।२२।२५	१०।१८।३३। ६	२।२७।५२।५५	९।१७।४१।५५	३।१८।१३। ७	४। ३।२९।३८	६।१७।५६।३३
११	१७।१४।३६	१।२६। ४।२४	०।१६। ६।११	१।२०।५३।४८	१०।१८।३७।२०	२।२९। ४।१६	९।१७।४०। ५	३।१८। ९।५६	४। ३।३१।३४	६।१७।५५।२०
१२	१७।१८।३२	१।२७। १।४४	०।१६।५०।२६	१।२०।२७। ४	१०।१८।४१।३०	३। ०।१५।३५	९।१७।३८। ९	३।१८। ६।४६	४। ३।३३।३३	६।१७।५४। ९
१३	१७।२२।२९	१।२७।५९। ४	०।१७।३४।३४	१।२०। २।१३	१०।१८।४५।३०	३। १।२६।५२	९।१७।३६। ९	३।१८। ३।३५	४। ३।३५।३४	६।१७।५३। ०
१४	१७।२६।२५	१।२८।५६।२३	०।१८।१८।३६	१।१९।४०। १	१०।१८।४९।२०	३। २।३८। ७	९।१७।३४। ३	३।१८। ०।२४	४। ३।३७।३८	६।१७।५१।५१
१५	१७।३०।२२	१।२९।५३।४१	०।१९। २।३८	१।१९।१८।१२	१०।१८।५२।५३	३। ३।४९।२०	९।१७।३१।५३	३।१७।५७।१३	४। ३।३९।४४	६।१७।५०।४२
१६	१७।३४।१८	२। ०।५०।५९	०।१९।४६।३७	१।१८।५९। १	१०।१८।५६।१२	३। ५। ०।२९	९।१७।२९।३८	३।१७।५४। ३	४। ३।४१।५२	६।१७।४९।३५
१७	१७।३८।१५	२। १।४८।१७	०।२०।३०।३२	१।१८।४१।४२	१०।१८।५९।२०	३। ६।११।३२	९।१७।२७।१८	३।१७।५०।५२	४। ३।४४। २	६।१७।४८।२९
१८	१७।४२।११	२। २।४५।३४	०।२१।१४।२३	१।१८।३१। ४	१०।१९। २।१६	३। ७।२२।२७	९।१७।२४।५२	३।१७।४७।४१	४। ३।४६।१५	६।१७।४७।२५
१९	१७।४६। ८	२। ३।४२।५०	०।२१।५८।११	१।१८।२५।३७	१०।१९। ४।५९	३। ८।३३।१७	९।१७।२२।२२	३।१७।४४।३०	४। ३।४८।२९	६।१७।४६।२१
२०	१७।५०। ४	२। ४।४०। ६	०।२२।४१।५६	१।१८।२४।१०	१०।१९। ७।३०	३। ९।४४। २	९।१७।१९।४८	३।१७।४१।२०	४। ३।५०।४६	६।१७।४५।१९
२१	१७।५४। १	२। ५।३७।२१	०।२३।२५।३७	म१।१८।२७।५८	१०।१९। ९।५०	३।१०।५४।४२	९।१७।१७। ६	३।१७।३८। ९	४। ३।५३। ४	६।१७।४४।१७
२२	१७।५७।५७	२। ६।३४।३६	०।२४। ९।१४	१।१८।३५।५०	१०।१९।११।५७	३।१२। ५।१८	९।१७।१४।२०	३।१७।३४।५८	४। ३।५५।२६	६।१७।४३।१८
२३	१८। १।५४	२। ७।३१।५१	०।२४।५२।४७	१।१८।४८।५५	१०।१९।१३।५२	३।१३।१५।५२	९।१७।११।३०	३।१७।३१।४७	४। ३।५७।४९	६।१७।४२।२०
२४	१८। ५।५०	२। ८।२९। ५	०।२५।३६।१७	१।१९। ५।५६	१०।१९।१५।३५	३।१४।२६।२१	९।१७। ८।३४	३।१७।२८।३६	४। ४। ०।१५	६।१७।४१।२३
२५	१८। ९।४७	२। ९।२६।१९	०।२६।१९।४४	१।१९।२७।५८	१०।१९।१७। ६	३।१५।३६।४७	९।१७। ५।३५	३।१७।२५।२५	४। ४। २।४२	६।१७।४०।२८
२६	१८।१३।४३	२।१०।२३।३१	०।२७। ३। ८	१।१९।५५।१६	१०।१९।१८।३२	३।१६।४७। ९	९।१७। २।२८	३।१७।२२।१५	४। ४। ५।१५	६।१७।३९।३६
२७	१८।१७।४०	२।११।२०।४३	०।२७।४६।२८	१।२०।२८। १	१०।१९।१९।४७	३।१७।५७।२७	९।१६।५९।१७	३।१७।१९। ४	४। ४। ७।५०	६।१७।३८।४८
२८	१८।२१।३७	२।१२।१७।५५	०।२८।२९।४४	१।२१। ४।४५	१०।१९।२०।४८	३।१९। ७।३९	९।१६।५६। ३	३।१७।१५।५३	४। ४।१०।२७	६।१७।३८। १
२९	१८।२५।३४	२।१३।१५। ७	०।२९।१२।५७	१।२१।४६।५५	१०।१९।२१।३८	३।२०।१७।४७	९।१६।५२।४८	३।१७।१२।४२	४। ४।१३। ६	६।१७।३७।१५
३०	१८।२९।३१	२।१४।१२।१९	०।२९।५६। ४	१।२२।३३। २	१०।१९।२२।१५	३।२१।२७।४८	९।१६।४९।२८	३।१७। ९।३१	४। ४।१५।४७	६।१७।३६।३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जुलाई को अयनांश २३°।१९'।४")

तारीख जुलाई सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं० मि० से०	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१८।३३।२८	२।१५। ९।३१	१। ०।३९। ७	१।२३।२४।३५	१०।१९।२२।४०	३।२२।३७।४६	९।१६।४६। ५	३।१७। ६।२०	४। ४।१८।३१	६।१७।३५।४५
२	१८।३७।२४	२।१६। ६।४३	१। १।२२। ६	१।२४।२०। ८	१०।१९।२२।५३	३।२३।४७।३७	९।१६।४२।३९	३।१७। ३।१०	४। ४।२१।१६	६।१७।३५। २
३	१८।४१।२१	२।१७। ३।५५	१। २। ५। २	१।२५।२१।१८	१०।१९।२२।५२	३।२४।५७।२५	९।१६।३९।११	६।१६।५९।५९	४। ४।२४। ४	६।१७।३४।२०
४	१८।४५।१७	२।१८। १। ६	१। २।४७।५०	१।२६।२५।५४	१०।१९।२२।३९	३।२६। ७। ६	९।१६।३५।३९	३।१६।५६।४८	४। ४।२६।५४	६।१७।३३।४१
५	१८।४९।१४	२।१८।५८।१७	१। ३।३०।३५	१।२७।३४।३१	१०।१९।२२।१५	३।२७।१६।४४	९।१६।३२। ४	३।१६।५३।३७	४। ४।२९।४६	६।१७।३३। ४
६	१८।५३।१०	२।१९।५५।२८	१। ४।१३।१६	१।२८।४८। ०	१०।१९।२१।३७	३।२८।२६।१५	९।१६।२८।२५	३।१६।५०।२७	४। ४।३२।४१	६।१७।३२।२८
७	१८।५७। ७	२।२०।५२।४०	१। ४।५५।५३	२। ०। ३।२२	१०।१९।२०।४८	३।२९।३५।४२	९।१६।२४।४५	३।१६।४७।१६	४। ४।३५।३६	६।१७।३१।५४
८	१९। १। ३	२।२१।४९।५२	१। ५।३८।२५	२। १।२३।३६	१०।१९।१९।४६	४। ०।४५। २	९।१६।२१। ०	३।१६।४४। ५	४। ४।३८।३५	६।१७।३१।२१
९	१९। ५। ०	२।२२।४७। ४	१। ६।२०।५३	२। २।४६।४२	१०।१९।१८।३१	४। १।५४।१९	९।१६।१७।१३	३।१६।४०।५४	४। ४।४१।३५	६।१७।३०।५०
१०	१९। ८।५६	२।२३।४४।१६	१। ७। ३।१६	२। ४।१३।४६	१०।१९।१७। ४	४। ३। ३।२९	९।१६।१३।२२	३।१६।३७।४४	४। ४।४४।३८	६।१७।३०।२१
११	१९।१२।५३	२।२४।४१।२८	१। ७।४५।३६	२। ५।४४।३१	१०।१९।१५।२५	४। ४।१२।३६	९।१६। ९।२९	३।१६।३४।३३	४। ४।४७।४२	६।१७।२९।५५
१२	१९।१६।४९	२।२५।३८।३९	१। ८।२७।४०	२। ७।१५।४०	१०।१९।१३।४१	४। ५।२१।३९	९।१६। ५।३४	३।१६।३१।२२	४। ४।५०।५२	६।१७।२९।३३
१३	१९।२०।४६	२।२६।३५।५१	१। ९। ९।४२	२। ८।४७।४०	१०।१९।११।४७	४। ६।३०।३६	९।१६। १।३९	३।१६।२८।११	४। ४।५४। २	६।१७।२९।१५
१४	१९।२४।४२	२।२७।३३। ४	१। ९।५१।४४	२।१०।२१।४९	१०।१९। ९।४२	४। ७।३९।२५	९।१५।५७।४३	३।१६।२५। ०	४। ४।५७।१२	६।१७।२८।५९
१५	१९।२८।३९	२।२८।३०।१७	१।१०।३३।४३	२।११।५७। ०	१०।१९। ७।२६	४। ८।४८। ७	९।१५।५३।४३	३।१६।२१।४९	४। ५। ०।२३	६।१७।२८।४४
१६	१९।३२।३५	२।२९।२७।३०	१।११।१५।४१	२।१३।४३।३९	१०।१९। ४।५८	४। ९।५६।४२	९।१५।४९।३८	३।१६।१८।३९	४। ५। ३।३६	६।१७।२८।३१
१७	१९।३६।३२	३। ०।२४।४४	१।११।५७।३६	२।१५।३९।५०	१०।१९। २।२०	४।११। ५।१२	९।१५।४५।२८	३।१६।१५।२८	४। ५। ६।४९	६।१७।२८।१९
१८	१९।४०।२८	३। १।२१।५९	१।१२।३९।२०	२।१७।४६।३२	१०।१८।५९।३०	४।१२।१३।३२	९।१५।४१।१३	३।१६।१२।१७	४। ५।१०। २	६।१७।२८। ९
१९	१९।४४।२५	३। २।१९।१४	१।१३।२१। ०	२।१९।५५।१४	१०।१८।५६।३१	४।१३।२१।४२	९।१५।३६।५३	३।१६। ९। ६	४। ५।१३।१६	६।१७।२८। १
२०	१९।४८।२१	३। ३।१६।३०	१।१४। २।३८	२।२२। ३।५८	१०।१८।५३।१९	४।१४।२९।४५	९।१५।३२।२८	३।१६। ५।५५	४। ५।१६।३१	६।१७।२७।५४
२१	१९।५२।१८	३। ४।१३।४६	१।१४।४४।१५	२।२४।१०।५५	१०।१८।४९।५८	४।१५।३७।४१	९।१५।२८। १	३।१६। २।४५	४। ५।१९।४७	६।१७।२७।५०
२२	१९।५६।१४	३। ५।११। २	१।१५।२६।४५	२।२६।१७।३५	१०।१८।४६।२४	४।१६।४५।३१	९।१५।२३।३४	३।१५।५९।३४	४। ५।२३। ३	६।१७।२७।४७
२३	२०। ०।११	३। ६। ८।१९	१।१६। ७। ९	२।२८।२५।३०	१०।१८।४२।४१	४।१७।५३।१५	९।१५।१९। ६	३।१५।५६।२४	४। ५।२६।२०	६।१७।२७।४६
२४	२०। ४। ८	३। ७। ५।३७	१।१६।४८।३०	३। ०।३२।२३	१०।१८।३८।४६	४।१९। ०।५५	९।१५।१४।३७	३।१५।५३।१३	४। ५।२९।३८	६।१७।२७।४६
२५	२०। ८। ५	३। ८। २।५५	१।१७।२९।५०	३। २।३९।१०	१०।१८।३४।४०	४।२०। ८।२७	९।१५।१०। ७	३।१५।५०। २	४। ५।३२।५७	६।१७।२७।४९
२६	२०।१२। १	३। ९। ०।१३	१।१८।११। ९	३। ४।४५।१७	१०।१८।३०।२२	४।२१।१५।५५	९।१५। ५।३५	३।१५।४६।५२	४। ५।३६।१६	६।१७।२७।५३
२७	२०।१५।५८	३। ९।५७।३२	१।१८।५२।२६	३। ६।५१।२३	१०।१८।२५।४५	४।२२।२३।१७	७।१५। १। १	३।१५।४३।४१	४। ५।३९।३६	६।१७।२७।५८
२८	२०।१९।५५	३।१०।५४।५१	१।१९।३३।३८	३। ८।५६।४०	१०।१८।२०।५३	४।२३।३०।२९	९।१४।५६।२६	३।१५।४०।३१	४। ५।४३। १	६।१७।२८। ३
२९	२०।२३।५१	३।११।५२।११	१।२०।१४।४४	३।११। १।४०	१०।१८।१५।४५	४।२४।३७।३२	९।१४।५१।५१	३।१५।३७।२०	४। ५।४६।२७	६।१७।२८। ९
३०	२०।२७।४७	३।१२।४९।३२	१।२०।५५।४४	३।१३। ६।१०	१०।१८।१०।३२	४।२५।४४।२४	९।१४।४७।१८	३।१५।३४। ९	४। ५।४९।५०	६।१७।२८।१०
३१	२०।३१।४४	३।१३।४६।५४	१।२१।२३।३८	३।१४।१०।५५	१०।१८। ५।१३	४।२६।५१।१८	९।१४।३८।१०	३।१५।३१।५८	४। ५।५६।१३	६।१७।२८।१०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (सायन - ० । ० - भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अगस्त को अयनांश २३°।१९'।८")

तारीख अगस्त सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	२०।३५।४०	३।१४।४४।१७	१।२२।१७।२७	३।१७।१३।१४	१०।१७।५९।४८	४।२७।५७।४५	९।१४।३८।१४	३।१५।२७।४७	४। ५।५६।५६	६।१७।२८।४१
२	२०।३९।३७	३।१५।४१।४१	१।२२।५८। ९	३।१९।१६। ४	१०।१७।५४।१८	४।२९। ४।१२	९।१४।३३।४४	३।१५।२४।३६	४। ६। ०।२८	६।१७।२८।५७
३	२०।४३।३३	३।१६।२९। ६	१।२३।३८।४९	३।२१।१७।३४	१०।१७।४८।४२	५। ०।१०।३०	९।१४।२९।१५	३।१५।२१।२५	४। ६। ४। २	६।१७।२९।१५
४	२०।४७।३०	३।१७।३६।३१	१।२४।१९।२८	३।२३।१६।३८	१०।१७।४३। १	५। १।१६।३७	९।१४।२४।४७	३।१५।१८।१४	४। ६। ७।३७	६।१७।२९।३५
५	२०।५१।२६	३।१८।३३।५८	१।२५। ०। ३	३।२५।१४।४४	१०।१७।३७।११	५। २।२२।२९	९।१४।२०।२३	३।१५।१५। ४	४। ६।११।१६	६।१७।२९।५८
६	२०।५५।२३	३।१९।३१।२६	१।२५।४०।२९	३।२७।१०।४९	१०।१७।३१।१२	५। ३।२८।१८	९।१४।१६। ०	३।१५।११।५३	४। ६।१४।५५	६।१७।३०।२३
७	२०।५९।१९	३।२०।२८।५४	१।२६।२०।४५	३।२९। ५।५२	१०।१७।२५। ८	५। ४।३३।५०	९।१४।११।३७	३।१५। ८।४२	४। ६।१८।३५	६।१७।३०।५२
८	२१। ३।१६	३।२१।२६।३२	१।२७। ०।५८	४। ०।५९।५३	१०।१७।१९। १	५। ५।३९।१२	९।१४। ७।१४	३।१५। ५।३१	४। ६।२२।१७	६।१७।३१।२२
९	२१। ७।१२	३।२२।२४। ०	१।२७।४०।५४	४। २।५२।५२	१०।१७।१२।५२	५। ६।४४।२८	९।१४। २।५२	३।१५। २।२०	४। ६।२६। ०	६।१७।३१।५५
१०	२१।११। ९	३।२३।२१।२८	१।२८।२०।४८	४। ४।४४।४९	१०।१७। ६।३९	५। ७।४९।३२	९।१३।५८।३२	३।१४।५९। ९	४। ६।२९।४३	६।१७।३२।३०
११	२१।१५। ५	३।२४।१८।५८	१।२९। ०।३८	४। ६।३५।४४	१०।१७। ०।२३	५। ८।५४।२९	९।१३।५४।१४	३।१४।५५।५९	४। ६।३३।२६	६।१७।३३। ७
१२	२१।१९। २	३।२५।१६।३०	१।२९।४०।२६	४। ८।२५।३७	१०।१६।५३।५४	५। ९।५९।२०	९।१३।४९।५९	३।१४।५२।४८	४। ६।३७। ९	६।१७।३३।४७
१३	२१।२२।५८	३।२६।१४। ४	२। ०।२०।१०	४।१०।१३।३०	१०।१६।४७। ९	५।११। ३।५८	९।१३।४५।४९	३।१४।४९।३७	४। ६।४०।५२	६।१७।३४।२७
१४	२१।२६।५५	३।२७।११।४१	२। ०।५९।४९	४।११।५८।३३	१०।१६।४०। ९	५।१२। ८।१९	९।१३।४१।४४	३।१४।४६।२६	४। ६।४४।३५	६।१७।३५। ८
१५	२१।३०।५१	३।२८। ९।१८	२। १।३९।२०	४।१३।४२।१७	१०।१६।३३। ५	५।१३।१२।२३	९।१३।३७।४३	३।१४।४३।१५	४। ६।४८।१८	६।१७।३५।५१
१६	२१।३४।४८	३।२९। ६।५६	२। २।१८।४४	४।१५।२५।१२	१०।१६।२५।५८	५।१४।१६।१३	९।१३।३२।४४	३।१४।४०। ४	४। ६।५२। १	६।१७।३६।३५
१७	२१।३८।४४	४। ०। ४।३६	२। २।५८। २	४।१७। ६।४७	१०।१६।१८।४८	५।१५।१९।५०	९।१३।२८।४६	३।१४।३६।५३	४। ६।५५।४४	६।१७।३७।२१
१८	२१।४२।४१	४। १। २।१९	२। ३।३७। ८	४।१८।४७। ३	१०।१६।११।३३	५।१६।२३।१०	९।१३।२४।५०	३।१४।३३।४३	४। ६।५९।२७	६।१७।३८। ९
१९	२१।४६।३७	४। २। ०। ३	२। ४।१६। ९	४।२०।२६।१९	१०।१६। ४।१५	५।१७।२६।१५	९।१३।२०।५६	३।१४।३०।३२	४। ७। ३।१०	६।१७।३८।५९
२०	२१।५०।३४	४। २।५७।४८	२। ४।५५। ८	४।२२। ३।३६	१०।१५।५६।५३	५।१८।२९। ५	९।१३।१७। ४	३।१४।२७।२१	४। ७। ६।५३	६।१७।३९।५०
२१	२१।५४।३०	४। ३।५१।३४	२। ५।३४। ६	४।२३।३९।३६	१०।१५।४९।२७	५।१९।३१।४५	९।१३।१३।१३	३।१४।२४।११	४। ७।१०।३६	६।१७।४०।४४
२२	२१।५८।२७	४। ४।५३।२१	२। ६।१२।५७	४।२५।१४।१६	१०।१५।४१।५६	५।२०।३४। ७	९।१३। ८।२२	३।१४।२१। ०	४। ७।१४।१९	६।१७।४१।४०
२३	२२। २।२३	४। ५।५१। ८	२। ६।५१।३९	४।२६।४७।३८	१०।१५।३४।२२	५।२१।३६। ९	९।१३। ४।३२	३।१४।१७।४१	४। ७।१८। ३	६।१७।४२।३६
२४	२२। ६।२०	४। ६।४८।५७	२। ७।३०।१९	४।२८।१९।४१	१९।१५।२६।४४	५।२२।३८। ५	९।१३। ०।४५	३।१४।१४।३८	४। ७।२१।४८	६।१७।४३।३५
२५	२२।१०।१६	४। ७।४६।४७	२। ८। ८।४६	४।२९।५०।२६	१०।१५।१९। १	५।२३।३९।५२	९।१२।५७। १	३।१४।११।२८	४। ७।२५।३४	६।१७।४४।३५
२६	२२।१४।१३	४। ८।४४।४०	२। ८।४७।११	५। १।१९।५२	१०।१५।११।१५	५।२४।४१।२९	९।१२।५३।१७	३।१४। ८।१७	४। ७।२९।२०	६।१७।४५।३८
२७	२२।१८। ९	४। ९।४२।३४	२। ९।२५।२४	५। २।४७।५९	१०।१५। ३।२५	५।२५।४२।४८	९।१२।४९।३४	३।१४। ५। ६	४। ७।३३। ७	६।१७।४६।४१
२८	२२।२२। ६	४।१०।४०।३०	२।१०। ३।३६	५। ४।१४।४६	१०।१४।५५।३०	५।२६।४३।३०	९।१२।४५।५३	३।१४। १।५५	४। ७।३६।५३	६।१७।४७।४५
२९	२२।२६। ३	४।११।३८।२६	२।१०।४१।४४	५। ५।३८।३६	१०।१४।४७।२७	५।२७।४४। ५	८।१२।४२।१३	३।१३।५८।४४	४। ७।४०।३९	६।१७।४८।५०
३०	२२।३०। ०	४।१२।३६।२४	२।११।१९।५२	५। ७। ०।३६	१०।१४।३९।२२	५।२८।४४।२०	९।१२।३८।३७	३।१३।५५।३३	४। ७।४४।२४	६।१७।४९।५६
३१	२२।३३।५७	४।१३।३४।२४	२।११।५७।५४	५। ८।१९।५७	१०।१४।३१।२१	५।२९।४४।१०	९।१२।३५। ४	३।१३।५२।२३	४। ७।४८। ८	६।१७।५१। ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।१९'।१३")

तारीख सितम्बर सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	२२।३७।५४	४।१४।३२।२७	२।१२।३५।५३	५। ९।३८।२८	१०।१४।२३।२२	६। ०।४३।४०	९।१२।३१।३३	३।१३।४९।१३	४। ७।५१।५३	६।१७।५२।१२
२	२२।४१।५०	४।१५।३०।३२	२।१३।१३।३०	५।१०।५६।१२	१०।१४।१५।२६	६। १।४२।४६	९।१२।२८। ८	३।१३।४६। २	४। ७।५५।३७	६।१७।५३।२३
३	२२।४५।४७	४।१६।२८।२९	२।१३।५१। ४	५।१२।१२।४०	१०।१४। ७।३२	६। २।४१।१६	९।१२।२४।४८	३।१३।४२।५१	४। ७।५९।२१	६।१७।५४।३७
४	२२।४९।४३	४।१७।२६।४८	२।१४।२८।३२	५।१३।२८।५१	१०।१३।५९।४०	६। ३।३९।२०	९।१२।२१।३३	३।१३।३९।४१	४। ८। ३। ४	६।१७।५५।५४
५	२२।५३।४०	४।१८।२४।५८	२।१५। ५।५१	५।१४।४३।१६	१०।१३।५१।५०	६। ४।३६।५८	९।१२।१८।२१	३।१३।३६।३०	४। ८। ६।४७	६।१७।५७।१४
६	२२।५७।३६	४।१९।२३। ८	२।१५।४३। ४	५।१५।५६। ०	१०।१३।४४। ३	६। ५।३४।११	९।१२।१५।१८	३।१३।३३।१९	४। ८।१०।२९	६।१७।५८।३७
७	२३। १।३३	४।२०।२१।१९	२।१६।२०। ६	५।१७। ६। ४	१०।१३।३६।१९	६। ६।३०।५८	९।१२।१२।१८	३।१३।३०। ८	४। ८।१४।११	६।१८। ०। १
८	२३। ५।२९	४।२१।१९।३२	२।१६।५७। २	५।१८।११।२०	१०।१३।२८।३६	६। ७।२७।१९	९।१२। ९।२४	३।१३।२६।५७	४। ८।१७।५२	६।१८। १।२८
९	२३। ९।२६	४।२२।१७।४६	२।१७।३३।४८	५।१९।१३।३५	१०।१३।२०।५६	६। ८।२३।१४	९।१२। ६।३४	३।१३।२३।४७	४। ८।२१।३३	६।१८। २।५७
१०	२३।१३।२२	४।२३।१६। ३	२।१८।१०।२८	५।२०।१२।३४	१०।१३।१३।१९	६। ९।१८।४३	९।१२। ३।५०	३।१३।२०।३६	४। ८।२५।१४	६।१८। ४।२८
११	२३।१७।१९	४।२४।१४।२१	२।१८।४६।५६	५।२१। ९।२९	१०।१३। ५।४३	६।१०।१३।४६	९।१२। १।१०	३।१३।१७।२५	४। ८।२८।५४	६।१८। ६। ०
१२	२३।२१।१५	४।२५।१२।४१	२।१९।२३।२०	५।२२। ५।२०	१०।१२।५८।१०	६।११। ८।३३	९।११।५८।३६	३।१३।१४।१४	४। ८।३२।३५	६।१८। ७।३३
१३	२३।२५।१२	४।२६।११। ३	२।१९।५९।४२	५।२२।५९। ३	१०।१२।५०।३८	६।१२। २।४५	९।११।५६। ५	३।१३।११। ३	४। ८।३६।१५	६।१८। ९। ७
१४	२३।२९। ८	४।२७। ९।२७	२।२०।३५।५९	५।२३।५२।१०	१०।१२।४३।११	६।१२।५६।४५	९।११।५३।३६	३।१३। ७।५३	४। ८।३९।५५	६।१८।१०।४१
१५	२३।३३। ५	४।२८। ७।५४	२।२१।१२।१३	५।२४।४२।१४	१०।१२।३५।५०	६।१३।५०। ८	९।११।५१।१२	३।१३। ४।४२	४। ८।४३।३५	६।१८।१२।१५
१६	२३।३७। १	४।२९। ६।२२	२।२१।४८।२१	५।२५।२९। ०	१०।१२।२८।३७	६।१४।४२।४३	९।११।४८।५३	३।१३। १।३१	४। ८।४७।१६	६।१८।१३।५०
१७	२३।४०।५८	५। ०। ४।५३	२।२२।२४।२०	५।२६।१२। ७	१०।१२।२१।२९	६।१५।३४।३१	९।११।४६।४०	३।१२।५८।२०	४। ८।५०।५५	६।१८।१५।२६
१८	२३।४४।५५	५। १। ३।२५	२।२३। ०।१०	५।२६।५२। ९	१०।१२।१४।२८	६।१६।२५।३२	९।११।४४।३२	३।१२।५५। ९	४। ८।५४।३२	६।१८।१७। ३
१९	२३।४८।५२	५। २। २। ०	२।२३।३५।४९	५।२७।२८।११	१०।१२। ७।३३	६।१७।१५।४५	९।११।४२।२९	३।१२।५१।५८	४। ८।५८। ७	६।१८।१८।४१
२०	२३।५२।४८	५। ३। ०।३६	२।२४।११।१८	५।२७।५७।१५	१०।१२। ०।४५	६।१८। ५।११	९।११।४०।३२	३।१२।४८।४७	४। ९। १।४१	६।१८।२०।२१
२१	२३।५६।४५	५। ३।५९।१४	२।२४।४६।३४	५।२८।१६।३६	१०।११।५४। ४	६।१८।५३।४९	९।११।३८।४१	३।१२।४५।३७	४। ९। ५।१३	६।१८।२२। ४
२२	०। ०।४१	५। ४।५७।५२	२।२५।२१।३५	५।२८।२६।४०	११।११।४७।३०	६।१९।४१।४०	९।११।३६।५६	३।१२।४२।२६	४। ९। ८।४२	६।१८।२३।५०
२३	०। ४।३८	५। ५।६।३३	२।२५।५६।३१	५।२८।३०।१०	१०।११।४१। १	६।२०।२८।४४	९।११।३५।१६	३।१२।३९।१५	४। ९।१२।१०	६।१८।२५।३७
२४	०। ८।३४	५। ६।५५।१६	२।२६।३१।२२	५।२८।२९। ८	१०।११।३४।४०	६।२१।१५। ०	९।११।३३।४१	३।१२।३६। ४	४। ९।१५।३६	६।१८।२७।२५
२५	०।१२।३१	५। ७।५४। ३	२।२७। ६। ९	५।२८।२४।१०	१०।११।२८।२५	६।२२। ०।२९	९।११।३२।१२	३।१२।३२।५३	४। ९।१९। १	६।१८।२९।१४
२६	०।१६।२७	५। ८।५२।५४	२।२७।४०।३६	५।२८।१६। ९	१०।११।२२।१८	६।२२।४५।११	९।११।३०।५०	३।१२।२९।४२	४। ९।२२।२३	६।१८।३१। ५
२७	०।२०।२४	५। ९।५१।४८	२।२८।१४।५९	५।२८। ४। ८	१०।११।१६।१४	६।२३।२९। ५	९।११।२९।३२	३।१२।२६।३१	४। ९।२५।४५	६।१८।३२।५७
२८	०।२४।२०	५।१०।५०।४४	२।२८।४९। ०	५।२७।४४।४७	१०।११।१०।१९	६।२४।१२।१२	९।११।२८।१९	३।१२।२३।२१	४। ९।२९। ५	६।१८।३४।४९
२९	०।२८।१७	५।११।४९।४१	२।२९।२३।१०	५।२७।२०।१३	१०।११। ४।३०	६।२४।५४।३२	९।१२।२७।११	३।१२।२०।१०	[illegible]	[illegible]
३०	०।३२।१४	५।१२।४८।४०	२।२९।५७।१३	५।२६।५१।१४	१०।१०।५९। [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अक्तूबर अयनांश को २३°।१९'।१७")

तारीख अक्तूबर सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	०।३६।११	५।१३।४७।३९	३। ०।२१।१३	५।२६।१५।४९	१०।१०।५३।३४	६।२६।१७। ३	९।११।२५।११	३।१२।१३।४९	४। ९।३८।५२	६।१८।४०।२८
२	०।४०। ७	५।१४।४६।३९	३। १। ५। ९	५।२५।३१।२९	१०।१०।४८।१४	६।२६।५५।३३	९।११।२४।२०	३।१२।१०।३८	४। ९।४२। ४	६।१८।४२।२२
३	०।४४। ४	५।१५।४५।४०	३। १।३८।५७	५।२४।३९।१०	१०।१०।४३। ०	६।२७।३२।३३	९।११।२३।३६	३।१२। ७।२७	४। ९।४५।१४	६।१८।४४।१६
४	०।४८। ०	५।१६।४४।४१	३। २।१२।३८	५।२३।३६।४०	१०।१०।३८। ३	६।२८। ८।३४	९।११।२२।५८	३।१२। ४।१७	४। ९।४८।२०	६।१८।४६।११
५	०।५१।५७	५।१७।४३।४३	३। २।४६। ८	५।२२।२३।३१	१०।१०।३३।१३	६।२८।४४। ०	९।११।२२।२६	३।१२। १। ६	४। ९।५१।२५	६।१८।४८। ९
६	०।५५।५३	५।१८।४२।४७	३। ३।१९।१८	५।२१। ५।४२	१०।१०।२८।२९	६।२९।१७। ३	९।११।२२। ०	३।११।५७।५५	४। ९।५४।३१	६।१८।५०। ८
७	०।५९।५०	५।१९।४१।५४	३। ३।५२।१८	५।१९।४९। ६	१०।१०।२३।५४	६।२९।४८।३२	९।११।२१।४०	३।११।५४।४५	४। ९।५७।३५	६।१८।५२। ८
८	१। ३।४६	५।२०।४१। ६	३। ४।२५। ०	५।१८।३७।३६	१०।१०।१९।३८	७। ०।१८।३३	९।११।२१।२७	३।११।५१।३४	४।१०। ०।३७	६।१८।५४।१०
९	१। ७।४२	५।२१।४०।२१	३। ४।५७।३०	५।१७।३०। ६	१०।१०।१५।३२	७। ०।४७। ५	९।११।२१।२०	३।११।४८।२३	५।१०। ३।३६	६।१८।५६।१२
१०	१।११।३९	५।२२।३९।३७	३। ५।२९।४८	५।१६।२८। ३	१०।१०।११।३२	७। १।१४। २	९।११।२१।१८	३।११।४५।१३	४।१०। ६।३४	६।१८।५८।१६
११	१।१५।३५	५।२३।३८।५६	३। ६। १।४७	५।१५।३२।३१	१०।१०। ७।४६	७। १।३९।२९	म९।११।२१।२३	३।११।४२। २	४।१०। ९।३०	६।१९। ०।२२
१२	१।१९।३२	५।२४।३८।१६	३। ६।३३।३७	५।१४।४२। १	१०।१०। ४।११	७। २। ३।२८	९।११।२१।३४	३।११।३८।५१	४।१०।१२।२४	६।१९। २।३०
१३	१।२३।२८	५।२५।३७।३८	३। ७। ५।२०	५।१४। २।३१	१०।१०। ०।४२	७। २।२५।५६	९।११।२१।५१	३।११।३५।४०	४।१०।१५।१६	६।१९। ४।४०
१४	१।२७।२५	५।२६।३७। २	३। ७।३६।५९	५।१३।३२।३०	१०। ९।५७।२२	७। २।४६।५५	९।११।२२।१५	३।११।३२।३०	४।१०।१८। ७	६।१९। ६।५०
१५	१।३१।२१	५।२७।३६।२८	३। ८। ८।३१	५।१३।१६।१०	१०। ९।५४।१०	७। ३। ६।२४	९।११।२२।४४	३।११।२९।१९	४।१०।२०।५६	६।१९। ९। ०
१६	१।३५।१८	५।२८।३५।५५	३। ८।३९।४४	म५।१३।१३।४५	१०। ९।५१।१३	७। ३।२५।४६	९।११।२३।१८	३।११।२६। ८	४।१०।२३।४४	६।१९।११।१०
१७	१।३९।१४	५।२९।३५।२५	३। ९।१०।३८	५।१३।२०।२३	१०। ९।४८।३६	७। ३।४२।३८	९।११।२३।५८	३।११।२२।५७	४।१०।२६।३०	६।१९।१३।२०
१८	१।४३।११	६। ०।३४।५७	३। ९।४१।२०	५।१३।३६।३३	१०। ९।४६। ९	७। ३।५७। १	९।११।२४।४४	३।११।१९।४६	४।१०।२९।१४	६।१९।१५।३०
१९	१।४७। ७	६। १।३४।३१	३।१०।११।४९	५।१४। १।४१	१०। ९।४३।५४	७। ४। ८।५४	९।११।२५।३६	३।११।१६।३५	४।१०।३१।५६	६।१९।१७।४०
२०	१।५१। ४	६। २।३४। ८	३।१०।४२। ४	५।१४।३५।२८	१०। ९।४१।५१	७। ४।१८।१९	९।११।२६।३४	३।११।१३।२५	४।१०।३४।३६	६।१९।१९।५०
२१	१।५५। ०	६। ३।३३।४७	३।११।१२। ६	५।१५।१८।१७	१०। ९।४०। ०	७। ४।२५।१४	९।११।२७।३८	३।११।१०।१४	४।१०।३७।१४	६।१९।२२। ०
२२	१।५८।५७	६। ४।३३।३१	३।११।४१।५४	५।१६।१०। ८	१०। ९।३८।२१	७। ४।२९।४०	९।११।२८।४८	३।११। ७। ३	४।१०।३९।५०	६।१९।२४।१०
२३	२। २।५३	६। ५।३३।१५	३।१२।११।२८	५।१७।११।४२	१०। ९।३६।५४	७। ४।३१।३७	९।११।३०। ४	३।११। ३।५२	४।१०।४२।२५	६।१९।२६।२०
२४	२। ६।५०	६। ६।३३। १	३।१२।४०।४८	५।१८।२०।१८	१०। ९।३५।३९	म७। ४।३१। ६	९।११।३१।२५	३।११। ०।४१	४।१०।४४।५७	६।१९।२८।३०
२५	२।१०।४६	६। ७।३२।४९	३।१३। ९।५४	५।१९।३२।४७	१०। ९।३४।३६	७। ४।२८। ५	९।११।३२।५३	३।१०।५७।३०	४।१०।४७।२७	६।१९।३०।४०
२६	२।१४।४३	६। ८।३२।३८	३।१३।३८।४६	५।२०।४९। ८	१०। ९।३३।४६	७। ४।२२।३५	९।११।३४।२६	३।१०।५४।१९	४।१०।४९।५५	६।१९।३२।५०
२७	२।१८।३९	६। ९।३२।२८	३।१४। ७।२५	५।२२। ९।२२	१०। ९।३३। ७	७। ४।१४।३५	९।११।३६। ६	३।१०।५१। ९	४।१०।५२।२२	६।१९।३५। १
२८	२।२२।३६	६।१०।३२।१९	३।१४।३५।५०	५।२३।३४।५१	१०। ९।३२।३९	७। ४। ४। ७	९।११।३७।५१	३।१०।४७।५८	४।१०।५४।४६	६।१९।३७।१३
२९	२।२६।३३	६।११।३२।१४	३।१५। ४। १	५।२५। २।३८	१०। ९।३२।२५	७। ३।५१। ९	९।११।३९।४३	३।१०।४४।४७	४।१०।५७। ९	६।१९।३९।२७
३०	२।३०।३०	६।१२।३२।११	३।१५।३१।५८	५।२६।३२।४७	१०। ९।३२।२२	७। ३।३५।४२	९।११।४१।४०	३।१०।४१।३६	४।१०।५९।२८	६।१९।४१।४१
३१	२।३४।२७	६।१३।३२।१०	३।१५।५९।३२	५।२८। ५।१३	म१०।९।३२।३१	७। ३।१७।४६	९।११।४३।४६	३।१०।३८।२६	४।११। १।४४	६।१९।४३।५५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ नवम्बर को अयनांश २३°।१९'।२१")

तारीख नवम्बर सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	२।३८।२४	६।१४।३२।१०	३।१६।२६।५६	५।२९।३९।५४	१०। ९।३२।४८	७। २।५८।४०	९।११।४५।५८	३।१०।३५।१५	४।११। ३।५४	६।१९।४६।१०
२	२।४२।२०	६।१५।३२।११	३।१६।५३।४३	६। ११६।५२	१०। ९।३३।१३	७। २।३७।५६	९।११।४८।१७	३।१०।३२। ४	४।११। ५।५५	६।१९।४८।२५
३	२।४६।१७	६।१६।३२।१४	३।१७।२०।१५	६। २।५४। ७	१०। ९।३३।५४	७। २।१३।१३	९।११।५०।४२	३।१०।२८।५४	४।११। ७।५२	६।१९।५०।४०
४	२।५०।१३	६।१७।३२।१९	३।१७।४६।३०	६। ४।३१।४१	१०। ९।३४।४८	७। १।४७।१८	९।११।५३।११	३।१०।२५।४३	४।११। ९।४६	६।१९।५२।५४
५	२।५४।१०	६।१८।३२।२७	३।१८।१२।३०	६। ६। ९। ४	१०। ९।३५।५३	७। १।२०।१०	९।११।५५।४६	३।१०।२२।३२	४।११।११।३९	६।१९।५५। ८
६	२।५८। ६	६।१९।३२।३७	३।१८।३८।२४	६। ७।४६।३७	१०। ९।३७।१२	७। ०।५१।५१	९।११।५८।२५	३।१०।१९।२१	४।११।१३।३१	६।१९।५७।२३
७	३। २। ३	६।२०।३२।५०	३।१९। ४। ०	६। ९।२३।५२	१०। ९।३८।४७	७। ०।२०।२०	९।१२। १।१०	३।१०।१६।१०	४।११।१५।१९	६।१९।५८।३७
८	३। ५।५९	६।२१।३३। ४	३।१९।२९।१३	६।११। ०।५८	१०। ९।४०।३७	६।२९।४७।३६	९।१२। ३।५९	३।१०।१२।५९	४।११।१७। ६	६।२०। १।५२
९	३। ९।५६	६।२२।३३।२०	३।१९।५४।१४	६।१२।३७।४९	१०। ९।४२।३७	६।२९।१४।४१	९।१२। ६।५४	३।१०। ९।४९	४।११।१८।५०	६।२०। ४। ६
१०	३।१३।५२	६।२३।३३।३७	३।२०।१९। ०	६।१४।१४।५९	१०। ९।४४।५१	६।२८।४०।३४	९।१२। ९।५३	३।१०। ६।३८	४।११।२०।३२	६।२०। ६।२०
११	३।१७।४९	६।२४।३३।५५	३।२०।४३।२९	६।१५।५१।५९	१०। ९।४७।१८	६।२८। ६।४५	९।१२।१२।५९	३।१०। ३।२७	४।११।२२।११	६।२०। ८।३४
१२	३।२१।५४	६।२५।३४।१५	३।२१। ७।४३	६।१७।२८।२८	१०। ९।४९।५९	६।२७।३०।४४	९।१२।१६। ८	३।१०। ०।१६	४।११।२३।४८	६।२०।१०।४९
१३	३।२५।४२	६।२६।३४।३७	३।२१।३१।४०	६।१९। ५।३३	१०। ९।५२।५२	६।२६।५३।५८	९।१२।१९।२३	३। ९।५७। ६	४।११।२५।२२	६।२०।१३। ५
१४	३।२९।३८	६।२७।३५। ०	३।२१।५५।३०	६।२०।४२।४९	१०। ९।५५।५९	६।२६।१६। ०	९।१२।२२।४३	३। ९।५३।५५	४।११।२६।५५	६।२०।१५।२२
१५	३।३३।३५	६।२८।३५।२४	३।२२।१९। ०	६।२२।२०।४८	१०। ९।५९।१९	६।२५।३६।५०	९।१२।२६। ८	३। ९।५०।४४	४।११।२८।२५	६।२०।१७।३९
१६	३।३७।३१	६।२९।३५।५०	३।२२।४२। ४	६।२३।५७।५०	१०।१०। २।५३	६।२४।५६।२८	९।१२।२९।३८	३। ९।४७।३४	४।११।२९।५२	६।२०।१९।५६
१७	३।४१।२८	७। ०।३६।१९	३।२३। ४।२४	६।२५।३४।१८	१०।१०। ६।२४	६।२४।१८।४१	९।१२।३३।१६	३। ९।४४।२३	४।११।३१।१४	६।२०।२२।११
१८	३।४५।२४	७। १।३६।४९	३।२३।२५।४८	६।२७।१०।४९	१०।१०।१०। ९	६।२३।४२।५९	९।२१।३७। ३	३। ९।४१।१२	४।११।३२।३१	६।२०।२४।२५
१९	३।४९।२१	७। २।३७।२०	३।२३।४६।५१	६।२८।४७।३७	१०।१०।१४। ३	६।२३। ९।२४	९।१२।४०।५३	३। ९।३८। २	४।११।३३।४५	६।२०।२६।३७
२०	३।५३।१८	७। ३।३७।५३	३।२४। ७।३८	७। ०।२४।२९	१०।१०।१८।११	६।२२।३७।४४	९।१२।४४।४८	३। ९।३४।५१	४।११।३४।५६	६।२०।२८।५०
२१	३।५७।१५	७। ४।३८।२७	३।२४।२८। ०	७। २। १।१९	१०।१०।२२।२८	६।२२। ८।१२	९।१२।४८।४८	३। ९।३१।४०	४।११।३६। ५	६।२०।३१। २
२२	४। १।११	७। ५।३९। २	३।२४।४७।५७	७। ३।३७।४३	१०।१०।२६।५९	६।२१।४०।४४	९।१२।५२।५२	३। ९।२८।२९	४।११।३७। ९	६।२०।३३।१३
२३	४। ५। ८	७। ६।३९।३९	३।२५। ७।२९	७। ५।१३।४१	१०।१०।३१।३८	६।२१।१५।१९	९।१२।५७। २	३। ९।२५।१८	४।११।३८।१०	६।२०।३५।२४
२४	४। ९। ४	७। ७।४०।१७	३।२५।२६।३८	७। ६।४९।१३	१०।१०।३६।३२	६।२०।५१।५८	९।१३। १।१६	६। ९।२२। ७	४।११।३९। ८	६।२०।३७।३४
२५	४।१३। १	७। ८।४०।५८	३।२५।४५।२०	७। ८।२४।२०	१०।१०।४१।३४	६।२०।३०।४१	९।१३। ५।२८	३। ९।१८।५६	४।११।४०। ४	६।२०।३९।४३
२६	४।१६।५७	७। ९।४१।४०	३।२६। ३।३९	७। ९।५९। १	१०।१०।४६।५०	६।२०।११।२८	९।१३। ९।४४	३। ९।१५।४६	४।११।४०।५७	६।२०।४१।५१
२७	४।२०।५४	७।१०।४२।२४	३।२६।२१।३२	७।११।३३।१६	१०।१०।५२।१५	६।१९।५४।१८	९।१३।१४। ६	३। ९।१२।३५	४।११।४१।४७	६।२०।४३।५९
२८	४।२४।५०	७।११।४३। ९	३।२६।३९। २	७।१३। ७। ५	१०।१०।५७।५४	६।१९।३९।१२	९।१३।१८।३३	३। ९। ९।२४	४।११।४२।३३	६।२०।४६। ७
२९	४।२८।४७	७।१२।४३।५६	३।२६।५६। ६	७।१४।४१।३८	१०।११। ३।४४	६।१९।२७।१०	९।१३।२३। ५	३। ९। ६।१३	[illegible]	[illegible]
३०	४।३२।४३	७।१३।४४।४४	३।२७।१२।४६	७।१६।१६।११	१०।११। [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय ० । ० स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।१९'।२५")

तारीख दिसम्बर सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.
१	४।३६।४०	७।१४।४५।३४	३।२७।२९। १	७।१७।५०।३९	१०।११।१५।५५	६।१९। ६।१६	९।१३।३२।२२	३। ८।५९।५२	४।११।४४।३४	६।२०।५२।१६
२	४।४०।३६	७।१५।४६।२४	३।२७।४४।५३	७।१९।२५। ८	१०।११।२२।१९	६।१८।५९।२४	९।१३।३७। ८	३। ८।५६।४१	४।११।४५। ७	६।२०।५४।३२
३	४।४४।३३	७।१६।४७।१५	३।२७।५९।५४	७।२०।५९।३६	१०।११।२८।४४	६।१८।५६।४५	९।१३।४२। ७	३। ८।५३।३०	४।११।४५।३९	६।२०।५८।४०
४	४।४८।२९	७।१७।४८। ६	३।२८।१४।१९	७।२२।२३।५३	१०।११।३५।१९	६।१८।५६।१५	९।१३।४७।११	३। ८।४७। ८	४।११।४६।३५	६।२१। ०।४२
५	४।५२।२६	७।१८।४८।५८	३।२८।२८। ५	७।२४। ८।१६	१०।११।४२। ३	म६।१८।५७।५५	९।१३।५२।१८	३। ८।४७। ८	४।११।४६।५८	६।२१। २।४४
६	४।५६।२२	७।१९।४९।४९	३।२८।४१।१५	७।२५।४२।२९	१०।११।४८।५७	६।१९। १।४१	९।१३।५७।२८	३। ८।४०।४६	४।११।४७।१६	६।२१। ४।४४
७	५। ०।१९	७।२०।५०।४२	३।२८।५३।४६	७।२७।१६।२४	१०।११।५६। ०	६।१९। ७।४०	९।१४। २।४०	३। ८।३७।३६	४।११।४७।३०	६।२१। ६।४४
८	५। ४।१६	७।२१।५१।३६	३।२९। ५।४२	७।२८।५०।२२	१०।१२। ३।१३	६।१९।१५।४५	९।१४।१३।१६	३। ८।३४।२६	४।११।४७।४१	६।२१। ८।४३
९	५। ८।१२	७।२२।५२।३१	३।२९।१६।५९	८। ०।२४।१९	१०।१२।१०।३५	६।१९।२५। ०	९।१४।१३।१६	३। ८।३१।१५	४।११।४७।४९	६।२१।१०।४१
१०	५।१२। ९	७।२३।५३।२७	३।२९।२७। ४	८। १।५८।१६	१०।१२।१८। ७	६।१९।३८।२४	९।१४।१८।४०	३। ८।२८। ४	४।११।४७।५२	६।२१।१२।३८
११	५।१६। ५	७।२४।५४।२६	३।२९।३७।४२	८। ३।३२।११	१०।१२।२५।४७	६।१९।५२।५७	९।१४।२४। ६	३। ८।२४।५३	४।११।४७।५१	६।२१।१४।३४
१२	५।२०। २	७।२५।५५।२६	३।२९।४७। ८	८। ५। ६। ५	१०।१२।३३।३८	६।२०। ९।३८	९।१४।२९।३५	३। ८।२१।४२	४।११।४७।४७	६।२१।१६।२८
१३	५।२३।५८	७।२६।५६।२७	३।२९।५५।५६	८। ६।४०। ०	१०।१२।४१।३७	६।२०।२८।२८	९।१४।३५। ७	३। ८।१८।३१	४।११।४७।३९	६।२१।१८।२२
१४	५।२७।५५	७।२७।५७।२९	४। ०। ४। ७	८। ८।१३।५५	१०।१२।४९।४७	६।२०।४९।२७	९।१४।४०।४४	३। ८।१५।२०	४।११।४७।२७	६।२१।२०।१५
१५	५।३१।५१	७।२८।५८।३३	४। ०।११।३९	८। ९।४८। ५	१०।१२।५८। ६	६।२१।१२।३५	९।१४।४६।२३	३। ८।१२। ९	४।११।४७।११	६।२१।२२। ७
१६	५।३५।४८	७।२९।५९।३७	४। ०।१८।३६	८।११।२१।५७	१०।१३। ६।३५	६।२१।३७।५१	९।१४।५२। ६	३। ८। ८।५९	४।११।४६।५२	६।२१।२३।५८
१७	५।३९।४४	८। १। ०।४१	४। ०।२४।५४	८।१२।५५।३१	१०।१३।१५।१२	६।२२। ५।१७	९।१४।५७। ५	३। ८। ५।४८	४।११।४६।३०	६।२१।२५।४८
१८	५।४३।४१	८। २। १।४६	४। ०।३०।३६	८।१४।२८।४८	१०।१३।२४। १	६।२२।३४।५२	९।१५। ३।४८	३। ८।२ ।३७	४।११।४६। ५	६।२१।२७।३६
१९	५।४७।३८	८। ३। २।५१	४। ०।३६।१०	८।१६। १।४६	१०।१३।३३। १	६।२३। ६। ०	९।१५। ९।४८	३। ७।५९।२७	४।११।४५।३६	६।२१।२९।२३
२०	५।५१।३५	८। ४। ३।५७	४। ०।४०।४७	८।१७।३४।२६	१०।१३।४२।११	६।२३।३८।२०	९।१५।१५।५५	३। ७।५६।१६	४।११।४५। ४	६।२१।३१। ९
२१	५।५५।३१	८। ५। ५। ३	४। ०।४४।२७	८।१९। ६।४८	१०।१३।५१।२७	६।२४।११।५२	९।१५।२२। ५	३। ७।५३। ५	४।११।४४।२८	६।२१।३२।५३
२२	५।५९।२८	८। ६। ६। ९	४। ०।४७। ९	८।२०।३८।५३	१०।१४। ०।४९	६।२४।४६।३७	९।१५।२८।१६	३। ७।४९।५४	४।११।४३।४९	६।२१।३४।३६
२३	६। ३।२४	८। ७। ७।१७	४। ०।४८।५२	८।२२।११।३४	१०।१४।१०।१८	६।२५।२२।३३	९।१५।४०।३९	३। ७।४६।४३	४।११।४३। ६	६।२१।३६।१७
२४	६। ७।२१	८। ८। ८।२५	४। ०।४९।३८	८।२३।४३। ६	१०।१४।१९।५२	६।२५।५९।४२	९।१५।४६।५२	३। ७।४३।३२	४।११।४२।२०	६।२१।३७।५७
२५	६।११।१७	८। ९। ९।३३	४। ०।४९।२७	८।२५।१३।२८	१०।१४।२९।३४	६।२६।३८। २	९।१५।५३। ६	३। ७।४०।२२	४।११।४१।३१	६।२१।३९।३६
२६	६।१५।१४	८।१०।१०।४१	४। ०।४८।४८	८।२६।४२।४३	१०।१४।३९।२२	६।२७।१७।३५	९।१५।५९।२१	३। ७।३७।११	४।११।४०।३८	६।२१।४१।१३
२७	६।१९।१०	८।११।११।४९	४। ०।४७।५५	८।२८।१०।५८	१०।१४।४९।१७	६।२७।५८।२०	९।१५।५९।२१	३। ७।३४। ०	४।११।३९।४२	६।२१।४२।४९
२८	६।२३। ७	८।१२।१२।५८	४। ०।४६।३५	८।२९।३८। ५	१०।१४।५९।१८	६।२८।४०।१७	९।१६। ५।३६	३। ७।३०।५०	४।११।३८।३९	६।२१।४४।२३
२९	६।२७। ३	८।१३।१४। ७	४। ०।४४।१७	९। १। ४। २	१०।१५। ९।२६	६।२९।२३।२६	९।१६।११।५२	३। ७।२७।३८	४।११।३७।३४	६।२१।४५।५६
३०	६।३१। ०	८।१४।१५।१६	४। ०।४१।३१	९। २।२८।५२	१०।१५।१९।४१	७। ०। ७।४७	९।१६।१८।११	३। ७।२४।२८	४।११।३६।२९	६।२१।४७।२८
३१	६।३४।५६	८।१५।१६।२५	४। ०।३७।४८	९। ३।४९।३१	१०।१५।३०। २	७। ०।५३।२०	९।१६।२४।२९	३। ७।२४।२८	४।११।३६।२९	६।२१।४७।२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जनवरी को अयनांश २३°।१९'।२९")

तारीख जनवरी सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	६।३८।५३	८।१६।१७।३५	४। ०।३२।२६	९। ५। ७।४८	१०।१५।४०।३०	७। १।४०। ४	९।१६।३०।४८	३। ७।२१।१८	४।११।३५।२२	६।२१।४८।५८
२	६।४२।४९	८।१७।१८।४५	४। ०।२५।५८	९। ६।२३।४४	१०।१५।५१। ४	७। २।२८। १	९।१६।३७।१२	३। ७।१८। ७	४।११।३४।१४	६।२१।५०।२७
३	६।४६।४६	८।१८।१९।५५	४। ०।१९।३०	९। ७।३७।१९	१०।१६। १।४४	७। ३।१७।१०	९।१६।४३।४०	३। ७।१४।५७	४।११।३३। ६	६।२१।५१।५४
४	६।५०।४२	८।१९।२१। ५	४। ०।१२।५५	९। ८।४६।३२	१०।१६।१२।४०	७। ४। ६।३६	९।१६।५०।१३	३। ७।११।४६	४।११।३१।५५	६।२१।५३।१९
५	६।५४।३९	८।२०।२२।१५	४। ०। ६। ५	९। ९।४८।३७	१०।१६।२३।४३	७। ४।५६।२२	९।१६।५६।४८	३। ७। ८।३५	४।११।३०।३९	६।२१।५४।४२
६	६।५८।३५	८।२१।२३।२४	३।२८।५८।२६	९।१०।४३।४८	१०।१६।३४।५१	७। ५।४७। ०	९।१७। ३।२६	३। ७। ५।२४	४।११।२९।१९	६।२१।५६। २
७	७। २।३२	८।२२।२४।३३	३।२९।४९।२१	९।११।३१। २	१०।१६।४६। ५	७। ६।३८।१७	९।१७।१०। ८	३। ७। २।१३	४।११।२७।५३	६।२१।५७।२१
८	७। ६।२८	८।२३।२५।४२	३।२९।३९। २	९।१२। ८।१२	१०।१६।५७।२४	७। ७।३०।१६	९।१७।१६।५४	३। ६।५९। ३	४।११।२६।२४	६।२१।५८।३८
९	७।१०।२५	८।२४।२६।५१	३।२९।२७।१९	९।१२।३७।३४	१०।१७। ८।४९	७। ८।२२।५५	९।१७।२३।४१	३। ६।५५।५२	४।११।२४।५४	६।२१।५९।५३
१०	७।१४।२१	८।२५।२८। ०	३।२९।१४।४३	९।१२।५९।५२	१०।१७।२०।१९	७। ९।१६।१५	९।१७।३०।२९	३। ६।५२।४१	४।११।२३।२१	६।२२। १। ७
११	७।१८।१८	८।२६।२९। ९	३।२९। २।५९	९।१३।१४।११	१०।१७।३१।५५	७।१०।१०।१६	९।१७।३७।१९	३। ६।४९।३०	४।११।२१।४७	६।२२। २।१९
१२	७।२२।१४	८।२७।३०।१८	३।२८।५०।५९	९।१३।२१। ६	१०।१७।४३।३५	७।११। ४।५८	९।१७।४४।१०	३। ६।४६।२०	४।११।२०। ८	६।२२। ३।३०
१३	७।२६।११	८।२८।३१।२७	३।२८।३८। २	९।१३।१४।४६	१०।१७।५५।२२	७।१२। ०।२१	९।१७।५१। २	३। ६।४३। ९	४।११।१८।२७	६।२२। ४।३९
१४	७।३०। ७	८।२९।३२।३५	३।२८।२४।५२	९।१२।५६।११	१०।१८। ७।१३	७।१२।५६।२४	९।१८।५७।५६	३। ६।३९।५८	४।११।१६।४३	६।२२। ५।४६
१५	७।३४। ४	९। ०।३३।४३	३।२८।१०।२८	९।१२।२५।२०	१०।१८।१९।११	७।१३।५३। ८	९।१८। ४।११	३। ६।३६।४७	४।११।१४।५५	६।२२। ६।५१
१६	७।३८। ०	९। १।३४।५०	३।२७।५४।५०	९।११।४१।५०	१०।१८।३१।१३	७।१४।५०।३५	९।१८।११।४८	३। ६।३३।३६	४।११।१३। ५	६।२२। ७।५५
१७	७।४१।५७	९। २।३५।५६	३।२७।३७।५९	९।१०।४६। ५	१०।१८।४३।२२	७।१५।४८।३९	९।१८।१८।४६	३। ६।३०।२६	४।११।११।१२	६।२२। ८।५६
१८	७।४५।५३	९। ३।३७। २	३।२७।२०।३४	९। ९।३८।५२	१०।१८।५५।३६	७।१६।४७।२५	९।१८।२५।४६	३। ६।२७।१५	४।११। ९।१६	६।२२। ९।५६
१९	७।४९।५०	९। ४।३८। ८	३।२७। २।३६	९। ८।१९।२३	१०।१९। ७।५५	७।१७।४६।५२	९।१८।३२।४९	३। ६।२४। ४	४।११। ७।१७	६।२२।१०।५५
२०	७।५३।४६	९। ५।३९।१३	३।२६।४४।५०	९। ६।५५।४३	१०।१९।२०।१८	७।१८।४६।२३	९।१८।३९।५३	३। ६।२०।५३	४।११। ५।१८	३।२२।११।५१
२१	७।५७।४३	९। ६।४०।१८	३।२६।२६।५०	९। ५।३६।३३	१०।१९।३२।४४	७।१९।४६।१४	९।१८।४६।५७	३। ६।१७।४२	४।११। ३।१८	६।२२।१२।४४
२२	८। १।३९	९। ७।४१।२२	३।२६। ८।३०	९। ४।२१।५२	१०।१९।४५।१४	७।२०।४६।२७	९।१८।५४। २	३। ६।१४।३१	४।११। १।१६	६।२२।१३।३६
२३	८। ५।३६	९। ८।४२।२६	३।२५।४९।५५	९। ३।११।४२	१०।१९।५७।४८	७।२१।४७। १	९।१९। १। ७	३। ६।११।२०	४।१०।५९।१३	६।२२।१४।२६
२४	८। ९।३२	९। ९।४३।३०	३।२५।३१।१३	९। २। ६। ०	१०।२०।१०।२७	७।२२।४७।५५	९।१९। ८।१४	३। ६। ८। ९	४।१०।५७। ८	६।२२।१५।१४
२५	८।१३।२९	९।१०।४४।३३	३।२५।१२।१३	९। १। ४।५१	१०।२०।२३।११	७।२३।४९।१०	९।१९।१५।२१	३। ६। ४।५९	४।१०।५५। २	६।२२।१६। १
२६	८।१७।२५	९।११।४५।३५	३।२४।५२।४८	९। ०। ८।११	१०।२०।३६। ०	७।२४।५०।४७	९।१९।२२।२९	३। ६। १।४८	४।१०।५२।५३	६।२२।१६।४५
२७	८।२१।२२	९।१२।४६।३६	३।२४।३३। ०	८।२९।१६। १	१०।२०।४८।५०	७।२५।५२।४४	९।१९।२९।३८	३। ५।५८।३७	४।१९।५०।४२	६।२२।१७।२८
२८	८।२५।१८	९।१३।४७।३४	३।२४।१२।४८	८।२८।२८।२७	१०।२१। १।४५	७।२६।५५। ४	९।१९।३६।४८	३। ५।५५।२७	४।१०।४८।२३	६।२२।१८। ९
२९	८।२९।१५	९।१४।४८।३०	३।२३।५२।१३	८।२७।४३।२४	१०।२१।१४।१७	७।२७।५७।४४	९।१९।४३।५८	३। ५।५२।१६	४।१०।४६।१४	६।२२।१८।४८
३०	८।३३।१२	९।१५।४९।२५	३।२३।३१।१४	८।२७। ५।५०	१०।२१।२७।५२	७।२९। ०।४७	९।१९।५१। ९	३। ५।४९। ५	४।१०।४३।५७	६।२२।१९।२५
३१	८।३७। ९	९।१६।५०।१९	३।२३। ९।५२	८।२६।४२।४७	१०।२१।४१। २	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ फर्वरी को अयनांश २३°।१९'।३३")

तारीख फर्वरी सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ० । ० घ. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	८।४१। ६	९।१७।५१।१२	३।२२।४८। ६	८।२६।३८।१३	१०।२१।५४।१४	८। १। ७।५४	९।२०। ५।३३	३। ५।४२।४४	४।१०।३९।१९	६।२२।२०।३५
२	८।४५। २	९।१८।५२। ६	३।२२।२५।५८	८।२६।४७।११	१०।२२। ७।३२	८। २।११।५८	९।२०।१२।४६	३। ५।३९।३३	४।१०।३६।५६	६।२२।२१। ७
३	८।४८।५९	९।१९।५२।५८	३।२२। ३।४५	८।२७। ३।३६	१०।२२।२०।५५	८। ३।१६।२४	८।२०।२०। ०	३। ५।३६।२२	४।१०।३४।३२	६।२२।२१।३७
४	८।५२।५५	९।२०।५३।५०	३।२१।४१।१०	८।२७।२७।३२	१०।२२।३४।२५	८। ४।२१।११	९।२०।२७।१४	३। ५।३३।१२	४।१०।३२। ६	६।२२।२२। ५
५	८।५६।५२	९।२१।५४।४१	३।२१।२०।१०	८।२७।५९।५४	१०।२२।४८। ३	८। ५।२६।४२	९।२०।३४।३१	३। ५।३०। १	४।१०।२९।३८	६।२२।२२।३२
६	९। ०।४८	९।२२।५५।३०	३।२१। ०।४०	८।२८।३४।३४	१०।२३। १।४८	८। ६।३३। ०	९।२०।४१।५२	३। ५।२६।५०	४।१०।२७। ९	६।२२।२२।५६
७	९। ४।४५	९।२३।५६।१९	३।२०।४१।१०	८।२९।११।३३	१०।२३।१५।३४	८। ७।३९।२४	९।२०।४९। ८	३। ५।२३।४०	४।१०।२४।४०	५।२२।२३।१७
८	९। ८।४१	९।२४।५७। ७	३।२०।२१।५९	८।२९।५०।५०	१०।२३।२९।२१	८। ८।४५।५०	९।२०।५६।२४	३। ५।२०।२९	४।१०।२२।१०	६।२२।२३।३६
९	९।१२।३८	९।२५।५७।५४	३।२०। ३। २	९। ०।३२।२६	१०।२३।४३। ८	८। ९।५२।१७	९।२१। ३।३८	३। ५।१७।१८	४।१०।१९।४०	६।२२।२३।५२
१०	९।१६।३४	९।२६।५८।४०	३।१९।४४।२३	९। १।१७।५०	१०।२३।५६।५६	८।१०।५८।४६	९।२१।१०।४९	३। ५।१४। ७	४।१०।१७। ९	६।२२।२४। ५
११	९।२०।३१	९।२७।५९।२४	३।१९।२६। ०	९। २। ८। ०	१०।२४।१०।४६	८।१२। ५।१६	९।२१।१७।५९	३। ५।१०।५७	४।१०।१४।३७	६।२२।२४।१५
१२	९।२४।२७	९।२९। ०। ७	३।१९। ७।५५	९। ३। १।५५	१०।२४।२४।३६	८।१३।११।४७	९।२१।२५। ८	३। ५। ७।४६	४।१०।१२। ४	६।२२।२४।२२
१३	९।२८।२४	१०। ०। ०।४९	३।१८।५०।१९	९। ३।५८।५०	१०।२४।३८।२७	८।१४।१८।२०	९।२१।३२।१२	३। ५। ४।३५	४।१०। ९।३१	६।२२।२४।२७
१४	९।३२।२०	१०। १। १।३०	३।१८।३३। २	९। ४।५८। ३	१०।२४।५२।१८	८।१५।२४।५४	९।२१।३९।१९	३। ५। १।२४	४।१०। ६।५७	६।२२।२४।३०
१५	९।३६।१७	१०। २। २। ९	३।१८।१६। १	९। ५।५९।२९	१०।२५। ६।११	८।१६।३१।३०	९।२१।४६।२३	३। ४।५८।१४	४।१०। ४।२३	६।२२।२४।३२
१६	९।४०।१३	१०। ३। २।४७	३।१७।५९।१८	९। ७। ३।११	१०।२५।२०। ४	८।१७।३८। ९	९।२१।५३।२४	३। ४।५५। ३	४।१०। १।४८	६।२२।२४।३२
१७	९।४४।१०	१०। ४। ३।२३	३।१७।४२।५०	९। ८। ९।१६	१०।२५।३३।५९	८।१८।४४।५०	९।२२। ०।२४	३। ४।५१।५२	४। ९।५९।१३	६।२२।२४।३१
१८	९।४८। ६	१०। ५। ३।५८	३।१७।२६।३९	९। ९।१७।१८	१०।२५।४७।५४	८।१९।५१।३४	९।२२। ७।२३	३। ४।४८।४२	४। ९।५६।३६	६।२२।२४।२८
१९	९।५२। ३	१०। ६। ४।३०	३।१७।१०।१४	९।१०।२७।४४	१०।२६। १।५२	८।२०।५८।२९	९।२२।१४।२१	३। ४।४५।३१	४। ९।५३।५९	६।२२।२४।२४
२०	९।५५।५९	१०। ७। ५। ०	३।१६।५४। ०	९।११।४०।२६	१०।२६।१५।५५	८।२२। ५।३५	९।२२।२१।१८	३। ४।४२।२०	४। ९।५१।२२	६।२२।२४।१८
२१	९।५९।५६	१०। ८। ५।२८	३।१६।३८। ०	९।१२।५४।५५	१०।२६।३०। ५	८।२३।१३।१५	९।२२।२८।१५	३। ४।३९। ९	४। ९।४८।४५	६।२२।२४।११
२२	१०। ३।३५	१०। ९। ५।५५	३।१६।२२। ५	९।१४।१०।५२	१०।२६।४४।१७	८।२४।२१।३१	९।२२।३५।१२	३। ४।३५।५८	४। ९।४६। ८	६।२२।२४। २
२३	१०। ७।४९	१०।१०। ६।१७	३।१६। ६।१५	९।१५।२८।१५	१०।२६।५८।३१	८।२५।२९।५३	९।२२।४२। ९	३। ४।३२।४७	४। ९।४३।३२	६।२२।२३।५१
२४	१०।११।४६	१०।११। ६।३७	३।१५।५०।३५	९।१६।४७। ६	१०।२७।१२।४७	८।२६।३८।२२	९।२२।४९। ६	३। ४।२९।३६	४। ९।४०।५४	६।२२।२३।३८
२५	१०।१५।४२	१०।१२। ६।५६	३।१५।३५।२०	९।१८। ७।२४	१०।२७।२७। ३	८।२७।४६।५८	९।२२।५६।१	३। ४।२६।२५	४। ९।३८।१६	६।२२।२३।२४
२६	१०।१९।३९	१०।१३। ७।१५	३।१५।२०।३०	९।१९।२९। ९	१०।२७।४१।१९	८।२८।५५।४०	९।२३। २।५५	३। ४।२३।१४	४। ९।३५।३८	६।२२।२३। ७
२७	१०।२३।३६	१०।१४। ७।३३	३।१५। ७।२५	९।२०।५२।२०	१०।२७।५५।३४	९। ०। ४।२८	९।२३। ९।४७	३। ४।२०। ४	४। ९।३३। ०	६।२२।२२।४७
२८	१०।२७।३३	१०।१५। ७।५०	३।१४।५४।५८	९।२२।१६।५९	१०।२८। ९।४८	९। ११।३।२३	९।२३।१६।३७	३- ४।१६।५३	४। ९।३०।२३	६।२२।२२।२६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मार्च को अयनांश २३°।१९'।३७")

तारीख मार्च सन् १९६३	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि
१	१०।३१।३०	१०।१६। ८। ६	३।१४।४२।३९	९।२३।४५।२०	१०।२८।२४। २	९। २।२२।२५	९।२३।२३।२५	३। ४।१३।४२	४। ९।२७।४७	६।२२।२२। ५
२	१०।३५।२६	१०।१७। ८।२१	३।१४।३१।१८	९।२५।१८।१३	१०।२८।३८।१७	९। ३।३१।३३	९।२३।३०।१२	३। ४।१०।३१	४। ९।२५।१२	६।२२।२१।४३
३	१०।३९।२३	१०।१८। ८।३४	३।१४।२०।४४	९।२६।४२।३८	१०।२८।५२।३२	९। ४।४०।४८	९।२३।३६।५७	३। ४। ७।२१	४। ९।२२।३७	६।२२।२१।११
४	१०।४३।१९	१०।१९। ८।६४	३।१४।१०।५९	९।२८। ७।३६	१०।२९। ६।४७	९। ५।५०। ९	९।२३।४३।४०	३। ४। ४।१०	४। ९।२०। १	६।२२।२०।५३
५	१०।४७।१६	१०।२०। ८।५४	३।१४। १।२६	९।२९।३९। ७	१०।२९।२१। १	९। ६।५९।४०	९।२३।५०।२१	३। ४। ०।५९	४। ९।१७।२५	६।२२।२०।२४
६	१०।५१।१२	१०।२१। ९। ०	३।१३।५२।४२	१०। १।१२।११	१०।२९।३५।१६	९। ८। ९।१२	९।२३।५७। ०	३। ३।५७।४८	४। ९।१४।४९	६।२२।१९।५४
७	१०।५५। ९	१०।२२। ९। ४	३।१३।४४।४९	१०। २।४६।४७	१०।२९।४९।३०	९। ९।१८।२५	९।२४। ३।३९	३। ३।५४।३७	४। ९।१२।१३	६।२२।१९।२१
८	१०।५९। ५	१०।२३। ९। ६	३।१३।३७।४४	१०। ४।२१। ५	११। ०। ३।४६	९।१०।२८।४१	९।२४।१०।१४	३। ३।५१।२६	४। ९। ९।३६	६।२२।१८।४७
९	११। ३। २	१०।२४। ९। ७	३।३१।३०।४६	१०। ५।५६।१५	११। ०।१८। ३	९।११।३८।४०	९।२४।१६।४५	३। ३।४८।१६	४। ९। ७। ३	६।२२।१८।१०
१०	११। ६।५८	१०।२५। ९। ६	३।१३।२४।३०	१०। ७।३१। ७	११। ०।३२।२२	९।१२।४८।४४	९।२४।२३।१३	३। ३।४५। ५	४। ९। ४।३३	६।२२।१७।३०
११	११।१०।५५	१०।२६। ९। ३	३।१३।१८।५३	१०। ९। ७।३०	११। ०।४६।४३	९।१३।५८।५१	९।२४।२९।४०	३। ३।४१।५४	४। ९। २। ४	६।२२।१६।४७
१२	११।१४।५१	१०।२७। ८।५७	३।१३।१४। ४	१०।१०।४५।२५	११। १। १। ८	९।१५। ९। २	९।२४।३६। ६	३। ३।३८।४३	४। ८।५९।३७	६।२२।१६। १
१३	११।१८।४८	१०।२८। ८।५०	३।१३। ९।५३	१०।१२।२४।५०	११। १।१५।३६	९।१६।१९।१५	९।२४।४२।३१	३। ३।३५।३३	४। ८।५७।१३	६।२२।१५।१४
१४	११।२२।४४	१०।२९। ८।४१	३।१३। ६।२५	१०।१४। ५।४८	११। १।३०। ७	९।१७।२९।३२	९।२४।४८।५५	३। ३।३२।२२	४। ८।५४।५१	६।२२।१४।२६
१५	११।२६।४१	११। ०। ८।३०	३।१३। ३।३८	१०।१५।४८।१६	११। १।४४।४१	९।१८।३९।५२	९।२४।५५।१९	३। ३।२९।१२	४। ८।५२।३१	६।२२।१३।३७
१६	११।३०।३७	११। १। ८।१८	३।१३। १।३४	१०।१७।३२।१७	११। १।५९।१६	९।१९।५०।१७	९।२५। १।४२	३। ३।२६। १	४। ८।५०।१३	६।२२।१२।४६
१७	११।३४।३४	११। २। ८। ४	३।१३। ०। ९	१०।१९।१६।५५	११। २।१३।५२	९।२१। ०।४५	९।२५। ७।५६	३। ३।२२।५०	४। ८।४७।५७	६।२२।११।५४
१८	११।३८।३०	११। ३। ७।४८	म३।१२।५९।२६	१०।२१। २।३९	११। २।२८।३०	९।२२।११।१७	९।२५।१४। ३	३। ३।१९।४०	४। ८।४५।४३	६।२२।११। ०
१९	११।४२।२७	११। ४। ७।३१	३।१२।५९।२९	१०।२२।४९।२९	११। २।४३। ९	९।२३।२१।५१	९।२५।२०। ९	३। ३।१६।२९	४। ८।४३।३१	६।२२।१०। ४
२०	११।४६।२३	११। ५। ७।१३	३।१३। ०।१५	१०।२४।३७।२६	११। २।५७।४९	९।२४।३२।३०	९।२५।२६।१४	३। ३।१३।१८	४। ८।४१।२१	३।२२। ९। ४
२१	११।५०।२०	११। ६। ६।५१	३।१३। १।४०	१०।२६।२६।२९	११। ३।१२।३१	९।२५।४३।१२	९।२५।३२।१५	३। ३।१०। ७	४। ८।३९।१५	६।२२। ८। २
२२	११।५४।१६	११। ७। ६।२६	३।१३। ३।४६	१०।२८।१६।३८	११। ३।२७।१५	९।२६।५३।५८	९।२५।३८।१२	३। ३। ६।५६	४। ८।३७।०१	६।२२। ६।५७
२३	११।५८।१३	११। ८। ५।५८	३।१३। ६।३४	११। ०। ७।५३	११। ३।४२। ४	९।२८। ४।४७	९।२५।४४। ७	३। ३। ३।४६	४। ८।३५। ५	६।२२। ५।४८
२४	१२। २। ९	११। ९। ५।२८	३।१३।१०। ५	११। २। ०।१४	११। ३।५६।४९	९।२९।१५।४०	९।२५।४९।५९	३। ३। ०।३५	४। ८।३३। ०	६।२२। ४।३७
२५	१२। ६। ६	११।१०। ४।५६	३।१३।१५। ७	११। ३।५४।४०	११। ४।११।२८	१०। ०।२६।३५	९।२५।५५।४८	३। २।५७।२४	४। ८।३०।५५	६।२२। ३।२४
२६	१२।१०। ३	११।११। ४।२२	३।१३।२१। २	११। ५।५०।३६	११। ४।२५।५७	१०। १।३७।३२	९।२६। १।३३	३। २।५४।१३	४। ८।२८।५०	६।२२। २।१०

(पृष्ठ ६१ का शेष) **ग्रह स्पष्ट करने की विधि**—इष्ट कारिक इ. स्टं. टा. एवं पञ्चाङ्ग में दिए गए स्पष्ट ग्रहों के इ. स्टं. टा. के घण्टा-मिनटात्मक अन्तर का लघुरिक्थ लेकर उसमें ग्रह की दैनिक गति का लघुरिक्थ जोड़े और योग फल की संख्या को "लघुरिक्थ कोष्ठक" में ही ढूंढे (यदि कोष्ठक में वह संख्या न मिले तो उसकी आसन्नतम संख्या को ढूंढो)। योग फल जिसका लघुरिक्थ हो उसे कलादि या अंशादि फल (यदि कलादि ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो यह फल कलादि होगा यदि अंशादि गति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो यह फल अंशादि होगा) जानें। इस फल को अभीष्ट तारीख के स्पष्ट ग्रह में मिलाने पर [illegible] कारिक ग्रह स्पष्ट होगा। [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

६—६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर एवं चन्द्रोदयास्त

– इष्टकालिक चन्द्र साधन करने की विधि –

इस ६-६ घण्टे के अन्तर पर स्पष्ट चन्द्र से लघुरिक्थ कोष्ठक द्वारा इष्ट कालिक चन्द्र स्पष्ट करने के लिये, चन्द्र की ६ घण्टे की गति का लघुरिक्थ लेकर उसमें अपने इष्ट घ० मि० के (चन्द्रमा जितने घ० मि० आगे पीछे करना है उसे इष्ट घ० मि० समझें) लघुरिक्थ जोड़कर उसमें से ६०२१ घटाकर शेष संख्या से लघुरिक्थ कोष्ठक से अंश कला जानकर निकटतम चन्द्र में जोड़ें यही स्पष्ट चन्द्र होगा।

तारीख अप्रैल १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
५	११।२०।२७	११।२४।१३	११।२७।५९	०। १।४४	+१।२४	−४।२२	६।३८	१९।२४
६	०। ५।२९	०। ९।१२	०।१२।५४	०।१६।३५	६।४३	४।५१	७।२०	२०।३१
७	०।२०।१५	०।२३।५३	०।२७।२९	१। १। ४	११। ४	५। ५	८। ३	२१।३७
८	१। ४।३७	१। ८। ८	१।११।३७	१।१५। ५	१४।५१	४।५६	८।४८	२२।४०
९	१।१८।३१	१।२१।५४	१।२५।१५	१।२८।३५	१७।४१	४।३३	९।३५	२३।३९
१०	२। १।५३	२। ५।१०	२। ८।२६	२।११।४०	१९।२६	३।५०	१०।२५	. . .
११	२।१४।५३	२।१८। ४	२।२१।१२	२।२४।१९	२०। ५	३। ६	११।२६	०।३४
१२	२।२७।२६	३। ०।३१	३। ३।३५	३। ६।३८	१९।४३	१।५९	१२। ९	१।२५
१३	३। ९।४०	३।१२।४१	३।१५।४१	३।१८।४१	१८।२४	१। ८	१३।०३	२। ९
१४	३।२१।४०	३।२४।३८	३।२७।३६	४। ०।३४	१६।१७	−०। ४	१३।५६	२।५०
१५	४। ३।३१	४। ६।२८	४। ९।२५	४।१२।२२	१३।३०	+१। ७	१४।४९	३।२८
१६	४।१५।१८	४।१८।१६	४।२१।१३	४।२४।१०	१०।११	१।५९	१५।४१	४। ३
१७	४।२७। ७	५। ०। ५	५। ३। ३	५। ६। १	६।२७	२।५३	१६।३४	४।३५
१८	५। ८।५९	५।११।५८	५।१४।५८	५।१७।५८	+२।२८	३।४०	१७।२६	५। ७
१९	५।२०।५८	५।२३।५९	५।२७। ०	६। ०। २	−१।३९	४।१८	१८।१९	५।३९
२०	६। ३। ४	६। ६। ७	६। ९।११	६।१२।१५	५।४४	४।४४	१९।१४	६।११
२१	६।१५।२०	६।१८।२६	६।२१।३३	६।२४।४०	९।४०	४।५८	२०।१०	६।४८
२२	६।२७।४८	७। ०।५७	७। ४। ६	७। ७।१६	१३।१३	४।५८	२१। ६	७।२४
२३	७।१०।२६	७।१३।३७	७।१६।४८	७।२०। १	१६।१४	४।४४	२२। ३	८। ५
२४	७।२३।१४	७।२६।२८	७।२९।४२	८। २।५८	१८।३२	४।१५	२२।५९	८।५०
२५	८। ६।१५	८। ९।३२	८।१२।५०	८।१६। ८	१९।५४	३।३३	२३।५५	९।४०
२६	८।१९।२७	८।२२।४८	८।२६।१०	८।२९।३३	२०।१३	२।३८	० ० ०	१०।३६
२७	९। २।५६	९। ६।२१	९। ९।४६	९।१३।१३	१९।२३	१।३४	०।४८	११।३५
२८	९।१६।४०	९।२०। ०	९।२३।३८	९।२७। ९	१७।२४	+०।२२	१।३७	१२।३८
२९	१०। ०।४०	१०। ४।१३	१०। ७।४७	१०।११।२२	१४।२१	−०।५०	२।२४	१३।४३
३०	१०।१४।५८	१०।१८।३५	१०।२२।१३	१०।२५।५२	−१०।२३	−२। ३	३। ८	१४।४९

तारीख मई १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
१	१०।२९।३१	११। ३।१२	११। ६।५३	११।१०।३४	−५।४५	−३। ७	३।४९	१५।५६
२	११।१४।१६	११।१७।५८	११।२१।४०	११।२५।२२	−०।४३	४। २	४।२९	१७। २
३	११।२९। ५	०। २।४७	०। ६।२९	०।१०।११	+४।२३	४।३८	५।१०	१८।१०
४	०।१३।५२	०।१७।३१	०।२१।१०	०।२४।४९	९।१२	४।५८	५।५२	१९।१६
५	०।२८।२७	१। २। ४	१। ५।३८	१। ९।११	१३।२९	४।५६	६।३७	२०।२१
६	१।२।४३	१।६।१३	१।१९।४२	१।२३। ९	१६।४५	४।३७	७।२४	२१।२४
७	१।२६।३५	१।२९।५९	२। ३।२१	२। ६।४२	१९। ३	४। १	८।१३	२२।२३
८	२।१०। १	२।१३।१७	२।१६।३२	२।१९।४६	२०।११	३।५५	९। ५	२३।१६
९	२।२३। ०	२।२६।११	२।२९।२१	३। २।२९	२०।१२	२।१६	९।५९	. . .
१०	३। ५।३६	३। ८।४२	३।११।४६	३।१४।४९	१९।११	१।३०	१०।५३	०। ४
११	३।१७।५२	३।२०।५३	३।२३।५४	३।२६।५४	१७।१७	−०।१०	११।४७	०।४८
१२	३।२९।५४	४। २।५३	४। ५।५१	४। ८।४९	१४।३९	+०।५३	१२।४१	१।२८
१३	४।११।४६	४।१४।४४	४।१७।४१	४।२०।३८	११।२६	१।५४	१३।३४	२। ३
१४	४।२३।३६	४।२६।३४	४।२९।३१	५। २।२८	७।४७	२।५०	१४।२७	२।३६
१५	५। ५।२६	५। ८।२४	५।११।२३	५।१४।२२	+३।५०	३।३६	१५।१९	३। ८
१६	५।१७।२२	५।२०।२३	५।२३।२४	५।२६।२६	−०।१७	४।१६	१६।१२	३।३९
१७	५।२९।२८	६। २।३०	६। ५।३३	६। ८।३७	४।२७	४।३६	१७। ६	४।१२
१८	६।११।४३	६।१४।४९	६।१७।५६	६।२१। ४	८।३०	४।५८	१८। १	४।४४
१९	६।२४।१३	६।२७।२३	७। ०।३३	७। ३।४४	१२।१६	४।५८	१८।५८	५।२३
२०	७। ६।५७	७।१०।१०	७।१३।२३	७।१६।३८	१८।३३	४।४६	१९।५६	६। ४
२१	७।१९।५३	७।२३। ८	७।२६।२४	७।२९।४२	१८। ८	४।१७	२०।५४	६।४६
२२	८। ३। १	८। ६।२१	८। ९।४१	८।१३। २	१९।४९	३।४०	२१।५१	७।३६
२३	८।१६।२३	८।१९।४५	८।२३। ७	८।२६।२९	२०।२६	२।३९	२२।४६	८।३०
२४	८।२९।५२	९। १।१७	९। ६।४२	९।१०। ७	१९।५५	१।३५	२३।३६	९।२९
२५	९।१३।३३	९।१७। ०	९।२०।२७	९।२३।५५	१८।११	+०।२४	. . . .	१०।३१
२६	९।२७।२३	१०। ०।५२	१०।४।२२	१०। ७।५७	९।५२३	−०।४७	०।२४	११।३५
२७	१०।११।२३	१०।१४।५४	१०।१८।२६	१०।२१।५८	११।४१	२। ३	१। ७	१२।३९
२८	१०।२५।३१	१०।२९। ५	११। २।३९	११। ६।१४	७।१६	३। ४	१।४८	१३।४४
२९	११। ९।४९	११।१३।२५	११।१७। १	११।२०।३७	−२।२५	३।५७	२।२७	१४।४८
३०	११।२४।१३	११।२७।४९	०। १।२६	०। ५। २	+२।३५	४।३७	३। ६	१५।५३
३१	०। ८।३८	०।१२।१३	०।१५।४८	०।१९।२३	+७।२७	−४।५८	३।४६	१६।५८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

तारीख जून १९६२	चन्द्र ० घं. मि.	६ घं. मि.	१२ घं.मि.	१८ घं.मि.	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१	०।२२।५८	०।२६।३२	१। ०। ५	१। ३।२८	+११।५२	−५। १	४।२८	१८। ३
२	१। ७।१०	१।१०।४०	१।१४।१०	१।१७।३९	१५।३५	४।४६	५।१३	१९। ७
३	१।२१। ७	१।२४।३३	१।२७।५८	२। १।२१	१८।२१	४।१३	६। १	२०। ८
४	२। ४।४४	२। ८। ६	२।११।२६	२।१४।४५	२०। ०	३।२६	६।५२	२१। ५
५	२।१८। २	२।२१।१८	२।२४।३२	२।२७।४५	२०।२९	२।२९	७।४६	२१।५७
६	३। ०।५६	३। ४। ७	३। ७।१६	३।१०।२४	१९।५२	१।२५	८।४०	२२।४३
७	३।१३।३१	३।१६।३७	३।१९।४२	३।२२।४५	१८।१६	−०।१९	९।३५	२३।२४
८	३।२५।४७	३।२८।४८	४। १।४९	४। ४।५०	१५।५१	+०।४६	१०।३०	....
९	४। ७।५०	४।१०।४९	४।१३।४८	४।१६।४६	१२।४७	१।४७	११।२५	०। २
१०	४।१९।४४	४।२२।४२	४।२५।३९	४।२८।३७	९।१४	२।४५	१२।१७	०।३६
११	५। १।३४	५। ४।३२	५। ७।३१	५।१०।२९	५।२१	३।३५	१३।१०	१। ९
१२	५।१३।२७	५।१६।२६	५।१९।२५	५।२२।२५	+१।१५	४।१५	१४। २	१।४१
१३	५।२५।२६	५।२८।२८	६। १।३०	६। ४।३३	−२।५५	४।४५	१४।५६	२।१३
१४	६। ७।३६	६।१०।४१	६।१३।४६	६।१६।५२	७। २	५। २	१५।५१	२।४५
१५	६।१९।५९	६।२३। ७	६।२६।१७	६।२९।२८	१०।५६	५। ७	१६।४७	३।२०
१६	७। २।३९	७। ५।५२	७। ९। ६	७।१२।२१	१४।२७	४।५५	१७।४५	३।५७
१७	७।१५।३७	७।१८।५४	७।२२।१२	७।२५।३१	१७।२१	४।२९	१८।४४	४।४०
१८	७।२८।५१	८। २।१३	८। ५।३५	८। ८।५८	१९।२५	३।४८	१९।४२	५।२८
१९	८।१२।२३	८।१५।४८	८।१९।१४	८।२२।४०	२०।२७	२।५३	२०।४०	६।२२
२०	८।२६। ५	८।२९।३३	९। ३। २	९। ६।३१	२०।१७	१।४७	२१।३३	७।२१
२१	९।१०। ०	९।१३।३०	९।१७। १	९।२०।३२	१८।५३	+०।३४	२२।२२	८।२३
२२	९।२४। ३	९।२७।३५	१०। १। ७	१०। ४।३९	१६।१९	−०।४१	२३। ८	९।२६
२३	१०। ८।११	१०।११।४३	१०।१५।१६	१०।१८।४८	१२।४६	१।५५	२३।४९	१०।३१
२४	१०।२२।२१	१०।२५।५४	१०।२९।२७	११। ३। ०	८।२९	३। २	...	११।३६
२५	११। ६।३३	११।१०। ५	११।१३।३८	११।१७।११	−३।४३	३।४४	०।२९	१२।४१
२६	११।२०।४४	११।२४।१६	११।२७।४८	०। १।२०	+१।१३	४।४०	१। ७	१३।४५
२७	०। ४।५२	०। ८।२३	०।११।५४	०।१५।२५	६। ४	५। ४	१।४६	१४।४८
२८	०।१८।५६	०।२२।२५	०।२५।५४	०।२९।२३	१०।३४	५।१०	२।२७	१५।५२
२९	१। २।५१	१। ६।१८	१। ९।४५	१।१३।११	१४।२७	४।५७	३। ८	१६।५५
३०	१।१६।३७	१।२०। १	१।२३।२४	१।२६।४६	+१७।३१	−४।२८	३।५३	१७।५६

तारीख जुलाई १९६२	चन्द्र ० घं. मि.	६ घं. मि.	१२ घं.मि.	१८ घं.मि.	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१	२। ०। ७	२। ३।२८	२। ६।४७	२।१०। ५	+१९।३३	−३।४४	४।४२	१८।५३
२	२।१३।२३	२।१६।३९	२।१९।५५	२।२३। ९	२०।२९	२।४८	५।३४	१९।४७
३	२।२६।२३	२।२९।३५	३। २।४६	३। ५।५६	२०।१७	१।४४	६।२९	२०।३६
४	३। ९। ५	३।१२।१२	३।१५।१८	३।१८।२४	१९। २	−०।३७	७।२५	२१।२०
५	३।२१।२९	३।२४।३३	३।२७।३७	४। ०।४०	१६।५३	+०।३०	८।२०	२२। ०
६	४। ३।४३	४। ६।४४	४। ९।४५	४।१२।४५	१४। १	१।३५	९।१५	२२।३६
७	४।१५।४५	४।१८।४४	४।२१।४३	४।२४।४१	१०।३६	२।३६	१०। ८	२३। ९
८	४।२७।३९	५। ०।३७	५। ३।३५	५। ६।३३	६।४८	३।२९	११। १	२३।४१
९	५। ९।३०	५।१२।२८	५।१५।२६	५।१८।२४	+२।४६	४।१२	११।५३	....
१०	५।२१।२३	५।२४।२२	५।२७।२२	६। ०।२२	−१।२३	४।४६	१२।४५	०।१२
११	६। ३।२३	६। ६।२५	६। ९।२७	६।१२।३०	५।३०	५। ६	१३।३९	०।४३
१२	६।१५।३३	६।१८।३८	६।२१।४४	६।२४।५१	९।३८	५।१४	१४।३४	१।१७
१३	६।२७।५९	७। १। ९	७। ४।१९	७। ७।३१	१३। ७	५। ९	१५।३०	१।५३
१४	७।१०।४३	७।१३।५७	७।१७।१३	७।२०।३०	१६।१६	४।४५	१६।२९	२।३३
१५	७।२३।४८	७।२७। ८	८। ०।२९	८। ३।५२	१८।४२	४। ८	१७।२८	३।१८
१६	८। ७।१६	८।१०।४१	८।१४। ७	८।१७।३४	२०।१०	३।१७	१८।२६	४।१०
१७	८।२१। ३	८।२४।३२	८।२८। ३	९। १।३४	२०।२९	२।१२	१९।२३	५। ७
१८	९। ५। ८	९। ८।४२	९।१२।१७	९।१६।५३	१९।३२	+०।५८	२०।१५	६। ९
१९	९।१९।२९	९।२३। ६	९।२६।४३	१०। ०।२०	१७।१९	−०।१९	२१। ३	७।१४
२०	१०। ३।५८	१०। ७।३६	१०।११।१४	१०।१४।५२	१३।५९	१।३७	२१।४८	८।२०
२१	१०।१८।३१	१०।२२। ८	१०।२५।४६	१०।२९।२३	९।४७	२।५५	२२।२९	९।२७
२२	११। ३। १	११। ६।३७	११।१०।१४	११।१३।५०	५। २	३।५१	२३। ९	१०।३४
२३	११।१७।२७	११।२१। २	११।२४।३७	११।२८।१०	−०। २	४।३८	२३।४७	११।४०
२४	०। १।४३	०। ५।१५	०। ८।४६	०।१२।१६	+४।५५	५। ६	....	१२।४४
२५	०।१५।४५	०।१९।१४	०।२२।४२	०।२६। ९	९।३१	५।१६	०।२९	१३।४६
२६	०।२९।३६	१। ३। १	१। ६।२६	१। ९।४९	१३।३२	५। ७	१। ७	१४।४७
२७	१।१३।१२	१।१६।३३	१।१९।५३	१।२३।१३	१६।४७	४।४०	१।५०	१५।४७
२८	१।२६।३२	१।२९।५०	२। ३। ७	२। ६।२४	१९। ४	४। ०	२।३८	१६।४६
२९	२। ९।४०	२।१२।५४	२।१६। ८	२।१९।२०	२०।१८	३। ७	३।२८	१७।४०
३०	२।२२।३३	२।२५।४४	२।२८।५४	३। २। ३	२०।२६	२। ५	४।२१	१८।३१
३१	३। ५।१२	३। ८।१९	३।११।२६	३।१४।३३	+१९।३१	−०।५७	५।१६	१९।१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६–६ घंटे के अंतर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

तारीख अगस्त १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	घं. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१	३।१७।३९	२।२०।४३	३।२३।४७	३।२६।५१	+१७।४०	+०। ९	६।११	१९।५७
२	३।२९।५४	४। २।५६	४। ५।५८	४। ८।५९	१५। १	१। १६	७। ५	२०।३४
३	४।११।५९	४।१४।५९	४।१७।५८	४।२०।५७	११।४६	२। १९	७।५८	२१। ८
४	४।२३।५६	४।२६।५४	४।२९।५२	५। २।५०	८। ४	३। १५	८।५२	२१।४१
५	५। ५।४७	५। ८।४४	५।११।४२	५।१४।४०	+४। ५	४। २	९।४४	२२।१२
६	५।१७।३८	५।२०।३६	५।२३।३४	५।२६।३३	−०। २	४।३८	१०।३७	२२।४३
७	५।२९।३१	६। २।३०	६। ५।२९	६। ८।२९	४। ९	५। ३	११।२८	२३।१५
८	६।११।३०	६।१४।३१	६।१७।३२	६।२०।३५	८। ९	५।१५	१२।२३	२३।५०
९	६।२३।३८	६।२६।४३	६।२९।४८	७। २।५४	११।५२	५।१३	१३।१७	....
१०	७। ६।१९	७। ९।१९	७।१२।१९	७।१५।३१	१५।१०	४।५७	१४।१४	०।२६
११	७।१८।४४	७।२१।५८	७।२५।१३	७।२८।३०	१७।५०	४।२५	१५।१२	१। ९
१२	८। १।४८	८। ५। ८	८। ८।३०	८।११।५४	१९।४१	३।४०	१६।१०	१।५७
१३	८।१५।१८	८।१८।४५	८।२२।१३	८।२५।४२	२०।२९	२।४१	१७। ७	२।५०
१४	८।२९।१३	९। २।४६	९।६।२०	९। ९।५५	२०। ५	१।३०	१८। २	३।५०
१५	९।१३।३२	९।१७।१०	९।२०।४९	९।२४।२९	१८।२२	+०।१३	१८।५३	४।५४
१६	९।२८।१०	१०।१।५२	१०।५।३५	१०।९।१९	१५।२५	−१। ३	१९।४१	६। २
१७	१०। १३।३	१०।१६।४७	१०।२०।३१	१०।२४।१६	११।२६	२।२३	२०।२१	७।१०
१८	१०। २८।१	११।१।४५	११। ५।२९	११। ९।१३	६।४२	३।३१	२१। ५	८।१९
१९	११।२।५६	११।६।३८	११।२०।१९	११।२४। ०	−१।३५	४।२४	२१।४६	९।२५
२०	११।२७।४१	०। १।२०	०। ४।५८	०। ८।३५	+३।३३	४।५९	२२।२५	१०।३२
२१	०।१२।११	०।१५।४५	०।१९।१८	०।२२।४९	८।२४	५।१४	२३। ७	११।३७
२२	०।२६।१९	०।२९।४८	१। ३।१६	१। ६।४२	१२।४०	५। ९	२३।५०	१२।४०
२३	१। १०।७	१।१३।३०	१।१६।५१	१।२०।१२	१६। ९	४।४६	....	१३।४२
२४	१।२३।३२	१।२६।५०	२। ०। ७	२। ३।२३	१८।४०	४। ९	०।३६	१४।४१
२५	२। ६।३९	२। ९।५२	२।१३।१५	२।१६।१७	२०। ८	३।१९	१।२५	१५।३६
२६	२।१९।२८	२।२२।३७	२।२५।४६	२।२८।५४	२०।३१	२।१९	२।१६	१६।२८
२७	३। २।१९	३। ५।१७	३। ८।१३	३।११।१८	१९।५२	१।१४	३।१०	१७।१४
२८	३।१४।२३	३।१७।२७	३।२०।३०	३।२३।३३	१८।१४	−०। ८	४। ४	१७।५६
२९	३।२६।३५	३।२९।३७	४। २।३८	४। ५।३९	१५।४८	+०।५८	४।५९	१८।३४
३०	४। ८।३९	४।११।३९	४।१४।३८	४।१७।३७	१२।४२	२। १	५।५३	१९। ९
३१	४।२०।३६	४।२३।३५	४।२६।३३	४।२९।३१	+९। ६	+२।५८	६।४६	१९।४२

तारीख सितं. १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	घं. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१	५। २।२८	५। ५।२६	५। ८।२३	५।११।२१	+५।१०	+३।४७	७।३९	२०।१३
२	५।१४।१९	५।१७।१६	५।२०।१४	५।२३।१२	+१। ४	४।२६	८।३१	२०।४४
३	५।२६। ९	५।२९। ७	६। २। ५	६। ५। ४	−३। ४	४।५३	९।२३	२१।१६
४	६। ८। ३	६।११। ३	६।१४। २	६।१७। २	७। ६	५। ८	१०।१५	२१।४९
५	६।२०। २	६।२३। २	६।२६। ३	६।२९। ५	१०।५३	५। ९	११।१०	२२।२३
६	७। २। ८	७। ५।१२	७। ८।१६	७।११।२२	१४।१८	४।५८	१२। ५	२३। ४
७	७।१४।२८	७।१७।३६	७।२०।४५	७।२३।५५	१७। ८	४।३१	१३। ०	२३।४७
८	७।२७। ६	८। ०।१९	८। ३।३२	८। ६।४८	१९।१४	३।५१	१३।५६	...
९	८।१०। ४	८।१३।२२	८।१६।४३	८।२०। ५	२०।२५	२।५९	१४।५३	०।३६
१०	८।२३।२९	८।२६।५४	९। ०।२१	९। ३।४०	२०।२९	१।५५	१५।४८	१।३१
११	९। ७।१९	९।१०।५२	९।१४।२५	९।१८। १	१९।२०	+०।४३	१६।४०	२।३३
१२	९।२१।३८	९।२५।१८	९।२८।५९	१०। २।४०	१६।५५	−०।३३	१७।२९	३।३८
१३	१०। ६।२२	१०।१०। ६	१०।१३।५१	१०।१७।३८	१३।२१	१।५०	१८।१४	४।४६
१४	१०।२१।२५	१०।२५।१२	१०।२९। ०	११। २।५०	८।५१	३। १	१८।५६	५।५५
१५	११। ६।४०	११।१०।२९	११।१४।१८	११।१८। ६	−३।४३	४। १	१९।३८	७। ५
१६	११।२१।५४	११।२५।४०	११।२९।२७	०। १।१९	+१।३७	४।३२	२०।२०	८।१४
१७	०। ७। ०	०।१०।४०	०।१४।२३	०।१८। ४	६।४८	५। ४	२१। २	९।२२
१८	०।२१।४४	०।२५।२२	०।२८।५८	१। २।३३	११।२८	५। ५	२१।४५	१०।२८
१९	१। ६। ६	१। ९।३७	१।१३। ७	१।१६।३५	१५।२१	४।४६	२२।३१	११।३२
२०	१।२०। १	१।२३।२४	१।२६।४६	२। ०। ७	१८।१४	४।११	२३।२०	१२।३४
२१	२। ३।२६	२। ६।४३	२। ९।५९	२।१३।१४	२०। १	३।२३	....	१३।३२
२२	२।१६।२८	२।१९।४०	२।२२।५१	२।२५।५९	२०।४०	२।२६	०।१२	१४।२५
२३	२।२९। ६	३। २।१२	३। ५।१८	३। ८।२४	२०।१३	१।२२	१। ५	१५।१३
२४	३।११।३०	३।१४।३४	३।१७।३७	३।२०।३९	१८।४८	−०।१७	१।५९	१५।५६
२५	३।२३।४१	३।२६।४०	३।२९।४०	४। २।४०	१६।३२	+०।४७	२।५४	१६।३५
२६	४। ५।४०	४। ८।३९	४।११।३८	४।१४।३७	१३।३४	१।४८	३।४८	१७।११
२७	४।१७।३६	४।२०।३३	४।२३।३१	४।२६।२९	१०। ३	२।४६	४।४१	१७।४४
२८	४।२९।२७	५। २।२५	५। ५।२३	५। ८।२१	६।११	३।३५	५।३४	१८।१५
२९	५।११।१८	५।१४।१५	५।१७।१३	५।२०।११	+२। ५	४।१०	६।२७	१८।४६
३०	५।२३। ९	५।२६। ७	५।२९। ६	६। २। ४	−२। ६	+४।४४	७।२८	१९।१८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्र क्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

तारीख अक्तू. १९६२	चन्द्र ० घं. मि.	६ घं. मि.	१२ घं. मि.	१८ घं. मि.	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१	६।५।३	६।८।२	६।११।१	६।१४।०	−६।१२	+४।४८	८।११	१९।४९
२	६।१७।०	६।२०।०	६।२३।१	६।२६।२	१०।६	५।४	९।५	२०।२४
३	६।२९।२	७।२।४	७।५।६	७।८।८	१३।३९	४।५१	९।५९	२१।१
४	७।११।११	७।१४।१६	७।१७।२१	७।२०।२६	१६।३८	४।२८	१०।५४	२१।४२
५	७।२३।३२	७।२६।४०	७।२९।४८	८।२।५७	१८।५६	३।५१	११।४९	२२।२९
६	८।६।७	८।९।१९	८।१२।३२	८।१५।४६	२०।२३	३।३	१२।४४	२३।२०
७	८।१९।१	८।२२।१८	८।२५।३६	८।२८।५६	२०।४८	२।४	१३।३८	...
८	९।२।१७	९।५।३९	९।९।३	९।१२।२९	२०।५	+०।५८	१४।२९	०।१९
९	९।१५।५७	९।१९।२८	९।२३।०	९।२६।३२	१८।११	−०।१३	१५।१८	१।२२
१०	१०।०।५	१०।३।४१	१०।७।१९	१०।१०।५९	१५।७	१।२७	१६।३	२।२५
११	१०।१४।३९	१०।१८।२२	१०।२२।६	१०।२५।५१	११।२	२।३७	१६।४६	३।३०
१२	१०।२९।३७	११।३।२४	११।७।१२	११।११।१	+६।१०	३।३८	१७।२७	४।३९
१३	११।१४।५०	११।१८।३९	११।२२।२६	११।२६।१३	−०।५१	४।२५	१८।९	५।४९
१४	०।०।१	०।३।५१	०।७।४१	०।११।३२	४।३३	४।५२	१८।५१	६।५८
१५	०।१५।२२	०।१९।११	०।२२।५९	०।२६।४५	९।३९	५।०	१९।३५	८।७
१६	१।०।२८	१।४।८	१।७।४६	१।११।२१	१४।४	४।४६	२०।२१	९।१४
१७	१।१४।५४	१।१८।२४	१।२१।५४	१।२५।२५	१७।३०	४।१४	२१।११	१०।२०
१८	१।२८।५६	२।२।२१	२।५।४५	२।९।८	१९।४६	३।२७	२२।४	११।२२
१९	२।१२।२९	२।१५।४८	२।१९।५	२।२२।२१	२०।५०	२।२९	२२।५८	१२।१९
२०	२।२५।३४	२।२८।४५	३।१।५५	३।५।५	२०।४२	१।२६	२३।५३	१३।९
२१	३।८।१४	३।११।२१	३।१४।२६	३।१७।३१	१९।३०	−०।२०	....	१३।५५
२२	३।२०।३५	३।२३।३७	३।२६।३९	३।२९।४०	१७।२३	+०।४४	०।४८	१४।३६
२३	४।२।४१	४।५।४१	४।८।४०	४।११।३९	१४।३२	१।४५	१।४३	१५।१३
२४	४।१४।३७	४।१७।३५	४।२०।३३	४।२३।३१	११।७	२।४१	२।३७	१५।४६
२५	४।२६।२९	४।२९।२६	५।२।२३	५।५।२१	७।१८	३।३०	३।१९	१६।१८
२६	५।८।१८	५।११।१५	५।१४।१३	५।१७।११	३।१२	४।९	४।२२	१६।४१
२७	५।२०।९	५।२३।७	५।२६।६	५।२९।४	−१।१	४।३८	५।१४	१७।१९
२८	६।२।३	६।५।३	६।८।३	६।११।३	५।१३	४।५४	६।७	१७।५२
२९	६।१४।३	६।१७।३	६।२०।४	६।२३।५	९।१५	४।५८	७।०	१८।२६
३०	६।२६।७	६।२९।९	७।२।११	७।५।१५	१२।५७	४।४८	७।५५	१९।२

तारीख नव. १९६२	चन्द्र ० घं. मि.	६ घं. मि.	१२ घं. मि.	१८ घं. मि.	क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
१	७।२०।३८	७।२३।४५	७।२६।५२	८।०।०	−१८।४१	+३।४९	९।४५	२०।२६
२	८।३।८	८।६।१७	८।९।२७	८।१२।३८	२०।२२	३।१	१०।४०	२१।१५
३	८।१५।४९	८।१९।१	८।२२।१४	८।२५।२९	२१।४	२।५	११।३३	२२।१०
४	८।२८।४४	९।२।१	९।५।१८	९।८।३७	२०।४०	+१।५	१२।२४	२३।८
५	९।११।५६	९।१५।१८	९।१८।४१	९।२२।५	१९।७	−०।८	१३।१०	...
६	९।२५।३०	९।२८।५७	१०।२।२५	१०।५।५४	१६।२८	१।१८	१३।५७	०।९
७	१०।९।२४	१०।१२।५७	१०।१६।३२	१०।२०।८	१२।४९	२।२६	१४।३९	१।१३
८	१०।२३।४४	१०।२७।२२	११।१।१	११।४।४२	८।२०	३।२७	१५।२०	२।१९
९	११।८।२३	११।१२।६	११।१५।५०	११।१०।३४	−३।१६	४।१५	१६।०	३।२६
१०	११।२३।१९	११।२७।४	०।०।५०	०।४।३७	+२।५	४।४७	१६।४१	४।३४
११	०।८।२४	०।१२।१०	०।१५।५७	०।१९।४३	७।२१	४।५९	१७।२३	५।४२
१२	०।२३।२९	०।२९।१३	१।०।५७	१।४।४१	१२।११	४।५१	१८।७	६।५१
१३	१।८।२४	१।१२।३	१।१५।४१	१।१९।२०	१६।१२	४।२३	१८।५६	७।५९
१४	१।२२।५६	१।२६।३०	२।०।३	२।३।३५	१९।७	३।३८	१९।४९	९।५
१५	२।७।५	२।१०।३३	२।१३।५७	२।१७।२१	२०।४६	२।४०	२०।४४	१०।५
१६	२।२०।४३	२।२४।३	२।२७।२२	३।०।३९	२१।८	१।३५	२१।४१	११।२
१७	३।३।५५	३।७।८	३।१०।१९	३।१३।३०	२०।१७	−०।२७	२२।३८	११।५१
१८	३।१६।३९	३।१९।४७	३।२२।५४	३।२५।५९	१८।२५	+०।३९	२३।३४	१२।३४
१९	३।२९।३	४।२।६	४।५।८	४।८।९	१५।४३	१।४३	...	१३।१२
२०	४।११।११	४।१४।११	४।१७।१०	४।२०।९	१२।२४	२।४१	०।२९	१३।४८
२१	४।२३।७	४।२६।५	४।२९।३	५।२।१	८।३७	३।३१	१।२१	१४।२०
२२	५।४।५८	५।७।५५	५।१०।५३	५।१३।५०	४।३३	४।१२	२।१६	१४।५१
२३	५।१६।४८	५।१९।४६	५।२२।४४	५।२५।४३	+०।१९	४।४१	३।८	१५।२२
२४	५।२८।४२	६।१।४१	६।४।४१	६।७।४१	−३।५६	४।५८	४।०	१५।५४
२५	६।१०।४१	६।१३।४२	६।१६।४३	६।१९।४५	८।५	५।२	४।५३	१६।२६
२६	६।२२।४७	६।२५।५०	६।२८।५४	७।१।५८	११।५७	४।५३	५।४९	१७।२
२७	७।५।२	७।८।७	७।११।१३	७।१४।२०	१५।२३	४।३०	६।४४	१७।४०
२८	७।१७।२७	७।२०।३५	७।२३।४३	७।२६।५३	१८।११	३।५४	७।४०	१८।२४
२९	८।०।३	८।३।१४	८।६।२५	८।९।३७	२०।११	३।६	८।३६	१९।१२
३०	८।१२।५०	८।१६।४	८।१९।१९	८।२२।३३	−२१।१०	+२।८	९।३१	२०।५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६—६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्र क्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

१ दिसं. को अयनांश २३°१९'१५"

तारीख दिस. १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	अ. क.	अ. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	८।२५।४६	८।२९। २	९। २।१८	९। ५।३६	-२१। ३	+१। ३	१०।२४	२१। ३
२	९। ८।५५	९।१२।१४	९।१५।३४	९।१८।५६	१९।४७	-०। ७	११।१२	२२। २
३	९।२२।१८	९।२५।४१	९।२९। ४	१०। २।२९	१७।२५	१।१९	११।५७	२३। ५
४	१०। ५।५४	१०। ९।२१	१०।१२।४८	१०।१६।१६	१४। ३	२।२६	१२।३९	..
५	१०।१९।४४	१०।२३।१४	१०।२६।४५	१०। ०।१७	९।५१	३।२७	१३।१९	०।१९
६	११। ३।५०	११। ७।२५	११।११। ०	११।१४।३६	-५। ३	४।१६	१३।५७	१।१२
७	११।१८।१२	११।२१।५०	११।२५।२८	११।२९। ६	+०। ५	४।५०	१४।३६	२।१७
८	०। २।४५	०। ५।२४	०।१०। ४	०।१३।४४	५।१७	५। ६	१५।१५	३।२२
९	०।१७।२४	०।२१। ४	०।२४।४४	०।२८।२३	१०।१३	५। २	१५।५७	४।२९
१०	१। २। २	१। ५।४१	१। ९।२०	१।१२।५८	१४।३४	४।३८	१६।४३	५।३७
११	१।१६।३५	१।२०।११	१।२३। ६	१।२७।२०	१८। ०	३।५७	१७।३३	६।४३
१२	२। ०।५४	२। ४।२६	२। ७।५६	२।११।२५	२०।१७	३। १	१८।२७	७।४६
१३	२।१४।५३	२।१८।१८	२।२१।४३	२।२५। ६	२१।१५	१।५६	१९।२४	८।४७
१४	२।२८।२८	३। १।४८	३। ५। ७	३। ८।२४	२०।५६	-०।४६	२०।२२	९।४१
१५	३।११।४०	३।१४।५४	३।१८। ७	३।२२।१८	१९।२७	+०।२६	२१।२१	१०।२८
१६	३।२४।२८	३।२७।३६	४। ०।४४	४। ३।५०	१७। ०	१।३५	२२।१७	११। ९
१७	४। ६।५६	४।१०। ०	४।१३। ४	४।१६। ७	१३।५०	२।३७	२३।१३	११।४७
१८	४।१९। ९	४।२२।१०	४।२५।११	४।२८।१०	१०। ८	३।३०	....	१२।२०
१९	५। १। ९	५। ४। ७	५। ७। ५	५।१०। ३	६। ५	४।१४	०। ७	१२।५१
२०	५।१३। १	५।१५।५९	५।१८।५७	५।२१।५५	+१।५१	४।४५	१। ०	१३।२२
२१	५।२४।५३	५।२७।५१	६। ०।४९	६। ३।४८	-२।२५	५। ५	१।५२	१३।५३
२२	६।६ ।४७	६। ९।४७	६।१२।४७	६।१५।४८	६।३७	५।११	२।४५	१४।२४
२३	६।१८।४९	६।२१।५१	६।२४।५३	६।२७।५७	१०।३७	५। ५	३।३९	१५। ०
२४	७। १। १	७। ४। ६	७। ७।११	७।१०।१८	१४।१५	४।४४	४।३४	१५।३८
२५	७।१३।२५	७।१६।३४	७।१९।४४	७।२२।५४	१७।१९	४। ०	५।३०	१६।१८
२६	७।२६। ५	७।२९।१७	८। २।३०	८। ५।४४	१९।३८	३।२३	६।२७	१७। ५
२७	८। ८।५८	८।१२।१४	८।१५।३०	८।१८।४७	२१। ०	२।२३	७।२३	१७।५७
२८	८।२२। ५	८।२५।२४	८।२८।४४	९। २। ५	२१।१६	१।१६	८।१७	१८।५५
२९	९। ५।२७	९। ८।५०	९।१२।१३	९।१५।३७	२०।१९	+०। ४	९। ९	१९।५५
३०	९।१९। २	९।२२।२७	९।२५।५२	९।२९।१८	१८।१२	-१। ८	९।५७	२०।५८
३१	१०। २।४५	१०। ६।१२	१०। ९।४०	१०।१३। ९	-१५। २	-२।१९	१०।४०	२२। २

१ जून. को अयनांश २३°१९'२९"

तारीख जन. १९६३	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	अ. क.	अ. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	१०।१६।३८	१०।२०। ८	१०।२३।३८	१०।२७। ९	-१०।५९	-३।२३	११।२१	२३। ६
२	११। ०।४०	११। ४।११	११। ७।४२	११।११।१४	६।१७	४।१५	१२। ०	....
३	११।१४।४६	११।१८।१८	११।२१।५१	११।२५।२४	-१। ४	४।५१	१२।३९	०।१३
४	११।२८।५७	०। २।३०	०। ६। ४	०। ९।३७	+३।५२	५।११	१३।१८	१।२१
५	०।१३।११	०।१६।४४	०।२०।१७	०।२३।५०	८।४२	५।१०	१३।५७	२। २९
६	०।२७।२३	१। ०।५५	१। ४।२८	१। ८। ०	१३। ६	४।५३	१४।३६	३।२५
७	१।११।३३	१।१५। ४	१।१८।३५	१।२२। ५	१६।४६	४।१६	१५।२१	४।२०
८	१।२५।३५	१।२९। ३	२। २।३१	२। ५।५६	१९।२६	३।२६	१६।१६	५।२५
९	२। ९।२५	२।१२।५०	२।१६।१५	२।१९।३८	२०।५५	२।२३	१७।१६	६।२०
१०	२।२३। १	२।२६।२२	२।२९।४३	३। ३। ३	२१। ७	१।१३	१८।१७	७।२६
११	३। ६।२२	३। ९।३९	३।१२।५५	३।१६।११	२०। ७	-०। १	१९।११	८।२३
१२	३।१९।२५	३।२२।३७	३।२५।४८	३।२८।५९	१८। ४	+१।११	२०। ६	९। ३
१३	४। २। ८	४। ५।१७	४। ८।२५	४।११।३१	१५। ८	२।१७	२१। १	९।४४
१४	४।१४।३६	४।१७।४१	४।२०।४५	४।२३।४८	११।३४	३।१५	२१।५६	१०।१८
१५	४।२६।४९	४।२९।५०	५। २।५१	५। ५।५२	७।३८	४। ४	२२।५२	१०।५२
१६	५। ८।५२	५।११।५२	५।१४।५१	५।१७।४९	+३।२६	४।४०	२३।४७	११।२६
१७	५।२०।४७	५।२३।४६	५।२६।४४	५।२९।४२	-०।५०	५। ४	....	१२। ०
१८	६। २।४०	६। ५।३८	६। ८।३७	६।११।३५	५। ६	५।१५	०।३७	१२।२१
१९	६।१४।३४	६।१७।३४	६।२०।३४	६।२३।३५	९। ९	५।१६	१।२६	१२।५८
२०	६।२६।३७	६।२९।३९	७। २।४२	७। ५।४६	१२।५४	४।५६	२।२४	१३।३६
२१	७। ८।५०	७।११।५५	७।१५। १	७।१८। ८	१६।१०	४।२७	३।१८	१४।१६
२२	७।२१।१७	७।२४।२७	७।२७।३८	८। ०।५०	१८।४५	३।४४	४।१३	१४।५६
२३	८। ४। ३	८। ७।१७	८।१०।३२	८।१३।४९	२०।२९	२।४९	५। ९	१५।४९
२४	८।१७। ८	८।२०।२७	८।२३।४८	८।२७।११	२१।१०	१।४१	६। ६	१६।४३
२५	९। ०।३५	९। ४। ०	९। ७।२६	९।२०।५३	२०।४२	+०।३२	६।५९	१७।४०
२६	९।१४।२१	९।१७।५०	९।२१।२०	९।२४।५१	१८।५७	-०।४३	७।५२	१८।४३
२७	९।२८।२२	१०। १।५४	१०। ५।२७	१०। ९। १	१६। ३	१।५७	८।४६	१९।५३
२८	१०।१२।३५	१०।१६। ९	१०।१९।४४	१०।२३।२०	१२।१०	३। ६	९।२९	२१। ०
२९	१०।२६।५६	११। ०।३२	११। ४। ८	११। ७।४४	७।३५	४। ३	१०। ६	२२। ७
३०	११।११।२१	११।१४।५६	११।१८।३२	११।२२। ७	-२।२८	४।४५	१०।४०	२३।१४
३१	११।२५।४२	[illegible]	[illegible]	० । ६।२४	+३।२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चंद्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(१ फरवरी को अयनांश २३°११'।३३")

तारीख फर. १९६३	चन्द्र व. मि. ०।० बजे	व. मि. ६।० बजे	व. मि. १२।० बजे	व. मि. १८।० बजे	०घं. ०मि. क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	अ. क.	अ. क.	घ. मि.	घ. मि.
१	०। ९।५८	०।१२।३१	०।१७। ३	०।२०।३४	+०।३८	−५।१४	११।५६	०।१६
२	०।२४। ६	०।२७।३६	१। १। ६	१। ४।३५	१२।१०	५। ०	१२।४०	१।१८
३	१। ८। ४	१।११।३१	१।१४।५८	१।१८।२४	१५।५८	४।२८	१३।२४	२।२१
४	१।२१।५१	१।२५।१६	१।२८।४०	२। २। ३	१८।५०	३।४०	१४।१४	३।२३
५	२। ५।२६	२। ८।४८	२।१२।१०	२।१५।३०	२०।३७	२।४२	१५। ४	४।२०
६	२।१८।४९	२।२२। ८	२।२५।२६	२।२८।४३	२१।१२	१।३५	१६। ०	५।१८
७	३। १।५९	३। ५।१४	३। ८।२८	३।११।४३	२०।३६	−०।२४	१६।५६	६। ९
८	३।१४।५७	३।१८। ८	३।२१।१९	३।२४।३०	१९।२२	+०।४६	१७।५५	७। १
९	३।२७।४१	४। ०।४९	४। ३।५८	४। ७। ६	१६।१४	१।५४	१८।५५	७।३८
१०	४।१०।१४	४।१३।१९	४।१६।२५	४।१९।३०	१२।५३	२।५३	१९।४६	८।१६
११	४।२२।३५	४।२५।३८	४।२८।४२	५। १।४४	९। २	३।४७	२०।३७	८।४८
१२	५। ४।४५	५। ७।४५	५।१०।४५	५।१३।४५	४।५२	४।२७	२१।३३	९।२०
१३	५।१६।४६	५।१९।४४	५।२२।४२	५।२५।४२	+०।३३	४।५४	२२।२९	९।५२
१४	५।२८।४१	६। १।३९	६। ४।३७	६। ७।३५	−३।४४	५। ९	२३।२१	१०।२५
१५	६।१०।३३	६।१३।३१	६।१६।३०	६।१९।२८	७।५३	५।११	....	१०।५८
१६	६।२२।२६	६।२५।२६	६।२८।२६	७। १।२७	११।४३	५। ०	०।१३	११।३१
१७	७। ४।२८	७। ७।३०	७।१०।३२	७।१३।३४	१५। ७	४।३५	१। ६	१२। ८
१८	७।१६।३७	७।१९।४२	७।२२।४८	७।२५।५५	१७।५७	३।५७	२। १	१२।५१
१९	७।२९। ३	८। २।१३	८। ५।२४	८। ८।३६	२०। ०	३। २	२।५७	१३।३५
२०	८।११।४८	८।१५। ३	८।१८।१९	८।२१।३७	२१। ६	२। ८	३।५१	१४।३१
२१	८।२४।५६	८।२८।१७	९। १।४०	९। ५। ४	२१। ६	+१। ०	४।४६	१५।२८
२२	९। ८।३०	९।११।५७	९।१५।२६	९।१८।५६	१९।५५	−०।१२	५।३६	१६।३१
२३	९।२२।२८	९।२६। १	९।२९।३६	१०। ३।१२	१७।२५	१।२८	६।२६	१७।३५
२४	१०। ६।५०	१०।१०।२९	१०।१४। ८	१०।१७।४८	१३।४९	२।३८	७।१०	१८।४१
२५	१०।२१।२९	१०।२५।११	१०।२८।५३	११। २।३६	९।२०	३।४०	७।५५	१९।४८
२६	११। ६।१९	११।१०। २	११।१३।४६	११। १७।२८	−४।१५	४।२८	८।३५	२०।५४
२७	११।२१।११	११।२४।५३	११।२८।३५	०। २।१७	+१। ६	४।५८	९।१५	२२। १
२८	०। ५।५८	०। ९।३६	०।१३।१३	०।१६।५८	+६।२१	−५। ५	९।५५	२३। ६

(१ मार्च को अयनांश २३°११'।३७")

तारीख मार्च १९६३	चन्द्र व. मि. ०।० बजे	व. मि. ६।० बजे	व. मि. १२।० बजे	व. मि. १८।० बजे	०घं. ०मि. क्रान्ति	शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	अ. क.	अ. क.	घ. मि.	घ. मि
१	०।२०।३१	०।२४। ४	०।२७।३८	१। १।१३	+११।१०	−४।५८	१०।३६	....
२	१। ४।४८	१। ८।१८	१।११।४७	१।१५।१६	१५।११	४।३०	११।२२	०।११
३	१।१८।४४	१।२२।११	१।२५।३५	१।२८।५८	१८।२५	३।४५	१२। ८	१।१३
४	२। २।२२	२। ५।४२	२। ९। ३	२।१२।२२	२०।२७	२।४८	१३। २	२।१५
५	२।१५।४२	२।१८।५९	२।२२।१५	२।२५।३०	२१।१६	१।४५	१३।५६	३।११
६	२।२८।४५	३। १।५८	३। ५।११	३। ८।२३	२०।५७	−०।३७	१४।५१	४। ८
७	३।११।३४	३।१४।४४	३।१७।५४	३।२१। २	१९।२९	+०।३२	१५।४७	४।५३
८	३।२४।१०	३।२७।१८	४। ०।२५	४। ३।३२	१७। ५	१।३८	१६।४४	५।३८
९	४। ६।३८	४। ९।४३	४।१२।४७	४।१५।५१	१३।५५	२।३७	१७।४२	६।१६
१०	४।१८।५५	४।२१।५८	४।२५। १	४।२८। ३	१०।११	३।३१	१८।३६	६।५४
११	५। १। ५	५। ४। ६	५। ७। ७	५।१०। ८	६। ५	४।१०	१९।३०	७।२५
१२	५।१३। ८	५।१६। ८	५।१९। ७	५।२२। ६	+१।४६	४।४३	२०।२१	७।५६
१३	५।२५। ५	५।२८। ४	६। १। ३	६। ४। १	−२।३४	५। ०	२१।१३	८।२७
१४	६। ६।५९	६। ९।५७	६।१२।५५	६।१५।५३	६।४७	५। ३	२२। ६	८।५८
१५	६।१८।५१	६।२१।४९	६।२४।४८	६।२७।४६	१०।४७	४।५४	२२।५९	९।३१
१६	७। ०।४४	७। ३।४३	७। ६।४३	७। ९।४३	१४।१८	४।३३	२३।५३	१०। ४
१७	७।१२।४३	७।१५।४४	७।१८।४५	७।२१।४७	१७।१९	४। ०	..	१०।४५
१८	७।२४।५०	७।२७।५४	८। ०।५९	८। ४। ५	१९।३६	३।१४	०।४६	११।३०
१९	८। ७।१२	८।१०।२०	८।१३।२९	८।१६।३९	२१। १	२।१९	१।३९	१२।१५
२०	८।१९।५०	८।२३। ४	८।२६।१९	८।२९।३६	२१।२५	१।१६	२।३२	१३।१२
२१	९। २।५४	९। ६।११	९। ९।३०	९।१२।५२	२०।४१	+०। ७	३।२६	१४।८
२२	९।१६।१७	९।१९।४४	९।२३।१४	९।२६।४६	१८।४८	−१। २	४।१३	१५।११
२३	१०। ०।२३	१०। ३।५८	१०। ७।३४	१०।११।१२	१५।३९	२।१३	५। ०	१६।१५
२४	१०।१४।५१	१०।१८।३२	१०।२२।१४	१०।२५।५८	११।३४	३।१७	५।४३	१७।२५
२५	१०।२९।४२	११। ३।२७	११। ७।१३	११।१०।५९	−६।३४	−४। ९	६।२७	१८।३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मङ्गल आदि ग्रहों

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मङ्गल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (भा. स्टै. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०१९)

सन् १९६२ तारीख	मङ्गल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
५ अप्रैल	− ५।४१	− १। ९	− ०।४०	− २। १	− ११।२८	− ०।४७	+ ११।१९	− ०।३४	− १८।२०	− ०।२८	+ १३।१८	+ ०।४७	− १३।५८	+ १।५१
९ "	४।२५	१। ८	+ २।४३	१।३६	११।१२	०।४९	१३। ६	०।२५	१८।१३	०।२८	१३।२१	०।४६	१३।५६	१।५०
१३ "	३।१०	१। ७	६।१५	१। ६	१०।५५	०।५०	१४।५०	०।१५	१८। ९	०।२९	१३।२३	०।४६	१३।५४	१।५०
१७ "	१।५५	१। ७	९।५३	− ०।२९	१०।३९	०।५०	१६।२९	− ०। ५	१८। ६	०।२९	१३।२४	०।४६	१३।५२	१।५०
२१ "	− ०।४१	१। ६	१३।३०	+ ०। ९	१०।२३	०।५१	१८। ०	+ ०। ५	१८। ३	०।३०	१३।२५	०।४६	१३।५०	१।५०
२५ "	+ ०।३४	१। ५	१६।५०	०।५१	१०। ८	०।५२	१९।२४	०।१६	१८। ०	०।३०	१३।२६	०।४६	१३।४८	१।५०
२९ "	१।४८	१। ४	१९।४३	१।३२	९।५३	०।५३	२०।४१	०।२६	१७।५८	०।३१	१३।२६	०।४६	१३।४६	१।५०
३ मई	३। २	१। ३	२२। ०	२। ३	९।३९	०।५३	२१।४८	०।३७	१७।५७	०।३१	१३।२६	०।४६	१३।४४	१।५०
७ "	४।१५	१। २	२३।३५	२।२४	९।२६	०।५४	२२।४६	०।४७	१७।५५	०।३२	१३।२६	०।४५	१३।४२	१।५०
११ "	५।२७	१। १	२४।३३	२।३१	९।१३	०।५५	२३।३३	०।५७	१७।५४	०।३२	१३।२५	०।४५	१३।४०	१।५०
१५ "	६।३८	०।५९	२४।५७	२।२२	९। १	०।५६	२४।११	१। ७	१७।५४	०।३३	१३।२५	०।४५	१३।३९	१।५०
१९ "	७।४७	०।५८	२४।५१	१।५८	८।५०	०।५७	२४।३७	१।१६	१७।५४	०।३४	१३।२४	०।४५	१३।३७	१।५०
२३ "	८।५५	०।५६	२४।२०	१।१८	८।३९	०।५८	२४।५१	१।२५	१७।५४	०।३४	१३।२२	०।४५	१३।३४	१।५०
२७ "	१०। २	०।५४	२३।२९	+ ०।२४	८।३०	०।५९	२४।५४	१।३३	१७।५५	०।३५	१३।२१	०।४५	१३।३१	१।५०
३१ "	११। ७	०।५२	२२।२०	− ०।४२	८।२२	१। ०	२४।४६	१।३९	१७।५६	०।३५	१३।१९	०।४५	१३।२९	१।५०
४ जून	१२।१०	०।५०	२१। ४	१।५१	८।१४	१। १	२४।२६	१।४४	१७।५८	०।३६	१३।१६	०।४४	१३।२८	१।५०
८ "	१३।११	०।४८	१९।५४	२।५४	८। ७	१। २	२३।५५	१।४९	१८। ०	०।३७	१३।१४	०।४४	१३।२७	१।४९
१२ "	१४। ९	०।४६	१८।४३	३।४४	८। २	१। ४	२३।१४	१।५२	१८। ३	०।३७	१३।११	०।४४	१३।२५	१।४९
१६ "	१५। ५	०।४४	१८। २	४।१५	७।५७	१। ५	२२।२३	१।५४	१८। ६	०।३८	१३। ८	०।४४	१३।२४	१।४९
२० "	१५।५९	०।४१	१७।५१	४।२४	७।५४	१। ६	२१।२१	१।५५	१८। ९	०।३८	१३। ५	०।४४	१३।२३	१।४९
२४ "	१६।५१	०।३९	१८। ७	४।१३	७।५२	१। ७	२०।११	१।५४	१८।१२	०।३९	१३। २	०।४४	१३।२२	१।४९
२८ "	१७।४०	०।३६	१८।४८	३।४६	७।५२	१। ८	१८।५३	१।५२	१८।१६	०।३९	१२।५८	०।४४	१३।२२	१।४९
२ जुलाई	१८।२५	०।३४	१९।४५	३। ८	७।५२	१। ९	१७।२६	१।४८	१८।२०	०।४०	१२।५४	०।४३	१३।२२	१।४८
६ "	१९। ७	०।३१	२०।५१	२।२२	७।५४	१।११	१५।५४	१।४३	१८।२५	०।४०	१२।५०	०।४३	१३।२१	१।४८
१० "	१९।४७	०।२९	२१।५४	१।३१	७।५६	१।१२	१४।१५	१।३६	१८।२९	०।४१	१२।४६	०।४३	१३।२१	१।४८
१४ "	२०।२४	०।२५	२२।४४	− ०।३९	८। ०	१।१३	१२।३०	१।२८	१८।३४	०।४१	१२।४२	०।४३	१३।२१	१।४८
१८ "	+ २०।५७	− ०।२२	+ २३। ६	+ ०।१०	− ८। ५	− १।१४	+ १०।४१	+ १।१८	− १८।३९	− ०।४१	+ १२।३७	+ ०।४३	− १३।२१	+ १।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मङ्गल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (भा. स्टै. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०१९)

सन् १९६२ तारीख	मङ्गल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
२२ जुलाई	+२१।२७	−०।१९	+२२।५२	+०।५२	−८।११	−१।१५	+८।४७	+१। ७	−१८।४४	−०।४१	+१२।३३	+०।४३	−१३।२१	+१।४७
२६ „	२१।५४	०।१६	२१।५६	१।२३	८।१८	१।१६	६।५२	०।५४	१८।४८	०।४२	१२।२८	०।४३	१३।२१	१।४७
३० „	२२।१९	०।१३	२०।१९	१।४०	८।२६	१।१७	४।५४	०।३९	१८।५३	०।४२	१२।२३	०।४३	१३।२१	१।४७
३ अग.	२२।३९	०। ९	१८।१०	१।४६	८।३५	१।१८	२।५५	०।२३	१८।५७	०।४२	१२।१८	०।४३	१३।२२	१।४६
७ „	२२।५६	०। ६	१५।३६	१।४२	८।४५	१।१९	+०।५६	+०। ६	१९। २	०।४३	१२।१३	०।४३	१३।२२	१।४६
११ „	२३।१०	−०। २	१२।५२	१।२८	८।५६	१।२०	−१। ७	−०।१३	१९। ७	०।४३	१२। ८	०।४३	१३।२३	१।४६
१५ „	२३।२२	+०। १	९।५९	१। ७	९। ७	१।२१	३। ४	०।३३	१९।१२	०।४३	१२। २	०।४३	१३।२४	१।४६
१९ „	२३।३०	०। ५	७। ३	०।४१	९।१९	१।२१	५। ४	०।५४	१९।१७	०।४४	११।५७	०।४३	१३।२६	१।४६
२३ „	२३।३५	०। ८	४। ८	+०।१०	९।३१	१।२२	७। १	१।१६	१९।२१	०।४४	११।५२	०।४३	१३।२७	१।४५
२७ „	२३।३७	०।१२	+१।१७	−०।२२	९।४३	१।२३	८।५७	१।३९	१९।२५	०।४४	११।४६	०।४३	१३।२९	१।४५
३१ „	२३।३७	०।१६	−१।२६	०।५६	९।५५	१।२३	१०।४९	२। ३	१९।२९	०।४४	११।४१	०।४३	१३।३०	१।४५
४ सितं.	२३।३३	०।२०	४। ०	१।३२	१०। ७	१।२३	१२।४२	२।२८	१९।३२	०।४४	११।३६	०।४३	१३।३२	१।४५
८ „	२३।२७	०।२४	६।२३	२। ७	१०।१९	१।२३	१४।२३	२।५३	१९।३६	०।४४	११।३०	०।४३	१३।३४	१।४४
१२ „	२३।१९	०।२९	८।२८	२।४०	१०।३१	१।२३	१६। ४	३।१८	१९।३९	०।४५	११।२५	०।४३	१३।३५	१।४४
१६ „	२३। ८	०।३३	१०।११	३।१०	१०।४२	१।२३	१७।४०	३।४३	१९।४१	०।४५	११।२०	०।४३	१३।३८	१।४४
२० „	२२।५५	०।३७	११।२७	३।३५	१०।५२	१।२३	१९। ८	४। ८	१९।४३	०।४५	११।१५	०।४३	१३।४०	१।४४
२४ „	२२।४०	०।४२	१२। ०	३।४८	११। १	१।२३	२०।२९	४।३३	१९।४५	०।४५	११।१०	०।४३	१३।४२	१।४४
२८ „	२२।२३	०।४७	११।४१	३।४५	११।१०	१।२३	२१।४५	४।५७	१९।४६	०।४५	११। ५	०।४३	१३।४५	१।४४
२ अक्तू.	२२। ५	०।५१	१०।११	३।१७	११।१८	१।२२	२२।५१	५।१९	१९।४७	०।४५	११। ०	०।४३	१३।४७	१।४४
६ „	२१।४५	०।५६	७।३९	२।१९	११।२५	१।२२	२३।५०	५।३९	१९।४८	०।४५	१०।५६	०।४३	१३।५०	१।४३
१० „	२१।२४	१। १	४।४४	−१। २	११।३१	१।२१	२४।३८	५।५८	१९।४८	०।४५	१०।५२	०।४४	१३।५२	१।४३
१४ „	२१। २	१। ६	२।२८	+०।१७	११।३५	१।२१	२५।१७	६।१३	१९।४८	०।४५	१०।४८	०।४४	१३।५५	१।४३
१८ „	२०।३९	१।१२	१।३५	१।१६	११।३८	१।२०	२५।४३	६।२३	१९।४७	०।४५	१०।४४	०।४४	१३।५८	१।४३
२२ „	२०।१५	१।१७	२। ६	१।५२	११।४०	१।२०	२५।५५	६।२७	१९।४६	०।४५	१०।४०	०।४४	१४। ०	१।४३
२६ „	१९।५२	१।२३	३।४२	२। ५	११।४१	१।१९	२५।५०	६।२५	१९।४५	०।४५	१०।३७	०।४४	१४। ३	१।४३
३० „	१९।२८	१।२९	५।५५	२। ३	११।४१	१।१८	२५।२९	६।१२	१९।४३	०।४५	१०।३३	०।४४	१४। ६	१।४३
३ नवं.	+१९। ४	+१।३५	−८।२६	+१।४९	−११।४०	−१।१७	−२४।४७	−५।५०	−१९।४१	−०।४५	+१०।३०	+०।४४	−१४। ८	+१।४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्वत् १९६२	मङ्गल		बुध		गु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
ता. –६३	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
७ नव.	+१८।४१	+१।४२	–११।२	+१।२८	–११।३७	–१।१७	–२३।४५	–५।१६	–१९।३९	–०।४५	+१०।२८	+०।४४	+१४।११	+१।४३
११ „	१८।१८	१।४८	१३।३३	१।३	११।३३	१।१६	२२।२५	४।२८	१९।३६	०।४५	१०।२५	०।४५	१४।१४	१।४३
१५ „	१७।५७	१।५५	१५।५७	०।३७	११।२८	१।१५	२०।५३	३।३७	१९।३२	०।४५	१०।२३	०।४५	१४।१६	१।४३
१९ „	१७।३७	२।२	१८।८	+०।१०	११।२२	१।१४	१९।१७	२।३७	१९।२९	०।४५	१०।२१	०।४५	१४।१९	१।४३
२३ „	१७।१८	२।१०	२०।५	–०।१७	११।१५	१।१३	१७।४०	१।३५	१९।२५	०।४५	१०।२०	०।४५	१४।२१	१।४३
२७ „	१७।१	२।१८	२१।४७	०।४३	११।७	१।१३	१६।२०	–०।३५	१९।२०	०।४५	१०।१९	०।४५	१४।२३	१।४३
१ दिसं.	१६।४७	२।२६	२३।१२	१।६	१०।५८	१।१२	१५।१३	+०।२०	१९।१७	०।४५	१०।१८	०।४६	१४।२६	१।४३
५ „	१६।३५	२।३४	२४।१८	१।२८	१०।४७	१।११	१४।२५	१।८	१९।११	०।४५	१०।१७	०।४६	१४।२९	१।४३
९ „	१६।२५	२।४३	२५।४	१।४६	१०।३६	१।११	१३।५४	१।५१	१९।६	०।४५	१०।१७	०।४६	१४।३१	१।४३
१३ „	१६।२०	२।५२	२५।२८	२।१	१०।२४	१।१०	१३।४०	२।२६	१९।०	०।४५	१०।१७	०।४६	१४।३३	१।४४
१७ „	१६।१८	३।१	२५।२९	२।११	१०।११	१।९	१३।४२	२।५४	१८।५४	०।४५	१०।१८	०।४६	१४।३५	१।४४
२१ „	१६।१९	६।११	२५।५	२।१४	९।५७	१।९	१३।५५	३।१७	१८।४८	०।४६	१०।१८	०।४६	१४।३७	१।४४
२५ „	१६।२५	३।२१	२४।१८	२।९	९।४२	१।८	१४।१९	३।३३	१८।४२	०।४६	१०।१९	०।४७	१४।३९	१।४४
२९ „	१६।३४	३।३१	२३।८	१।५५	९।२७	१।८	१४।५०	३।४५	१८।३५	०।४६	१०।२१	०।४७	१४।४१	१।४४
२ जन.	१६।४८	३।४०	२१।३९	१।२९	९।११	१।७	१५।२८	३।५३	१८।२८	०।४६	१०।२२	०।४७	१४।४३	१।४४
६ „	१७।७	३।४९	२०।०	–०।४८	८।५४	१।७	१६।५	३।५७	१८।२२	०।४६	१०।२३	०।४७	१४।४४	१।४४
१० „	१७।२९	३।५८	१९।२६	+०।११	८।३६	१।६	१६।४७	३।५७	१८।१५	०।४६	१०।२५	०।४७	१४।४५	१।४४
१४ „	१७।५४	४।७	१७।१९	१।२३	८।१८	१।६	१७।२९	३।५४	१८।७	०।४६	१०।२६	०।४७	१४।४७	१।४४
१८ „	१८।२३	४।१५	१६।५६	२।३४	७।५९	१।५	१८।१०	३।४९	१८।०	०।४७	१०।२७	०।४७	१४।४९	१।४५
२२ „	१८।५४	४।२२	१७।१३	३।२१	७।३९	१।५	१८।४५	३।४२	१७।५२	०।४७	१०।२८	०।४७	१४।५१	१।४५
२६ „	१९।२६	४।२७	१७।५९	३।३०	७।२०	१।५	१९।२३	३।३२	१७।४४	०।४७	१०।३०	०।४८	१४।५२	१।४५
३० „	१९।५८	४।३१	१८।४१	३।७	६।५९	१।५	१९।५२	३।२०	१७।३६	०।४७	१०।३१	०।४८	१४।५४	१।४५
३ फर.	२०।२९	४।३३	१९।२६	२।२८	६।३८	१।४	२०।१४	३।८	१७।२८	०।४७	१०।३२	०।४८	१४।५६	१।४५
७ „	२०।५८	४।३३	१९।५५	१।४३	६।१७	१।४	२०।३२	२।५४	१७।२०	०।४८	१०।३३	०।४८	१४।५८	१।४५
११ „	२१।२४	४।३२	२०।८	०।५८	५।५५	१।४	२०।४१	२।३९	१७।१२	०।४८	१०।३५	०।४८	१५।०	१।४५
१५ „	२१।४७	४।२९	२०।५	०।१६	५।३४	१।३	२०।४३	२।२३	१७।४	०।४८	१०।३६	०।४९	१५।१	१।४६
१९ „	२२।५	४।२४	१९।४१	–०।२२	५।११	१।३	२०।३६	२।८	१६।५६	०।४९	१०।३७	०।४९	१५।२	१।४६
२३ „	२२।१९	४।१९	१९।००	०।५७	४।४९	१।३	२०।२१	१।५१	१६।४८	०।४९	१०।३९	०।४९	१५।४	१।४६
२७ „	२२।२८	४।१२	१७।५३	१।२२	४।२६	१।३	[illegible]	१।३४	१६।४०	०।४९	१०।४१	०।४९	१५।६	१।४६
३ मार्च	२२।३४	४।४	१६।२७	१।४५	४।४	१।३	१९।२३	१।१७	१६।३२	०।५०	१०।४३	०।४९	१५।८	१।४६
७ „	२२।३५	३।५६	१४।४३	२।०	३।४१	१।३	१८।४२	१।०	१६।२४	०।५०	१०।४५	०।५०	१५।१०	१।४६
११ „	२२।३३	३।४७	१२।३६	२।१०	३।१८	१।३	१७।५१	०।४३	१६।१७	०।५१	१०।४६	०।५०	१५।११	१।४६
१५ „	२२।२८	३।३८	१०।१०	२।१३	२।५५	१।३	१६।५३	०।२७	१६।९	०।५१	१०।४८	०।५०	१५।१३	१।४७
१९ „	२२।१९	३-२९	७।२६	२।१०	२।३२	१।३	१५।४७	+०।११	१६।२	०।५२	१०।५०	०।५१	१५।१४	१।४७
२३ „	+२२।७	+३।२१	–४।२२	१।५८	–२।९	–१।३	–१४।३४	–०।७	–१५।५५	–०।५२	+१०।५२	+०।५१	+१५।१५	+१।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य क्रान्ति (भा. स्टै. टा. ० घं. ० मि. के लिए)

(सं० २०१९)

तारीख	अप्रैल १९६२	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर	जनवरी १९६३	फर्वरी	मार्च
१	...	+१४।४६	+२१।५५	+२३।१०	+१८।१६	+८।३९	−२।४८	−१४। ७	−२१।३९	−२३। ५	−१७।२६	−८। २
२	...	१५। ५	२२। ४	२३। ६	१८। १	८।१७	३।१२	१४।२६	२१।४९	२३। १	१७। ९	७।४०
३	...	१५।२३	२२।११	२३। २	१७।४६	७।५४	३।३५	१४।४५	२१।५८	२२।५५	१६।५२	७।१७
४	...	१५।४१	२२।१९	२२।५७	१७।३०	७।३२	३।५८	१५। ४	२२। ७	२२।५०	१६।३५	६।५४
५	+ ५।४३	१५।५९	२२।२६	२२।५२	१७।१४	७।१०	४।२१	१५।२३	२२।१५	२२।४४	१६।१७	६।३१
६	६। २	१६।१६	२२।३२	२२।४६	१६।५८	६।४८	४।४४	१५।४१	२२।२२	२२।३८	१५।५९	६। ७
७	६।२६	१६।३३	२२।३८	२२।४१	१६।४१	६।२६	५। ७	१६। ०	२२।२९	२२।३२	१५।४०	५।४५
८	६।५०	१६।५०	२२।४४	२२।३५	१६।२५	६। ४	५।३०	१६।१८	२२।३६	२२।२४	१५।२२	५।२१
९	७।१३	१७। ६	२२।५०	२२।२९	१६। ८	५।४१	५।५३	१६।३५	२२।४३	२२।१६	१५। ३	४।५८
१०	७।३५	१७।२२	२२।५५	२२।२२	१५।५०	५।१८	६।१६	१६।५२	२२।४९	२२। ८	१४।४४	४।३५
११	७।५८	१७।३८	२३। ०	२२।१४	१५।३३	४।५६	६।३९	१७।१०	२२।५४	२१।५९	१४।२५	४।११
१२	८।२१	१७।५३	२३। ५	२२। ६	१५।१५	४।३३	७। १	१७।२६	२२।५९	२१।४९	१४। ५	३।४७
१३	८।४३	१८। ८	२३। ९	२१।५८	१४।५८	४।११	७।२४	१७।४३	२३। ५	२१।४०	१३।४५	३।२४
१४	९। ४	१८।२३	२३।१२	२१।४९	१४।३९	३।४८	७।४७	१७।५८	२३। ९	२१।३०	१३।२५	३। ०
१५	९।२६	१८।३७	२३।१५	२१।४०	१४।२१	३।२४	८। ९	१८।१४	२३।१३	२१।२०	१३। ५	२।३७
१६	९।४७	१८।५१	२३।१८	२१।३१	१४। ३	३। १	८।३१	१८।२९	२३।१६	२१। ९	१२।४४	२।१३
१७	१०। ९	१९। ५	२३।२१	२१।२२	१३।४४	२।३८	८।५४	१८।४४	२३।१९	२०।५९	१२।२३	१।४९
१८	१०।३०	१९।२०	२३।२३	२१।१२	१३।२५	२।१५	९।१६	१९। ०	२३।२१	२०।४७	१२। २	१।२५
१९	१०।५१	१९।३४	२३।२५	२१। २	१३। ६	१।५२	९।३८	१९।१४	२३।२३	२०।३५	११।४१	१। २
२०	११।१२	१९।४७	२३।२६	२०।५१	१२।४६	१।२९	१०। ०	१९।२८	२३।२५	२०।२२	११।२०	०।३६
२१	११।३२	१९।५९	२३।२६	२०।४०	१२।२६	१। ५	१०।२२	१९।४२	२३।२६	२०। ९	१०।५९	−०।१४
२२	११।५२	२०।१२	२३।२६	२०।२८	१२। ६	०।४२	१०।४३	१९।५६	२३।२६	१९।५६	१०।३८	+०। ९
२३	१२।१३	२०।२३	२३।२६	२०।१६	११।४६	+०।१९	११। ५	२०। ९	२३।२६	१९।४३	१०।१६	०।३३
२४	१२।३२	२०।३५	२३।२५	२०। ४	११।२६	−०। ५	११।२६	२०।२१	२३।२६	१९।२९	९।५४	०।५७
२५	१२।५२	२०।४६	२३।२४	१९।५१	११। ५	०।२८	११।४६	२०।३३	२३।२५	१९।१५	९।३१	१।२१
२६	१३।१२	२०।५७	२३।२३	१९।३९	१०।४५	०।५२	१२। ७	२०।४५	२३।२४	१९। १	९। ९	+१।४५
२७	१३।३१	२१। ८	२३।२१	१९।२६	१०।२४	१।१५	१२।२८	२०।५७	२३।२३	१८।४६	८।४७	...
२८	१३।५०	२१।१८	२३।१९	१९।१२	१०। ३	१।३८	१२।४८	२१। ८	२३।२१	१८।३१	− ८।२४	...
२९	१४। ९	२१।२८	२३।१६	१८।५९	९।४२	२। २	१३। ८	२१।१९	२३।१८	१८।१५	...	...
३०	+१४।४८	२१।३७	+२३।१३	१८।४५	९।२०	−२।१५	१३।२८	−२१।२९	२३।१४	१७।५०		
३१	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...		

– ग्रह निरयण राशिप्रवेश –
(सं० २०१९)

सूर्य

राशि	तारीख
मेष	१३- -४-६२
वृष	१४- ५-६२
मिथु.	१५- ६-६२
कर्क	१६- ७-६२
सिंह	१७- ८-६२
कन्या	१७- ९-६२
तुला	१७-१०-६२
वृश्चि.	१६-११-६२
धनु	१५-१२-६२
मकर	१४- १-६३
कुम्भ	१२- २-६३
मीन	१४- ३-६३

मंगल

मीन	११- ४-६२
मेष	२०- ५-६२
वृष	३०- ६-६२
मिथुन	१२- ८-६२
कर्क	३०- ९-६२
सिंह	१३-१२-६२
व.कर्क	५- १-६३

बुध

मेष	१५- ४-६२
वृष	२९- ४-६२
मिथु.	६- ७-६२
कर्क	२३- ७-६२
सिंह	७- ८-६२
कन्या	२५- ८-६२
तुला	१-११-६२
वृश्चि. धन.	१९-११-६२ ८-१२-६२

बुध

राशि	तारीख
कुम्भ	५- ३-६३
मीन	२२- ३-६३

गुरु

मीन	७- ३-६३

शुक्र

वृष	२३- ४-६२
मिथु.	१७- ५-६२
कर्क	११- ६-६२
सिंह	७- ७-६२
कन्या	२- ८-६२
तुला	३१- ८-६२
वृश्चि.	७-१०-६२
व.तुला	७-११-६२
वृश्चि.	२९-१२-६२
धनु	३०- १-६३
मकर	२६- २-६३
कुम्भ	२४- ३-६३

शनि

शनि इस वर्ष मकर में ही रहेगा।

राहु

राहु इस वर्ष कर्क में ही रहेगा।

केतु

केतु इस वर्ष मकर में ही रहेगा।

वरुण

वरुण स वर्ष सिंह में ही रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यन्त्र के अतिरिक्त सब

अर्थात्तेर ... शुक्र की दिशा का निर्णय (सं० २०१९)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र के अतिरिक्त सब ग्रहों की समकल युतिएं (सं० २०१९)

युत ग्रह	युति की तारीख
सू. बु.	१६- ४-६२
सू. बृ.	७- ६-६२
सू. व.	२१- ७-६२
सू. व.	७-१०-६२
सू. बृ.	२५-११-६२
सू. बु.	२०- १-६३
सू. गु.	१७- ३-६३
सू. गु.	१३-११-६२
सू. श.	३- २-६३
सू. रा.	१- ८-६२
सू. के.	२०- १-६३
सू. व.	२४- ८-६२
सू. इं.	६-११-६२
मं. रा.	२०-१०-६२
बु. गु.	२५- ३-६३
बु. शु.	१६-१०-६२
बु. श.	२८- २-६३
बु. रा.	३१- ७-६२
बु. के.	२- १-६३
बु. के.	१९- १-६३
बु. के.	१४- २-६३
बु. व.	११- ८-६२
बु. इं.	१३-११-६२
शु. श.	२०- ३-६३
शु. रा.	२६- ६-६२
शु. के.	२- ३-६३
शु. व.	११- ७-६२
श. इं.	२०-१०-६२
श. के.	१६-१०-६२

चन्द्र शृङ्ग की दिशा का निर्णय (सं० २०१९)

मास→	चै. शु.			वै. शु			ज्ये. शु.			आषा. शु.			श्रा. शु.			भा.शु.			आश्वि.शु.			का. शु.			मार्ग. शु.			पौ. शु.			माघ शु.			फा. शु.		
भारतीय अक्षांश ↓	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश	चन्द्रदर्शन	उन्नतशृङ्ग	शृंगोन्नत्यंश
१०°	२ शु.		०	१ न.	उ.	११	१ र.	उ.	२०	२ मं.	उ.	१८	२ गु.	उ.	२२	१ शु.	उ.	१८	२ र.	उ.	१८	२ मं.	उ.	१७	१ बु.	उ.	६	२ शु.	उ.	७	१ श.	उ.	५	२ चं.	उ.	१
१५°	"	उ.	६	"	"	१६	"	"	२५	"	"	२३	"	"	२७	"	"	२३	"	"	२३	"	"	२२	"	"	११	"	"	१३	"	"	१०	"	"	६
२०°	"	"	११	"	"	२१	२ चं.	"	२२	"	"	२८	"	"	३२	"	"	२८	"	"	२८	"	"	२७	"	"	१६	"	"	१८	२ र.	"	१५	"	"	१२
२५°	"	"	१६	"	"	२६	"	"	२७	"	"	३३	"	"	३७	"	"	३३	"	"	३३	"	"	३२	"	"	२१	"	"	२३	"	"	२१	"	"	१७
३०°	"	"	२२	"	"	३१	"	"	३२	"	"	३८	"	"	४२	"	"	३९	"	"	३८	"	"	३७	"	"	२६	"	"	२८	"	"	२६	"	"	२२
३५°	* "	"	२७	"	"	३६	"	"	३७	"	"	४३	"	"	४८	२ श+	"	५०	"	"	४३	× "	"	४३	"†	"	३१	"	"	३३	"	"	३१	"	"	२७

* अफ्रीका के अधिकतर भाग में चन्द्रदर्शन गुरुवार को ही होगा। + ईरान में चन्द्रदर्शन शुक्रवार को होगा। × अफ्रीका एवं अरब में चन्द्रदर्शन चन्द्रवार को होगा। † इस अक्षांश पर चीन में बुधवार को चन्द्रदर्शन नहीं होगा।

ग्रहों के उदयास्त (सं० २०१९)

ग्रह	उदय	उदय दिशा	अस्त	अस्त दिशा	ग्रह	उदय	उदय दिशा	अस्त	अस्त दिशा
बुध	२७- ४-६२	पश्चिम	२८- ५-६२	पश्चिम	गुरु	—	—	७- ३-६३	पश्चिम
"	१६- ६-६२	पूर्व	१८- ७-६२	पूर्व	शुक्र	—	—	६-११-६२	पश्चिम
"	११- ८-६२	पश्चिम	३०- ९-६२	पश्चिम	"	१९-११-६२	पू	—	—
"	१३-१०-६२	पूर्व	३-११-६२	पूर्व	श.	—	—	१७- १-६३	पश्चिम
"	१८-१२-६२	पश्चिम	१३- १-६३	पश्चिम	"	२०- २-६३	पूर्व	—	—
"	२६- १-६३	पूर्व	१६- ३-६३	पूर्व	—	—	—	—	—

ग्रहों के वक्र-मार्ग दिन (सं० २०१९)

ग्रह	तारीख	वक्र मार्ग	ग्रह	तारीख	वक्र मार्ग
मंगल	२४-१२-६२	वक्री	गुरु	२९-१०-६२	मार्गी
"	१८- ३-६३	मार्गी	शुक्र	२३-१०-६२	वक्री
बुध	२६- ५-६२	वक्री	"	३-१२-६२	मार्गी
"	१९- ६-६२	मार्गी	शनि	२२- ५-६२	वक्री
"	२३- ९-६२	वक्री	"	९-१०-६२	मार्गी
"	१६-१०-६२	मार्गी	वरुण	६- ६-६२	"
"	१२- १-६३	वक्री	"	११-१२-६२	वक्री
"	३१- १-६३	मार्गी	इन्द्र	२४- ७-६२	मार्गी
गुरु	२- ७-६२	वक्री	"	१५- २-६३	वक्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वशुभकार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य-रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक, ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभमुहूर्त्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए ॥ सीमन्तजात-कादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-व्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-	एषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः

वधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्टयां तु सिद्धयति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नजस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात् ॥ आवश्यके परिहारः—दिवापरार्द्धजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ	नै.	ई.	द.	वा.	.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शु
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) ॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति ॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि—मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूडाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे ॥ अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेवच। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यर चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्रसम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३ ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा. पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन ; संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु.ह.मूल और श्रवण नक्षत्र में १,२,३,५,७.१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५,७,९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

गर्भ रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐभूस्त्वयि दधामि, ॐभुवस्त्वयि दधामि, ॐस्वस्त्वयि दधामि, ॐभूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मू. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५,७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम है।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है ; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२ वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वशुभकार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्यरात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक, ग्रहण के पहले के ३ दिन. उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभमुहूर्त्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए ॥ सोमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-	सर्वस-		विद्या-	विवाहे			पापकर्मणि	क्रूर	एव

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः

वधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्टयां तु सिद्धयति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नजस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात् ॥ आवश्यके परिहारः—दिवापरार्द्धजा विष्टिःपूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४		आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ	नै.	ई.	द.	वा.	.		आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१		एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५		विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४		एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३		घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेऽप्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) ॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति ॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेऽपि च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि—मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहौ प्रतिष्ठाञ्च गृहचूडाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे ॥ अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेवच। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽञ्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यर चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्रसम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३ ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा. पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन ; संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु.ह.मूल और श्रवण नक्षत्र में १,२,३,५,७.१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५,७,९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

गर्भ रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐभूस्त्वयि दधामि, ॐभुवस्त्वयि दधामि, ॐस्वस्त्वयि दधामि, ॐभूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथिया हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. मू. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५,७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है ; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२ वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूमिपूजनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कर्णनीकाटसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तन्त्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६. ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम. बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान मे चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष दैवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म में से १२वें दिन या १६वें दिन ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टमस्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हार्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका-छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे., ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. र. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठमास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभसमय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथा-कुलधर्मवः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, सोमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड इत्यादि वह किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म. आर्द्रा, पुन. हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले. अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. मं. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र सूर्य, बुध, चन्द्र बृ०, शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं सू. चं. तु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगवाण को छोड़कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. ध्रु.
अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू फा.	पू. फा	५०
गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
मेष	बानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
बानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गुणमहादोष की जगह (१) भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (–) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष, और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थाङ्के। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूमिपूजनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कर्णनीकाटसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

मन्त्र मन्त्र—रक्षेनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पू. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म में से १२वें दिन या १६वें दिन ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टमस्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैस भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका-छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे., ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. र. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठमास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभसमय में अपने २ इष्टदेव क स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथा-कुलधर्मवः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, सोमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति दिन, आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड इत्यादि वह किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष. कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म. आर्द्रा, पुन. हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले. अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. मं. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र सूर्य, बुध, चन्द्र बृ०, शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगवाण को छोड़कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। ग्रह शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपलब्ध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. ध्रु.
अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू फा.	पू. फा	५०
गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
मेष	बानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
बानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गुणमहादोष की जगह (१) भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (–) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष, और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषज्ञानम्—द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थाङ्के। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हो तो इसका भी दोष नहीं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वेलापक सारिणी

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
भाग	अ १	भ १	कृ १	रो १	मृ ॥	आ १	पुन ॥	पुन १	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा १	उफा ॥	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ॥	वि १	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा १	उषा ॥	श्र १	ध ॥	श ॥	शत १	पूभा ॥	पूभा १	उभा १	रे १
अ १	२८ ३	३३ ०	२७	१७॥ ४	२३॥ −४	२३॥ −४	२५॥	१९॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	०॥ ३६	१०॥ २३६	०२॥ ६	२२	२८ −२	२२	१८॥ −५	२४॥ −६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ५+	२६ ४+
भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ −४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ −१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ५	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ −०	१८॥ −१६	१७॥ ३५	१९॥ १५	०९॥ −१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ −१	२३ −२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
कृ १	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ५	१७॥ ५	२७	१४ ३	२९ ३	१६॥ ३६	१९॥ −५	२५॥ −६	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३१५	२५	२४॥	२५॥	२८॥ ९	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
रो १	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १२	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१४ ५+	२३ ५+	२२ −६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ५	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
मृ ॥	२३॥ −४	२३॥ −४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ −१५	१७॥ −१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२१॥	२३॥ १	१३॥ १५	१२॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ −१५	२४॥ −१	२४ −१	२०	२६	२७	१९ ३
आ १	२३॥ −४	१४॥ ३४	१८॥ −४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१५॥ ३	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	१११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ −६	१७ −६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३५	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
पुन. ॥	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ −४	११॥ ३१	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ −२६	२४ −६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
पुन. ॥	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ −६	२०॥ −६	२५	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
पु १	५९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ −५	१७ ३५	२० −५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ −२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	१११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १३	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ −५	२५ −५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	२॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ −२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२० ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ०	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ −५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१६	१६	१२ ३६
पूफा १	२५ ५+	१७ २५	१६ −१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ −२	२२॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ −१२४	३० −१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १७४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ −१	२२॥ ३	२४॥ −१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ −६	१६॥ ३६	२४॥ −६
उफा १	२५॥ ३५	२५ ५+	२० −१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ २	१४॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ −१४	२६॥ −१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ −१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ −६	२४॥ ६−
उफा ॥	११ ३६	२१ ६	१६ १२	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ २	१७॥ १	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१४ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ −१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
ह १	११ ३३६	१८॥ ६	२९ ९	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३५	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१६ −६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२४	२६
चि १	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ००	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	१९ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ −६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१६−

चिह्नचिह्नेषु — गोहिप्याद्यामगन्ताणा पृथ्यश्वबपपोष्यम . अहिर्बुध्न्यक्षमंतेषा नाडीदोषो न विद्यते ० कीके नक्षत्र यदा सौम्य एकराशीश्वरे यदि . नाडीदोषो न [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मराशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
भानि	अ १	भ १	कृ १	रो १	मृ १	आ १	पुन १	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा १	उफा १	ह १	चि १	चि १	स्वा १	वि १	वि १	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा १	उषा १	श्र १	ध १	ध १	शत १	पूभा १	पूभा १	उभा १	रे १
चि ॥	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
स्वा १	२२ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ २६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ .४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	१ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	२२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
वि ॥	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	१ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२३॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१५२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०३३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
मू १	११॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१२ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१८॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ..+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२३॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
उषा॥।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	८॥ १३६	२० ०	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
श १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
ष ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५॥ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
ष ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ५	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३·	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
पूभा॥।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
पूभा ।	२४॥ २४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	३ १३६	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह —अयोजिता सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनापिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्ता शुद्धिमंडलं । पवसश्चक्षुषो यस्मिन् वरे पत्या च योषिति । मनसोऽयत एव नान्यत्किञ्चिद्विचिन्तयेत्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहमेलापकविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उनपर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्ति विधाय दारयोग्यायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिए—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़,बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अभ्यंगेऽपतितेऽलीवे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. पा. स्वा. श्र. पुर्वा. ३, अन. ध. क. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ [illegible]

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचंद्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—(आगे देखो पृष्ठ ९१ के शुरु में)

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान नक्षत्र फलानि
शीर्षे ३ नार्थसिद्धिः
मुखे ३ सुमंत्रसिद्धिः
कंठे ३ मृत्युदायकः
हस्ते ४ शत्रुभीतिः
हृदि ४ इष्टाप्तिः
उदरे ३ धनहानिः
कटयां ३ साधनादर्थः
चरण ४ साधनाद्धितः

मंत्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वाभिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होन पर गुरु शुक्र के उदय म शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

[illegible] दिवाकरस्तालेराशजानतस्य शोभनः।
[illegible] आवश्यके पुष्करविपरिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवसवशिष्ठगीतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपञ्चमनवमे दिवाकरस्तत्रोद्वाहात्परतः शुभावहाः॥ (मु० प्र० सा०)।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

[illegible] बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिसमें अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारिणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो-र्मे धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद वदन्तीत्यपरो शेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं वणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि मोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः —जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्ग-त्रदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भार्गुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है रन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर ोर जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य कराबे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में ण्डप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। त्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करे।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह-दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुल वालों के मरण में २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शांति करके अथवा विशेष शांति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें। "अपचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥"

द्वितीयाऽऽकिमेते [illegible] शुभावहाः ॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—१।२।५।७।९
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

(ध. भो. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।)

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२
तैलादि ला.	७।५।१।९।५।७।७।९।५।९।५

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३. भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनि-ष्ठास्वपि शुभम् ॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भमुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य और दग्धातिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

ग्रहाः	सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
लग्ननक्षत्र	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फलम्	धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	नक्षत्र
पुन	आ	म	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पू.फा.	ध	पुष्य	पू.भा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उ.फा	म	
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	ऽनु	०	पूफा	
मू.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा	त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः	वर्ज्यम्

१० दग्धातिथिदोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः

२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

३ युति

—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	श्रवण.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	म.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीच के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

७ एकार्गलदोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	ऽनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	मृ.	मू.	पुन.	उ. फा.	ह.	प्र. न.

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय

९ स्थूल क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	मि०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कली पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षत्रे बांगर)-जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियाबाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्ताभं त्यजेद् सिद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः ॥

युतिपरिहारः —स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोंऽत्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहारसमुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम् ॥ मूहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काम्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं					चं.	सर्वे	चं म.				श.	
पाप	०	०	रा.	०	शु. लग्नेशः		शुभाः लग्नेशः	०	०	०		त्याज्याः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्नभंग योगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रबली न शस्तः। लग्नेद् कर्किणी च रिपौ मृतौगी लग्नेद् शुभाराश्चः मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जागुरुसमौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंचवन्यादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—माससून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्याद्रजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमे दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणैः सह ॥ अपवादान्तरम्। उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपती
३	२	३	१	१	१	३	३			
६	३	६	२	२	२	६	३	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविशोपकाधिकम्।
११			४	४	५	११	११	११	स्थानानि	
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपकाबलम्

अथ गोधूलिलग्नविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। [illegible] गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते। । मार्ग. माघ, फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होन पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौर साक" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि विष्ण्यं निषिद्धम्। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३ मृत्यु	३ धन	३ मरण	३ मृत्यु	३ पुत्र	३ दुर्भग	३ श्री	३ उन्नति	नक्षत्र फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि तां चरेत् ॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३. पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. वृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २,३,६,७ या १२ वीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. र. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशावासरान्ते एकादशाहं समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुख दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखेशुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ॥

प्रथमस्त्रीसंगममुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड़ भैंस आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. चि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु,चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतमुक्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूडीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। ६ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्यारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषणघट्टनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामावस्यारहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. र. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर

में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिरहितेयं प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र——सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी)-मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. वृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्य भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनिमैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही)-पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु.भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. ऽनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रयमुहूर्तः—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा.३, आश्ले. रे. एषु. भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विचार करके परीक्षा तो

अवश्य ध्यान दें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य

विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आश्ले. पू.षा. इनमें

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवश्य ध्यान दें तभी मालूम होगा कि व्यापार में नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो. कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. म. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तु नक्षत्र यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में. रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में., २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पार्वे	४	शून्यमसत्
पृ. पार्वे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुख	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आश्ले. पू.षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। इस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचारः

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

अथ चुल्लिचक्रविचार

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में चं, बु. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वें स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्यः	मि. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ., रो. ध. श. म. पू.षा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पाप ग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणनाक्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाहै' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाह वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० न० प० वा० उ० ई० मध्ये

रोगिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभाव	आग्नेय म. पूफा. उषा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पू. उषा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त :—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्वरे क्षुद्राद्यं ददेव्यः स्थिरेऽखिलाः॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० मू. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा.
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥ महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ च यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालय अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी॥ दुर्गभंग गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्ष्यते॥

[illegible] कुण्ड निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

[illegible]—मृ. र. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. धि. नक्षत्रों में रिक्तातिथिरहित शुभ तिथियों में और चं. बु. वृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मधुगन्धाक्षतैर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्ड निधाय सम्पूज्य तत्र होमं विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गद्विगुणां कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना ; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—चपाद्स्थे भूये संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है ; नन्दा रिक्तातिथियाँ और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना बचना । अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मू. धनि.. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिनें, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख	संख्या
शुभ	नष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	फलम्

मृ. चि. नक्षत्रों में रिक्तातिथिरहित शुभ तिथियों में और चं. बु. वृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है । तृणकाष्ठादिसंग्रह निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. र. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्यवारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा ; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० भ०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो । अन्यच्च यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्

पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.
चं. श.	चं.श.	गुरु	सू.श.	सू. श.	भौम	मं.	बु. श.

नक्षत्रशूलचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.
वारः	ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छेन्न दोषभाक् ॥२॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में कालज्ञान

योगिनीवासचक्रम्

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ,युद्ध यात्रा की बांयें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को,गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्याह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त–गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष वृष	मिथुन	कर्क	सिंह कन्या तुला वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-

घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०.	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा–करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः ॥

सर्वाङ्गसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व [illegible]

[illegible] तृतीया–भौमवार, चतुर्थी–चन्द्रवार, पञ्चमी–शनिवार [illegible] (छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

[illegible] में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिने चतुर्घटिकामुहूर्तम्							रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्तम्						
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३।।।	शु.	चं..	का	उ.	अ.	रो.	ल.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७।।	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।।।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।।	ला.	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बांये दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट, यात्रा पञ्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ हैं। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पो०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

तृतीया-अष्टमी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णिमा, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्रतारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
म.	क.	कु.	मि.	म.	सि.	ध	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	वृष.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	ज्ये.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	मु.	ज्यं	वृष.	वै.	गं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	३१	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है।
"घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वह ही सरट (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढने का फल वथा होता है।

पल्ली (छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठ	एश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों म गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती ह। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल होनी। छीकि पीठि को कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषे; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जय कारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक गहा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबन धोबिन रजस्वला बेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रे विशाला (उज्जयिनी) गिरिजा गयाम् ॥

हर प्रकार की पुस्तकें—मिलने का पताः—
मोतीलाल बनारसीदास, बैंग्लो रोड, जवाहरनगर देहली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोपवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देश क्षय	वनपशुगांवबसे	मनु. शून्य हो
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांकी कबूतर-	गृहस्वा. नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	[illegible]	[illegible]

[illegible] (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई बातों को स्वप्न में देखना) और चौथा वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। [illegible] स्वप्न [illegible] सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं०	बु	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदाह्—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तैल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

अथकाकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भा समाहरेत्। लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निश्शेष-मरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्।

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्वपालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर घर में बसें वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोषनिवृत्यर्थं दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावे या लिखावे। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचें तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होव यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई बातों को स्वप्न में देखना) और चौथा वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। [illegible] स्वप्न [illegible] सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

CC-0 in Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त [illegible] स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त "प्राप्तित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गलतियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश व तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर हो कर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और निरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह

अशुभस्वप्न—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीमपलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर लेजाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोगसंकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशामें जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदीमें डूबना अथवा नदीके प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतुके वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी, का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े महलध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवास्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उसपर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांतसे मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुनिर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न, होरालग्न से आई आयु ठीक समझे; चरे चरे स्थिरे-द्विःस्वभाव-दीर्घायुः। द्विःस्वभावे-द्विःस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे, चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,९, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है, ३।४ में पापग्रह हो, पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु।

३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
कृ. उ. फा. उ. षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा				पु. ऽनु उ. भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पू. फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	श.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	र.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	२
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	र.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १				पिंगला व. २				धान्या व. ३				भ्रामरी व. ४				भद्रा व. ६				उल्का व. ६				सिद्धा व. ७				संकटा व. ८				दशा तथा वर्ष
चन्द्र				सूर्य				गुरु				मंगल				बुध				शनि				शुक्र				केतु				दशेशग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.				पुन. स्वा. ध.				पुष्य. वि. श.				आश्ले. ऽनु. पूभा				भ. म. ज्ये. उभा				कृ. पू. फा. मू. रे.				रो उ. फा. पू. षा.				मृ. ह. उषा				जन्म नक्षत्र
मं.		०	१०	पि.		१	१०	धा.	३	०		भा.	५	१	०	भ.	८	१	०	उ.	१२	०		सि.	१६	१	०	सं.	२	१	१०	
पि.		०	२०	धा.	२	०		भ्रा.	४	०		भ.	६	२	०	उ.	१०	०		सि.	१४	०		सं.	१८	२	०	मं.	२	२	०	
धा.	१	०		भ्रा.	२	२	०	भ.	५	०		उ.	८	०		सि.	११	२	०	सं.	१६	०		मं.	२	१	०	पि.	५	१	०	
भ्रा.	१	१	०	भ.	३	१	०	उ.	६	०		सि.	९	१	०	सं.	१३	१	०	मं.	२	०		पि.	४	२	०	धा.	८	०		
भ.	१	२	०	उ.	४	०		सि.	७	०		सं.	१०	२	६	मं.	१	२	०	पि.	४	०		धा.	७	१	०	भ्रा.	१०	२	०	
उ.	२	०		सि.	४	२	०	सं.	८	०		मं.	११	१	०	पि.	३	१	०	धा.	६	१	०		भ्रा.	९	१	०	भ.	१३	१	०	
सि.	२	१	०	सं.	५	१	०	मं.	१	०		पि.	२	२	०	धा.	५	०		भ्रा.	८	०		भ.	११	२	०	उ.	१६	०		
सं.	२	२	०	मं	०	२	०	पि.	२	०		धा.	४	०		भ्रा.	६	२	०	भ.	१०	०		उ.	१४	०		सि.	१८	२	०	

अन्तर्दशाभासादि
सूर्यदशा—म धा. भ. सि.
नक्षत्रदशा—पि. भ्रा. उ. सं.

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
चिन्ता	पू भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनलाभः	पीड़ा
पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदः	विजयः	धनलाभः	व्ययः
धनः	धनलाभः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	राज्यलाभः	धनलाभः	विरोधः
धर्मम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभः	सुखलाभः	विघ्नः
लाभः	धनप्राप्तिः	जयः	वाह. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यलाभः	धनलाभः	शोकः
कीर्तिः	पीड़ा	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	कष्टम्	धर्मोदः	मानलाभः	मानलाभः	क्षेमला	व्ययः
रोगः	राजभी.	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपी.	जयः	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनलाभः	धनलाभः	चिन्ता
विघ्नः	क्लेशः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	सुलाभः	व्याधिः
कुशलं	यशोऽर्थः	आरोग्यं	राजभिः	दुर्बुद्धि	सुखम्	पीड़ा	भाग्यनाशः	धनलाभः	धनलाभः	लाभः	शोकः
प्रीतिः		पुष्टि.	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदः	राज्यप्राः	लाभः	लाभः	कष्टम्

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणे, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ केरलमते प्रश्न-विचारः

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् । सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौ तु देवतां वदेत् ॥

वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	व्वांक्ष	अष्टवर्गः
इउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
स्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्नः
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी	प्रवासीप्रश्न
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीकामार्ग
स्व	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६मास	१ वर्ष	प्रश्न दिनादि
पुष्प	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पातान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौशुम्भ	श्वेत	लोहितांग	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्न
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ मास	पक्ष	मास १	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभः
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्षुनष्ट
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
अग्नि	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्षे	भांडगते	काष्ठशिल	गृहे	भुविमध्ये	नष्टस्थानम्
देव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	नआगम	आगम	न आगम	आगम	नआगम	शत्रुगमागमौ
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	शत्रुजयहानि
न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकाल	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्य्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभप्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्या प्रश्न
शत	एक	शत	२०	६०	४५	७५	१५	आयु प्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा	वृष्टि प्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनादि

रोगोत्पत्ति सन्तान-प्रतिबन्धादि में देवदोषज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।९।१२ स्थान शुभरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें । यदि ८।१२ व स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितृदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष), शनि हो तो सतीदोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है । भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चढ़ैल, चौथे श. मं. राहु चौपाटिया, बली वा नीच भौम १।४।८ वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. मं. सौकण, १२ भौम नणद छोटी, ४ भौम भंग, १० मं. गु. सती कुल की, १० मं. चं. अपने दुर्गस्थान का दोष कहना यह ग्रह योग न हो तो केवल प्रश्नलग्न से दोष निम्नलिखित जानें । बलवान् मंगलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष में हो तो आकाशदेवी का, मिथुन में हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलमय प्रेतदोष, कन्या में केवल ग्रहदोष, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धनु में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में भूतप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें । बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य, शुभ ग्रह हो तो साध्य होते हैं अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सुगम प्रश्न पर विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक "ॐ श्री कीर्त्तिभवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़ कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़ कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपने अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिये—आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं ? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझे।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिये बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा

अंगुली रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र मिलनेवाला है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमा का फल (२)

१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशान्तर में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ कुछ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशान्तर में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारको फलकरोलाभ होगा
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)

१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु मत खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, उचेत रहो।
४ सर्व करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे वह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जायेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं

साहूकार (जिससे नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दे, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले। २ शेष रहे तो न मिले। तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले।

विवाह होगा कि नहीं—यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ इन स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो विवाह हो जाएगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो या लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जायेगा।

गुप्त चिन्ता का फल (१०)

१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट ने बाधा पहुंचाई है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)

१ कर्ज लेना देना अच्छा है।

गर्भ में क्या है फल (१४)

१ इस गर्भ की सुगमता नहीं।

अमुक मनुष्य फल (१७)

१ जमीन में गाड़ा काम होगा।

संतान भाग्य में क्या है ? फल (२३)

१ संतान आपके भाग्य में नहीं।

कुंआ खोदने का फल (२४)

१ कुंआ बनवाना शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] का फल (११)

१ [illegible] अच्छा है।
२ [illegible] नहीं।
३ [illegible] रहेगा।
४ अन्त में [illegible] होगी।
५ दिया [illegible], लिया [illegible]।
६ इस अवधि [illegible] हैं।
७ लेने देने में कोई [illegible] नहीं।
८ अन्त समय [illegible] में [illegible] होगा।
९ नफा [illegible] बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है फल (१[illegible])

१ इस गर्भ की [illegible] नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ पुत्र [illegible] पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ थोड़ी कन्या [illegible]।
९ [illegible] लड़की [illegible] होंगे।

[illegible] फल (१[illegible])

१ [illegible] होगा।
२ नफा [illegible] समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ [illegible] के [illegible] होने का भय है।
५ [illegible] व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ [illegible] में [illegible] होंगे।
८ [illegible] ठीक है, [illegible] मत।
९ [illegible] फल अशुभ है।

खेती करने या नहीं फल (१२)

१ खेती में लाभ रहेगी।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी बेहूदा उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में चोरों का भय है।
८ [illegible] के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

चोरी गई का फल (१५)

१ वस्तु [illegible] मिलेगी, चोर [illegible] है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ [illegible] दूरा खर्च पर माल न मिलेगा।
४ चोर [illegible] है, माल न मिलेगा।
५ किसी की [illegible] से माल मिलेगा।
६ चोरने [illegible] चोर की [illegible]।
७ माल [illegible] नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर [illegible] माल मिलेगा।

विवाह शादी का फल (१८)

१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होना पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जल्दी होगा।
५ विवाह में [illegible] होंगी।
६ किसी की [illegible] करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री [illegible] वाली मिलेगी।

रोगी का प्रश्न फल (१३)

१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ [illegible] खराब है, [illegible] करो।
३ यह रोग [illegible] का फल है।
४ चिन्ता न करो [illegible] होगा।
५ रोगी की [illegible] करो।
६ रोगी को [illegible] से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ६ दिन [illegible] है।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का बस नहीं चलता।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)

१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का [illegible] नहीं।
३ लड़का खर्च करावेगा।
४ लड़का [illegible] नहीं है।
५ [illegible] मिलेगी।
६ [illegible] से [illegible] लेना।
७ [illegible] मिलेगा।
८ घर में [illegible] रहेगी।
९ [illegible] नहीं है।

रोजगार प्रश्न फल (१९)

१ रोजगार जल्दी ही [illegible] होगा।
२ [illegible] करने से [illegible] होगा।
३ किसी प्रकार की [illegible] करो।
४ [illegible] कोयला से लाभ होगा।
५ जल इस व्यापार में हानि होगी।
६ [illegible] करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ [illegible] की [illegible] है अभी [illegible] नहीं।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (२०)

१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ इस सिद्धि को खेल मत समझो।

मकान बनाने का फल (२१)

१ मकान बनाना सुखप्रद होगा।
२ बहुत दिनों में पूरा होगा।
३ यह कार्य लाभप्रद नहीं।
४ खर्च अधिक होगा।
५ शत्रु विघ्न करेगा।
६ मकान ठीक नहीं बन पावेगा।
७ इस स्थान को खरीदने से धन मिले।
८ यह मकान झगड़े का कारण होगा।
९ पृथ्वी में धन है, परन्तु तुम्हें नहीं मिलेगा।

बाग लगाने का फल (२२)

१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९ मनोरथ सफल होगा।

१ संतान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेतशांति से होगी।
३ संतान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ नेमव्रत से होगी।
६ गया या पिहोए विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ संतान की आशा छोड़ो।
९ सप्ताह श्रवण से होगी।

१ कुंआ बनवाना शुभ है।
२ जल मीठा निकले।
३ जल स्वादु नहीं।
४ ठहरो अभी भय है।
५ जल कम होगा।
६ उत्तम जल है।
७ खर्च और हैरानी होगी।
८ जल दूर निकलेगा।
९ कुंआ अशुभ है।।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथिवार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग देवें शेष ३।७ बचे तो देवता की, २।८ बचे तो पितृबाधा और ६।४ बचे तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना। उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ता द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥ १ ॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) कः (१२) नात्र जीवति ॥२॥

प्रश्न--जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्ययौ युतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः।

कार्य सिद्ध होगा या नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने। अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है। विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहना।

क्या यह बात सच है ?—प्रश्न काल के वारतात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़ कर वर्तमान तिथि से गुणा दो फिर उसे ४ से भाग देना शेष १।३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो।

देशान्तर से पत्र आवेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उसके द्वितीय तृतीय स्थान शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा, मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले। प्रश्न लग्न में बुध चन्द्र हों और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इष्टकी केवल गति घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुव		२०८५

अथ तिथिध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपदा ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी २५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोदशी ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावस्या १६६

अथ नक्षत्रध्रुवा ॥३॥

अश्वि. १७६	भरणी ६८३	कृत्ति. ३७०	रोहिणी ७७५	मृग. ६८२	आर्द्रा १४६	पुन. ५४०
पुष्य ६३४	आश्ले. १७०	मघा ७३	पू. फा ८५	उ. फा. १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा. ७३४	अनु. ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू. षा. ६१४	उ. षा. ६२३
अभि. ६८३	श्रवण ६५७	धनि. ५००	शत० ५६४	पू. भा. ३३६	उ. भा. १८३	रेवती ७२०

अथ मासध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशाख ६३	ज्येष्ठ ६५
आषाढ़ ६७	श्रावण ६९	भाद्र ७१
आश्विन ७३	कार्तिक ५१	मार्ग. ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गुन ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥ ५ ॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु २२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरिद्वार २७२	बीकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १३८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थ की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	तांबा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांस २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रुई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हैसियन ७३८	सूत १०३	तमाखू २४०	सुपारी २५२	लोह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड़ २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसों ८५८	राहर ३३३	निमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेड़ ६१८	हाथी ८३०	घड़ा ८३५

अथ तेजी-मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १ तेज	चन्द्र २ अतिमन्दा	भौम ३ तेज
राहु ४ अति तेज	बृहस्पति ५ मन्द	शनि ६ तेज
बुध ७ सम	केतु ८ तेज	शुक्र ९ तेज

अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति

जिस देश की जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवों का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष जिस दिन का विचारना है उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ में आठवें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञात कर लेना।

उदाहरण—कलकत्ता में गत सं० २०१६ की चैत्र शुदी २ शुक्रवार को भरिणी नक्षत्र में चाँदी की तेजी मन्दी जाननी है तो कलकत्ते की ध्रुवा २४७, चैत्र की ६१, द्वितीया की ७१०, शुक्रवार की ८०८, भरिणी नक्षत्र की ६८३, चान्दी की ७६०, सूर्यमीन राशि की ध्रुवा ५८६ है। इन सबका जोड़ ३८५५ हुवा। इसमें ९ के भाग देने से शेष ३ आया। [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ लग्नसारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृषभ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२३	२६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	२९९
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९		२४२
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२		२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारिणी में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इन को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्ध ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ ॥

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
    ---
    १२०
    ११०
    ---
    १०
    ६०
    ---
    ६००
    ६०५
```

अथ लग्नपक्षात् सूक्ष्मलग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फलआवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ दशमलग्न सारिणी ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदयः पलानि
मेष ०	३ ३३	३ ४२	३ ५२	४ १	४ १०	४ १९	४ २८	४ ३८	४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १८	५ २८	५ ३८	५ ४८	५ ५८	६ ८	६ १८	६ २८	६ ३८	६ ४८	६ ५८	७ ७	७ १७	७ २७	७ ३७	७ ४७	७ ५७	८ ०	८ १७	२७८
वृषभ १	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५९	१० ९	१० २०	१० ३१	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १४	११ २५	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १२	१३ २३	१३ ३४	२९९
मिथुन २	१३ ४५	१३ ५५	१४ ६	१४ १७	१४ २८	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३२	१५ ४३	१५ ५४	१६ ५	१६ १५	१६ २६	१६ ३७	१६ ४८	१६ ५८	१७ ९	१७ १९	१७ ३१	१७ ४१	१७ ५२	१८ ३	१८ १४	१८ २५	१८ ३५	१८ ४६	१८ ५७	३२३
कर्क ३	१९ ८	१९ १८	१९ २९	१९ ४०	१९ ५१	२० १	२० १२	२० २३	२० ३३	२० ४३	२० ५३	२१ ३	२१ १३	२१ २३	२१ ३३	२१ ४३	२१ ५३	२२ ३	२२ १३	२२ २३	२२ ३३	२२ ४३	२२ ५२	२३ २	२३ १२	२३ २२	२३ ३२	२३ ४२	२३ ५२	२४ २	३२३
सिंह ४	२४ १२	२४ २२	२४ ३२	२४ ४२	२४ ५२	२५ २	२५ १२	२५ २२	२५ ३१	२५ ४१	२५ ५०	२५ ५९	२६ ८	२६ १८	२६ २७	२६ ३६	२६ ४५	२६ ५५	२७ ४	२७ १३	२७ २२	२७ ३२	२७ ४१	२७ ५०	२७ ५९	२८ ९	२८ १८	२८ २७	२८ ३७	२८ ४६	२९९
कन्या ५	२८ ५५	२९ ४	२९ १४	२९ २३	२९ ३२	२९ ४१	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १९	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५६	३१ ५	३१ १४	३१ २३	३१ ३३	३१ ४२	३२ ५१	३२ ०	३२ १०	३२ १९	३२ २८	३२ ३८	३२ ४७	३२ ५६	३३ ५	३३ १५	३३ २४	२७८
तुला ६	३३ ३३	३३ ४२	३३ ५२	३४ १	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ८	३५ १८	३७ २८	३५ ३८	३५ ४८	३५ ५८	३६ ८	३६ १८	३६ २८	३६ ३८	३६ ४८	३६ ५८	३७ ७	३७ १७	३७ २७	३७ ३७	३७ ४७	३७ ५७	३८ ७	३८ १७	२७८
वृश्चिक ७	३८ २७	३८ ३७	३८ ४७	३८ ५७	३९ ७	३९ १७	३९ २७	३९ ३७	३९ ४७	३९ ५८	४० ९	४० २०	४० ३१	४० ४२	४१ ५२	४१ ३	४१ १४	४१ २५	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५७	४२ ८	४२ १८	४२ २९	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १२	४३ २३	४३ ३४	२९९
धनु ८	४३ ४५	४३ ५५	४४ ६	४४ १७	४४ २८	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३२	४५ ४३	४५ ५४	४६ ५	४६ १५	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४१	४७ ५२	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	४८ ५७	३२३
मकर ९	४९ ८	४९ १८	४९ २९	४९ ४०	४९ ५१	५० १	५० १२	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १३	५२ २३	५२ ३३	५२ ४३	५२ ५३	५३ २	५३ १२	५३ २२	५३ ३२	५३ ४२	५३ ५२	५४ २	३२३
कुम्भ १०	५४ १२	५४ २२	५४ ३२	५४ ४२	५४ ५२	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३१	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ८	५६ १८	५६ २७	५६ ३६	५६ ४५	५६ ५५	५७ ४	५७ १३	५७ २२	५७ ३२	५७ ४१	५७ ५०	५८ ०	५८ ९	५८ १८	५८ २७	५८ ३७	५८ ४६	२९९
मीन ११	५८ ५५	५९ ४	५९ १४	५९ २३	५९ ३२	५९ ४१	५९ ५१	० ०	० ९	० १९	० २८	० ३७	० ४६	० ५६	१ ५	१ १४	१ २३	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ १०	२ १९	२ २८	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १५	३ २४	२७८

नोट—हमारे यहां से समीपवर्ती जैसे चण्डीगढ़, अम्बाला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है ॥

अथ दशमलग्नसाधनम्—उदयादिष्टकालेषु द्युदलं हि प्रपातयेत्। दशमस्य भवेदिष्टं सारिखांगोसुखांगने ॥१॥

अर्थः—सूर्योदयात् घटयादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़ कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है ॥

भावसाधनम्—विलग्नतूर्यं षड्भवतं पंचवारं तनौ क्षिपेत्। एकद्धियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड्युताः परे ॥२॥ अर्थः—चतुर्थभावमें लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी फिर उसी आरंभसंधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थभाव की आरंभसंधि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित (६) छः ही भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं ॥

त्रिराशिपतिचक्रम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	व	ध	म	कुं	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि. ल. प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	च रा. ल. प.

अथ हर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु. ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (च०, बु०, शु०, श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिनके वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्रशत्रुज्ञान—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।९ वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५ वें ४५ कला, ३ रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १।७ वे पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्र राशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पाँचों में से कोई भी लग्नको न देखता होतो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो तो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि वलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

"अथ ३२ सा श्री सूर्य यन्त्र विधान॥ अनार की कलम से हरिद्रा के साथ यंत्र को भूर्जपत्र पर अथवा कागज पर लिखे नीचे अपना मनोरथ अपना कार्य लिखें फिर उस यन्त्र को रुई की खड़ी फूलवत्ती में बनाकर रविवार को ज्योत जगावे। फिर हरिद्रा की माला बनाकर बीजमन्त्र का ११०० ग्यारह सौ जप करें, जपमन्त्र—"ह्रीं हंसः" इस मन्त्र का सात या २१ रविवार विधिपूर्वक जप करने से श्री सूर्यनारायण की कृपा से सम्पूर्ण दुःखों की निवृत्ति होगी, अत्यन्त सुख प्राप्त होगा।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

वर्षफल-साधनप्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में बारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्मसमय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारिणी से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। **मुन्थानयनप्रकारः**—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपाताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकीचक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्म राशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर, भौम के वेध से शरीरपीड़ा होती है, शुभ ग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें॥

मुद्दा दशा चक्र विशेष

अन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २७ का दे, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। चन्द्रमा के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुन्थादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बुध	१	१८
६	शनि	१	२७
७	गुरु	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध.	भ्रा	भ.	उ.	सि.	से.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टै. टा. क लिये स्टैण्डर्ड अन्तर चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटायें स्पष्टता के लिए १२७ पृष्ठ देख

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ०°		२°		४°		६°		८°		१०°		१२°		१४°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जनवरी	१	५।५९	६। ७	६। ३	६। ४	६। ७	६। १	६।१०	५।५७	६।१४	५।५४	६।१७	५।५०	६।२१	५।४७	६।२४	५।४३	३	जुलाई
	७	६। २	६।१०	६। ६	६। ७	६। ९	६। ४	६।१३	६। ०	६।१६	५।५७	६।१९	५।५३	६।२३	५।५०	६।२६	५।४७	९	
	१३	६। ५	६।१२	६। ८	६। ९	६।११	६। ६	६।१५	६। ३	६।१८	६। ०	६।२१	५।५६	६।२४	५।५३	६।२८	५।५०	१५	
	१९	६। ७	६।१४	६।१०	६।१२	६।१३	६। ९	६।१६	६। ६	६।१९	६। ३	६।२२	५।५९	६।२५	५।५७	६।२८	५।५४	२२	
	२५	६। ९	६।१६	६।१२	६।१३	६।१४	६।११	६।१७	६। ८	६।२०	६। ५	६।२३	६। २	६।२६	५।५९	६।२८	५।५७	२८	
	३१	६।१०	६।१७	६।१३	६।१५	६।१५	६।१२	६।१८	६।१०	६।२०	६। ७	६।२३	६। ४	६।२५	६। २	६।२८	५।५९	४	
फरवरी	६	६।१०	६।१८	६।१३	६।१६	६।१५	६।१३	६।१७	६।११	६।२०	६। ९	६।२२	६। ६	६।२४	६। ४	६।२७	६। २	१०	अगस्त
	१२	६।११	६।१८	६।१३	६।१६	६।१५	६।१४	६।१७	६।१२	६।१९	६।१०	६।२१	६। ८	६।२३	६। ६	६।२५	६। ४	१६	
	१८	६।११	६।१८	६।१२	६।१६	६।१४	६।१४	६।१६	६।१३	६।१७	६।११	६।१९	६। ९	६।२१	६। ८	६।२२	६। ६	२२	
	२४	६।१०	६।१७	६।११	६।१५	६।१३	६।१४	६।१४	६।१३	६।१५	६।११	६।१७	६।१०	६।१८	६। ९	६।१९	६। ७	२९	
मार्च	२	६। ९	६।१६	६।१०	६।१५	६।११	६।१४	६।१२	६।१३	६।१३	६।१२	६।१४	६।१०	६।१५	६।१०	६।१६	६। ९	४	सितम्बर
	८	६। ८	६।१४	६। ८	६।१४	६। ९	६।१३	६।१०	६।१२	६।१०	६।१२	६।११	६।११	६।१२	६।१०	६।१२	६।१०	१०	
	१४	६। ६	६।१३	६। ६	६।१२	६। ७	६।१२	६। ७	६।१२	६। ८	६।११	६। ८	६।११	६। ८	६।११	६। ९	६।१०	१६	
	२०	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ५	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	२२	
	२६	६। ३	६। ९	६। २	६। ९	६। २	६।१०	६। २	६।१०	६। १	६।१०	६। १	६।११	६। १	६।११	६। ०	६।१२	२८	
अप्रैल	२	६। १	६। ७	६। ०	६। ८	५।५९	६। ८	५।५८	६। ९	५।५८	६।१०	५।५७	६।१०	५।५६	६।११	५।५५	६।१२	६	अक्टूबर
	८	५।५९	६। ६	५।५८	६। ६	५।५७	६। ७	५।५६	६। ८	५।५५	६। ९	५।५४	६।१०	५।५२	६।१२	५।५१	६।१३	१२	
	१४	५।५७	६। ४	५।५६	६। ५	५।५४	६। ६	५।५३	६। ८	५।५२	६। ९	५।५१	६।१०	५।४९	६।१२	५।४८	६।१३	१७	
	२०	५।५६	६। २	५।५४	६। ४	५।५२	६। ६	५।५१	६। ७	५।४९	६। ९	५।४८	६।११	५।४६	६।१२	५।४४	६।१४	२३	
	२६	५।५४	६। १	५।५२	६। ३	५।५१	६। ५	५।४९	६। ७	५।४७	६। ९	५।४५	६।११	५।४३	६।१३	५।४१	६।१५	२९	
मई	१	५।५४	६। १	५।५२	६। ३	५।४९	६। ५	५।४७	६। ७	५।४५	६। ९	५।४३	६।१२	५।४१	६।१४	५।३८	६।१६	३	नवम्बर
	७	५।५३	६। ०	५।५१	६। ३	५।४८	६। ५	५।४६	६। ७	५।४३	६।१०	५।४१	६।१२	५।३८	६।१५	५।३६	६।१८	९	
	१३	५।५३	६। ०	५।५०	६। ३	५।४७	६। ५	५।४५	६। ८	५।४२	६।११	५।४०	६।१३	५।३७	६।१६	५।३४	६।१९	१५	
	१९	५।५३	६। ०	५।५०	६। ३	५।४७	६। ६	५।४४	६। ९	५।४१	६।१२	५।३८	६।१४	५।३५	६।१८	५।३२	६।२१	२०	
	२५	५।५३	६। ०	५।५०	६। ४	५।४७	६। ७	५।४४	६।१०	५।४१	६।१३	५।३८	६।१६	५।३५	६।१९	५।३१	६।२३	२६	
	३१	५।५४	६। १	५।५१	६। ४	५।४७	६। ८	५।४४	६।११	५।४१	६।१४	५।३८	६।१७	५।३४	६।२१	५।३१	६।२४	२	दिसम्बर
जून	६	५।५५	६। २	५।५२	६। ६	५।४८	६। ९	५।४५	६।१२	५।४१	६।१६	५।३८	६।१९	५।३४	६।२३	५।३१	६।२६	७	
	१२	५।५६	६। ३	५।५३	६। ७	५।४९	६।१०	५।४६	६।१४	५।४२	६।१७	५।३८	६।२०	५।३५	६।२४	५।३१	६।२८	१३	
	१८	५।५७	६। ४	५।५४	६। ८	५।५०	६।१२	५।४७	६।१५	५।४३	६।१९	५।४०	६।२२	५।३६	६।२६	५।३२	६।३०	१९	
	२४	५।५८	६। ६	५।५५	६। ९	५।५२	६।१३	५।४८	६।१६	५।४५	६।२०	५।४१	६।२३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (विस्तृत क्षेत्र तथा) स्थानीय काल में

स्टैं. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ०°		२°		४°		६°		८°		१०°		१२°		१४°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जुलाई	६	६। १	६। ८	५।५८	६।१२	५।५४	६।१५	५।५१	६।१८	५।४८	६।२२	५।४४	६।२५	५।४१	६।२९	५।३७	६।३२	४	जनवरी
	१२	६। २	६। ९	५।५९	६।१२	५।५५	६।१६	५।५२	६।१९	५।४९	६।२२	५।४५	६।२५	५।४२	६।२९	५।३९	६।३२	१०	
	१८	६। २	६। ९	५।५९	६।१३	५।५६	६।१६	५।५३	६।१९	५।५०	६।२२	५।४७	६।२५	५।४४	६।२९	५।४०	६।३२	१५	
	२४	६। ३	६।१०	६। ०	६।१३	५।५७	६।१६	५।५४	६।१९	५।५१	६।२२	५।४८	६।२४	५।४५	६।२८	५।४२	६।३१	२१	
	३०	६। ३	६।१०	६। ०	६।१३	५।५८	६।१५	५।५५	६।१८	५।५२	६।२१	५।४९	६।२३	५।४६	६।२६	५।४४	६।२९	२७	
अगस्त	५	६। २	६। ९	६। ०	६।१२	५।५८	६।१४	५।५५	६।१७	५।५३	६।१९	५।५०	६।२२	५।४८	६।२४	५।४५	६।२७	१	फरवरी
	११	६। २	६। ८	६। ०	६।११	५।५७	६।१३	५।५५	६।१५	५।५३	६।१७	५।५०	६।२०	५।४८	६।२२	५।४६	६।२४	७	
	१७	६। १	६। ७	५।५९	६। ९	५।५७	६।११	५।५५	६।१३	५।५३	६।१५	५।५१	६।१७	५।४९	६।१९	५।४७	६।२१	१३	
	२३	५।५९	६। ६	५।५८	६। ८	५।५६	६। ९	५।५४	६।११	५।५३	६।१२	५।५१	६।१४	५।४९	६।१६	५।४८	७।१८	१८	
	२९	५।५८	६। ४	५।५६	६। ६	५।५५	६। ७	५।५४	६। ८	५।५२	६।१०	५।५१	६।११	५।४९	६।१२	५।४८	६।१४	२४	
सितम्बर	४	५।५६	६। २	५।५५	६। ३	५।५४	६। ४	५।५३	६। ५	५।५२	६। ६	५।५१	६। ८	५।४९	६। ८	५।४८	६।१०	२	मार्च
	१०	५।५४	६। ०	५।५३	६। १	५।५२	६। २	५।५२	६। २	५।५१	६। ३	५।५०	६। ४	५।४९	६। ५	५।४९	६। ५	८	
	१६	५।५२	५।५८	५।५१	५।५९	५।५१	५।५९	५।५१	५।५९	५।५०	६। ०	५।५०	६। ०	५।४९	६। ०	५।४९	६। १	१४	
	२२	५।५०	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	५।४९	५।५७	५।४९	५।५६	५।४९	५।५६	२०	
	२८	५।४८	५।५४	५।४८	५।५४	५।४८	५।५३	५।४८	५।५३	५।४९	५।५३	५।४९	५।५३	५।४९	५।५२	५।४९	५।५२	२६	
अक्तूबर	३	५।४६	५।५२	५।४६	५।५२	५।४७	५।५१	५।४७	५।५१	५।४८	५।५०	५।४९	५।५०	५।४९	५।४९	५।५०	५।४८	३०	
	९	५।४४	५।५१	५।४५	५।५०	५।४६	५।४९	५।४७	५।४८	५।४८	५।४७	५।४८	५।४६	५।४९	५।४५	५।५०	५।४४	५	फरवरी
	१५	५।४३	५।४९	५।४४	५।४८	५।४५	५।४७	५।४६	५।४६	५।४७	५।४४	५।४८	५।४३	५।५०	५।४२	५।५१	५।४१	१२	
	२१	५।४२	५।४८	५।४३	५।४७	५।४४	५।४५	५।४६	५।४३	५।४७	५।४२	५।४९	५।४१	५।५०	५।३९	५।५२	५।३७	१८	
	२७	५।४१	५।४७	५।४२	५।४६	५।४४	५।४४	५।४६	५।४२	५।४८	५।४०	५।५०	५।३८	५।५१	५।३६	५।५३	५।३४	२४	
नवम्बर	२	५।४०	५।४७	५।४२	५।४५	५।४४	५।४३	५।४७	५।४१	५।४९	५।३९	५।५१	५।३७	५।५३	५।३४	५।५५	५।३२	३०	
	८	५।४०	५।४७	५।४३	५।४५	५।४५	५।४३	५।४७	५।४०	५।५०	५।३८	५।५२	५।३५	५।५५	५।३३	५।५७	५।३०	६	मार्च
	१४	५।४१	५।४८	५।४४	५।४५	५।४६	५।४३	५।४९	५।४०	५।५१	५।३७	५।५४	५।३५	५।५७	५।३२	६। ०	५।२८	१२	
	२०	५।४२	५।४९	५।४५	५।४६	५।४८	५।४४	५।५१	५।४१	५।५४	५।३८	५।५६	५।३५	५।५९	५।३२	६। २	५।२९	१९	
	२६	५।४४	५।५१	५।४७	५।४८	५।५०	५।४५	५।५३	५।४२	५।५६	५।३९	५।५९	५।३५	६। २	५।३२	६। ५	५।२९	२५	
दिसम्बर	२	५।४६	५।५३	५।४९	५।५०	५।५२	५।४७	५।५५	५।४३	५।५९	५।४०	६। २	५।३७	६। ५	५।३४	६। ९	५।३०	३१	
	८	५।४८	५।५५	५।५२	५।५२	५।५५	५।४९	५।५८	५।४६	६। २	५।४२	६। ५	५।३८	६। ९	५।३५	६।१२	५।३२	७	अप्रैल
	१४	५।५१	५।५८	५।५४	५।५५	५।५८	५।५२	६। १	५।४८	६। ५	५।४५	६। ८	५।४१	६।१२	५।३८	६।१५	५।३४	१३	
	२०	५।५४	६। १	५।५७	५।५८	६। १	५।५४	६। ४	५।५१	६। ८	५।४७	६।११	५।४४	६।१५	५।४०	६।१८	५।३७	१९	
	२६	५।५७	६। ४	६।००	६। १	६। ४	५।५७	६। ७	५।५४	६।११	५।५०	६।१४	५।४७	६।१८	५।४३	६।२१	५।४०	२६	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल म

स्टैं. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		१६°		१८°		२०°		२२°		२४°		२६°		२८°		३०°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जनवरी	१	६।२८	५।४०	६।३१	५।३६	६।३५	५।३२	६।३९	५।२८	६।४३	५।२४	६।४७	५।२०	६।५२	५।१६	६।५६	५।११	३	जुलाई
	७	६।३०	५।४३	६।३३	५।४०	६।३७	५।३६	६।४१	५।३२	६।४५	५।२८	६।४९	५।२४	६।५३	५।२०	६।५७	५।१६	९	
	१३	६।३१	५।४७	६।३४	५।४३	६।३८	५।४०	६।४१	५।३६	६।४५	५।३३	६।४९	५।२९	६।५३	५।२५	६।५७	५।२१	१५	
	१९	६।३१	५।५०	६।३५	५।४७	६।३८	५।४४	६।४१	५।४१	६।४५	५।३७	६।४८	५।३३	६।५२	५।३०	६।५६	५।२६	२२	
	२५	६।३१	५।५४	६।३४	५।५१	६।३८	५।४८	६।४०	५।४५	६।४४	५।४१	६।४७	५।३८	६।५०	५।३५	६।५४	५।३१	२८	
	३१	६।३१	५।५७	६।३३	५।५४	६।३६	५।५१	६।३९	५।४९	६।४२	५।४६	६।४५	५।४३	६।४८	५।३९	६।५१	५।३६		
फरवरी	६	६।२९	६। ०	६।३१	५।५७	६।३४	५।५५	६।३६	५।५२	६।३९	५।५०	६।४२	५।४७	६।४४	५।४४	६।४७	५।४१	४	अगस्त
	१२	६।२७	६। २	६।२९	६। ०	६।३२	५।५८	६।३३	५।५६	६।३६	५।५३	६।३८	५।५१	६।४०	५।४९	६।४३	५।४६	१०	
	१८	६।२४	६। ४	६।२६	६। २	६।२८	६। १	६।३०	५।५९	६।३१	५।५७	६।३३	५।५५	६।३५	५।५३	६।३८	५।५१	१६	
	२४	६।२१	६। ६	६।२२	६। ५	६।२४	६। ३	६।२५	६। २	६।२७	६। ०	६।२८	५।५९	६।३०	५।५७	६।३२	५।५५	२२	
मार्च	२	६।१७	६। ८	६।१८	६। ७	६।१९	६। ५	६।२०	६। ४	६।२२	६। ३	६।२३	६। २	६।२४	६। १	६।२५	६। ०	२९	सितम्बर
	८	६।१३	६। ९	६।१४	६। ८	६।१५	६। ७	६।१५	६। ७	६।१६	६। ६	६।१७	६। ५	६।१८	६। ५	६।१९	६। ४	४	
	१४	६। ९	६।१०	६। ९	६।१०	६।१०	६। ९	६।१०	६। ९	६।१०	६। ९	६।११	६। ८	६।११	६। ८	६।१२	६। ८	१०	
	२०	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ५	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	६। ४	६।११	२६	
	२६	६। ०	६।१२	६। ०	६।१२	५।५९	६।१३	५।५९	६।१३	५।५८	६।१४	५।५८	६।१४	५।५८	६।१५	५।५७	६।१५	२२	
अप्रैल	२	५।५५	६।१३	५।५४	६।१४	५।५४	६।१५	५।५२	६।१५	५।५१	६।१६	५।५१	६।१७	५।५०	६।१८	५।४९	६।१९	२८	
	८	५।५०	६।१४	५।४६	६।१५	५।४९	६।१६	५।४७	६।१७	५।४६	६।१९	५।४४	६।२०	५।४३	६।२१	५।४२	६।२३	६	अक्तूबर
	१४	५।४६	६।१५	५।४५	६।१६	५।४४	६।१८	५।४२	६।१९	५।४०	६।२१	५।३८	६।२३	५।३७	६।२५	५।३५	६।२६	१२	
	२०	५।४२	६।१६	५।४०	६।१८	५।३९	६।२०	५।३७	६।२२	५।३५	६।२४	५।३३	६।२६	५।३०	६।२८	५।२८	६।३०	१७	
	२६	५।३९	६।१७	५।३६	६।१९	५।३५	६।२२	५।३२	६।२४	५।३०	६।२६	५।२७	६।२९	५।२५	६।३१	५।२२	६।३४	२३	
मई	१	५।३६	६।१९	५।३३	६।२१	५।३२	६।२३	५।२९	६।२६	५।२६	६।२९	५।२३	६।३१	५।२०	६।३४	५।१७	६।३७	२९	
	७	५।३३	६।२०	५।३०	६।२३	५।२८	६।२६	५।२५	६।२९	५।२२	६।३२	५।१९	६।३५	५।१६	६।३८	५।१२	६।४१	३	नवम्बर
	१३	५।३१	६।२२	५।२८	६।२५	५।२६	६।२८	५।२२	६।३१	५।१९	६।३४	५।१५	६।३८	५।१२	६।४१	५। ८	६।४५	९	
	१९	५।२९	६।२४	५।२६	६।२७	५।२३	६।३०	५।१९	६।३४	५।१६	६।३७	५।१२	६।४१	५। ८	६।४५	५। ४	६।४९	१५	
	२५	५।२८	६।२६	५।२५	६।२९	५।२०	६।३३	५।१७	६।३६	५।१४	६।४०	५।१०	६।४४	५। ६	६।४८	५। २	६।५२	२०	
	३१	५।२७	६।२८	५।२४	६।३२	५।२०	६।३५	५।१६	६।३९	५।१२	६।४१	५। ८	६।४७	५। ४	६।५१	५। ०	६।५६	२६	
जून	६	५।२७	६।३०	५।२४	६।३४	५।२०	६।३८	५।१६	६।४२	५।१२	६।४६	५। ७	६।५०	५। ३	६।५४	४।५९	६।५९	२	दिसम्बर
	१२	५।२८	६।३२	५।२४	६।३६	५।२०	६।४०	५।१६	६।४४	५।१२	६।४८	५। ७	६।५२	५। ३	६।५७	४।५८	७। १	७	
	१८	५।२९	६।३३	५।२५	६।३७	५।२१	६।४१	५।१७	६।४५	५।१२	६।५०	५। ८	६।५४	५। ३	६।५९	४।५९	७। २	१३	
	२४	५।३०	६।३५	५।२६	६।३९	५।२२	६।४३	५।१८	६।४७	५।१४	६।५१	५। ९	६।५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सूर्योदय व सूर्यास्त (लोकमान्य तिलक पंचांग)

स्टं० टा० के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		१६°		१८°		२०°		२२°		२४°		२६°		२८°		३०°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता०	मास
जुलाई	६	५।३३	६।३६	५।३०	६।४०	५।२६	६।४४	५।२२	६।४८	५।१८	६।५२	५।१३	६।५६	५। ९	७। ०	५। ४	७। ५	४	जनवरी
	१२	५।३५	६।३६	५।३२	६।३९	५।२८	६।४३	५।२४	६।४७	५।२०	६।५१	५।१६	६।५५	५।१२	६।५९	५। ७	७। ४	१०	
	१८	५।३७	६।३५	५।३४	६।३९	५।३०	६।४२	५।२६	६।४६	५।२३	६।४९	५।१९	६।५३	५।१५	६।५७	५।१०	७। २	१५	
	२४	५।३९	६।३४	५।३६	६।३७	५।३२	६।४०	५।२९	६।४४	५।२५	६।४७	५।२२	६।५१	५।१८	६।५५	५।१४	६।५९	२१	
	३०	५।४१	६।३२	५।३८	६।३५	५।३४	६।३८	५।३१	६।४१	५।२८	६।४४	५।२५	६।४८	५।२१	६।५१	५।१७	६।५५	२७	
अगस्त	५	५।४२	६।३०	५।४०	६।३२	५।३७	६।३५	५।३४	६।३८	५।३१	६।४१	५।२८	६।४४	५।२५	६।४७	५।२१	६।५०	१	फरवरी
	११	५।४४	६।२७	५।४१	६।२९	५।३९	६।३२	५।३६	६।३४	५।३३	६।३७	५।३१	६।३९	५।२८	६।४२	५।२५	६।४५	७	
	१७	५।४५	६।२३	५।४३	६।२५	५।४०	६।२८	५।३८	६।३०	५।३६	६।३२	५।३३	६।३४	५।३१	६।३७	५।२८	६।३९	१३	
	२३	५।४६	६।१९	५।४४	६।२१	५।४२	६।२३	५।४०	६।२५	५।३८	६।२७	५।३६	६।२९	५।३४	६।३१	५।३२	६।३३	१८	
	२९	५।४७	६।१५	५।४५	६।१७	५।४४	६।१८	५।४२	६।२०	५।४०	६।२१	५।३९	६।२३	५।३७	६।२५	५।३५	६।२६	२४	
सितम्बर	४	५।४७	६।११	५।४६	६।१२	५।४५	६।१३	५।४४	६।१४	५।४२	६।१५	५।४१	६।१७	५।४०	६।१८	५।३८	६।१९	२	मार्च
	१०	५।४८	६। ६	५।४७	६। ७	५।४६	६। ८	५।४५	६। ८	५।४५	६। ९	५।४४	६।१०	५।४३	६।११	५।४२	६।१२	८	
	१६	५।४८	६। १	५।४८	६। २	५।४८	६। २	५।४७	६। ३	५।४७	६। ३	५।४६	६। ४	५।४५	६। ४	५।४५	६। ५	१४	
	२२	५।४९	५।५६	५।४९	५।५७	५।४९	५।५७	५।४९	५।५७	५।४९	५।५७	५।४८	५।५७	५।४८	५।५७	५।४८	५।५७	२०	
	२८	५।५०	५।५२	५।५०	५।५१	५।५०	५।५१	५।५०	५।५१	५।५१	५।५१	५।५१	५।५०	५।५१	५।५०	५।५१	५।५०	२६	
अक्टूबर	३	५।५०	५।४८	५।५१	५।४७	५।५१	५।४७	५।५२	५।४६	५।५२	५।४५	५।५३	५।४५	५।५४	५।४४	५।५४	५।४३	३०	
	९	५।५१	५।४३	५।५२	५।४२	५।५३	५।४२	५।५४	५।४१	५।५५	५।४०	५।५६	५।३८	५।५७	५।३७	५।५८	५।३६	५	अप्रैल
	१५	५।५२	५।३९	५।५३	५।३८	५।५५	५।३७	५।५६	५।३५	५।५७	५।३४	५।५९	५।३३	६। ०	५।३१	६। २	५।३०	१२	
	२१	५।५४	५।३६	५।५५	५।३४	५।५७	५।३२	५।५८	५।३१	६। ०	५।२९	६। २	५।२७	६। ४	५।२५	६। ६	५।२३	१८	
	२७	५।५५	५।३२	५।५७	५।३१	५।५९	५।२९	६। १	५।२६	६। ३	५।२४	६। ५	५।२२	६। ८	५।२०	६।१०	५।१८	२४	
नवम्बर	२	५।५७	५।३०	६। ०	५।२८	६। २	५।२५	६। ४	५।२३	६। ७	५।२०	६। ९	५।१८	६।१२	५।१५	६।१४	५।१२	३०	
	८	६। ०	५।२८	६। २	५।२५	६। ५	५।२३	६। ८	५।२०	६।१०	५।१७	६।१३	५।१४	६।१६	५।११	६।१९	५। ८	६	मई
	१४	६। २	५।२६	६। ५	५।२४	६। ८	५।२१	६।११	५।१८	६।१४	५।१५	६।१७	५।११	६।२१	५। ८	६।२४	५। ५	१२	
	२०	६। ५	५।२६	६। ९	५।२३	६।१२	५।२०	६।१५	५।१६	६।१८	५।१३	६।२२	५। ९	६।२५	५। ६	६।२९	५। २	१९	
	२६	६। ९	५।२६	६।१२	५।२३	६।१५	५।१९	६।१९	५।१६	६।२२	५।१२	६।२६	५। ८	६।३०	५। ४	६।३४	५। ०	२५	
दिसम्बर	२	६।१२	५।२७	६।१६	५।२३	६।१९	५।२०	६।२३	५।१७	६।२७	४।१२	६।३१	५। ८	७।३५	५। ४	६।३९	५। ०	३१	
	८	६।१६	५।२८	६।१९	५।२५	६।२३	५।२१	६।२७	५।१७	६।३१	५।१३	६।३५	५। ९	६।३९	५। ५	६।४३	५। ०	७	जून
	१४	६।१९	५।३०	६।२३	५।२७	६।२७	५।२३	६।३०	५।१९	६।३५	५।१५	६।३९	५।११	६।४३	५। ६	६।४८	५। २	१३	
	२०	६।२२	५।३३	६।२६	५।२९	६।३०	५।२५	६।३४	५।२१	६।३८	५।१७	६।४२	५।१३	६।४७	५। ९	६।५१	५। ४	१९	
	२६	६।२५	५।३६	६।२९	५।३२	६।३३	५।२८	६।३७	५।२४	६।४१	५।२०	६।४५	५।१६	६।४९	५।१५	६।५४	५। ७	२६	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैं: टा. के लिए स्टैण्डर्ड अन्तर चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		३२°		३४°		३६°		३८°		४०°		४२°		४४°		४६°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जनवरी	१	७।१	५।७	७।६	५।२	७।१०	४।५७	७।१६	४।५१	७।२२	४।४५	७।२८	४।३९	७।३५	४।३३	७।४२	४।२५	३	जुलाई
	७	७।२	५।११	७।६	५।७	७।११	५।१	७।१७	४।५६	७।२२	४।५१	७।२८	४।४५	७।३५	४।३८	७।४२	४।३१	९	
	१३	७।१	५।१६	७।६	५।१२	७।१०	५।७	७।१६	५।२	७।२१	४।५७	७।२७	४।५१	७।३३	४।४५	७।३९	४।३९	१५	
	१९	७।०	५।२२	७।४	५।१८	७।८	५।१३	७।१३	५।९	७।१८	५।४	७।२४	४।५८	७।२९	४।५३	७।३६	४।४६	२२	
	२५	६।५८	५।२७	७।२	५।२३	७।६	५।१९	७।१०	५।१५	७।१५	५।११	७।२०	५।६	७।२५	५।०	७।३०	४।५५	२८	
	३१	६।५५	५।३३	६।५८	५।२९	७।२	५।२६	७।६	५।२२	७।१०	५।१८	७।१४	५।१४	७।१९	५।९	७।२५	५।४	४	अगस्त
फरवरी	६	६।५०	५।३८	६।५३	५।३५	६।५७	५।३२	७।०	५।२९	७।४	५।२५	७।८	५।२१	७।१२	५।१७	७।१७	५।१३	१०	
	१२	६।४५	५।४४	६।४८	५।४१	६।५०	५।३८	६।५४	५।३५	६।५७	५।३२	७।१	५।२९	७।४	५।२५	७।८	५।२१	१६	
	१८	६।४०	५।४९	६।४२	५।४७	६।४४	५।४४	६।४७	५।४२	६।४९	५।३९	६।५२	५।३६	६।५५	५।३३	६।५८	५।३०	२२	
	२४	६।३३	५।५४	६।३५	५।५२	६।३७	५।५०	६।३९	५।४८	६।४१	५।४६	६।४३	५।४४	६।४६	५।४२	६।४८	५।३९	२९	
मार्च	२	६।२७	५।५८	६।२८	५।५७	६।२९	५।५६	६।३१	५।५४	६।३२	५।५३	६।३४	५।५१	६।३६	५।४९	६।३८	५।४८	४	सितम्बर
	८	६।१९	६।३	६।२०	६।२	६।२१	६।१	६।२२	६।०	६।२३	५।५९	६।२४	५।५८	६।२५	५।५७	६।२७	५।५६	१०	
	१४	६।१२	६।७	६।१३	६।७	६।१३	६।७	६।१३	६।६	६।१४	६।६	६।१४	६।५	६।१५	६।५	६।१५	६।४	१६	
	२०	६।४	६।११	६।५	६।१२	६।४	६।१२	६।४	६।१२	६।४	६।१२	६।४	६।१२	६।४	६।१२	६।४	६।१२	२२	
	२६	५।५७	६।१६	५।५६	६।१६	५।५६	६।१७	५।५५	६।१७	५।५४	६।१८	५।५४	६।१८	५।५३	६।१९	५।५२	६।२०	२८	
अप्रैल	२	५।४८	६।२०	५।४७	६।२१	५।४५	६।२२	५।४४	६।२४	५।४३	६।२५	५।४१	६।२७	५।४०	६।२८	५।३९	६।२९	६	अक्तूबर
	८	५।४०	६।२४	५।३९	६।२६	५।३७	६।२८	५।३५	६।२९	५।३४	६।३१	५।३२	६।३३	५।३०	६।३५	५।२७	६।३७	१२	
	१४	५।३३	६।२८	५।३१	६।३०	५।२९	६।३३	५।२७	६।३५	५।२४	६।३७	५।२२	६।३९	५।१९	६।४२	५।१६	६।४५	१७	
	२०	५।२६	६।३३	५।२३	६।३५	५।२१	६।३७	५।१८	६।४०	५।१५	६।४३	५।१२	६।४७	५।९	६।५०	५।६	६।५३	२३	
	२६	५।१९	६।३७	५।१७	६।४०	५।१३	६।४३	५।१०	६।४६	५।७	६।४९	५।३	६।५३	५।०	६।५७	४।५५	७।१	२९	
मई	१	५।१४	६।४०	५।११	६।४३	५।८	६।४७	५।४	६।५१	५।०	६।५४	४।५६	६।५८	४।५२	७।३	४।४७	७।८	३	नवम्बर
	७	५।९	६।४५	५।५	६।४८	५।२	६।५२	४।५८	६।५६	४।५३	७।०	४।४९	७।५	४।४४	७।१०	४।३९	७।१५	९	
	१३	५।४	६।४९	५।०	६।५३	४।५६	६।५७	४।५२	७।२	४।४७	७।६	४।४२	७।१२	४।३७	७।१७	४।३१	७।२३	१५	
	१९	५।०	६।५३	४।५६	६।५७	४।५२	७।२	४।४७	७।७	४।४२	७।१२	४।३६	७।१७	४।३०	७।२३	४।२४	७।३०	२०	
	२५	४।५७	६।५७	४।५३	७।२	४।४७	७।७	४।४३	७।१२	४।३७	७।१७	४।३१	७।२३	४।२५	७।२९	४।१८	७।३६	२६	
	३१	४।५५	७।०	४।५०	७।५	४।४५	७।११	४।४०	७।१६	४।३४	७।२२	४।२८	७।२८	४।२१	७।३५	४।१४	७।४२	२	दिसम्बर
जून	६	४।५४	७।४	४।४९	७।९	४।४३	७।१४	४।३८	७।२०	४।३२	७।२६	४।२५	७।३२	४।१८	७।३९	४।१०	७।४७	७	
	१२	४।५३	७।६	४।४८	७।१२	४।४२	७।१७	४।३७	७।२३	४।३१	७।२९	४।२४	७।३६	४।१७	७।४३	४।९	७।५१	१३	
	१८	४।५४	७।८	४।४८	७।१४	४।४३	७।१९	४।३७	७।२५	४।३१	७।३१	४।२४	७।३९	४।१७	७।४६	४।९	७।५४	१९	

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (मिश्र समय दृश्य) [illegible]

स्टं. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		३२°		३४°		३६°		३८°		४०°		४२°		४४°		४६°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जुलाई	६	५। ०	७।१०	४।५४	७।१५	४।५९	७।३०	४।४३	७।२६	४।३७	७।३२	४।३१	७।३८	४।२४	७।४५	४।१६	७।५३	४	जनवरी
	१२	५। ३	७। ८	४।५८	७।१३	४।५२	७।१९	४।४७	७।२४	४।४१	७।२९	४।३५	७।३६	४।२८	७।४२	४।२१	७।५०	१०	
	१८	५। ६	७। ६	५। १	७।११	४।५७	७।१६	४।५१	७।२१	४।४६	७।२६	४।४०	७।३२	४।३३	७।३८	४।२६	७।४५	१५	
	२४	५।१०	७। ३	५। ५	७। ७	५। ०	७।११	४।५६	७।१७	४।५१	७।२२	४।४५	७।२७	४।३९	७।३३	४।३३	७।३९	२१	
	३०	५।१४	६।५९	५।१०	७। ३	५। ६	७। ७	५। १	७।११	४।५६	७।१६	४।५१	७।२२	४।४६	७।२७	४।४०	७।३२	२७	
अगस्त	५	५।१८	६।५४	५।१४	६।५७	५।१०	७। १	५। ६	७। ५	५। २	७।१०	४।५७	७।१४	४।५२	७।१९	४।४७	७।२४	१	फरवरी
	११	५।२२	६।४८	५।१८	६।५२	५।१५	६।५५	५।११	६।५९	५। ७	७। २	५। ३	७। ६	४।५९	७।११	४।५४	७।१६	७	
	१७	५।२६	६।४२	५।२३	६।४५	५।२०	६।४८	५।१६	६।५१	५।१३	६।५४	५। ९	६।५८	५। ६	७। २	५। ९	७। ६	१३	
	२३	५।२९	६।३५	५।२७	६।३८	५।२४	६।४१	५।२२	६।४३	५।१९	६।४६	५।१६	६।४९	५।१३	६।५२	५। ९	६।५५	१८	
	२९	५।३३	६।२८	५।३१	६।३०	५।२९	६।३२	५।२७	६।३४	५।२४	६।३७	५।२२	६।३९	५।१९	६।४२	५।१६	६।४५	२४	
सितम्बर	४	५।३७	६।२१	५।३५	६।२२	५।३४	६।२४	५।३२	६।२५	५।३०	६।२७	५।२८	६।२९	५।२६	६।३१	५।२४	६।३३	२	मार्च
	१०	५।४१	६।१३	५।४०	६।१४	५।३९	६।१६	५।३७	६।१६	५।३६	६।१८	५।३४	६।१९	५।३३	६।२०	५।३१	६।१२	८	
	१६	५।४४	६। ५	५।४४	६। ६	५।४३	६। ६	५।४२	६। ७	५।४२	६। ८	५।४१	६। ८	५।४०	६। ९	५।३९	६।२०	१४	
	२२	५।४८	५।५७	५।४८	५।५७	५।४८	५।५८	५।४७	५।५८	५।४७	५।५८	५।४७	५।५८	५।४७	५।५८	५।४६	५।५८	२०	
	२८	५।५२	५।४९	५।५२	५।४९	५।५३	५।४९	५।५३	५।४८	५।५३	५।४८	५।५३	५।४८	५।५४	५।४७	५।५४	५।४७	२६	
अक्टूबर	३	५।५५	५।४३	५।५६	५।४२	५।५६	५।४१	५।५७	५।४१	५।५८	५।४०	५।५९	५।३९	६। ०	५।३८	६। १	५।३७	३०	
	९	५।५९	५।३५	६। ०	५।३४	६। १	५।३३	६। ३	५।३२	६। ४	५।३०	६। ५	५।२९	६। ७	५।२८	६। ८	५।२६	५	अप्रैल
	१५	६। ३	५।२८	६। ५	५।२६	६। ७	५।२५	६। ८	५।२३	६।१०	५।२१	६।१२	५।१९	६।१४	५।१७	६।१६	५।१५	१२	
	२१	६। ८	५।२१	६।१०	५।१९	६।१२	५।१७	६।१४	५।१५	६।१७	५।१२	६।१९	५।१०	६।२२	५। ७	६।२५	५। ४	१८	
	२७	६।१२	५।१५	६।१५	५।१३	६।१८	५।१०	६।२०	५। ७	६।२३	५। ४	६।२७	५। १	६।३०	४।५८	६।३३	४।५४	२४	
नवम्बर	२	६।१७	५।१०	६।२०	५। ७	६।२३	५। ३	६।२६	५। ०	६।३०	४।५७	६।३३	४।५३	६।३७	४।४९	६।४२	४।४५	३०	
	८	६।२२	५। ५	६।२६	५। २	६।२९	४।५८	६।३३	४।५४	६।३७	४।५०	६।४१	४।४३	६।४५	४।४२	६।५०	४।३७	६	मई
	१४	६।२८	५। १	६।३१	४।५७	६।३५	४।५३	६।३९	४।४९	६।४४	४।४५	६।४८	४।४०	६।५३	४।३५	६।५९	४।३०	१२	
	२०	६।३३	४।५८	६।३७	४।५४	६।४१	४।५०	६।४६	४।४५	६।५१	४।४०	६।५६	४।३५	७। १	४।३०	७। ७	४।२४	१९	
	२६	६।३८	४।५६	६।४३	४।५२	६।४७	४।४७	६।५२	४।४२	६।५७	४।३७	७। ३	४।३२	७। ९	४।२६	७।१५	४।१९	२५	
दिसम्बर	२	६।४३	४।५५	६।४८	४।५१	६।५२	४।४६	६।५८	४।४१	७। ३	४।३५	७। ९	४।२९	७।१६	४।२३	७।२२	४।१६	३१	
	८	६।४८	४।५६	६।५३	४।५१	६।५८	४।४६	७। ३	४।४०	७। ९	४।३५	७।१५	४।२९	७।२२	४।२२	७।२९	४।१५	७	जून
	१४	६।५२	४।५७	६।५०	४।५२	७। २	४।४७	७। ८	४।४१	७।१४	४।३५	७।२१	४।२९	७।२७	४।२२	७।३४	४।१५	१३	
	२०	६।५६	४।५९	७। ०	४।५४	७। ५	४।४९	७।१२	४।४३	७।१८	४।३७	७।२४	४।३१	७।३१	४।२४	७।३८	४।१७	१९	
	२६	६।५९	५। २	७। ४	४।५७	७। ९	४।५२	७।१४	४।४५	७।२०	४।४१	७।२७	४।३५	७।३४	४।२८	७।४१	४।२०	२६	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैं: टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		४८°		५०°		५२°		५४°		५६°		५८°		६०°		द. अक्षांश संस्कार	दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त			
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	मिनट	ता.	मास
जनवरी	१	७।५०	४।१७	७।५९	४। ९	८। ८	३।५९	८।१९	३।४८	८।३२	३।३६	८।४६	३।२१	९। ३	३। ५	०	३	जुलाई
	७	७।४९	४।२४	७।५८	४।१६	८। ७	४। ६	८।१८	३।५६	८।३०	३।४४	८।४३	३।३०	८।५९	३।१४	− १	९	
	१३	७।४७	४।३१	७।५५	४।२४	८। ४	४।१५	८।१४	४। ५	८।२५	३।५४	८।३८	३।४१	८।५२	३।२६	− ३	१५	
	१९	७।४२	४।४०	७।५०	४।३२	७।५९	४।२४	८। ८	४।१५	८।१८	४। ५	८।३०	३।५३	८।४३	३।४०	− ४	२२	
	२५	७।३७	४।४९	७।४४	४।४२	७।५२	४।३५	८। ०	४।२६	८। ९	४।१७	८।२०	४। ७	८।३२	३।५५	− ६	२८	
	३१	७।२९	४।५८	७।३५	४।५२	७।४२	४।४६	७।५०	४।३८	७।५८	४।३०	८। ७	४।२१	८।१८	४।१०	− ८	४	अगस्त
फरवरी	६	७।२१	५। ८	७।२६	५। ३	७।३२	४।५७	७।३९	४।५०	७।४६	४।४३	७।५४	४।३५	८। ३	४।२६	− ९	१०	
	१२	७।१२	५।१७	७।१६	५।१३	७।२१	५।८	७।२८	५। २	७।३४	४।५६	७।४०	४।५०	७।४८	४।४२	−१०	१६	
	१८	७। २	५.२७	७। ६	५।२३	७।१०	५।१९	७।१५	५।१४	७।२०	५। ९	७।२६	५। ४	७।३२	४।५८	−११	२२	
	२४	६।५१	५।३६	६।५४	५।३३	६।५७	५।३०	७। २	५।२६	७। ६	५।२२	७।१०	५।१८	७।१५	५।१३	−१२	२९	
मार्च	२	६।४०	५।४६	६।४२	५।४३	६।४४	५।४१	६।४८	५।३८	६।५१	५।३५	६।५४	५।३२	६।५८	५।२८	−१३	४	सितम्बर
	८	६।२८	५।५५	६।२९	५।५३	६।३१	५।५२	६।३३	५।५०	६।३५	५।४८	६।३७	५।४६	६।४०	५।४४	−१४	१०	
	१४	६।१६	६। ४	६।१७	६। ३	६।१८	६। २	६।१९	६। १	६।२०	६। ०	६।२१	५।५९	६।२२	५।५८	−१४	१६	
	२०	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१३	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१३	६। ४	६।१३	−१५	२२	
	२६	५।५१	६।२१	५।५०	६।२२	५।४९	६।२३	५।४९	६।२४	५।४८	६।२५	५।४७	६।२६	५।४६	६।२८	−१५	२८	
अप्रैल	२	५।३७	६।३१	५।३५	६।३३	५।३३	६।३५	५।३२	६।३७	५।३०	६।३९	५।२७	६।४२	५।२४	६।४५	−१५	६	अक्तूबर
	८	५।२५	६।४०	५।२२	६।४२	५।२०	६।४५	५।१७	६।४८	५।१४	६।५१	५।१०	६।५५	५। ६	६।५९	−१५	१२	
	१४	५।१३	६।४८	५।१०	६।५२	५। ६	६।५६	५। ३	६।५९	४।५९	७। ३	४।५४	७। ८	४।४८	७।१४	−१५	१७	
	२०	५। २	६।५७	४।५८	७। १	४।५३	७। ६	४।४९	७।१०	४।४४	७।१६	४।३८	७।२२	४।३०	७।२९	−१५	२३	
	२६	४।५१	७। ६	४।४६	७।११	४।४१	७।१६	४।३५	७।२१	४।२९	७।२८	४।२२	७।३५	४।१३	७।४४	−१४	२९	
मई	१	४।४२	७।१३	४।३७	७।१८	४।३१	७।२४	४।२५	७।३०	४।१७	७।३८	४। ९	७।४६	३।५९	७।५६	−१३	३	नवम्बर
	७	४।३३	७।२१	४।२७	७।२७	४।२०	७।३४	४।१३	७।४१	४। ४	७।५०	३।५४	८। ०	३।४३	८।११	−१३	९	
	१३	४।२४	७।२९	४।१७	७।३६	४।१०	७।४४	४। २	७।५२	३।५२	८। २	३।४१	८।१३	३।२८	८।२५	−१२	१५	
	१९	४।१७	७।३७	४। ९	७।४५	४। १	७।५३	३।५२	८। २	३।४१	८।१३	३।२९	८।२५	३।१४	८।३९	−११	२०	
	२५	४।११	७।४४	४। २	७।५२	३।५३	८। २	३।४३	८।११	३।३१	८।२३	३।१८	८।३६	३। २	८।५२	−१०	२६	
	३१	४। ६	७।५०	३।५७	७।५९	३।४७	८। ९	३।३६	८।१९	३।२४	८।३२	३। ९	८।४७	२।५१	९। ४	− ८	२	
जून	६	४। २	७।५५	३।५३	८। ५	३।४३	८।१५	३।३१	८।२६	३।१८	८।४०	३। २	८।५५	२।४३	९।१४	− ७	७	
	१२	४। ०	८। ०	३।५१	८। ९	३।४०	८।२०	३।२८	८।३२	३।१४	८।४६	२।५७	९। २	२।३८	९।२२	− ६	१३	
	१८	४। ०	८। २	३।५०	८।१२	३।३९	८।२३	३।२७	८।३५	३।१२	८।३९	२।५६	९। ६	२।३५	९।२६	− ५	[illegible]	
	२४	४। १	८। ४	३।५१	८।१३	३।४०	८।२४	३।२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टं: टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटाएं

उत्तर अक्षांश		४८°		५०°		५२°		५४°		५६°		५८°		६०°		द, अक्षांश संस्कार	दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त			
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	मिनट	ता.	मास
जुलाई	६	४। ८	८। १	३।५८	८।११	३।४८	८।२१	३।३६	८।३३	३।२२	८।४६	३। ६	९। २	२।४७	९।२१	०	४	जनवरी
	१२	४।१३	७।५७	४। ४	८। ७	३।५४	८।१६	३।४२	८।२८	३।३०	८।४१	३।१४	८।५६	२।५७	९।१३	+ २	१०	
	१८	४।१९	७।५३	४।११	८। १	४। १	८।१०	३।५०	८।२१	३।३८	८।३३	३।२४	८।४७	३। ८	९। ३	+ ३	१५	
	२४	४।२६	७।४६	४।१८	७।५४	४। ९	८। ३	३।५९	८।१३	३।४८	८।२४	३।३६	८।३६	३।२१	८।५१	+ ५	२१	
	३०	४।३३	७।३९	४।२६	७।४६	४।१८	७।५४	४। ९	८। ३	३।५८	८।१३	३।४७	८।२४	३।३४	८।३७	+ ६	२७	
अगस्त	५	४।४१	७।३०	४।३४	७।३७	४।२७	७।४३	४।१९	७।५२	४।१०	८। १	४। ०	८।११	३।४८	८।२२	+ ८	१	फरवरी
	११	४।४९	७।२१	४।४३	७।२६	४।३७	७।३२	४।२९	७।४०	४।२२	७।४८	४।१३	७।५६	४। ३	८। ६	+ ९	७	
	१७	४।५७	७।१०	४।५२	७।१५	४।४७	७।२०	४।३८	७।२७	४।३१	७।३४	४।२४	७।४१	४।१५	७।४९	+ १०	१३	
	२३	५। ५	६।५९	४।५९	७। ३	४।५६	७। ८	४।५१	७।१४	४।४५	७।१९	४।३९	७।२५	४।३२	७।३२	+ ११	१८	
	२९	५।१३	६।४८	५। ८	६।५१	५। ६	६।५४	५। १	६।५९	४।५७	६। ४	४।५२	६।५३	४।४६	७।१४	+ १२	२४	
सितम्बर	४	५।२२	६।३६	५।१९	६।३८	५।१६	६।४१	५।१२	६।४५	५। ९	६।४८	५। ५	६।५२	५। ०	६।५६	+ १३	२	मार्च
	१०	५।३०	६।२३	५।२८	६।२५	५।२६	६।२७	५।२३	६।३०	५।२०	६।३३	५।१८	६।३५	५।१४	६।३८	+ १४	८	
	१६	५।३८	६।११	५।३७	६।१२	५।३६	६।१३	५।३४	६।१५	५।३२	६।१७	५।३०	६।१८	५।२८	६।२०	+ १४	१४	
	२२	५।४६	५।५९	५।४६	५।५९	५।४५	५।५९	५।४४	६। ०	५।४४	६। १	५।४३	६। १	५।४३	६। २	+ १५	२०	
	२८	५।५५	५।४६	५।५५	५।४६	५।५५	५।४५	५।५५	५।४५	५।५६	५।४५	५।५६	५।४४	५।५७	५।४४	+ १५	२६	
अक्तूबर	३	६। १	५।३६	६। ३	५।३५	६। ४	५।३४	६। ४	५।३३	६। ६	५।३२	६। ७	५।३०	६। ९	५।२८	+ १५	३०	
	९	६।१०	५।२४	६।१२	५।२२	६।१४	५।२०	६।१५	५।१८	६।१८	५।१६	६।२०	५।१४	६।२३	५।१०	+ १५	५	अप्रैल
	१५	६।१९	५।१२	६।२१	५।१०	६।२४	५। ७	६।२७	५। ४	६।३०	५। १	६।३४	४।५७	६।३८	४।५३	+ १५	१२	
	२१	६।२८	५। १	६।३१	४।५७	६।३५	४।५४	६।३८	४।५०	६।४२	४।४६	६।४७	४।४१	६।५३	४।३६	+ १५	१८	
	२७	६।३७	४।५०	६।४१	४।४६	६।४५	४।४२	६।५०	४।३७	६।५५	४।३२	७। १	४।२६	७। ८	४।१९	+ १४	२४	
नवम्बर	२	६।४६	४।४१	६।५१	४।३६	६।५६	४।३०	७। १	४।२५	७। ८	४।१८	७।१५	४।११	७।२३	४। ३	+ १४	३०	
	८	६।५५	४।३२	७। १	४।२६	७। ७	४।२०	७।१३	४।१४	७।२०	४। ६	७।२९	३।५८	७।३९	३।४८	+ १३	६	मई
	१४	७। ४	४।२४	७।११	४।१८	७।१८	४।११	७।२५	४। ४	७।३३	३।५५	७।४३	३।४५	७।५४	३।३४	+ १२	१२	
	२०	७।१३	४।१७	७।२०	४।१०	७।२८	४। ३	७।३६	३।५५	७।४६	३।४५	७।५६	३।३४	८। ९	३।२१	+ ११	१९	
	२६	७।२२	४।१२	७।२९	४। ५	७।३८	३।५६	७।४७	३।४७	७।५७	३।३७	८। ९	३।२५	८।२३	३।११	+ १०	२५	
दिसम्बर	२	७।३०	४। ९	७।३८	४। १	७।४७	३।५२	७।५६	३।४२	८। ८	३।३१	८।२१	३।१८	८।३६	३। २	+ ८	३१	
	८	७।३७	४। ७	७।४५	३।५९	७।५५	३।४९	८। ५	३।३९	८।१७	३।२७	८।३०	३।१३	८।४७	२।५६	+ ७	७	जून
	१४	७।४२	४। ७	७।५१	३।५८	८। १	३।४८	८।११	३।३८	८।२४	३।२५	८।३८	३।१०	८।५६	२।५३	+ ५	१३	
	२०	७।४६	४। ८	७।५५	४। ०	८। ५	३।५०	८।१६	३।३८	८।२९	३।२६	८।४४	३।११	९। १	२।५४	+ ४	१९	
	२६	७।४९	४।१२	७।५८	४। ३	८। ८	३।५३	८।१९	३।४२	८।३२	३।३०	८।४६	३।१५	९। ४	२।५७	+ २	२६	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टै॰ टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

अक्षांशादि सारिणी

रेखांश-ग्रीन्विच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर
देशान्तर—रोपड़ नगर से अभीष्ट नगर का पूर्वापरान्तर मिनटों में
स्टैण्डर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैण्डर्ड टाईम का स्थानीय टाईम से अन्तर

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची, लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि 'स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२अंश ३०कला के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।*

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर		स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं क.	मि.		मिनट से.
अकोला (सी.पी.)	२०।४२	७७। २	पू.	२	−२१।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	प.	७	−३१।१२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	प.	१७	−१०।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	प.	७	−३०।४८
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	पू.	१	−२२।३२
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	पू.	२३	− १। ४
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	प.	१३	−११।२०
अलवर	२७।३४	७६।३८	पू.	१	−२३।२८
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	प.	७	−३०।४८
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	प.	१५	−३९।२८
अलीगढ़ (यू.पी)	२७।५४	७८। ६	पू.	६	−१७।३६
आगरा (")	२७।१०	७८। ५	प.	६	−१७।४०
आजमगढ़ (")	२६। ५	८३।१२	प.	२७	+ २।४८
आबू	२४।४०	७२।४५	प.	१५	−३९। ०
इटावा	२६।४७	७९। २	प.	१०	−१३।५२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	प.	३	−२६।४०
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	प.	३	−२७। ८
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	प.	११	−३५।१२
एलिचपुर (सी.पी.)	२१।१८	७७।३३	पू.	४	−१९।४८
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	प.	४	−२८।२८
कठूआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	प.	४	−२७।३६
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	प.	४	−२८।२०
करनाल	२९।४२	७७। २	पू.	२	−२१।५२
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	प.	३८	−३१।४४
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	पू.	४८	+२३।३६
काठमाण्डू (नैपा.)	२७।४२	८५।१२	पू.	३५	+१०।४८
कानपुर	२६।२७	८०।२४	पू.	१६	− ८।२४
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	प.	२०	−१३।३६
काशी	२५।२०	८३। ०	पू.	२६	+ २। ०
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	प.	१	−२४।४८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	प.	१०	−३४।२४
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	प.	१	−२२।४८

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर		स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि.		मि. से.
कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	पू.	४	−१९।४४
कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	प.	१२	−१२।२०
कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	प.	३	−२६।३२
कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	प.	१४	−१०।१६
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	प.	९	−३२।५६
कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	प.	१	−२४।५२
खंभात	२२।१९	७२।३६	प.	१६	−३९।३६
गया	२४।४९	८५। १	पू.	६	+१०। ४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	प.	७	−१७।२०
गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	पू.	२८	+ ४।२०
गिलगित	३५।५५	७४।२२	प.	९	−३२।३२
गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	प.	१०	− ३।४०
गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	प.	९	− ३। ४
गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	प.	४	−२८।१२
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	प.	२८	+३।३६
गोवा	१५।३०	७३।५७	प.	१०	−३४।१२
चम्बा	३२।२९	७६।१०	प.	१	−२५।२०
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	पू.	१	−२२।३२
चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४७	पू.	६१	+३७। ८
छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	पू.	१३	−११।२८
छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	पू.	३३	+ ८।४४
जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	पू.	४९	+२५। ४
जम्मू	३२।४४	७४।५४	प.	६	−३०।२४
जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	पू.	१४	−१०। ४
जयपुर	२६।५५	७५।५२	प.	३	−२६।३२
जालन्धर	३१।१९	७५।१८	प.	५	−२८।४८
जामनगर	२२।२७	७०। ७	प.	२६	−४९।३२
जीन्द	२९।१९	७६।२३	प.	१	−२४।२८
जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	प.	२४	−४७।३६
जैसलमेर	२९।५५	७०।५७	प.	२२	−४६।१२
जोधपुर	२६।१८	७३। ४	प.	१४	−३७।४४
जौनपुर	२५।४६	८३।४८	प.	[illegible]	[illegible]

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर		स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं क.	मि.		मि. से.
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	प.	१	−२५।१२
झांसी	२५।२७	७८।३७	पू.	८	−१५।३२
झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	प.	११	− ४।५२
ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	पू.	२	−२२। ०
टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	प.	३	−२६।४०
डिबाई	२८।१२	७८।१५	पू.	७	−१७। ०
डेराइस्माइलखां (पा	३१।५१	७०।५६	प.	२२	−१६।१६
डरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	प.	२३	−१६।४४
ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	पू.	५६	+ १।४४
तलागंग	३२।५६	७२।२८	प.	१६	−४०। ८
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	प.	९	−१४।५६
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	पू.	३८	+ १३।४८
द्वारिका	२२।१४	६९। १	प.	३०	−५३।५६
दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	पू.	४७	+ २३।१२
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	पू.	३	−२१।१२
देहरादून	३०।१९	७८। ४	पू.	६	−१७।४४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	पू.	६	−१८।२
नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	प.	१४	−३८।२०
नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	प.	७	−३०।५६
नागपुर	२१। ९	७९। ९	पू.	११	−१३।२४
नाभा	३०।२५	७६। ९	प.	१	−२५।२४
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	प.	११	−३४।३२
नासिक	२०। २	७३।५०	प.	११	−३४।४०
नैनीताल	२९।२३	७९।३०	प.	१२	−१२। ०
पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	पू.	३५	+१०।५२
पटियाला	३०।२०	७६।२५	प.	१	−२४।२०
पठानकोट	३२।१७	७५।४२	प.	३	−२७।१२
प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	पू.	२२	− २।२४
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	पू.	१४	−१०।२८
पुञ्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	प.	९	−३३।२८
पूना	१९। ०	७३।५५	प.	१४	−[illegible]

* नगर के रेखांश ८२°३०' से अधिक या कम होने पर स्टैण्डर्ड अन्तर क्रमशः धन या ऋण होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारिणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिनट	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	प. २७	–५०।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	पू. १२	–११।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	प. ६	–३०।१२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	प. ७	–३१।२०
बड़ौदा	२२। ०	७३।३०	प. १२	–३६। ०
बम्बई	१९। ०	७२।५४	प. १४	–३८।२४
बरेली	२८।२२	७९।२७	पू. १२	–१२।१२
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	पू. १२	–११।५२
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	पू. ४५	+२१।२८
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	प. १९	–४२।५२
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	पू. २३	– १। ८
बीकानेर	२८। १	७३।२२	प. १३	–३६।३२
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	प. ३	–२६।५२
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	पू. ५	–१९।२८
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	प. ६	–३०। ०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	पू. ४	–२०। ०
भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५९	पू. ४२	–१७।५६
भोपाल (म.भा.)	२३।१५	७७।३६	पू. ४	–१९।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	पू. ५४	+३०। ०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	पू. १५	– ८।५२
मथुरा	२७।२८	७७।४१	पू. ५	–१९।१६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	प. २	–२६। ४
मियांवाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	प. २०	–१३।४८
मिण्टगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।२१	प. १३	– ६।३६
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	प. २०	–१३।५६
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	पू. ३६	+११।४८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	पू. ७०	+४५।५२
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	पू. ९	–१४।४४
मेरठ	२९। १	७७।४५	पू. ५	–१९। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	पू. १	–२३।१२
मण्डी (हि. प्र)	३१।४३	७६।५८	पू. २	–२२। ८

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मिनट	मि. से.
रतलाम	२३।३१	७५। ७	प. ६	–२९।३२
रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	प. १३	–३६।४४
रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	पू. ११	–१२।३२
रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	प. १४	– ७।३६
राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७। ०	८१।४८	पू. २१	– २।४८
रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	पू. १	–२३।२०
रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	पू. १९	– ४।४४
रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	पू. २१	– ३।१६
राजकोट	२२।१८	७०।५६	प. २२	–४६।१६
रोहतक	२८।५४	७६।३८	पू. १	–२३।२८
रोपड़ (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	पू. ०	–२४।००
लखनऊ	२६।५५	८०।५९	पू. १८	– ६। ४
लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	प. १४	– ७।४०
लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	प. ८	– २।१६
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	प. २	–२६।२४
शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	प. ३१	–५५।२०
शिमला	३१। ६	७७।१३	पू. ३	–२१। ८
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	प. ७	–३०।३६
सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	प. १५	– ९।२०
सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	पू. ४	–२०।२८
सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	प. ८	– १।३६
सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	प. १०	–३३।५२
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	पू. ९	–१५। ०
सूरत	२१।१२	७२।५२	प. १५	–३८।३२
सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	पू. ३	–२१।२४
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	पू. ७	–१७। ८
हिसार	२९।१०	७५।४६	प. ३	–२६।५६
हैदराबाद (सिंध.)	२५।२५	६८।३८	प. ३१	–५५।२८
हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	पू. ८	–१६। ०
होशियार पुर	३१।३२	७५।५७	प. २	–२६।१२
होशंगाबाद (सी.पी.)	२२।४६	७७।४५	पू. ५	–१९। ०

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टै.टा. से. देशीय स्टै. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घ. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३०	पू.६९।१८	– १। ०	+७।१२
कन्दहार "	उ.३१।३७	पू.६५।३०	– १। ०	– ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ.३०।१८	पू.६७। ०	– ०।३०	–३२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ.२१।५९	पू.९६। ८	+ १। ०	– ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ.१६।४५	पू.९६।१३	+ १। ०	– ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ. १।१७	.१०३।५१	+ २। ०	–३४।३६
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	प.४४।२७	– २।३०	– २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू.३९।५४	– २।३०	–२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू.५१।२५	– २। ०	– ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू.३१।१५	– ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा (स्विट्जर)	उ.४६।१३	पू. ६। ७	– ४।४०	–३५।३२
जेरुसलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू.३५।१४	– ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प.७४। ०	–१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन "	उ.३८।५५	प.७७। ४	–१०।३०	– ८।१६
बर्लिन (पू.जर्मनी)	उ.५२।३२	पू.१३।२५	– ४।३०	– ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू.१९। ३	– ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	– ५।३०	– ०।२०
ग्रीनविच "	उ.५१।३०	० ०	– ५।३०	– ० ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ.२९।४०	पू.९१ ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्त्तगाल)	उ.३८।४४	प. ९। ९	– ५।३०	–३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ.२३।४३	पू.९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ.२४।५१	पू.६७। ४	– ०।३०	–३१।४४
नैरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू.३६।५२	– २।३०	–३२।३२
मोम्बासा "	द. ४। ०	पू.३९।४०	– २।३०	–२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू.३२।५६	– २।३०	–४८।१६
मोशी "	द. ३।२१	पू.३७।२०	– २।३०	–३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	.१३९।४५	+ ३।३०	+१९। ०
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	प. २।२०	– ४।३०	–५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।४५	पू.३७।३७	– २।३०	–२९।३२
रोम (इटली)	उ.४१।५५	पू.१२।२८	– ४।३०	–१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१२	पू.११४।१	+ २।३०	–२३।१२
पेकिंग "	उ.३९।५५	११६।२४	+ २।३०	–१४।२४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(कोष्ठक नं० ३)

पूर्व रेखांश	सां०का० संस्कार
अं० क०	संस्कार
८१ ०	+ ४५
१०१ ०	+ ४४
१२१ ०	+ ४२
१४१ ०	+ ४१
१६१ ०	+ ४०
१८१ ०	+ ३८
२०१ ०	+ ३७
२२१ ०	+ ३६
२४१ ०	+ ३४
२६१ ०	+ ३३
२८१ ०	+ ३२
३०१ ०	+ ३१
३२१ ०	+ २९
३४१ ०	+ २८
३६१ ०	+ २७
३८१ ०	+ २५
४०१ ०	+ २४
४२१ ०	+ २३
४४१ ०	+ २१
४६१ ०	+ २०
४८१ ०	+ १९
५०१ ०	+ १७
५२१ ०	+ १६
५४१ ०	+ १५
५६१ ०	+ १३
५८१ ०	+ १२
६०१ ०	+ ११
६२१ ०	+ १०
६४१ ०	+ ८
६६१ ०	+ ७
६८१ ०	+ ६
७०१ ०	+ ४
७२१ ०	+ ३
७४१ ०	+ २
७६१३०	०
७९१ ०	− २
८११ ०	− ३
८३१ ०	− ४
८५१ ०	− ६
८७१ ०	− ७
८९१ ०	− ८
९११ ०	− १०
९३१ ०	− ११
९५१ ०	− १२
९७१ ०	− १३
९९१ ०	− १५
१०११ ०	− १६
१०३१ ०	− [illegible]

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० ४)

घ० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०
०	०१ ०	०१ १	०१ २	०१ २	०१ ३	०१ ४	०१ ५	०१ ६	०१ ७	०१ ७	०१ ८	०१ ९
१	०१०	०११	०११	०१२	०१३	०१४	०१५	०१६	०१६	०१७	०१८	०१९
२	०२०	०२१	०२१	०२२	०२३	०२४	०२५	०२५	०२६	०२७	०२८	०२९
३	०३०	०३०	०३१	०३२	०३३	०३४	०३४	०३५	०३६	०३७	०३८	०३९
४	०४९	०४०	०४१	०४२	०४३	०४४	०४४	०४५	०४६	०४७	०४८	०४८
५	०४९	०५०	०५१	०५२	०५३	०५३	०५४	०५५	०५६	०५७	०५७	०५८
६	०५९	१ ०	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	११०	१११	१११	११२	१११३	११४	१११५	१११६	१११७	१११७	१११८
८	१११९	१२०	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२५	१२६	१२७	१२८
९	१२९	१३०	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८
१०	१३९	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८
११	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२	१५३	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५७
१२	१५८	१५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२१०	२११	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१६	२१७
१४	२१८	२१९	२२०	२२०	२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२५	२२६	२२७
१५	२२८	२२९	२२९	२३०	२३१	२३२	२३३	२३४	२३४	२३५	२३६	२३७
१६	२३८	२३९	२३९	२४०	२४१	२४२	२४३	२४३	२४४	२४५	२४६	२४७
१७	२४८	२४८	२४९	२५०	२५१	२५२	२५२	२५३	२५४	२५५	२५६	२५७
१८	२५७	२५८	२५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३१०	३११	३१२	३१२	३१३	३१४	३१५	३१५	३१६
२०	३१७	३१८	३१९	३२०	३२०	३२१	३२२	३२३	३२४	३२५	३२५	३२६
२१	३२७	३२८	३२९	३२९	३३०	३३१	३३२	३३३	३३४	३३४	३३५	३३६
२२	३३७	३३८	३३८	३३९	३४०	३४१	३४२	३४३	३४३	३४४	३४५	३४६
२३	३४७	३४८	३४८	३४९	३५०	३५१	३५२	३५२	३५३	३५४	३५५	३५६

अयनांश सारिणी (भाग २ य)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१२	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दिसम्बर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अयनांश सारिणी (भाग १ म)

ई०सन्	अयनांश	ई०सन्	अयनांश
	अं०क०वि०		अं०क०वि०
१८७६	२२। ६।३७	१९२४	२२।४६।४९
१८७७	२२। ७।२७	१९२५	२२।४७।३९
१८७८	२२। ८।१७	१९२६	२२।४८।३०
१८७९	२२। ९। ७	१९२७	२२।४९।२०
१८८०	२२। ९।५८	१९२८	२२।५०।१०
१८८१	२२।१०।४८	१९२९	२२।५१। ०
१८८२	२२।११।३८	१९३०	२२।५१।५१
१८८३	२२।१२।२८	१९३१	२२।५२।४१
१८८४	२२।१३।१९	१९३२	२२।५३।३१
१८८५	२२।१४। ९	१९३३	२२।५४।२१
१८८६	२२।१४।५९	१९३४	२२।५५।१२
१८८७	२२।१५।५०	१९३५	२२।५६। २
१८८८	२२।१६।४०	१९३६	२२।५६।५२
१८८९	२२।१७।३०	१९३७	२२।५७।४२
१८९०	२२।१८।२०	१९३८	२२।५८।३३
१८९१	२२।१९।११	१९३९	२२।५९।२३
१८९२	२२।२०। १	१९४०	२३। ०।१३
१८९३	२२।२०।५१	१९४१	२३। १। ४
१८९४	२२।२१।४१	१९४२	२३। १।५४
१८९५	२२।२२।३२	१९४३	२३। २।४४
१८९६	२२।२३।२२	१९४४	२३। ३।३४
१८९७	२२।२४।१२	१९४५	२३। ४।२५
१८९८	२२।२५। २	१९४६	२३। ५।१५
१८९९	२२।२५।५३	१९४७	२३। ६। ५
१९००	२२।२६।४३	१९४८	२३। ६।५५
१९०१	२२।२७।३३	१९४९	२३। ७।४६
१९०२	२२।२८।२३	१९५०	२३। ८।३६
१९०३	२२।२९।१४	१९५१	२३। ९।२६
१९०४	२२।३०। ४	१९५२	२३।१०।१६
१९०५	२२।३०।५४	१९५३	२३।११। ७
१९०६	२२।३१।४४	१९५४	२३।११।५७
१९०७	२२।३२।३५	१९५५	२३।१२।४७
१९०८	२२।३३।२५	१९५६	२३।१३।३८
१९०९	२२।३४।१५	१९५७	२३।१४।२८
१९१०	२२।३५। ५	१९५८	२३।१५।१८
१९११	२२।३५।५६	१९५९	२३।१६। ८
१९१२	२२।३६।४६	१९६०	२३।१६।५९
१९१३	२२।३७।३६	१९६१	२३।१७।४९
१९१४	२२।३८।२६	१९६२	२३।१८।३९
१९१५	२२।३९।१७	१९६३	२३।१९।२९
१९१६	२२।४०। ७	१९६४	२३।२०।१९
१९१७	२२।४०।५७	१९६५	२३।२१।१०
१९१८	२२।४१।४७	१९६६	२३।२२। ०
१९१९	२२।४२।३८	१९६७	२३।२२।५०
१९२०	२२।४३।२८	१९६८	२३।२३।४०
१९२१	२२।४४।१८	१९६९	२३।२४।३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

२३°.१५' अयनांशीय निरयण लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०' के लिए

हरिद्वार, भटिण्डा, करनाल, अम्बाला एवं पटियाला आदि नगरों के लिए उपयोगी ।

राशि→	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं मि से	गति से
०.	१९। ४।५९	१७३	२०।३८।३८	२०७	२२।३३। ५	२५३	०।४७।५७	२८२	३। ९।४८	२८२	५।२९। १	२७५
१	१९। ७।५२	१७४	२०।४२। ५	२०८	२२।३७।१८	२५५	०।५२।३९	२८३	३।१४।३०	२८२	५।३३।३६	२७६
२	१९।१०।४६	१७५	२०।४५।३३	२०९	२२।४१।३३	२५६	०।५७।२२	२८२	३।१९।१२	२८२	५।३८।१२	२७६
३	१९।१३।४१	१७५	२०।४९। २	२११	२२।४५।४९	२५७	१। २। ४	२८३	३।२३।५३	२८१	५।४२।४८	२७५
४	१९।१६।३६	१७७	२०।५२।३३	२१२	२२।५०। ६	२५८	१। ६।४७	२८४	३।२८।३४	२८१	५।४७।२३	२७५
५	१९।१९।३३	१७७	२०।५६। ५	२१४	२२।५४।२४	२६०	१।११।३१	२८४	३।३३।१५	२८१	५।५१।५८	२७५
६	१९।२२।३०	१७८	२०।५९।३९	२१५	२२।५८।४४	२६१	१।१६।१५	२८४	३।३७।५६	२८१	५।५६।३४	२७६
७	१९।२५।२८	१७८	२१। ३।१४	२१७	२३। ३। ५	२६३	१।२०।५९	२८४	३।४२।३७	२८१	६। १। ९	२७५
८	१९।२८।२६	१८०	२१। ६।५१	२१८	२३। ७।२८	२६४	१।२५।४३	२८४	३।४७।१७	२८०	६। ५।४४	२७५
९	१९।३१।२६	१८१	२१।१०।२९	२२०	२३।११।५२	२६५	१।३०।२७	२८४	३।५१।५७	२७९	६।१०।१९	२७५
१०	१९।३४।२७	१८२	२१।१४। ९	२२२	२३।१६।१७	२६६	१।३५।११	२८४	३।५६।३६	२७९	६।१४।५५	२७६
११	१९।३७।२९	१८२	२१।१७।५१	२२३	२३।२०।४३	२६७	१।३९।५५	२८५	४। १।१५	२८०	६।१९।३१	२७६
१२	१९।४०।३१	१८४	२१।२१।३४	२२५	२३।२५।१०	२६९	१।४४।४०	२८५	४। ५।५५	२७९	६।२४। ६	२७५
१३	१९।४३।३५	१८५	२१।२५।१९	२२७	२३।२९।३१	२७०	१।४९।२५	२८५	४।१०।३४	२७९	६।२८।४१	२७५
१४	१९।४६।४०	१८५	२१।२९। ६	२२८	२३।३४। ९	२७०	१।५४।१०	२८४	४।१५।१२	२७८	६।३३।१७	२७६
१५	१९।४९।४५	१८७	२१।३२।५४	२२९	२३।३८।३९	२७२	१।५८।५४	२८४	४।१९।५०	२७८	६।३७।५३	२७६
१६	१९।५२।५२	१८८	२१।३६।४३	२३२	२३।४३।११	२७३	२। ३।३८	२८४	४।२४।२८	२७८	६।४२।२८	२७५
१७	१९।५६। ०	१८९	२१।४०।३५	२३३	२३।४७।४४	२७३	२। ८।२२	२८५	४।२९। ६	२७८	६।४७। ४	२७६
१८	१९।५९। ९	१९१	२१।४४।२८	२३४	२३।५२।१७	२७४	२।१३। ७	२८५	४।३३।४४	२७७	६।५१।४०	२७६
१९	२०। २।२०	१९१	२१।४८।२२	२३६	२३।५६।५१	२७५	२।१७।५२	२८४	४।३८।२१	२७७	६।५६।१७	२७६
२०	२०। ५।३१	१९३	२१।५६।१६	२३८	०। १।२६	२७६	२।२२।३६	२८४	४।४२।५८	२७७	७। ०।५३	२७७
२१	२०। ८।४४	१९४	२२। ०।१५	२३९	०। ६। २	२७७	२।२७।२०	२८४	४।४७।३५	२७७	७। ५।३०	२७६
२२	२०।११।५८	१९५	२२। ४।१६	२४१	०।१०।३९	२७७	२।३२। ४	२८४	४।५२।१२	२७७	७।१०। ६	२७७
२३	२०।१५।१३	१९७	२२। ८।१८	२४२	०।१५।१६	२७९	२।३६।४८	२८३	४।५६।४९	२७६	७।१४।४३	२७७
२४	२०।१८।३०	१९८	२२।१२।२२	२४४	०।१९।५५	२७९	२।४१।३१	२८४	५। १।२५	२७७	७।१९।२०	२७७
२५	२०।२१।४८	१९९	२२।१६।२७	२४५	०।२४।३४	२८०	२।४६।१५	२८३	५। ६। २	२७६	७।२३।५७	२७८
२६	२०।२५। ७	२०१	२२।२०।३४	२४७	०।२९।१४	२८०	२।५०।५८	२८३	५।१०।३८	२७६	७।२८।३५	२७८
२७	२०।२८।२८	२०२	२२।२४।४३	२४९	०।३३।५४	२८०	२।५५।४१	२८२	५।१५।१४	२७६	७।३३।१३	२७९
२८	२०।३१।५०	२०३	२२।२८।५४	२५१	०।३८।३४	२८१	३। ०।२३	२८३	५।१९।५०	२७५	७।३७।५२	२७७
२९	२०।३५।१३	२०५	२२।३३। ५	२५१	०।४३।१५	२८२	३। ५। ६	२८२	५।२४।२५	२७६	७।४२।२९	२७८
३०	२०।३८।२८				०।४७।५७		३। ९।४८		५।२९। १		७।४७। ७	

राशि→	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धन (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से	साम्पा. काल घं मि. से.	गति से.	साम्पा. काल. घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से	साम्पा. काल घं मि. से	गति से
०	७।४७। ७	२७९	१०। ८।१३	२८५	१२।२८। ७	२६९	१४।३२।४८	२२५	१६।१४।५३	१८४	१७।४१।२४	१३६
१	७।५१।४६	२७९	१०।१२।५८	२८४	१२।३२।३६	२६८	१४।३६।३३	२२४	१६।१७।५७	१८३	१७।४४।१०	१६९
२	७।५६।२५	२७९	१०।१७।४२	२८४	१२।३७। ४	२६७	१४।४०।१७	२२३	१६।२१। ०	१८२	१७।४६।५६	१६५
३	८। १। ४	२७९	१०।२२।२६	२८५	१२।४१।३१	२६५	१४।४४।००	२२१	१६।२४। २	१८१	१७।४९।४१	१६५
४	८। ५।४४	२८०	१०।२७।११	२८४	१२।४५।५६	२६४	१४।४७।४१	२१९	१६।२७। ३	१८१	१७।५२।२६	१६५
५	८।१०।२३	२७९	१०।३१।५५	२८४	१२।५०।२०	२६४	१४।५१।२०	२१८	१६।३०। ४	१७९	१७।५५।११	१६५
६	८।१५। ३	२८०	१०।३६।१९	२८४	१२।५४।४४	२६२	१४।५४।५८	२१६	१६।३३। २	१७८	१७।५७।५६	१६५
७	८।१९।४३	२८०	१०।४१।२३	२८४	१२।५९। ६	२६०	१४।५८।३४	२१५	१६।३६। १	१७८	१८। ०।४१	१६५
८	८।२४।२४	२८१	१०।४६। ७	२८४	१३। ३।२३	२६१	१५। २। ९	२१२	१६।३८।५९	१७७	१८। ३।२६	१६५
९	८।२९। ५	२८१	१०।५०।५१	२८३	१३। ७।४५	२५९	१५। ५।४१	२१०	१६।४१।५६	१७५	१८। ६।११	१६५
१०	८।३३।४६	२८१	१०।५५।३४	२८३	१३।१२। ३	२५७	१५। ९।२३	२१०	१६।४४।५१	१७६	१८। ८।५६	१६५
११	८।३८।२७	२८२	११। ०।१७	२८३	१३।१६।२०	२५५	१५।१२।४३	२०८	१६।४७।४७	१७४	१८।११।४१	१६३
१२	८।४३। ०	२८२	११। ५। ०	२८२	१३।२०।३५	२५४	१५।१६।११	२०७	१६।५०।४१	१७४	१८।१४।२७	१६६
१३	८।४७।५१	२८२	११। ९।४२	२८२	१३।२४।४९	२५२	१५।१९।३८	२०६	१६।५३।३५	१७३	१८।१७।१३	१६६
१४	८।५२।३३	२८२	११।१४।२४	२८१	१३।२९। १	२५१	१५।२३। ४	२०४	१६।५६।२८	१७२	१८।१९।५९	१६५
१५	८।५७।१५	२८३	११।१९। ५	२८१	१३।३३।१२	२४९	१५।२६।२८	२०३	१६।५९।२०	१७१	१८।२२।४४	१६५
१६	९। १।५८	२८३	११।२३।४६	२८०	१३।३७।२१	२४८	१५।३२।५१	२०२	१७। २।१९	१७१	१८।२५।२०	१६७
१७	९। ६।४१	२८३	११।२८।२६	२८०	१३।४१।२९	२४६	१५।३७।१३	२००	१७। ५। २	१७०	१८।२८।१७	१६७
१८	९।११।२४	२८३	११।३३। ६	२८०	१३।४५।३५	२४५	१५।४६।३३	१९८	१७। ७।५२	१७१	१८।३१। ४	१६७
१९	९।१६। ७	२८३	११।३७।४६	२७८	१३।४९।४०	२४३	१५।५१।५१	१९७	१७।१०।४३	१७०	१८।३४।५१	१६७
२०	९।२०।५१	२८४	११।४२।२४	२७८	१३।५३।४३	२४२	१५।५४। ८	१९६	१७।१३।३३	१६८	१८।३७।३८	१६८
२१	९।२५।३४	२८३	११।४७। २	२७७	१३।५७।४५	२४०	१५।५९।२४	१९५	१७।१६।२१	१६९	१८।४०।२६	१६८
२२	९।३०।१८	२८४	११।५१।३९	२७६	१४। १।४५	२३८	१६।४।३२	१९४	१७।१९।१०	१६८	१८।४२।१४	१६८
२३	९।३५। २	२८४	११।५६।१५	२७६	१४। ५।४३	२३७	१६।८।५३	१९२	१७।२१।५८	१६७	१८।४५। २	१६९
२४	९।३९।४६	२८४	१२। ०।५१	२७५	१४। ९।४०	२३५	१६।१२।५	१९१	१७।२४।४५	१६८	१८।४७।५१	१७०
२५	९।४४।३०	२८४	१२। ५।२८	२७४	१४।१३।३५	२३४	१६।१५।१६	१८९	१७।२७।३३	१६७	१८।५०।४१	१७१
२६	९।४९।१५	२८५	१२।१०। ०	२७३	१४।१७।२९	२३२	१६। २।२५	१८८	१७।३०।२०	१६६	१८।५३।३२	१७१
२७	९।५३।५९	२८४	१२।१४।३१	२७२	१४।२१।२१	२३१	१६। ५।३३	१८८	१७।३३। ६	१६६	१८।५६।२२	१७१
२८	९।५८।४४	२८५	१२।१९। ५	२७१	१४।२५।१२	२२९	१६। ८।४१	८८७	१७।३५।५२	१६६	१८।५९।१४	१७२
२९	१०। ३।२९	२८५	१२।२३।३६	२७१	१४।२९। १	२२७	१६।११।४८	१८५	१७।३८।३८	१६६	१९। २। ६	१७२
३०	१०। ८।१३	२८४	१२।२८। ७		१४।३२।४८		१६।१४।५३		१७।४१।२४		१९। ७।५९	

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

चण्डीगढ़, जालन्धर, शिमला, लुधियाना एवं फिरोजपुर आदि नगरों के लिए उपयोगी।

राशि→	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति मे.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	१९। ४। ७	१७१	२०।३६।४७	२०५	२२।३०।४१	२५३	०।४५।४६	२८३	३। ८।२८	२८४	५।२८।४६	२७८
१	१९। ६।५८	१७२	२०।४०।१२	२०६	२२।३४।५४	२५४	०।५०।२९	२८४	३।१३।१२	२८४	५।३३।२४	२७९
२	१९। ९।५०	१७३	२०।४३।३८	२०८	२२।३९। ८	२५६	०।५५।१३	२८४	३।१७।५६	२८३	५।३८। ३	२७७
३	१९।१२।४३	१७३	२०।४७। ६	२०९	२२।४३।२४	२५७	०।५९।५७	२८५	३।२२।३९	२८३	५।४२।४०	२७७
४	१९।१५।३६	१७४	२०।५०।३५	२११	२२।४७।४१	२५८	१। ४।४२	२८५	३।२७।२२	२८४	५।४७।१७	२७७
५	१९।१८।३०	१७५	२०।५४। ६	२१३	२२।५१।५९	२६०	१। ९।२७	२८५	३।३२। ६	२८३	५।५१।५४	२७७
६	१९।२१।२५	१७६	२०।५७।३९	२१३	२२।५६।१९	२६१	१।१४।१२	२८५	३।३६।४९	२८२	५।५६।३२	२७८
७	१९।२४।२१	१७६	२१। १।१२	२१५	२३। ०।४०	२६३	१।१८।५७	२८६	३।४१।३१	२८२	६। १।१०	२७८
८	१९।२७।१७	१७७	२१। ४।४७	२१७	२३। ५। ३	२६४	१।२३।४३	२८५	३।४६।१३	२८२	६। ५।४७	२७७
९	१९।३०।१४	१७९	२१। ८।२४	२१९	२३। ९।२७	२६५	१।२८।२८	२८६	३।५०।५५	२८२	६।१०।२५	२७८
१०	१९।३३।१३	१८०	२१।१२। ३	२२०	२३।१३।५२	२६६	१।३३।१४	२८६	३।५५।३७	२८१	६।१५। २	२७७
११	१९।३६।१३	१८१	२१।१५।४३	२२२	२३।१८।१८	२६८	१।३८। ०	२८६	४। ०।१८	२८२	६।१९।४०	२७८
१२	१९।३९।१४	१८२	२१।१९।२५	२२४	२३।२२।४६	२६९	१।४२।४६	२८६	४। ५। ०	२८१	६।२४।१७	२७७
१३	१९।४२।१६	१८२	२१।२३। ९	२२५	२३।२७।१५	२७०	१।४७।३२	२८७	४। ९।४१	२८१	६।२८।५५	२७८
१४	१९।४५।१८	१८४	२१।२६।५४	२२७	२३।३१।४५	२७१	१।५२।१९	२८६	४।१४।२१	२८०	६।३३।३३	२७८
१५	१९।४८।२२	१८५	२१।३०।४१	२२९	२३।३६।१६	२७२	१।५७। ५	२८६	४।१९। २	२८१	६।३८।११	२७८
१६	१९।५१।२७	१८६	२१।३४।३०	२३०	२३।४०।४८	२७३	२। १।५१	२८६	४।२३।४२	२८०	६।४२।४९	२७८
१७	१९।५४।३३	१८७	२१।३८।२०	२३२	२३।४५।२१	२७४	२। ६।३७	२८६	४।२८।२२	२८०	६।४७।२७	२७९
१८	१९।५७।४०	१८८	२१।४२।१२	२३३	२३।४९।५५	२७५	२।११।२४	२८७	४।३३। २	२८०	६।५२। ६	२७८
१९	२०। ०।४८	१९०	२१।४६। ५	२३५	२३।५४।३०	२७५	२।१६।१०	२८६	४।३७।४२	२७९	६।५६।४४	२७९
२०	२०। ३।५८	१९१	२१।५०। ०	२३७	२३।५९। ५	२७७	२।२०।५६	२८६	४।४२।२१	२७९	७। १।२३	२७८
२१	२०। ७। ९	१९२	२१।५३।५७	२३९	०। ३।४२	२७८	२।२५।४२	२८६	४।४७। ०	२७९	७। ६। १	२७९
२२	२०।१०।२१	१९३	२१।५७।५६	२४०	०। ८।२०	२७९	२।३०।२८	२८५	४।५१।३९	२७९	७।१०।४०	२७९
२३	२०।१३।३४	१९५	२२। १।५६	२४२	०।१२।५९	२७९	२।३५।१३	२८६	४।५६।१८	२७९	७।१५।१९	२८०
२४	२०।१६।४९	१९६	२२। ५।५८	२४३	०।१७।३८	२८०	२।३९।५९	२८५	५। ०।५७	२७८	७।१९।५९	२७९
२५	२०।२०। ५	१९८	२२।१०। १	२४५	०।२२।१८	२८०	२।४४।४४	२८५	५। ५।३५	२७९	७।२४।३८	२८०
२६	२०।२३।२३	१९९	२२।१४। ६	२४७	०।२६।५८	२८१	२।४९।२९	२८५	५।१०।१४	२७८	७।२९।१८	२८०
२७	२०।२६।४२	२००	२२।१८।१३	२४८	०।३१।३९	२८२	२।५४।१४	२८५	५।१४।५२	२७८	७।३३।५८	२८०
२८	२०।३०। २	२०२	२२।२२।२१	२४९	०।३६।२१	२८२	२।५८।५९	२८४	५।१९।३०	२७८	७।३८।३८	२८०
२९	२०।३३।२४	२०३	२२।२६।३०	२५१	०।४१। ३	२८३	३। ३।४३	२८५	५।२४। ८	२७८	७।४३।१८	२८१
३०	२०।३६।४७		२२।३०।४१		०।४५।४६		३। ८।२८		५।२८।४६		७।४७।५९	

राशि→	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	७।४७।५९	२८०	१०।१०। ३	२८७	१२।३०।३०	२६९	१४।३४।५८	२२४	१६।१६।१३	१८२	१७।४१।४०	१६४
१	७।५२।३९	२८१	१०।१४।५०	२८६	१२।३४।५९	२६८	१४।३८।४२	२२३	१६।१९।१५	१८१	१७।४४।२४	१६२
२	७।५७।२०	२८१	१०।१९।३६	२८६	१२।३९।२७	२६७	१४।४२।२५	२२१	१६।२२।१६	१८०	१७।४७। ६	१६३
३	८। २। १	२८२	१०।२४।२२	२८६	१२।४३।५४	२६६	१४।४६। ६	२२०	१६।२५।१६	१७९	१७।४९।४९	१६३
४	८। ६।४३	२८२	१०।२९। ८	२८६	१२।४८।२०	२६५	१४।४९।४६	२१८	१६।२८।१५	१७८	१७।५२।३२	१६३
५	८।११।२५	२८२	१०।३३।५४	२८५	१२।५२।४५	२६३	१४।५३।२४	२१६	१६।३१।१३	१७८	१७।५५।१५	१६३
६	८।१६। ७	२८३	१०।३८।३९	२८५	१२।५७। ८	२६२	१४।५७। ०	२१५	१६।३४।११	१७७	१७।५७।५८	१६३
७	८।२०।४९	२८३	१०।४३।२४	२८६	१३। १।३०	२६०	१५। ०।३५	२१३	१६।३७। ८	१७५	१८।०।४१	१६३
८	८।२५।३२	२८३	१०।४८।१०	२८५	१३। ५।५०	२६०	१५। ४। ८	२११	१६।४०। ३	१७४	१८। ३।२४	१६२
९	८।३०।१५	२८३	१०।५२।५५	२८५	१३।१०।१०	२५८	१५। ७।३९	२१०	१६।४२।५७	१७४	१८। ६। ६	१६३
१०	८।३४।५८	२८४	१०।५७।४०	२८४	१३।१४।२८	२५६	१५।११। ९	२०८	१६।४५।५१	१७३	१८। ८।४९	१६३
११	८।३९।४२	२८४	११। २।२४	२८४	१३।१८।४४	२५५	१५।१४।३७	२०७	१६।४८।४४	१७२	१८।११।३२	१६३
१२	८।४४।२६	२८४	११। ७। ८	२८३	१३।२२।५९	२५३	१५।१८। ४	२०६	१६।५१।३६	१७१	१८।१४।१५	१६३
१३	८।४९।१०	२८४	११।११।५१	२८३	१३।२७।१२	२५२	१५।२१।३०	२०४	१६।५४।२७	१७१	१८।१६।५८	१६४
१४	८।५३।५४	२८४	११।१६।३४	२८३	१३।३१।२४	२५०	१५।२४।५४	२०२	१६।५७।१८	१७०	१८।१९।४२	१६४
१५	८।५८।३८	२८५	११।२१।१७	२८२	१३।३५।३४	२४९	१५।२८।१९	२०१	१७। ०। ८	१७०	१८।२२।२६	१६
१६	९। ३।२२	२८५	११।२५।५९	२८१	१३।३९।४३	२४७	१५।३१।३७	२००	१७। २।५८	१६९	१८।२५।१०	१६४
१७	९। ८। ८	२८५	११।३०।४०	२८१	१३।४३।५०	२४६	१५।३४।५७	१९८	१७। ५।४७	१६८	१८।२७।५४	१६५
१८	९।१२।५३	२८५	११।३५।२१	२८०	१३।४७।५६	२४४	१५।३८।१५	१९७	१७। ८।३५	१६८	१८।३०।३९	१६४
१९	९।१७।३८	२८५	११।४०। १	२८०	१३।५२। ०	२४३	१५।४१।३२	१९५	१७।११।२३	१६७	१८।३३।२३	१६५
२०	९।२२।१३	२८६	११।४४।४१	२७९	१३।५६। ३	२४१	१५।४४।४७	१९४	१७।१४।१०	१६७	१८।३६। ८	१६५
२१	९।२७। ९	२८६	११।४९।२०	२७८	१४। ०। ४	२३९	१५।४८। १	१९३	१७।१६।५७	१६६	१८।३८।५४	१६६
२२	९।३१।५५	२८६	११।५३।५८	२७७	१४। ४। ३	२३७	१५।५१।१४	१९२	१७।१९।४३	१६६	१८।४१।४०	१६६
२३	९।३६।४१	२८५	११।५८।३५	२७६	१४। ८। ०	२३६	१५।५४।२६	१९०	१७।२२।२९	१६५	१८।४४।२७	१६७
२४	९।४१।२६	२८६	१२। ३।११	२७६	१४।११।५६	२३५	१५।५७।३६	१८९	१७।२५।१४	१६५	१८।४७।१४	१६७
२५	९।४६।१२	२८६	१२। ७।४७	२७४	१४।१५।५१	२३३	१६। ०।४५	१८८	१७।२७।५९	१६५	१८।५०। १	१६७
२६	९।५०।५८	२८६	१२।१२।२१	२७४	१४।१९।४४	२३१	१६। ३।५३	१८७	१७।३०।४४	१६४	१८।५२।४९	१६८
२७	९।५५।४४	२८७	१२।१६।५५	२७३	१४।२३।३५	२२९	१६। ७। ०	१८५	१७।३३।२८	१६४	१८।५५।३८	१६९
२८	१०। ०।३१	२८६	१२।२१।२८	२७१	१४।२७।२४	२२८	१६।१०। ५	१८४	१७।३६।१२	१६४	१८।५८।२७	१६९
२९	१०। ५।१७	२८६	१२।२५।५९	२७१	१४।३१।१२	२२६	१६।१३। ९	१८४	१७।३८।५६	१६४	१९। १।१७	१७०
३०	१०।१०। ३		१२।३०।३०		१४।३४।५८		१६।१६।१३		१७।४१।४०		१९। ४। ७	१७०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

२३°।१५' अयनांशीय निरयण दशम लग्न सारिणी (सर्वत्र उपयोगी)

राशि→	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	१।२६। ३	२२६	३।२३।२६	२४५	५।३०।३६	२६१	७।४०।२२	२५४	९।४२।२०	२३३	११।३५।१३	२२०
१	१।२९।४९	२२६	३।२७।३१	२४६	५।३४।५७	२६१	७।४४।३६	२५३	९।४६।१३	२३३	११।३८।५३	२२१
२	१।३३।३५	२२७	३।३१।३७	२४७	५।३९।१८	२६१	७।४८।४९	२५३	९।५०। ६	२३२	११।४२।३४	२२०
३	१।३७।२२	२२७	३।३५।४४	२४८	५।४३।३९	२६१	७।५३। २	२५२	९।५३।५८	२३१	११।४६।१४	२२०
४	१।४१।१०	२२८	३।३९।५२	२४८	५।४८। ०	२६२	७।५७।१४	२५१	९।५७।४९	२३१	११।४९।५४	२२१
५	१।४४।५८	२२९	३।४४। ०	२४९	५।५२।२२	२६२	८। १।२५	२५१	१०। १।४०	२३०	११।५३।३५	२२०
६	१।४८।४७	२२९	३।४८। ९	२५०	५।५६।४४	२६१	८। ५।३६	२५०	१०। ५।३०	२२९	११।५७।१५	२२०
७	१।५२।३६	२३०	३।५२।१९	२५०	६। १। ५	२६२	८। ९।४६	२४९	१०। ९।१९	२२९	१२। ०।५५	२२०
८	१।५६।२६	२३०	३।५६।२९	२५१	६। ५।२७	२६२	८।१३।५५	२४९	१०।१३। ८	२२८	१२। ४।३५	२२०
९	२। ०।१६	२३१	४। ०।४०	२५२	६। ९।४९	२६१	८।१८। ४	२४८	१०।१६।५६	२२८	१२। ८।१५	२२१
१०	२। ४। ७	२३१	४। ४।५२	२५२	६।१४।१०	२६१	८।२२।१२	२४७	१०।२०।४४	२२७	१२।११।५६	२२०
११	२। ७।५८	२३२	४।९। ४	२५३	६।१८।३१	२६२	८।२६।१९	२४७	१०।२४।३१	२२७	१२।१५।३६	२२०
१२	२।११।५०	२३३	४।१३।१७	२५३	६।२२।५३	२६१	८।३०।२६	२४६	१०।२८।१८	२२६	१२।१९।१६	२२१
१३	२।१५।४३	२३२	४।१७।३०	२५४	६।२७।१४	२६१	८।३४।३२	२४५	१०।३२। ४	२२६	१२।२२।५७	२२१
१४	२।१९।३६	२३१	४।२१।४४	२५५	६।३१।३५	२६१	८।३८।३७	२४४	१०।३५।५०	२२५	१२।२६।३८	२२१
१५	२।२३।३०	२३५	४।२५।५९	२५६	६।३५।५६	२६०	८।४२।४१	२४४	१०।३९।३५	२२५	१२।३०।१९	२२१
१६	२।२७।२५	२३६	४।३०।१५	२५६	६।४०।१६	२६०	८।४६।४५	२४३	१०।४३।२०	२२४	१२।३४। ०	२२१
१७	२।३१।२१	२३६	४।३४।३१	२५६	६।४४।३६	२६०	८।५०।४८	२४२	१०।४७। ४	२२४	१२।३७।४१	२२१
१८	२।३५।१७	२३७	४।३८।४७	२५७	६।४८।५६	२५९	८।५४।५०	२४१	१०।५०।४८	२२४	१२।४१।२२	२२२
१९	२।३९।१४	२३७	४।४३। ४	२५७	६।५३।१६	२५९	८।५८।५१	२४१	१०।५४।३२	२२३	१२।४५। ४	२२२
२०	२।४३।११	२३८	४।४७।२१	२५८	६।५७।३५	२५९	९। २।५२	२४०	१०।५८।१५	२२३	१२।४८।४६	२२२
२१	२।४७। ९	२३९	४।५१।३९	२५८	७। १।५४	२५८	९। ६।५२	२३९	११। १।५८	२२३	१२।५२।२८	२२२
२२	२।५१। ८	२४०	४।५५।५७	२५९	७। ६।१२	२५८	९।१०।५१	२३८	११। ५।४१	२२२	१२।५६।१०	२२३
२३	२।५५। ८	२४०	५। ०।१६	२५९	७।१०।३०	२५८	९।१४।४९	२३९	११। ९।२३	२२२	१२।५९।५३	२२३
२४	२।५९। ८	२४१	५। ४।३५	२५९	७।१४।४८	२५७	९।१८।४८	२३७	११।१३। ५	२२२	१३। ३।३६	२२४
२५	३। ३। ९	२४२	५। ८।५४	२६०	७।१९। ५	२५६	९।२२।४५	२३६	११।१६।४७	२२२	१३। ७।२०	२२४
२६	३। ७।१८	२४३	५।१३।१४	२६०	७।२३।२१	२५६	९।२६।४१	२३६	११।२०।२९	२२१	१३।११। ४	२२४
२७	३।११।१४	२४३	५।१७।३४	२६०	७।२७।३७	२५६	९।३०।३७	२३५	११।२४।१०	२२१	१३।१४।४८	२२४
२८	३।१५।१७	२४४	५।२१।५४	२६१	७।३१।५३	२५५	९।३४।३२	२३४	११।२७।५१	२२१	१३।१८।३२	२२५
२९	३।१९।२१	२४५	५।२६।१५	२६१	७।३६। ८	२५४	९।३८।२६	२३४	११।३१।३२	२२१	१३।२२।१७	२२६
३०	३।२३।२६		५।३०।३६		७।४०।२२		९।४२।२०		११।३५।१३		१३।२६। ३	

राशि→	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	१३।२६। ३	२२६	१५।२३।२६	२४५	१७।३०।३६	२६१	१९।४०।२२	२५४	२१।४२।२०	२३३	२३।३५।१३	२२०
१	१३।२९।४९	२२६	१५।२७।३१	२४६	१७।३४।५७	२६१	१९।४४।३६	२५३	२१।४६।१३	२३३	२३।३८।५३	२२१
२	१३।३३।३५	२२७	१५।३१।३७	२४७	१७।३९।१८	२६१	१९।४८।४९	२५३	२१।५०। ६	२३२	२३।४२।३४	२२०
३	१३।३७।२२	२२७	१५।३५।४४	२४८	१७।४३।३९	२६२	१९।५३। २	२५२	२१।५३।५८	२३१	२३।४६।१४	२२०
४	१३।४१।१०	२२८	१५।३९।५२	२४८	१७।४८। १	२६१	१९।५७।१४	२५१	२१।५७।४९	२३१	२३।४९।५४	२२१
५	१३।४४।५८	२२९	१५।४४। ०	२४९	१७।५२।२२	२६२	२०। १।२५	२५१	२२। १।४०	२३०	२३।५३।३५	२२०
६	१३।४८।४७	२२९	१५।४८। ९	२५०	१७।५६।४४	२६१	२०। ५।३६	२५०	२२। ५।३०	२२९	२३।५७।१५	२२०
७	१३।५२।३६	२३०	१५।५२।१९	२५०	१८। १। ५	२६२	२०। ९।४६	२४९	२२। ९।१९	२२९	०। ०।५५	२२०
८	१३।५६।२६	२३०	१५।५६।२९	२५१	१८। ५।२७	२६२	२०।१३।५५	२४९	२२।१३। ८	२२८	०। ४।३५	२२०
९	१४। ०।१६	२३१	१६। ०।४०	२५२	१८। ९।४९	२६१	२०।१८। ४	२४८	२२।१६।५६	२२८	०। ८।१५	२२१
१०	१४। ४। ७	२३१	१६। ४।५२	२५२	१८।१४।१०	२६१	२०।२२।१२	२४७	२२।२०।४४	२२७	०।११।५६	२२०
११	१४। ७।५८	२३२	१६। ९। ४	२५३	१८।१८।३१	२६२	२०।२६।१९	२४७	२२।२४।३१	२२७	०।१५।३६	२२०
१२	१४।११।५०	२३३	१६।१३।१७	२५३	१८।२२।५३	२६१	२०।३०।२६	२४६	२२।२८।१८	२२६	०।१९।१६	२२१
१३	१४।१५।४३	२३२	१६।१७।३०	२५४	१८।२७।१४	२६१	२०।३४।३२	२४५	२२।३२। ४	२२६	०।२२।५७	२२१
१४	१४।१९।३६	२३४	१६।२१।४४	२५५	१८।३१।३५	२६०	२०।३८।३७	२४४	२२।३५।५०	२२५	०।२६।३८	२२१
१५	१४।२३।३०	२३५	१६।२५।५९	२५६	१८।३५।५५	२६१	२०।४२।४१	२४४	२२।३९।३५	२२५	०।३०।१९	२२१
१६	१४।२७।२५	२३६	१६।३०।१५	२५६	१८।४०।१६	२६०	२०।४६।४५	२४३	२२।४३।२०	२२४	०।३४। ०	२२१
१७	१४।३१।२१	२३६	१६।३४।३१	२५६	१८।४४।३६	२६०	२०।५०।४८	२४२	२२।४७। ४	२२४	०।३७।४१	२२१
१८	१४।३५।१७	२३७	१६।३८।४७	२५७	१८।४८।५६	२६०	२०।५४।५०	२४१	२२।५०।४८	२२४	०।४१।२२	२२२
१९	१४।३९।१४	२३७	१६।४३। ४	२५७	१८।५३।१६	२५९	२०।५८।५१	२४१	२२।५४।३२	२२३	०।४५। ४	२२२
२०	१४।४३।११	२३८	१६।४७।२१	२५८	१८।५७।३५	२५९	२१। २।५२	२४०	२२।५८।१५	२२३	०।४८।४६	२२२
२१	१४।४७। ९	२३९	१६।५१।३९	२५८	१९। १।५४	२५८	२१। ६।५२	२३९	२३। १।५८	२२३	०।५२।२८	२२२
२२	१४।५१। ८	२४०	१६।५५।५७	२५९	१९। ६।१२	२५८	२१।१०।५१	२३९	२३। ५।४१	२२२	०।५६।१०	२२३
२३	१४।५५। ८	२४०	१७। ०।१६	२५९	१९।१०।३०	२५८	२१।१४।५०	२३८	२३। ९।२३	२२२	०।५९।५३	२२३
२४	१४।५९। ८	२४१	१७। ४।३५	२५९	१९।१४।४८	२५७	२१।१८।४८	२३७	२३।१३। ५	२२२	१। ३।३६	२२४
२५	१५। ३। ९	२४२	१७। ८।५४	२६०	१९।१९। ५	२५६	२१।२२।४५	२३६	२३।१६।४७	२२२	१। ७।२०	२२४
२६	१५। ७।११	२४३	१७।१३।१४	२६०	१९।२३।२१	२५६	२१।२६।४१	२३६	२३।२०।२९	२२१	१।११। ४	२२४
२७	१५।११।१४	२४३	१७।१७।३४	२६०	१९।२७।३७	२५६	२१।३०।३७	२३५	२३।२४।१०	२२१	१।१४।४८	२२४
२८	१५।१५।१७	२४४	१७।२१।५४	२६१	१९।३१।५३	२५५	२१।३४।३२	२३४	२३।२७।५१	२२१	१।१८।३२	२२५
२९	१५।१९।२१	२४५	१७।२६।१५	२६१	१९।३६। ८	२५४	२१।३८।२६	२३४	२३।३१।३२	२२१	१।२२।१७	२२६
३०	१५।२३।२६		१७।३०।३६		१९।४०।२२		२१।४२।२०		२३।३५।१३		१।२६। ३	

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि :—

यह मानना पड़ेगा कि पाश्चात्त्य गणना-पद्धति सूक्ष्मता, सरलता एवं लाघव की दृष्टि से भारतीय गणना-पद्धति से कहीं आगे बढ़ चुकी है। हम चाहते हैं—हमारे पाठक इन पद्धतियों के आवश्यक ज्ञान से वञ्चित न रहें। यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आ पाती, इसलिए इस विषय में पाश्चात्त्य ज्योतिषियों ने साम्पातिक काल (Sidereal-time) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिक काल क्या है?" इस विषय में कुछ भी सैद्धान्तिक विवेचन न करते हुए इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्वसाधारणोपयोगी विधि ही प्रस्तुत करते हैं—

विधि:—सां० का० (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण, जो इस पञ्चाङ्ग में दिए गए कोष्ठकों (सारिणियों) से बिना किसी परिश्रम के प्रस्तुत किये जा सकते हैं, प्रस्तुत कीजिए—

†(१) **अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)**
§(२) **अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)**
(३) **अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या −)**

} ये तीनों उपकरण ११८–१९ पृष्ठस्थ "अक्षांशादि सारिणी" से उठाइए।

विशेष:—यदि 'अक्षांशादि सारिणी' में अभीष्टनगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि उपयोग में लाए जा सकते हैं।

(४) **अभीष्ट नगर का स्थानीय समय:**—जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्टनगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्टनगर का स्थानीय समय बन जाता है। '+' यह चिह्न जोड़ने की एवं '—' यह चिह्न घटाने की क्रिया को बतलाता है।

(५) **अभीष्ट तारीख का अयनांश :**—पृ० १२२ पर अयनांश सारिणी को दो (१म एवं २य) भागों में दिया गया है। सारिणी के १म भाग में से अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश ले और उनमें सारिणी के २य भाग में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का कलादि फल लेकर जोड़ देने से अभीष्ट दिन के स्पष्ट अयनांश होंगे।

(६) **इष्टकालिक साम्पातिक काल :**—पृष्ठ १२१—१२२ पर साम्पातिक काल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर इष्टकालिक सां० का० इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—सां० का० कोष्ठक नं० (१) में से अभीष्ट सन् का सां० का० उठाएं। उसमें सां० का० कोष्ठक नं० (२) से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का (लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां० का० लेकर जोड़ने से रोपड़ शहर में अभीष्ट तारीख के प्रारम्भ (स्थानीय समय ० घं. ०मि.) का सां० का० प्राप्त होगा। इसमें सां० का० कोष्ठक नं० (३) से अभीष्टनगर के रेखांशोंद्वारा सेकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से यह अभीष्टनगर में अभीष्ट तारीख के प्रारम्भ (स्थानीय समय ०घं.० मि.) का सां० का० बन जाएगा। अब इसे अभीष्ट समय का बनाने के लिए इसमें अभीष्ट स्थानीय समय, जिसका साधन पहिले बताया जा चुका है, के घण्टा मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीय समय के घण्टा मिनटों द्वारा सां० का० कोष्ठक नं० (४) से प्राप्त किया गया मिनटादि काल संस्कार जोड़ देने से घण्टादि इष्ट सां० का० होगा। यहां यदि घण्टे २४ हों या २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटाकर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

इस पञ्चाङ्ग में दिये गए सां० का० कोष्ठकों से सन् १८७६ से सन् १९७१ तक का सा० का० जाना जा सकता है।

सारिणी से लग्न स्पष्ट करने की विधि :—पृ० १२३—१२४ पर ३० एवं ३१ अक्षांश वाले नगरों के लग्न स्पष्ट करने की दो सारिणिएं दी गई हैं, जो पंजाब के अधिकतर नगरों के लिए उपयोगी हैं। अभीष्टनगर के अक्षांश वाली लग्नसारिणी में उक्त रीति से बनाए गए सां० का० के घण्टामिनटादि को ढूंढ़ें। यदि वहां इष्ट सां० का० पूरा २ न मिले (पूरा कभी ही मिलता है) तो सारिणी में उसके बिल्कुल समीप वाला परन्तु उससे कम सां०का० जहां हो उसके कालम के बिल्कुल ऊपर की लाईन में दी गई राशि एवं बाईं ओर की सबसे पहिली लाइन में दिया गया अंश देखकर दोनों को एक ओर अलग लिख लें। फिर सारिणी में देखे गए सां० का० एवं इष्ट सां० का० के सेकण्डात्मक अन्तर को ६० से गुणा करें। इस गुणनफल को सारिणी में देखे गए सां० का० एवं सारिणीस्थित उससे नीचे के सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में दिए गए सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धि कला एवं विकला प्राप्त कर एक ओर रखे राशि एवं अंशों में जोड़ दें। इस प्रकार यह २३°।१५' अयनांश सम्बन्धी निरयण लग्न स्पष्ट होगा। इसे इष्टदिवसीय निरयण बनाने के लिए उस दिन के अयनांश का २३ अंश १५ कला से अन्तर करें। यदि इष्ट अयनांश २३°।१५' से अधिक हो तो इस अंशादि, कलादि या विकलादि अन्तर को पूर्वसाधित लग्न में से घटाएं, अन्यथा उसमें जोड़ दें। इस प्रकार यह इष्ट निरयण सूक्ष्म लग्न स्पष्ट होगा।

ठीक इसी प्रकार जिससे लग्न स्पष्ट किया गया है उसी सां० का० से पृ० १२५ पर दी गई दशमलग्नसारिणी से दशम लग्न स्पष्ट करें। दशमलग्नसारिणी सभी अक्षांशों के लिए एक सी ही होती है।

उदाहरण—सन् १९५९ को १२ जून को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिन के २ बजकर ३० मिनट (अर्थात् १४ बजकर ३० मिनट) पर भटिण्डा (पंजाब) में लग्न स्पष्ट करें।

"अक्षांशादि सारिणी" से
- भटिण्डा के अक्षांश उ० ३०°।११'
- भटिण्डा के रेखांश पू० ७५।००
- भटिण्डा का स्टैण्डर्ड अन्तर– ३०।००

मि० से०

सन् १९५९ ई०	२३°।१६'। ८"	'अयनांश सारिणी' १म भाग से
जून +	२२	'अयनांश सारिणी' २य भाग से

	घं० मि०
भा. स्टैं. टा.	१४।३०
स्टैण्डर्ड अन्तर —	३०
स्थानीय समय	१४।००

† भारत के समस्त नगरों के अक्षांश उत्तर ही हैं।
§ भारत के समस्त नगरों के रेखांश पूर्व ही हैं।

घं०मि०से०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पं०मि०सं०

१९५९ ई० ६।३८।४५ सां० का० कोष्ठक नं० (१) से
१२ जून + १०।३८।४२ सां० का० कोष्ठक नं० (२) से

रोपड़ में १२जून सन् १९५९के प्रारम्भ का सां.का.१७।१७।२७
रेखांश सम्बन्धी संस्कार + १ सां०का०कोष्ठक नं० (३) से

भटिण्डा में १२ जन सन् १९५९के प्रारम्भ का सां.का.१७।१७।२८
स्थानीय समय + १४।००।००
काल संस्कार + २।१८ सां.का. कोष्ठक नं०(४) से

इष्टकालिक साम्पातिक काल ७।१९।४६

भटिण्डा के अक्षांश लगभग ३० उत्तर हैं, अतः इस इष्ट सां० का० को ३० अक्षांश वाली लग्नसारिणी में देखा तो इसके निकटतम एवं इससे कम सां० का० ७।१९।२० प्राप्त हुआ, जिसके बिल्कुल ऊपर ५ राशि एवं बाईं ओर सबसे पहिले कालम में २४ अंश लिखे हैं। इन्हें (५ राशि २४ अंशों को) एक ओर लिख लिया। सारिणीस्थित सां० का० ७।१९।२० एवं इष्ट सां० का० के अन्तर २६ सेकण्ड को ६० से गुणा किया। इस गुणनफल को ७।१९।२० एवं सारिणी में इससे नीचे दिए गए ७।२३।५७ सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में लिखे २७७ सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धियां ५ कला एवं ३८ विकला प्राप्त हुईं। इन्हें एक ओर लिखे हुए ५ राशि २४ अंश में जोड़ा तो ५।२४।५।३८ यह २३° ।१५' अयनांश-सम्बन्धी निरयण राश्यादि लग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से २३°।१५' एवं १२ जून सन्१९५९ के अयनांश २३।१६।३० के अन्तर १ कला ३० विकला को घटाया (क्योंकि इष्ट अयनांश २३°।१५' से अधिक है) तो ५।२४।४।८ हमारा अभीष्ट निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

इसी साम्पातिक काल द्वारा दशम सारिणी से इसी प्रकार दशम भी स्पष्ट किया जा सकता है।

नोट—विश्व के किसी भी स्थान का मू ंदिय जानने की विधि गतवर्ष के पंचांग में पृ० ७६ पर देखें।

कर्मठगुरुः

राज्यज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी द्वारा संकलित

यह द्विजातिमात्र के लिए नित्य क्रिया एवं कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थरत्न है। इसके आधार पर साधारण पठित जन भी विद्वान् के आगे बठ कर सर्वप्रकार के कर्म निःसङ्कोच करा सकता है। इसकी अद्भुत शैली देखने योग्य है। जप, मन्त्र, पुरश्चरणादि के अनेक विधान और अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। विशेष क्या गागर में सागर भरा पड़ा है। तृतीय संस्करण मूल्य ६)

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली।

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

श्री बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य
कृत

सरल हिन्दीमें ज्योतिष विषय की यह पुस्तक इतनी सरल है कि सर्वसाधारण व्यक्ति ज्योतिष विषय का ज्ञान हासिल कर सकता है। यह तीन खंडों में विभक्त है प्रथम ज्ञान खण्ड, द्वितीय गणित खण्ड, तृतीय फलित खण्ड। प्रथम खण्ड छप रहा है। पुस्तक बहुत बड़ी है सो खण्ड अलग-अलग छपेगा। लेखक ने पुस्तक के लिखने में इतना परिश्रम किया है कि एक बार पुस्तक देखते ही आप चकित हो जावेंगे। प्रतीक्षा करें। ग्राहक श्रेणी में अपना-अपना नाम लिखवाते जावें ताकि पुस्तक छपते ही सेवा में भेज दी जावे। बड़ी पुस्तक होने के कारण थोड़ी प्रतियां ही छप रही हैं।

नव्यजन स्वास्थ्य विज्ञान

लेखक
डा० मुकुन्दस्वरूप
भूतपूर्व प्रिंसिपल, आयुर्वेदिक विद्यालय
हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

पुस्तक हर व्यक्ति के लिये उपादेय है। मूल्य ८)

उपाध्याय रत्न चन्द्रिका

कर्मकाण्ड-निधिः

इसमें कर्मकाण्ड संबंधी १०८ विषय दिये हैं अर्थात् पूर्वाङ्ग के १४ प्रकरण, संस्कार के ३२ प्रकरण, दान के ६१ विधान के २८ प्रकरण शान्ति के ५ प्रकरण, व्रतोद्यापनाद्यनुष्ठान के ७ प्रकरण, ब्रह्म विवाह के ३ प्रकरण, द्विजाधन्य संस्कार के १२ इस प्रकार पुरोहित वर्ग की आवश्यक सभी विषय इसमें दिये हैं। मूल्य १०॥)

अन्त्यकर्म चन्द्रिका

विविध विषयोपेता मूल्य २॥)

मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्त्तन की पद्धतिः—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए हैं। इन पर से भारत के प्रमुख २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए आगे पृ० १२९-१३० पर "पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी" दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न की समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी कार की गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं। विधिएं नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधिः—'पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी' में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी में दिए गए अभीष्ट प्रविष्टे (हिन्दी सौर तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिन्हानुसार जोड़ने से अभीष्ट नगर में अभीष्ट प्रविष्टे को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त होगा। जैसे १ वैशाख (वैशाख प्रविष्टे १) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल जानना है। 'पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी' में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे —४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें "दैनिक लग्न सारिणी" में १ वैशाख को दिए गए सिंह के समाप्ति काल १६ घंटा २५ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का समाप्ति काल १५ घंटा ४० मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त परिवर्त्तन की विधिः—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और तात्कालिक (सूर्योदयकालिक) सूर्यकान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर "पञ्चाङ्ग परिवर्त्तन सारिणी" में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों को इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात किए सूर्योदय में चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्योदय काल ज्ञात होगा। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३७ मि० लिखा है। इस समय सूर्यकान्ति+१७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदयकालिक उत्तर कान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे+३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं० ३७ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० १० मि० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में सूर्यास्त काल जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग करते समय क्रान्ति के अंश सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखने चाहिएं। जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त काल ७ घं० ४ मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति+१८ अंश (उत्तर क्रान्ति १८ अंश) है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १८ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में दिए गए हैं) के बाईं ओर बम्बई के नीचे —३ मिनट लिखे हैं। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से उपलब्ध सूर्यास्त काल ७ घं० ४ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई में सूर्यास्त काल ७ घं० १ मि० निकल आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधिः—सूर्योदयास्त के परिवर्त्तन की तरह चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्त्तित किए जा सकते हैं। यहाँ भी सूर्योदयास्त के परिवर्त्तन की भान्ति चन्द्रोदय परिवर्त्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्तिको सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्त्तन के लिए अस्तकालिक चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें। जैसे—३१ दिसम्बर १९६२ को काशी में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में चन्द्रोदय १० घं० ४० मि० लिखा है। इसी समय चन्द्रक्रान्ति —१३ अंश (दक्षिण क्रान्ति १३ अंश) है। सारिणी में काशी के नीचे एवं उदयकालिक दक्षिण क्रान्ति १३ अंश के आगे —३१ मि० प्राप्त हुए। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात किए चन्द्रोदय काल १० घं० ४० मि० में से घटाने पर इस दिन काशी में चन्द्रोदय काल १० घं० ९ मिनट प्राप्त हुआ। चन्द्रास्त काल परिवर्त्तन का उदाहरण भी लीजिए—३१ दिसम्बर १९६२ को काशी में चन्द्रास्त कब होगा? इस पञ्चाङ्ग में इस दिन चन्द्रास्त काल २२ घं० २ मि० लिखा है और इस समय चन्द्रक्रान्ति—११ अंश (दक्षिण क्रान्ति ११ अंश) है। सारिणी के २य भाग में काशी के नीचे एवं अस्तकालिक दक्षिणक्रान्ति —११ अंश के बाईं ओर —१९ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात किए चन्द्रास्त काल २२ घं० २ मि० में से घटाने पर ३१ दिसम्बर १९६२ को काशी में चन्द्रास्त काल २१ घं० ४३ मि० उपलब्ध हुआ।

तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्त्तन की विधिः—जिस दिन तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन को सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य क्रान्ति के आगे दिए गए मिनटों को घड़ी पल बनाकर चिन्ह के विपरीत तिथ्यादि के समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होंगे।

नोटः—इस पञ्चाङ्ग में सूर्य की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद मंगल आदि ग्रहों की क्रान्ति शरों के अनन्तर और चन्द्रमा की दैनिक क्रान्ति दैनिक चन्द्रमा के साथ चन्द्रोदयास्त के निकट ही दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिन्ह उत्तर क्रान्ति एवं — यह चिन्ह दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चाङ्ग में दी गई क्रान्तिएं ० घं. ० मि. की है। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

(लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति काल तथा [illegible])

लग्न	उदयकालिक स्फुटीय क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कोणार्क	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठान कोट	प्रयाग	बम्बई	बंगलौर (हि. न.)	मंद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर	हरिद्वार	हिसार	अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति
	अ.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अ
	०	+ ८	+ ५	+ १३	− ४६	− २५	+ २	+ १	− ५	+ ८	+ ४	− १	− ९	− ३३	+ २	+ ५	− २०	+ १६	०	− १४	+ १	− १	+ ८	− ५	+ ४	०
	१	८	४	१२	४७	२५	२	०	६	८	४	२	१०	३४	२	५	२१	१५	०	१५	१	१	८	५	४	१
	२	८	३	१२	४७	२५	३	०	६	८	३	२	११	३४	२	५	२१	१४	०	१७	+ १	१	९	६	४	२
कुम्भ	३	८	३	११	४८	२६	३	०	६	८	३	२	१२	३५	२	५	२१	१३	०	१८	०	१	९	६	४	३
	४	९	२	१०	४९	२६	३	०	७	९	३	२	१२	३५	२	५	२२	१२	०	१९	०	१	९	६	४	४
	५	९	१	१०	५०	२७	३	०	७	९	२	२	१३	३६	२	५	२२	११	०	२१	०	१	१०	६	४	५
	६	९	+ १	९	५०	२७	३	०	८	९	२	२	१४	३६	२	६	२३	१०	०	२२	०	१	१०	६	४	६
	७	९	०	९	५१	२८	३	०	८	९	२	३	१५	३७	२	६	२३	९	०	२४	०	१	१०	६	३	७
	८	९	− १	८	५२	२८	३	०	९	९	१	३	१६	३७	२	६	२४	८	०	२५	०	१	११	६	३	८
	९	९	१	८	५३	२९	३	०	९	१०	१	३	१७	३८	२	६	२४	७	०	२७	०	१	११	६	३	९
कन्या	१०	९	२	७	५३	२९	४	०	९	१०	+ १	३	१८	३८	२	६	२५	६	०	२८	− १	१	११	६	३	१०
	११	९	३	७	५४	३०	४	०	१०	१०	०	३	१८	३८	२	६	२५	५	+ १	३०	१	१	१२	६	३	११
	१२	९	३	६	५५	३०	४	०	१०	१०	०	४	१९	३९	२	७	२६	४	१	३१	१	१	१२	६	३	१२
	१३	९	४	५	५६	३१	४	०	११	१०	०	४	२०	३९	२	७	२६	३	१	३३	१	१	१२	६	३	१३
मकर	१४	९	५	५	५६	३१	४	०	११	११	− १	४	२१	४०	२	७	२७	+ २	१	३४	१	१	१३	६	२	१४
	१५	१०	५	४	५७	३२	४	०	११	११	१	४	२२	४०	२	७	२७	०	१	३६	१	१	१३	६	२	१५
	१६	१०	६	४	५८	३२	४	०	१२	११	२	४	२३	४१	२	७	२८	− १	१	३८	२	१	१४	६	२	१६
	१७	१०	७	३	५९	३३	५	− १	१२	११	२	५	२४	४१	२	८	२८	३	२	३९	२	१	१४	७	२	१७
	१८	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	२	५	२५	४२	१	८	२९	३	२	४१	२	१	१४	७	२	१८
	१९	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	३	५	२६	४२	१	८	२९	४	२	४३	२	१	१५	७	२	१९
तुला	२०	१०	९	+ १	६१	३५	५	१	१४	१२	३	५	२७	४३	१	८	३०	५	२	४४	२	१	१५	७	१	२०
	२१	१	१०	०	६२	३५	५	१	१४	१२	३	६	२८	४४	१	८	३०	६	२	४६	३	१	१५	७	१	२१
धनु	२२	१०	११	०	६३	३६	५	१	१५	१२	४	६	२९	४४	१	८	३१	८	२	४८	३	१	१६	७	१	२२
	२३	१०	१२	− १	६४	३६	५	१	१५	१३	४	६	३०	४५	१	९	३१	९	२	४९	३	१	१६	७	१	२३
वृश्चिक	२४	१	१३	२	६५	३७	६	१	१६	१३	५	६	३१	४५	१	९	३२	१०	२	५१	३	१	१७	७	१	२४
	२५	१०	१४	२	६६	३८	६	१	१६	१३	५	७	३२	४६	१	९	३३	११	२	५३	३	− १	१७	७	+ १	२५
	२६	११	१४	३	६७	३८	६	१	१७	१४	६	७	३३	४६	१	९	३३	१३	२	५५	४	०	१८	७	०	२६
	२७	११	१५	४	६८	३९	६	१	१७	१४	६	७	३४	४७	१	१०	३४	१४	३	५७	४	०	१८	७	०	२७
	२८	११	१६	५	६९	४०	६	१	१८	१४	७	८	३६	४८	१	१०	३५	१५	३	५९	४	०	१९	७	०	२८
	२९	११	१७	५	७०	४०	७	२	१९	१४	७	८	३७	४८	१	१०	३५	१७	३	६१	४	०	१९	७	०	२९
	३०	+ १०	− १८	− ६	− ७१	४१	+ ७	− २	− १९	+ १५	− ८	− ८	− ३८	− ४९	+ १	+ १०	− ३६	− १८	+ ३	− ६३	− ४	०	+ २०	− ८	०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग २ य)

लग्न	उदय कालिक उत्तर क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काबी	कांगडा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि. प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक दक्षिण क्रान्ति
	अ.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अ.
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
सिंह	१	८	५	१३	४५	२४	२	१	५	८	४	१	८	३३	२	४	२०	१७	०	१२	१	१	८	५	५	१
	२	८	६	१४	४५	२४	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१९	१८	−१	११	१	१	७	५	५	२
	३	८	७	१४	४४	२३	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१८	१९	१	९	१	१	७	५	५	३
	४	८	७	१५	४३	२३	२	१	४	७	५	−१	६	३१	२	४	१८	२०	१	८	२	२	७	५	५	४
	५	८	८	१५	४२	२२	२	१	३	७	६	०	५	३१	२	४	१८	२१	१	६	२	२	६	५	५	५
	६	८	९	१६	४२	२२	१	१	३	७	६	०	४	३०	२	४	१७	२२	१	५	२	२	६	५	५	६
	७	८	९	१६	४१	२१	१	१	२	६	६	०	३	३०	२	४	१६	२३	१	३	२	२	६	५	५	७
मीन	८	८	१०	१७	४०	२१	१	१	२	६	७	०	२	३०	२	३	१६	२४	१	−२	२	२	५	५	५	८
	९	७	११	१८	४०	२०	१	१	२	६	७	०	२	२९	२	३	१६	२५	१	०	२	२	५	५	६	९
	१०	७	१२	१८	३९	२०	१	१	१	६	७	+१	−१	२९	२	३	१५	२६	१	+१	२	२	५	५	६	१०
	११	७	१२	१९	३८	१९	१	१	−१	६	८	१	०	२८	२	३	१५	२७	१	३	३	२	४	५	६	११
	१२	७	१३	१९	३७	१९	१	१	०	६	८	१	+१	२८	२	३	१४	२८	२	४	३	२	४	५	६	१२
कर्क	१३	७	१३	२०	३६	१८	+१	१	०	५	८	१	२	२७	२	३	१४	२९	२	६	३	२	४	५	६	१३
	१४	७	१४	२०	३६	१८	०	१	+१	५	९	२	३	२७	२	२	१४	३०	२	७	३	२	४	४	६	१४
	१५	७	१५	२१	३५	१७	०	१	१	५	९	२	४	२६	२	२	१३	३१	२	९	३	२	३	४	७	१५
	१६	७	१५	२२	३४	१७	०	२	२	५	१०	२	५	२६	२	२	१३	३२	२	१०	३	२	३	४	७	१६
	१७	७	१६	२२	३३	१६	०	२	२	४	१०	२	६	२५	२	२	१२	३३	२	१२	४	२	३	४	७	१७
	१८	७	१७	२३	३३	१५	०	२	२	४	१०	२	७	२५	२	२	११	३५	२	१४	४	२	२	४	७	१८
मेष	१९	७	१८	२४	३२	१५	०	२	३	४	११	३	८	२४	२	१	११	३६	२	१५	४	२	२	४	७	१९
	२०	७	१८	२४	३१	१४	०	२	३	४	११	३	९	२४	२	१	१०	३७	२	१७	४	२	२	४	७	२०
मिथुन	२१	६	१९	२५	३०	१४	−१	२	४	४	११	३	१०	२३	२	१	१०	३८	३	१९	४	२	२	४	७	२१
	२२	६	२०	२५	२९	१३	१	२	४	३	१२	३	११	२३	२	१	९	३९	३	२०	४	२	+१	४	७	२२
वृष	२३	६	२१	२६	२८	१३	१	२	५	३	१२	३	११	२२	२	+१	९	४१	३	२२	५	२	०	४	८	२३
	२४	६	२२	२७	२७	१२	१	२	५	३	१३	४	१३	२१	२	०	८	४२	३	२४	५	२	०	४	८	२४
	२५	६	२३	२८	२६	११	१	२	६	२	१३	४	१४	२१	२	०	८	४३	३	२६	५	२	−१	४	८	२५
	२६	६	२४	२८	२६	११	१	२	६	२	१४	४	१५	२०	२	०	७	४४	३	२८	५	२	१	४	८	२६
	२७	६	२५	२९	२५	१०	२	२	७	२	१४	५	१६	२०	२	०	६	४६	३	३०	६	२	२	३	९	२७
	२८	६	२५	३०	२४	९	२	३	७	२	१५	५	१७	१९	२	−१	६	४७	४	३२	६	२	२	३	९	२८
	२९	६	२६	३१	२२	०	३	८	१	१	१५	५	१८	१८	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह [illegible]

भौम नक्षत्रराशिचार

बुध नक्षत्रराशिचार

बुध नक्षत्रराशिचार

शुक्र नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र राशि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
अप्रैल १३	अश्वि.	मेष
२७	भरणी	
मई ११	कृत्ति.	
१४	...	वृष
२५	रोहि.	
जून ८	मृग.	
१५	...	मिथुन
२२	आर्द्रा	
जुलाई ६	पुन.	
१६	...	कर्क
२०	पुष्य	
अगस्त ३	आश्ले.	
१७	मघा	सिंह
३१	पू. फा.	
सित. १३	उ. फा.	
१७	...	कन्या
२७	हस्त	
अक्तू. १०	चित्रा	
१७	...	तुला
२४	स्वाती	
नव. ६	विशा.	
१६	...	वृश्चिक
१९	अनुरा.	
दिसं. २	ज्येष्ठा	
१५	मूल	धनु
२८	पू. षा.	
जन. ११	उ. षा.	
१४	...	मकर
२०	अभि.	
२४	श्रव.	
फर ६	धनि.	
१२	...	कुम्भ
१९	शत.	
मार्च ४	पू. भा.	
१४	...	मीन
१७	उ. भा.	

भौम नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
अप्रैल ११	...	मीन
१५	उ. भा.	
मई २	रेवती.	
२०	अश्वि.	मेष
जून ७	भर.	
२५	कृत्ति.	
३०	...	वृष
जुलाई १४	रोहि.	
अगस्त २	मृग.	
१२	...	मिथुन
२२	आर्द्रा	
सित. १३	पुन.	
३०	...	कर्क
अक्तू. ६	पुष्य	
नव. १	आश्ले.	
दिस. १३	मघा	सिंह
२४	वक्री	
जन. ५	व. आश्ले.	कर्क
फर. २०	व. पुष्य	
मार्च १८	मार्गी	

बुध नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
अप्रैल ८	रेवती	
१५	अश्वि.	मेष
२१	भर.	
२७	कृत्ति.	
२९	...	वृष
मई ५	रोहि.	
१६	मृग.	
२६	वक्री.	
जून ५	व. रोहि.	
१९	मार्गी	
३०	मृग.	
जुलाई ६	...	मिथुन
११	आर्द्रा	
१९	पुन.	

बुध नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
जुलाई २३	...	कर्क
२५	पुष्य	
३१	आश्ले.	
अगस्त ७	मघा	सिंह
१४	पू. फा.	
२२	उ. फा.	
२५	...	कन्या
सित. १	हस्त	
१३	चित्रा	
२३	वक्री	
अक्तू. ४	व. हस्त	
१६	मार्गी	
२७	चित्रा	
नव. १	...	तुला
५	स्वाती	
१३	विशा.	
१९	...	वृश्चिक
२१	अनु.	
३०	ज्येष्ठा	
दिसं. ८	मूल	धनु
१७	पू. षा.	
२५	उ. षा.	
२८	...	मकर
जन. २	अभि.	
५	श्रव.	
१२	वक्री.	
१६	व. अभि.	
१७	व. उ. षा.	
२६	व. धनु.	
३१	व. पू. षा.	
३१	मार्गी	
फर. १	उ. षा.	
८	...	मकर
१५	अभि.	
१८	श्रव.	
२८	धनि.	

बुध नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
मार्च ५	...	कुम्भ
९	शत.	
१७	पू. भा.	
२२	...	मीन
२४	उ. भा.	

शुक्र नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
जन. २३	पू. भा.	
मार्च ७	...	मीन
२१	उ. भा	

शुक्र नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
अप्रैल ९	भर.	
२०	कृत्ति.	
२३		वृष
मई १	रोहि.	
१२	मृग.	
१७		मिथुन
२३	आर्द्रा	
जून ३	पुन.	
११	...	कर्क
१४	पुष्य	
२५	आश्ले.	
जुलाई ७	मघा	सिंह
१८	पू. फा.	
३०	उ. फा.	
अगस्त २	...	कन्या
१२	हस्त	
२४	चित्रा	
३१	...	तुला
सित. ७	स्वाती	
२२	विशा.	
अक्तू. ७	...	वृश्चि.
१५	अनु.	
२३	वक्री	
३०	व. विशा.	
नव. ७	...	व तुला

शुक्र नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
नवं. २६	व. स्वा.	
दिस. ३	मार्गी	
११	विशा.	
२९	...	वृश्चिक
जन. ३	अनु.	
१७	ज्येष्ठा	
३०	मूल	धनु
फर. १२	पू. षा.	
२४	उ. षा.	
२६	...	मकर
मार्च ४	अभि.	
७	श्रव.	
१८	धनि.	
२४	...	कुम्भ

शनि नक्षत्रराशिचार

फर. २८	धनि.

राहु नक्षत्रराशिचार

जुलाई ९	पुष्य
मार्च १७	पुन.

केतु नक्षत्रराशिचार

नवं. १२	उ. षा.

वरुण नक्षत्रराशिचार

वरुण इस वर्ष मघा में रहेगा।

इन्द्र नक्षत्रराशिचार

जुलाई २४	मार्गी
नव. ७	विशा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ॥

खचर गतिविधानामुद्गानुद्गाद्यानुविविधवचनजालाल्लोकयन् शास्त्र सिद्धान् ।
सकलभरत भूमौकिञ्च पञ्चापदेशे, करकलनमुहूर्त्तालीमहं संलिखामि ॥

सं० २०१९ में विवाहादि मुहूर्त्त

समय शद्धिः—

शुक्र अस्तः—कार्ति. शुक्ल ९ मं. से मार्ग कृ. ७ र. तक शुक्र अस्त रहेगा। गुरु अस्तः—फाल्गु. शुक्ल १२ गु. से वर्षान्त तक गु. अस्त रहेगा। ग्रहलाघवादि प्राचीन करण ग्रन्थों में गुरुशुक्रोदयास्त ज्ञान के लिए दी गई कालांश पद्धति स्थूल है। इनके यथार्थ उदयास्त जानने के लिए उन्नतांश पद्धति वैज्ञानिक है। यहाँ हमने इसी पद्धति को अपनाया है। गु. शु. के अस्त से पूर्व तीन दिन वृद्धत्व दोष एवं उदय के पश्चात् भी तीन दिन बाल्य दोष के शुभ कार्यों में वर्जित हैं।

यहां क्रांतिसाम्य (महापात)-दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहुर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

इन मुहूर्त्तों में जहाँ युति, वेध, दग्धातिथि आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं वहाँ मुहूर्त्त लगा दिए गए हैं। अश्वि. चि. श्र. ध. नक्षत्रों के विवाह मुहूर्त्त कात्यायन ऋषि के मत से लगाये हैं।

—शुद्ध सपरिहार विवाह मुहूर्त्त—

वैशा.प्र. ४ (चैत्रशु.१२चं.) उ.फा ऽसू. ।।।।।।।। ल.९,११ (चं.श. दा.)
वैशा.प्र. ५ (चैत्र.शु.१३मं.) उ.फा. ऽसू.।।।।।।।। ल. ८ (अं. १०उ.), ९
वैशा.प्र. ७ (चैत्र.शु.१५गु.) चि. ।ऽ।।।ऽ चौ(ध.४९. उ.)।ऽ।।ल.९.११ (श.शु.दा.)
वैशा.प्र. ८ (वैशा.कृ.१शु.) स्वा ।।।ऽगुऽसूऽचौ (घ. ५१या.)ऽऽ।। ल.११
वैशा.प्र. ११ (वैशा.कृ.३चं.) अनुऽरा.ऽऽबु.ऽशु.।ऽ।।।ल.२(अं.१०उ.)
वैशा.प्र. १४ (वैशा.कृ.७गु.)उ.पा. ।।।।।।ऽऽ।।ल.११(श.दा.)
वैशा.प्र. १५ (वैशा.कृ. ८शु.)उ.पा.।।।।।ऽनृ.ऽऽ।। ल.२ (अं.१०या.)
ज्ये. प्र. २ (वैशा.शु. ११मं.)हस्त ।।।।।।ऽ।।। ल. गोधूलि
ज्ये. प्र. ३ (वैशा. शु.१२बु.) चि. ऽसू.।।।ऽमं.ऽअ.।।।।ल.९ (अं.२१उ.) वा ११ (श.दा.)
ज्ये. प्र. ६ (वैशा.शु.१५श.) अनु. ऽरा.।।।ऽसूऽनृ.ऽऽ।।ल.११(श.दा.)
ज्ये. प्र. ७ (ज्ये.कृ.१ र.) अनु. ऽरा. ।।।ऽसू.।ऽऽ।। ल.५
ज्ये. प्र. ८ (ज्ये.कृ.२चं.) मू.।।।।ऽगु.बु.ऽचौ.ऽ।। ल. गोधूलि,११ (श.दा.) १२
ज्ये प्र.१० (ज्ये.कृ. ४बु.) उ.पा. ।।।ऽबु.।ऽरो.ऽऽ।।ल. ११, १२
ज्ये प्र.१६ (ज्ये कृ. ११मं) रेव.।।।।।।ऽऽ।।ल.धूलिमुख ११(श.दा.)
ज्ये.प्र.३० (ज्ये.शु. १०मं.)हस्ता।ऽ।।।।ऽ।।ल.५(अ.६उ.) (गु.दा.)
ज्ये.प्र.३० (ज्ये.शु. १०मं.)चि.।।।।।।।ऽ।। ल.१२ (चं.दा.)
आषा.प्र. ४(ज्ये.शु. १५ चं.)मू.।।।।ऽसू.ऽअ (घ.१४या.)ऽऽ।।ल.५ (गु.दा),११ (श.दा.) १२ (अं. १४ या.)
आषा.प्र.२३ (आषा.शु. ५श.) उ.फा.।।।।।।।।।।ल.१(रा.दा.)
आषा.प्र.२४ (आषा.शु. ६र.) उ.फा.।।।।।।।।। ल.५ (गु. दा.)
आषा.प्र.२५ (आषा.शु. ७चं.) हस्त ।।।।।ऽनृऽऽ।।ल.५(गु.दा.)
आषा.प्र.२६ (आषा.शु. ८मं.)चि. ।।।।।ऽचौ(घ.२२उ.)।ऽ।ऽल.५(गु.दा.),गोधूलि
आषा.प्र.२७ (आषा.शु. ९बु.) स्वा.।।।ऽगु.।ऽचौ (घ. २५या.)ऽ।।।ल.५ (गु.दा.)गोधूलि
आषा.प्र.२९ (आषा.शु. ११शु. अनु.।।।।ऽमं.।ऽ।।।ल धूलिमुख (अं.२०उ.)
श्राव.प्र. ४ (श्राव.कृ. २गु.) धनि.।।।।।ऽअ.।।।।ल. गोधूलि (अं.८उ.),१२
श्राव.प्र ८ (श्राव.कृ. ७चं.) रेव.ऽचं.।।।।ऽचौऽ।।।ल.९(अं.१४उ.), गोधूलि
श्राव.प्र. ९ (श्राव.कृ. ८मं.) अश्वि.ऽबु.।।ऽशु.।ऽचौ(घ.४या.)।ऽ।।ल.५ (ग.मं.दा.) वा. धूलिमुख)
श्राव.प्र.११ (श्राव.कृ. १०गु.) रो।।ऽमं.।।।ऽऽ।।ल. १२
श्राव.प्र.१२ (श्राव.कृ. ११शु.) रो.।।ऽमं.।।।ऽऽ।।ल.५ (मं.दा,)
श्राव.प्र.२१ (श्राव.शु. ५र.) हस्त ।।।।।ऽऽ।।ल.५ (गु.दा), ९, धूलिमुख
श्राव.प्र.२३ (श्राव.शु. ७मं.) चि. ।ऽ।।।ऽअ.।।।।ल.५ (ग.मं.दा.)
श्राव.प्र.२३ (श्राव.शु. ७मं.) स्वा. ।।।ऽगु.।ऽअ.(घ.४४या.)ऽऽ।।ल.९, धूलिमुख
श्राव.प्र.२५ (श्राव.शु. ८गु.) अनु.।।।।।ऽनृ. (घ.४९या.) ऽ।।।ल.९, गोधूलि,१,
श्राव.प्र.२८ (श्राव.शु. ११र.)मू.।ऽ।/ऽमं ऽरो. (घ.५७उ.)ऽ।।।ल.५ (अं.११उ.) (गु.मं. दा.), ७ (अ.१२उ.)
भाद्र.प्र. ४ (भाद्र.कृ. ५चं.) अश्वि. ।ऽ।ऽबु।.ऽअ.(घ.१७या.)।ऽ।।ल.७(चं.दा.), गोधूलि?
भाद्र.प्र. ७ (भाद्र.कृ. ८गु.) रो.।।।।।ऽचौ (घ.२४.उ.)ऽऽ।।ल.८ (चं.मं.दा.), धलिमुख
भाद्र.प्र.१५ (भाद्र.शु. १शु.) उ.फा.।।ऽबु.।।ऽनृ. (घ.४१उ.)।।।।ल.८ (मं.दा.)
भाद्र.प्र.१६ (भाद्र.शु. २श.) उ.फा. ।।।।।ऽनृ. ।।।।ल. ७, ८ (अं. ११या.) (मं.दा.)
भाद्र.प्र.१६ (भाद्र.शु. २श.) हस्त ।।ऽबु.।।ऽचौ (घ.४३उ.)ऽ।।। ल. ८ (अं.११उ.) (मं.दा.)
भाद्र.प्र.१७ (भाद्र.शु. ३र.) हस्त ।।ऽबु.।।ऽचौ.ऽ।।।ल.७, ८ (मं.दा.)
भाद्र.प्र.१९ (भाद्र.शु. ५मं.) स्वा ।।।ऽगु.।ऽ रो.ऽऽ।।ल.८(मं.दा.) धूलिमुख, (सूर्योदय से पूर्व ही क्रान्ति साम्य समाप्त)
भाद्र.प्र.२३ (भाद्र.शु. ९श.) मू. ।।।।।ऽ।।ऽ (घ.३२उ.)ल.६ (मं.दा.), ७, ८ (मं. दा.) गोधलि
भाद्र.प्र.२५ (भाद्र.शु. ११च.) उ.पा.।।।।।ऽ।।।धूलिमुख
भाद्र.प्र.२७ (भाद्र.शु. १३बु.) धनि.।।।।ऽचौ (घ.३या.) ।।।। ल. ६ (मं.दा.), ७, ८ (मं.दा.)
आश्वि.प्र.१३ (आश्वि.शु. १श. चि. ।ऽबु.ऽचं.।।।।।।ल.५
आश्वि.प्र.१४ (आश्वि.शु. २ र.) चि.।ऽबु.ऽचं.।।।।।।ल.[illegible]
[illegible] (घ.५६उ.)।।।।ल.६(गु.दा.),८,९(मं.दा.)

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्वि.प्र.१७ (आश्वि.शु. ४बु.) अनु.।।।।ऽचौ (घ.२८या.)ऽऽ।ल.७ (मं.दा.), ९ (मं.दा.),११(श.दा.), धूलिमु.,५ (गु.दा.)
आश्वि.प्र.१९ (आश्वि.शु. ६शु.) मू ।।।।।ऽऽ।ल.५ (गु.शु.दा.)
आश्वि.प्र.२० (आश्वि.शु. ७श.) मू.।।।।।ऽऽ।ल.७(अ १४ या.)
आश्वि.प्र.२३ (आश्वि.शु.११मं.)धनि.।।।।ऽनृ.(घ.३२उ.)।।।।ल.५(अं.१३उ.) (गु.चं.दा.) ७ (अ.१८उ.) (मं.दा.),८(अं २४या.),११(अं.१५या.) (श.दा.)
आश्वि.प्र.२६ (आश्वि.शु. १४गु.)उ.भा. ।।।ऽबु.।ऽचौ.।।।।ल.८,११
आश्वि.प्र.२७ (आश्वि.शु. १५श.) रेव.।।।।ऽबु.।ऽऽ।ल.८,९ (मं.दा.).११
आश्वि.प्र.२७ (आश्वि.शु. १५श.) अश्वि.।ऽ।।ऽशु.।ऽरो.।ऽ।।ल.५
आश्वि.प्र.२८ (कार्ति.कृ. १र.) अश्वि.।ऽ।।ऽशु.।ऽरो.।ऽ।।ल.७ (मं.चं.दा.) ९ (मं.दा.), ११(श.दा.), गोधू.(अं.१६या.)
कार्ति.प्र. ८ (कार्ति.कृ. ११बु.) उ.फा.।।।।ऽचं.।।।।ऽ।ऽल.६,
का.प्र. ९ (कार्ति.कृ. १२गु.) उ.फा. ।।।।ऽचं.।ऽरो. (घ ३७उ.)।ऽ।।ल.८, ९(अं.१०या.) (मं.दा.)
का.प्र.१४ (कार्ति.शु. २मं.) अनु.।।।।ऽनृ.ऽ।।ल.५,६ (शु.दा.)
का.प्र.१५ (कार्ति शु. ३बु.) अनु.।।।।ऽनृ.ऽ।।ल.९
का.प्र.१६ (कार्ति.शु. ४गु.) म.।।।।ऽचौ.ऽऽ।ल.५ (गु.दा.),६ (शु.दा.)
का.प्र.१७ (कार्ति.शु. ५श.) मू.।।।।ऽचौ.ऽऽ।ल.८,११,१२ (अं.१४या.)
मार्ग.प्र. ७ (मार्ग.कृ. ११गु.) हस्त ।।।।ऽचौ.(घ.२५उ.) ऽ।।ल. धूलिमुख, ५ (गु.दा.) ७ (मं.दा.)
मार्ग.प्र. ८ (मार्ग.कृ. १२शु.) चि.।।।।।ऽ।।ल. धूलिमुख,३,५ (शु.गु.दा.) ६ (अं.१९उ.)
मार्ग.प्र.१३ (मार्ग.शु. १बु.) मू.।।।।ऽ।।ल.७(मं.दा.)
मार्ग.प्र.१४ (मार्ग.शु. २गु.) मू.।।।।ऽनृ(घ.१८उ.)ऽ।।ल.११ (श.दा.), ३ (चं. दा.)
मार्ग.प्र.२१ (मार्ग.शु. १०गु.)उ.भा.।।।।ऽअ.।।।ऽल.११ (श.दा.)
मार्ग.प्र.२२ (मार्गशु. ११शु.) रेव. ।ऽ।।।ऽ।।ल.११(अं.२१या.) (श.दा.)
मार्ग.प्र.२२ (मार्ग.शु. ११शु.) अश्वि.।।।।।।।।।ल.५ (अं.१४उ.),७ (मं.चं.दा)
माघप्र. २ (माघकृ. ५मं) उ.फा.।।।।।ऽ।।ल.१२(चं.दा.)
माघप्र. ३ (माघकृ. ६बु.) हस्त ऽचं.शु.।।।।ऽ।।ल.७ (मं.दा.)
माघप्र. ३ (माघकृ. ६ब.) चि.।।।।ऽअ.।ऽ।।ल. ८(अं.२१उ.),९ (मं.दा)
माघप्र. ४ (माघकृ. ७गु.) चि.ऽशु.(घ.३४उ.)।।।।ऽअ.(घ.१२या.)।ऽ।।ल.१२(चं.दा.) ६(शु.दा.), ८(अं.१०या)
माघप्र. ५ (माघकृ. ८शु.) स्वा.ऽब.।।ऽगु.।ऽनृ.ऽऽ।।ल.८
माघप्र. ७ (माघकृ. १०र.) अनु.।ऽ।।ऽचौ ऽऽ।ल.६(शु.दा.),७(मं.दा.),९ (मं.दा).
माघप्र. ८ (माघकृ. ११चं.) अनु.।ऽ।।ऽचौ घ.७या,ऽऽ।ल.१२
माघप्र.१६ (माघशु. ४मं.) उ.भा.।।।।ऽचौऽऽ।ल.६(शु.चं.दा.),८,९ (मं.दा.),
माघप्र.१७ (माघशु. ५बु.) उ.भा.।।।।ऽऽ।ल.११(श.दा.)

माघप्र.१९ (माघ.शु. ६गु.) स्वा.।ऽ।ऽ।.।ऽनृ. (घ.५६उ.)।।।।ल ६(शु.दा.),८,९(मं.दा.)
माघप्र.२१ (माघशु. १०र.) रो.।।।।।ऽअ.।ऽ।।ल.१२ (अं.५उ.), १,६,८ (अं.१३या.) चं.दा., (५।८ तक क्रान्तिसाम्य)
फा.प्र. २ (फाल्गु.कृ. ५बु.) हस्त ।।।।।।ऽ।।ल.१२ (चं.दा)
फा.प्र. ३ (फाल्गु.कृ. ६गु.) स्वा.ऽचं.बु.ऽ।।ऽअ.।।।।ल.८,९ (मं.दा.)
फा.प्र. ५ (फाल्गु.कृ. ७श.)अनु.।।।।ऽनृ.(घ.४१उ.)।ऽ।।ल.८(अं.२३या.),९(अं.११उ.) (मं.दा.)
फा.प्र. ६ (फाल्गु.कृ. ८र.)अनु. ।।।।ऽनृ.।ऽ।।ल.१२,१,धूलिमुख,
फा.प्र. ८ (फाल्गु.कृ. १०मं.) मू.।।।।ऽचौ.ऽऽ।ल.धूलिमुख,६,
फा.प्र.१४ (फाल्गु.शु. २चं.)उ.भा.।ऽ।।ऽनृ.ऽ।।ल.६(अं.२०उ.) (चं.दा.),८,९(मं.दा.)
फा.प्र.१५ (फाल्गु.शु. ३मं.) उ.भा.।ऽ।।।ऽनृ.ऽ।।ल.१,२
फा.प्र.१५ फाल्गु.शु. ३मं.) रेव.।।।।ऽनृ.(घ.३६या.)।।।ऽ(घ.४६उ.)ल.६,८,
फा.प्र.१६ (फाल्गु.शु. ४बु.) रेव.।।।।।।।।ऽल.१,२(अं.२८या.)
फा.प्र.१६ (फाल्गु.शु. ४बु.) अश्वि. ।।।।।ऽचौ.(घ.३५उ.)ऽऽ।ल.७ (अं.१९उ.) (चं.मं.दा.),९(मं.दा.)
फा.प्र.२० (फाल्गु.शु. ८र.) रा.।ऽ।।।।ऽ।।ल.१२,१

नोट–होलाष्टकों में पंजाब और पुष्कर प्रांत में ही विवाह वर्जित हैं, अन्यत्र नहीं।

---उपनयनमुहूर्त्त---

चैत्रशु. २श. अश्वि.
,, ५चं. रो.
वैशा.शु.१२बु. हस्त
ज्ये.कृ. २चं. ज्ये.
,, ५गु. उ.षा. (बुधवेध)
(घं.२ तक रोग)
माघशु.२र.धनि(७।२५या.व्यती.)
माघशु. ५बु.उ.भा.रेव.
,, ,, १०र.रो.(५।८उ.)
फाल्गु.कृ.२र.पू.फा.
फाल्गु.कृ.५बु. हस्त
फाल्गु.शु.२च.पू.भा.

---द्विरागमन मुहूर्त्त---

चैत्रशु.१५गु.चि.(भ.२६या.) ३२से३६ या वज्र)
वैशा.कृ.१श.स्वा. (गुरुवेध)
,, ,, ५बु. मू (१।१६या.)
,, ,, ७गु. उ.षा.(भ.२६।२२या.)
,, ,, ८शु.उ.षा.
,, ,, १३बु.रे.(२०।१६या.)
वै.शु.६गु.पुष्य
मार्ग.कृ.१२शु.ह.,चि.,
मार्ग. शु. २ ,मू. (७।११उ.)
,, ,, ६चं. ध. (७।३७उ.)
,, ,, १०गु.उ.भा.(१५।३२या.)
,, ,, ११शु.रेव.(७।३८या.व्यती. १३।४६उ.भद्रा)
पौषकृ.२गु.पुन.(बुधवेध)
फाल्गु.कृ.५ब.हि.,(विवाहमें गुरुवेध)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

गेहारम्भ मुहूर्त

चै .शु.१२चं. उ.फा.। वै.कृ.१शु.स्वा(गु.वे.)
श्राव.कृ.१बु उ.षा. श्राव.शु.१५बु. धनि
भाद्र.शु.११चं. उ.षा.(२८।१३उ.)
भाद्र.शु. १३ बु. ध. (१९।५४या.)
मा.शु.-११शु.रे.(घ.९या.अ.१३।४६उ.भद्रा)
फा.कृ.५बु.ह.। फाल्गु शु.७श.रो(५१।५ उ.)

नूतन गृहप्रवेशमुहूर्त

वैशा.शु.१२बु.चि. (व्यती.५२।४६उ.)
ज्ये.कृ.९ चं.उ.भा. (भ३०।४०उ.)
" " १२बु.रेव.
ज्ये.शु.११बु.चि. (१४।२४या.)
कार्त्ति.कृ.१२गु.उ.फा.(१२।५या.)
मार्ग.शु.९बु.उ.भा.(५२।३३या.रिक्ता)
मार्ग.शु.१०गु.उ.भा.(१५।३२उ.व्यती.)
" " ११शु.रे.(व्य.७।३८या.भ.)१३।४६उ.
माघ.शु. ५बु. रेव.
फाल्गु.शु.७श.रा.(५१।५या.वैधृतिएवंभद्रा)

अशुद्ध विवाह मुहूर्त

गत पृष्ठ पर शुद्ध सपरिहार विवाह-मुहूर्त दिए गए हैं। यहाँ हम उन विवाह नक्षत्र एवं दिनों का निर्देश कर रहे हैं जिनमे अपरिहार्य दोष या दोषों के कारण विवाह नहीं हो सकते। साथ२ दोषों का निर्देश भी किया गया है, ताकि उनमें विवाह की अशास्त्रीयता के हेतु का ज्ञान हो सके।

चैत्र.शु.१० श.मघा } शनिकेतुवेध
" " ११र.मघा
" " १३मं.हस्त } भौमवेध
" " १४बु.हस्त
" " १४बु.चि. भद्रा
वै.कृ.२र. अनु.व्यती.भद्रा,
" " ४मं.मू.मृत्युलग्नाभाव
" " ५बु.मू. तिथिक्षय
" " " ८शु.श्र. } के.श.युति
" " " ९श.श्र.
" " " ९ श.ध.राहुवेध
" " ११चं. उ.भा.वैधृति
" " १२मं. उ.भा. वैधृ.क्षीणचंद्र
वै.शु.१श. रो. } शुक्रयुति
" " २र.रो.
" " ४चं.मृग.भद्रा,लग्नाभाव
" " ७शु.म. } श.के.वेध
" " ८श.म.
" " १० चं.उ.फा. संक्रान्तिमेंवेध
" " ११ मं. उ.फा. मं.वेध
" " १२ बु.ह.मृत्यु
" " १३ गु. चि. व्यतीपात
वै.शु. १३ गु.स्वा. व्यती.,लग्नाभाव
ज्ये.कृ. ५ गु. मू. लग्नाभाव भद्रा
ज्ये.कृ. ५ गु. उ.षा. लग्नाभाव
" " ५ गु.श्र. } श.के.युति
" " ६ शु.श्र.
" " ६ शु.ध. मृत्यु, राहुवेध
" " ७ श. ध.राहुवेध
" " ९ चं. उ.भा.तिथिक्षय
" " ११ मं.उ.भा.मिथुन में कर्तरी
" " १२ बु.रे. लग्नाभाव
" " १२ . अश्वि. मं.युति
ज्ये.शु.१र. मृ.क्षीणचन्द्र, मृत्यु
" " ६ शु.मघा } श.के.वेध
" " ७ श.मघा
" " ९ चं.उ.फा.मिथुन में कर्तरी,व्यती.
" " ९ चं.ह. व्यतीपात
" " ११ बु. चि.परिघार्ध मृत्यु
" " ११ बु. स्वा. भद्रा
" " १२ गु. स्वा.मासान्त
" " १३ श. अनु., मं.वेध
" " १४ र. मू. लग्नाभाव

आषा.कृ.पक्ष १३ दिन का होने से विवाहादि शुभ कृत्यों में वर्जित है।

आषा.शु.३ गु. मघा } श.के.वेध.
" " ४शु.मघा
" " ६ र. ह. परिघार्ध
आषा.शु. ८ मं. स्वा. लग्नाभाव
" " १२ श.अनु लग्नाभाव
" " १३ र.मासान्त
" " १४ चं. संक्रान्ति
" " १५ मं. उ.षा.वैधृ.मृत्यु, लग्नाभाव
श्राव.कृ.१बु. उ.षा.मृत्यु
" " १ बु.श्र. } श.के.युति
" " २ गु.श्र.
" " ४ श. उ.भा.मिथुन में कर्तरी
" " ५ र. उ.भा. तिथिक्षय
" " ७ चं.अश्वि. मिथुन में कर्तरी
" " ११ शु. मृग., मृत्यु
" " १२ श. मृग.क्षीणचन्द्र,मृत्यु, लग्ना.
श्राव.शु. १ बु.म. } श.के.वेध
" " २ गु.म.
" " ३ शु. उ.फा. } शुक्रयुति
" " ४ श. उ.फा.
" " ६ चं. हस्त मृत्यु
" " ६ चं. चि. मिथुन में कर्त्तरी
" " ८ बु. स्वा. भद्रा
" " ९ शु.अनु. क्रान्तिसाम्य
" " १० श. मू. वैधृ. भद्रा
" " १२ चं. उ.षा. } मं.वेध
" " १४ मं. उ.षा.
" " १४ मं. श्र. } श. के.युति
" " १५ बु. श्र.
" " १५ बु. ध. सूर्यवेध
भाद्र.कृ. १ गु.ध. मासान्त सू.वेध
" " ३ श उ.भा. भद्रा, मृत्यु
" " ४ र. उ.भा. मृत्यु
" " ४ र. रे. } भुजंगपात
" " ५ चं. रे.
" " ८ गु. मृग. लग्नाभाव
" " ९ शु. मृग.,भद्रा, तिथिक्षय
भाद्र.शु. ३ र.चि. } शु.युति
" " ४ चं.चि.
" " ४ चं. स्वा. लग्नाभाव
" " ६ ब. अनु. वैध.,
" " ७ गु. अनु. वैधृ., भद्रा, मृत्यु
भाद्र.शु. १० र. उ.षा. लग्नाभाव
" " ११ चं. श्र. } श. के. युति
" " १२ मं. श्र.
" " १२ मं. ध. लग्नाभाव
" " १५ शु. उ.भा. लग्नाभाव
आश्वि.शु. १ श.ह. क्षीणचन्द्र.
" " ८ र. उ.षा. मृत्यु, लग्नाभाव
" " ९ चं. श्र. श.के. युति
" " १३ गु. उ.भा. लग्नाभाव
कार्ति.कृ. ५ गु. मू. परिघार्ध
" " ९ चं.मं. } श.के वेध
" " १० मं.म.
मार्ग.कृ. १२ शु.ह. धनु में कर्तरी
मार्ग.शु. ३ शु. उ.षा. } के. युति
" " ४ श. उ.षा.
" " ४ श.श्र. } श. युति
" " ५ र.श्र.
" " ५ र.ध. } मं. वेध
" " ६ चं.ध.
" " ९ बु. उ.भा. मृत्यु
" " १२ श. आश्वि. परिघार्ध
" " १४ चं. रो. } केतुवेध
" " १५ मं. रो.
" " १५ मं. मृ. केतुवेध
पौषकृ. १ बु. मृ. केतुवेध
माघकृ. ५ मं. ह. मृत्यु
" " १२ मं. क्षीणचन्द्र लग्नाभाव
माघशु. १ (२र.) ध. भौमवेध
" " ९ श. रो. लग्नाभाव
" " १० र. (११ चं.) मृ. केतुवेध
" " १५ शु.म. शनिवेध
फाल्गु.कृ. १ श.म. शनिवेध
" " ३ चं. उ.फा. मासान्त
" " ५ बु. (६गु.) चि. भुजंगपात
" " ७ शु. स्वा. भद्रा
" " ९ चं. मू. भद्रा
" " ११ बु. (१२गु.) उ.षा. केतुयुति
फाल्गु.शु. ५ गु.अश्वि. क्रान्तिसाम्य
" " ७ ध. रा. भद्रा, वैधृ.लग्नाभाव

घर बैठे डाक्टरी सिखला देने वाली दो अनुपम पुस्तकें

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

घर बैठे डाक्टरी सिखला देने वाली दो अनुपम पुस्तकें

वर्मा एलोपैथिक गाइड

एक ऐसे उपयोगी ग्रन्थ की बड़ी आवश्यकता अनुभव की जा रही थी जो सर्वसाधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम को डाक्टरी चिकित्सा क रहस्य बता सके और वे सब रोगों का एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से भी बड़ी सरलता के साथ इलाज कर सकें। ३० वर्ष के अनुभवी और यशस्वी चिकित्सक डा० वर्मा ने जीवन भर के अनुभवों का निचोड़ इन पुस्तकों में भर दिया है। एक बार जो व्यक्ति यह अनुपम पुस्तक देख लेगा वह एक मिनट के लिए भी इन्हें अपने पास से अलग न करेगा।

'एलोपैथिक गाइड' डा० वर्मा की पहली पुस्तक है। इसमें डाक्टर जी ने एलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार मानव शरीर, आहार, साधारण और कठिन रोगियों के पथ्य, मल मूत्रादि की परीक्षा, विषाक्त कीटाणु तथा संक्रामक रोगों से बचने के उपाय जैसी अनेक उपादेय बातों को विस्तार-पूर्वक समझाने के बाद औषधियों को शरीर में प्रवेश करने के भिन्न-भिन्न मार्ग, व्यवस्था पत्र लेखन, औषधालय के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूचिभेद चिकित्सा में प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन का वर्णन है, किन-किन बीमारियों में और कौन-कौन से) वैक्सीन, थैरपी, सीरम-चिकित्सा, मुख्य-मुख्य रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे, इन्हेलेशन्स्प्रे, लिक्टस लिन्मिट लोशन, मिक्सचर्स, आइन्टमेन्टस, पिगमेंट, एल्प, पाउडर्स, रोग और उनमें प्रयोग किए जाने वाले इन्जेक्शन और कुछ पेटेन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां, जैसे पनीसिलीन, सल्फोनेमाइड आदि के गुण, दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियों के हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषयों का सरल शब्दों में वर्णन किया है। और पुस्तक को डाक्टरी की पहली पोथी बना दिया है।

दो वर्ष के थोड़े समय में ही इसके संस्करण हाथों हाथ बिक गए हैं। छठा परिवर्धित संस्करण अभी प्रकाशित हुआ है। इसमें कई विषय और बढ़ाये गये हैं। मूल्य केवल १२)

यशस्वी लेखक डाक्टर रामनाथ वर्मा की दो अनमोल कृतियां

डा० रामनाथ वर्मा की नवीनतम मार्गदर्शक पुस्तक

वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर

पृष्ठ संख्या ७०० से अधिक, पक्की जिल्द,

बढ़िया कागज, मोनोटाइप की छपाई। मूल्य १३)

डा० रामनाथ वर्मा की पुस्तकों से आशातीत लाभ उठानेवाले महानुभावों के लिये यह योग रत्नाकर एक अमूल्य निधि है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई सर्वसाधारण तथा हर एक वैद्य हकीम के लिए उपयोगी डाक्टरी चिकित्सा पद्धति को एक ऐसी पुस्तक जो इस चिकित्सा पद्धति की यथावत् गति का ज्ञान करा सके—प्रस्तुत करके डा० साहब ने एक बड़ी भारी कमी की पूर्ति कर दी है। हिन्दी में आज तक ऐसी पुस्तक नहीं थी जो डाक्टरी चिकित्सा के योगों का सम्यक्, सरल और सुलभ ज्ञान करा सके। इन सभी बातों का विचार रखते हुए 'वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर' में अब तक के प्रचलित, लोकप्रिय और आविष्कृत सभी एलोपैथिक योगों का समावेश हुआ है। हर रोगों की चिकित्सा के लिए लगभग ३००० योगों के संग्रह के साथ-साथ प्रमुख रोग की सूचीवेध चिकित्सा (इंजेक्शन) भी दी गई है। इस एक पुस्तक में ही विशाल डाक्टरी चिकित्सा में नित्य प्रयोग आने वाले आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के समस्त नुस्खों, योगों, पेटेण्टस, साधारण औषधियों तथा इंजेक्शनों का संग्रह है, सर्वोपयोगी इस ग्रन्थ की उपादेयता डा० साहब के अन्य लोकप्रिय ग्रन्थों के आधार पर सहज सिद्ध है। जिस प्रकार आयुर्वेद के नुस्खों के लिए भैषज्य रत्नावली प्रसिद्ध है और किसी भी वैद्य का भैषज्य रत्नावली पुस्तक के बिना गुजर नहीं हो सकती उसी प्रकार एलोपैथी (डाक्टरी) चिकित्सा करने वालों के लिए यह वर्मा एलोपैथिक योगरत्नाकर भी अत्यन्त उपयोगी है। इसके बिना डाक्टरी चिकित्सा करने वालों का काम नहीं चल सकेगा। यह संस्करण हाथों हाथ बिक जाने की निश्चित संभावना है।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, (पो० बा० १५८६), दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

'भाव प्रकाश' के कर्ता भावमिश्र ने आज से ५०० वर्ष पहले आयुर्वेद के अगाध सागर का संपूर्ण मंथन करने के उपरान्त सर्व साधारण की सुविधा के लिए यह अमृत उपस्थित किया। था। परन्तु मिश्र जी ने आरोग्य का यह संदेश संस्कृत में दिया था। संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित, अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी के भतपूर्व प्रधानाध्यापक तथा झांसी आयुर्वेद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पं० लालचन्द जी ने अपने हिन्दी अनुवाद द्वारा इसे इतना तरल-सरल करदिया है कि एक साधारण जन भी आसानी के साथ समझ सकता है और हर प्रकार के रोगों का इलाज ठीक प्रकार से कर सकता है।

आयुर्वेद सागर का अमृत

भाव प्रकाश

सम्पूर्ण

सरल हिन्दी अनुवाद

तथा विशेष वक्तव्य सहित

पं० लालचन्द जी काशी नगरी के सिद्ध हस्त, एवं यशस्वी वैद्य भी हैं, उनके हाथों से रोज सैकड़ों रोगी स्वास्थ्य लाभ करते रहे हैं। फलतः वैद्य जी ने अपने आयुभर के अनुभवों से प्रायः प्रत्येक स्थल पर जो विशेष वक्तव्य लिख दिए ह उनसे ग्रन्थ की उपयोगिता को चार चांद लग गये हैं। विशेषतया एक प्राचीन युनानी निघण्ट भा. टी. सहित भी इसके साथ दे दिया गया है।

इतने उपयोगी और वृहत्काय ग्रन्थ की छपाई बड़ी सावधानी के साथ नयनाभिराम रूप में की गई ह परन्तु मूल्य प्रचार की दृष्टि से केवल १६) रु० रखा गया है।

ग्रन्थ अभी-अभी प्रकाशित हुआ है अतएव अपनी प्रति का तुरन्त प्रबन्ध कर लेना ही बद्धिमानी होगी।

हृदय परीक्षा

लेखक डा० रमेशचन्द्र वर्मा

हृदय की व्याधियों और आधुनिक प्रणाली तथा उपकरणों से उनकी परीक्षा का विस्तृत वर्णन वाली इस पुस्तक में हृदय की शारीरिक रचना तथा हृदय रोगों के प्रधान और उपप्रधान लक्षण (Cardinal Symptom) भौतिक परीक्षण (Inspection) स्पर्शन (Palpation) अंगुली ताड़न तथा स्टेथेस्कोप द्वारा हृदनाद की स्वस्थ्य और विकृत दशाओं का ज्ञान करान क साथ ही हृदय के नाद, संकोचीय और प्रसारीय नाद आदि के १२ चित्रों सहित विषय को अच्छी तरह समझाया गया है। मू० २)

सूचीवेध विज्ञान [इंजेक्शन]

इंजेक्शन के संबन्ध म झांसी आयुर्वेद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० रमेशचन्द्र वर्मा के इस सर्वाधिक पूर्ण एवं नवीन ग्रंथ का थोड़े समय में ही अत्यन्त लोकोपयोगी सिद्ध हुई है। यह इस ग्रन्थ के अपने विषय में सर्वोतम होने का प्रबल एवं सिद्ध प्रमाण है। ग्रन्थ में शरीर विज्ञान, रोग और जीवाणुओं का विस्तृत परिचय, विशेषणशोधन कार्य, इन्जेक्शन* लगाने की संपर्ण विधियां और सूचीवेध से होने वाले उपद्रव तथा उनकी चिकित्सा के साथ साथ १००० के अधिक इंजेक्शन, पेनिसेलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन, सल्फाग्रूप आदि का विस्तृत दर्शन है। इसके अतिरिक्त इंजेक्शन सम्बन्धी हजारों औषधियों का गुणधर्म प्रभाव तथा रोगों पर उनका प्रयोग तथा विषय प्रभाव एवं उनके लक्षण आदि सब बातों के समावेश से यह ग्रन्थ सर्वथा अद्यतन (आ-टू-डेट) हो गया है। इंजेक्शन पर वैद्य एवं छात्रोपयोगी इससे बढ़िया नवीनतम तथा पूर्ण कोई ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। मूल्य ७॥) रु०

कफ परीक्षा

लेखक डा० रमेशचन्द्र वर्मा

विकृति विज्ञान का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कराने वाला हिन्दी भाषा में यह ग्रन्थ चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों के लिए एक नवीन देन है। यथा स्थान आवश्यक १३ चित्रों सहित कफ की संपूर्ण परीक्षा विधियों पर प्रकाश डाला गया है। श्लेष्मा की भौतिक परीक्षा, रसायनिक परीक्षा और अणुवीक्षणीय परीक्षा पद्धति का विस्तृत वर्णन है। साथ ही कफ आदि जांचने की रंजक विधियों पर भी प्रकाश डाला गया है। विषय को बोधगम्य बनाने वाली पुस्तक का मूल्य केवल १ रु० २५ नये पैसे।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाकश तथा पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर पो० बा० १५८६, दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे यहाँ मिलने वाली संस्कृत-हिन्दी पुस्तकों का सूचीपत्र

कर्मकाण्ड

नं०	पुस्तक का नाम	मूल्य-रु० न.पै.
१	अर्कीविवाह-भाषा टीका	०-१९
२	अग्निष्टोम पद्धति-आध्वर्य पद्धति, औद्गात्र पद्धति, होत्र पद्धति	६-००
३	अन्त्यकर्मदीपक-नित्यानन्द	३-००
४	अनुष्ठानप्रकाश-चतुर्थीलाल	१२-००
५	अष्टशान्ति-बम्बई	०-२०
६	आचार रत्न-लक्ष्मणभट्ट कृत	२-००
७	आचारार्क (ऋग्वेदीय)-खुला पन्ना	१-५०
८	आचारादर्श-यजुर्वेदियों के आन्हिक	१-२५
९	आधान पद्धति-वामन शास्त्री	३-००
१०	आन्हिककर्म सूत्रावली-बम्बई	४-००
११	आन्हिक पद्धति-पं० नव्य खण्डीदास	१-००
१२	आन्हिक सूत्रावली-(शुक्ल यजुर्वेदीय) वैद्यनारायण बम्बई	६-००
१३	आन्हिकसूत्रावलि-दौलतराम गौड़ काशी	६-००
१४	आर्याभिविनय-अजमेर	०-३७
१५	आश्लेषा-ज्येष्ठा शान्ति ०-५० तथा	०-२०
१६	उत्सर्जनोपाकरण विधि	०-५०
१७	उपनयन पद्धति-(वायुनन्दन) भाषा टीका	०-६९
१८	उपनयन पद्धति-(माध्यन्दिन) श्रीविद्याधर	१-५०
१९	उपनयन पद्धति-भाषा टीका	१-००
२०	उपनयन मार्तण्ड-भा०टी०-पं०विन्ध्याचल दत्त	०-७५
२१	उपाकर्म पद्धति सटिप्पण	१-२५
२२	ऋग्वेदीय ब्रह्मकर्म समुच्चय-पत्राकार-मूल-	५-००
२३	ऋग्वेदीयतनित्य विधि---खुला पन्ना	१-५०
२४	एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग-(सांवत्सरिक)	०-२२, ०-५०
२५	एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग-भाषा टीका	०-२५, ०-३७
२६	एकादशीव्रतोद्यापनप्रकाश	२-२५
२७	कर्मठगुरु---राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ कृत। नित्य कर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ। पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं---जैसे-सिद्धिपुत्रेष्ठि विधि। कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा	६-०
२८	कर्मकाण्डक्रमावली-सोमशम्भु विरचित	१-५०
२९	कर्मकाण्ड प्रकाशिका-मूल-वष्णवदास	०-६२
३०	कर्म मीमांसा दर्शन-भाषानुवाद सहित	८-५०
३१	कल्पपूजा	१-१२
३२	कलशप्रतिष्ठा-पूजा विधि	०-२५
३३	कातीय तर्पण पद्धति	०-१३
३४	कातीयष्टि दीपक-(दर्शपौर्णमास पद्धति)	१-५०
३५	कात्यायनी पितृतर्पण-बम्बई	०-२५
३६	कात्यायनी शान्ति	०-२५
३७	कुण्डमण्डप सिद्धि-भा० टी०	०-५०
३८	कुण्डार्क-छः संस्कृत टीका	३-००
३९	कुम्भ विवाह	०-१९
४०	कृत्यसार समुच्चय-श्री अमृतनाथ शर्मा	१-७५
४१	कृत्यसार समुच्चय (अमृतनाथ) पं०गंगाधर	४-५०
४२	कूताराम मीमांसा भा० टी०	०-६२
४३	कूपोत्सर्गपद्धति-भाषा टीका	०-१५
४४	गयायात्रापद्धति-भाषा	०-४५
४५	गयाश्राद्धपद्धति-मूल	०-६२
४६	गयाश्राद्धपद्धति-भाषा टीका सहित	०-८७
४७	गायत्री पूजा पद्धति---	०-२५
४८	गोदान तुलादान पद्धति-भाषा टीका	०-१२, ०-१९
४९	गौडीयश्राद्ध प्रकाश महानिबन्ध-खुला पन्ना	८-००
५०	गृहनिर्माण व्यवस्था-भाषा टीका	०-६२
५१	ग्रहप्रयोग-ग्रहशांति वायुनन्दन	२-२५
५२	ग्रह शान्ति-भाषा टीका	१-२५
५३	ग्रहशान्ति-प्रयोग-दौलतराम गौड़	३-५०
५४	चूडाकरण पद्धति-(माध्यन्दिन शाखा)	०-१९
५५	जन्मदिन पूजा पद्धति	०-१२, ०-२५
५६	ज्येष्ठाशान्ति-मूल	०-२५
५७	तीर्थ श्राद्ध विधि-भाषा टीका	०-२५
५८	तुलसी पूजा पद्धति-मूल	०-१३
५९	दशकर्म पद्धति-भाषा टीका	२-००
६०	दशकर्मपद्धति---मूल	१-००
६१	दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन---	०-२५
६२	दुर्गा पूजा---श्यामा पूजा पद्धति	०-७५
६३	दुर्गापूजन प्रयोग	३-००
६४	द्विरागमन-इष्टशोधन दत्तक मुहूर्त व्यवस्था भाषा टीका	०-१३
६५	द्वैत निर्णय सिद्धान्त संग्रह-(भानुभट)	०-५०
६६	धनिष्ठापञ्चक शांति-मूल	०-३७, ०-२५
६७	धर्मतत्व-भाषा	१-१३
६८	धर्म संग्रह-(धर्म बोधक श्लोक संचय)	२-२५
६९	नवग्रह विधान पद्धति-मूल-पत्राकार	०-६२
७०	नवरत्न विवाह पद्धति-भाषा टीका	३-००
७१	नान्दीमुख श्राद्ध पद्धति-भाषा टीका	०-३७
७२	नान्दी श्राद्ध प्रयोग-षोडश मातृका पूजादि समेत	०-५०
७३	नित्यकर्म पद्धति-भाषा टीका	०-५०
७४	नित्यकर्म प्रयोग-गोरखपुर	०-४४
७५	नित्य कर्म प्रयोग माला-श्री चतुर्थीलाल	२-००
७६	नित्य-नैमित्तिक-कर्मसमुच्चय-(यजुर्वेदीय)	५-५०
७७	नूतन वास्तु प्रबन्ध-भाषा टीका सहित-	०-६२
७८	पद्म पञ्चाशिका-भा० टी०	०-७५
७९	परिशिष्टोक्त पुण्याहवाचन-भा० टी०	०-२५
८०	पर्वोत्सव विवरण-भाषा	१-००
८१	पञ्चदेवता पूजन-(भा० टी०)	०-१९
८२	पञ्चरत्न विवाह पद्धति-पं० फलाहारि शर्मा	२-००
८३	पञ्चदान-पद्धति-मूल	०-३७
८४	पञ्चमङ्गल---	०-३७
८५	पञ्च महायज्ञ विधि-भा० टी० (आर्य समाज)	०-२५
८६	पञ्चयज्ञ-भाषा टीका समेत	०-५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

८७ पञ्चाङ्ग पद्धति—मूल ०–२५, ०–३७
८८ पार्थिव पूजन विधान–भा० टी० ०–१९
८९ पार्वण श्राद्ध प्रयोग–भा० टी० ०–५०, ०–३७
९० पितृकर्म निर्णय–पं० त्रिलोकनाथ ३–००
९१ पुत्तलविधान पद्धति–मूल ०–३१ भाषाटीका ०–३७
९२ पुराणोक्त गृह शान्ति–वास्तु शांति १–५०
९३ पुराणोक्त विवाह पद्धति—मूल– ०–३७
९४ पूतना शांति–भा० टी० ०–१३
९५ पौरोहित्य कर्म सार— १–५०
९६ प्रतिष्ठा संग्रह–मूल–पं० रामलाल ७–००
९७ प्रपञ्चसार विवेक—पत्राकार मूल– १–७५
९८ प्रयोगरत्न–नारायण भट्टी—ऋग्वेदीय ३–५०
९९ प्रेत मञ्जरी–भाषा टीका–वायुनन्दन १–७५
१०० प्रेतमञ्जरी–(यजुर्वेदीनां) भा० टी० १–५०, १–०
१०१ ब्रह्मकर्म समुच्चय–हिरण्यकेशीय (३८८) ५–००
१०२ ब्रह्मकर्म समुच्चय–ऋग्वेदीय ६–००
१०३ मंगलाष्टक शास्त्रोच्चार— ०–२०
१०४ महालक्ष्मी पूजन विधि— ०–१९
१०५ महालक्ष्मी पूजा पद्धति–भाषाटीका १–००
१०६ मूल शान्ति विधि—मूल ०–३१ तथा ०–१९
१०७ यज्ञोपवीत पद्धति–भा० टी० ०–७५
१०८ यज्ञोपवीत पद्धति–भा० टी० पं० रामस्वरूप १–५०
१०९ रामार्चन चन्द्रिका—आनन्दवन प्रणीत १–५०
११० रुद्रविधान पद्धति—मूल खुला पन्ना ०–६२
१११ रुद्रयोग प्रयोग—वायुनन्दन २–५०
११२ लघुदर्पण पद्धति—जगन्नाथ ६–००
११३ लम्बोदरी होम पद्धति–मूल खुला पन्ना ०–३१
११४ लक्ष्मी पूजन प्रयोग १–००
११५ वर्षकृत्य—रुद्रधर शर्मा ३–००
११६ वर्षकृत्य दीपक–पं० नित्यानन्द ७–००
११७ वास्तु पूजा पद्धति–गृहप्रवेश ०–३७
११८ वास्तु शान्ति प्रयोग काशी ०–६२ तथा बम्बई ०–७५
११९ वास्तु प्रतिष्ठा संग्रह २–५०
१२० वासिष्ठी हवन पद्धति—हिन्दी टीका ०–७५, ०–६७
१२१ वासिष्ठी हवन पद्धति–मूल ०–३५, भाषाटीका ०–५०
१२२ विनय पद्य पञ्चाशिका–भाषा टीका सहित ०–७५
१२३ विवाह पद्धति—चतुर्थीलाल भा० टी० १–१२
१२४ विवाहपद्धति–भैयाराम कृत भा० टी० २–००
१२५ विवाह पद्धति—आर्यसमाज ०–५०
१२६ विवाहसोपाङ्गविधि भा० टी० ३–००
१२७ विष्णुयाग प्रयोग २–५०, ३–००
१२८ विज्ञप्ति रत्नावली—अन्वयार्थ सहित १–००
१२९ वेदोक्त गृह वास्तु पद्धति–मूलखुलापन्ना ०–८७
१३० वैवाह पद्यावली—भाषा टीका सहित १–५०
१३१ शांतिप्रकाश चतुर्थीलाल ६–५०
१३२ शिलान्यास पद्धति–पं० विद्याधर गौड़ ०–२५
१३३ शिलान्यास पद्धति–देहली न्यास ०–३७
१३४ शिवार्चन पद्धति (शुक्लयजुर्वेदीय) १–५०
१३५ शुक्ल यजुशाखीय कर्मकाण्ड प्रदीप ७–००
१३६ शूद्रदश गात्र इकादशाह—वृषोत्सर्ग ०–३७
१३७ शूद्र पार्वण—एकोद्दिष्ट पद्धति वायुनन्दन मिश्र ०–१९
१३८ श्राद्धपद्धति—वाचस्पति १–७५
१३९ श्रावणी प्रयोग—वायुनन्दन १–५०
१४० श्राद्धप्रयोगदीपिका १–२५
१४१ श्राद्धविवेक—रुद्रधर २–००
१४२ श्राद्ध संग्रह–भाषा टीका–पं० वायुनन्दनमिश्र ५–००
१४३ षोडश-संस्कार-विधि—सनातन (भाषाटीका सहित) पं० गंगा प्रसाद ४–००
१४४ सपिण्डी निर्णयेष्टिका–श्रीशिवदयाल कृत मूल ०–४४
१४५ सापिण्ड्य दीपक—म० म० नित्यानन्द ०–३७
१४६ सन्ध्या—यजुर्वेदीय मूल ३ न. पै. भा. टी. ०–०६
१४७ सन्ध्या–(शु० यजुर्वेदीय) तर्पण भा० ह्यटी० ०–२५
१४८ सन्ध्याभाष्य समुच्चय—षट्भाष्य सहित ३–००
१४९ संस्कार कौस्तुभ—मूल खुलापन्ना अनन्तदेव ३–५०
१५० संस्कार दीपक–३ भाग नित्यानन्द पर्वतीय कृत १५–००
१५१ संस्कार पद्धति–भास्कर शास्त्री संशोधित ३–७५
१५२ संस्काराविधि—श्री दयानन्द सरस्वती निर्मित ०–८७
१५३ सन्यास पद्धति हि. टीका १–२५
१५४ संस्कार प्रकाश—चतुर्थीलाल ४–५०
१५५ संक्षिप्तदीक्षा पद्धति–तुलादान पद्धति सहित ०–१९
१५६ स्वस्त्ययन कलश प्रतिष्ठा— ०–१९
१५७ हरदी मातृ पूजा—भा० टी० ०–१९
१५८ होमपद्धति—गणपति पूजा सहित ०–१३
१५९ त्रिकाल संध्या—यजुर्वेदीय ०–१९
१६० त्रिपिण्डी श्राद्धपद्धति—वायुनन्दन ०–६२

धर्मशास्त्र

१६१ अग्निहोत्र चन्द्रिका–वामन शास्त्री देवत्रातभाष्य ४–८१
१६२ आङ्गिरससमृति—ए० एन० कृष्णा अयंगर १२–००
१६३ अश्विनीयान मीमांसा—श्री वेंकटाचल शास्त्री २–००
१६४ अशौचनिर्णय—मूल ०–२५ भाषाटीका ०–२५,
१६५ आचारार्क–बम्बई १–२५
क १६६ आचारादर्श—बम्बई १–२५
१६७ आचारभूषण—(त्रयम्बक) हिरण्यकेश्यान्हिक ६–५०
१६८ आचारमयूख—(नीलकंठ भट विरचित) १–२५
१६९ आपस्तम्बधर्मसूत्र–हरदत्तकृत उज्ज्वला वृत्ति १२–००
१७० आपस्तम्बीयधर्मसूत्र—मूल, पाठभेद, टिप्पणी, उज्ज्वल वृत्ति के उद्धरण तथा सूत्र अनुक्रमणिका ३–००
१७१ आचारेन्दु—त्रयम्बक विरचित ६–००
१७२ आधानपद्धति—वामन शास्त्री प्रणीत मूल ३–००
१७३ आर्यविद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिम्मणभट विरचित तथा डा० मंगलदेव शास्त्री द्वारा सम्पादित १०–००
१७४ उत्सर्गमयूख—(नीलकंठभट) मूल ०–२५
१७५ कर्मविपाक–(नक्षत्र चरण) भाषाटीका ३–००
१७६ कात्यायन मत संग्रह–नारायण चन्द्र वन्द्योपाध्याय सम्पादित अंग्रेजी भूमिका, टिप्पणी सहित २–२५
१७७ कालमाधवकारिका—(माधवाचार्य प्रणीत) ०–७५
१७८ कालमाधव—माधवाचार्य कृत सटिप्पण ३–००
१७९ कमदीपिका–(केशवभटाविरचित) श्रीगोविन्द भट्टाचार्यकृत विवरण सहित–३ भागों में ६–००
१८० कृत्यकल्पतरु–लक्ष्मीधर विरचित १ से ११ खंड ब्रह्मचारिकांड ११ रु० गृहस्थकांड १२ रु० नियतकाल काण्ड १९।५० श्राद्धकाण्ड १५ रु० दानकाण्ड ९ रु० व्रतकाण्ड १७ रु० तीर्थविवेचनकांड ८ रु० शुद्धिकाण्ड ९।३८ राजधर्मकांड १० रु० व्यवहारकाण्ड २६।७५ मोक्षकाण्ड १२ रु० १४९–६२
१८१ कृत्यरत्नाकर–श्री चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित ६–००
१८२ क्यूं (धर्मदिग्दर्शन) माधवाचार्य शास्त्री दो भाग १५–०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१८३ मानव धर्म सूत्र परिशिष्ट (द्वितीय प्रश्न)—अंग्रेजी भूमिका टिप्पणी सहित—ए०एन० कृष्ण १२—००
१८४ गृहस्थ रत्नाकर—चण्डेश्वर ५—२५
१८५ चतुर्वर्गचिंतामणि—प्रायश्चित खंड हेमाद्रि—१२—००
१८६ चतुर्विंशतिमत संग्रह—भट्टोजी दीक्षित संकलित ४—००
१८७ जयसिंह कल्पद्रुम—मूलमात्र बम्बई १२—००
१८८ जाति भास्कर—भाषाटीका बम्बई ८—००
१८९ टोडरानन्द—(सर्ग सौख्य,अवतार सौख्य) प्रथम १०—०
१९० तिथ्यर्क-दिवाकरकृत—तिथियों के निर्णय आदि २—००
१९१ तिथिचिन्तामणि ०—७५
१९२ तिथिनिर्णय—भट्टोजी दीक्षित १—५०
१९३ तीर्थचिन्तामणि—वाचस्पति मिश्र ३—७५
१९४ दण्डविवेक (वर्धमान कृत) १२—००
१९५ दत्तकमीमांसा—नंद पण्डितकृत मंजरी व्याख्या ५—५०
१९६ दर्शपूर्णमास प्रकाश—प्रथमभाग धूर्तस्वामी भाष्यवृत्ति तथा रुद्रदत्तप्रणीत सूत्रदीपिका सहित—पूना १०—००
१९७ दानक्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द-प्रणीत २—२५
१९८ दानचंद्रिका—मूल १—१२
१९९ दानदीपिका—भाषाटीका ०—५०
२०० दानमयूख—(नीलकंठ भट) मूल २—५०
२०१ दानसागर—(बल्लालसेन) ४ भाग सम्पूर्ण ३०—००
२०२ दानसंग्रह मूल ३—५०
२०३ दीक्षातत्वमीमांसा—पं० वेणीराम शर्मा १—५०
२०४ दीक्षाप्रकाशिका—श्री विष्णु भट विरचित १—००
२०५ धर्मकल्पद्रुम—स्वा० दयानन्द कृत सनातन धर्म का अत्युत्तम ग्रन्थ १—३ भाग, पंचम, ७—८ १०—००
२०६ धर्मकोष—व्यवहार कांड व्यवहार मातृका, विवाद पदानि तीन खंडों में पं० लक्ष्मण शास्त्री कृत ५२—०
२०७ धर्मतत्व निर्णय—(वासुदेव शास्त्री) पूना २—२५
२०८ धर्मतत्वनिर्णय परिशिष्ट—(वासुदेव शास्त्री) १—२५
२०९ धर्म प्रदीप—मूलमात्र २—००
२१० धर्मविज्ञान—स्वा० दयानन्द कृत तीन भाग में (सनातन धर्म) १३—००
२११ धर्मसिन्धु—मूल बम्बई ४—००
२१२ धर्म सिन्धु—हिन्दी टीका सहित बम्बई १२—००
२१३ धर्मशास्त्रीय व्यवस्था संग्रह— १०—००
२१५ धार्मिक विमर्शसमुच्चय—द्वितीय ५—००
२१६ निर्णयसिन्धु—मूलमात्र खेमराज ५—००
२१७ निर्णयसिन्धु—(कमलाकर भट प्रणीत) पाठान्तर टिप्पणी आदि सहित नारायण आचार्य ९—००
२१८ निर्णयसिन्धु—(कमलाकर भट) कृष्ण भट कृत संस्कृत व्याख्या सहित सम्पूर्ण २२—००
२१९ निर्णयसिन्धु—पं० ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी १४—००
२२० निर्णयसिन्धु—भा०टी० पं० मिहिरचन्द्र १५—००
२२१ निर्णयामृत—मूल ३—५०
२२२ नीतिमयूख—नीलकंठ भट प्रणीत १—२५
२२३ पश्वालम्भ मीमांसा—वामन शास्त्री विरचित-मूल १—०
२२४ पाराशर स्मृति—भा० टीका १—५०
२२५ पुरुषार्थ चिन्तामणि—विष्णुभट प्रणीत बम्बई ४—००
२२६ प्रायश्चित कदम्ब—भा० टी० १—००
२२७ प्रायश्चित प्रकाश बम्बई १—७५
२२८ प्रायश्चित मयूख—(नीलकंठ भट) सटीक २—००
२२९ प्रायश्चितेन्दुशेखर कुण्डार्कश्च—नागोजी भट २—५०
२३० प्रायश्चित प्रदीप—कृत्यप्रदीप—शुद्धिप्रदीप १—५०
२३१ बौधायन धर्मसूत्र—गोविन्द कृत विवरण ८—००
२३२ ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्ड—हिन्दी टीका सहित १०—००
२३३ बृहस्पति स्मृति—अंग्रेजी भूमिका, टिप्पणी, अनुक्रमणिका सहित—श्री रंगस्वामि संकलित १८—००
२३४ मदन महार्णव—(कर्म विपाक के ऊपर) २४—००
२३५ मदनरत्नप्रदीप—मदनसिंहकृत व्यवहार कांड १२—००
२३६ मनुस्मृति—कुल्लूक भट कृत मन्वर्थ मुक्तावलि, टिप्पणी,पाठान्तर,आदि सहित-नारायण सं० ७—००
२३७ मनुस्मृति—मणि प्रभा हिन्दी टीकासहित ५—००
२३८ मनुस्मृति—सान्वय हिन्दी टीका बम्बई ६—००
२३९ मनुस्मृति—हिन्दी टीका सहित १—४अध्याय २—००
२४० मनुस्मृति—(द्वितीयोध्याय) सं० हि० टीका ०—७५
२४२ यति धर्म संग्रह—(विश्वेश्वर सरस्वती) २—७५
२४३ यज्ञ तत्त्व प्रकाश—चित्रस्वामि शास्त्री ३—००
२४४ यज्ञ मीमांसा—भा० टी० २—५०
२४५ याज्ञवल्क्यस्मृति—वीरमित्रोदय तथा मिताक्षरा १२—००
२४६ याज्ञवल्क्य स्मृति—मिताक्षरा तथा अन्य प्राच्य टीका पाठान्तर टिप्पणी बंबई ८—००
२४८ याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्क टीका—पूना १९—५०
२४९ याज्ञवल्क्यस्मृति—सुबोधिनी और बालंभटी व्याख्या 'मिताक्षरा' तथा उससे भी प्राचीन विश्वरूपाचार्य कृत बालक्रीडा सहित १७—००
२५० याज्ञवल्क्यस्मृति—बालम्भटी व्याख्या समलंकृत मिताक्षरा टीका सहित व्यवहाराध्याय सम्पूर्ण १६—५०
२५१ राजधर्म कौस्तुभ—(अनन्तदेव) अंग्रेजी भूमिका १५—००
२५२ वनमाला—जीवनाथज्ञा हिन्दी टीका ०—२५
२५३ वाशिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण १—००
२५४ विधान परिजात(अनन्तदेव)चतुर्थस्तबक तक ५५—००
२५५ विधानमाला—नृसिंह भट शंकर ६—२५
२५६ विधानसंग्रह— ०—५०
२५७ विवादचिन्तामणि—मूल २—५०
२५८ विवाद रत्नाकर—चंडेश्वर कृत ६—००
२५९ वीरमित्रोदय—परिभाषाप्रकाश-संस्कारप्रकाश २५—००
२६० वीरमित्रोदय—आन्हिक प्रकाश (मित्र मिश्रप्रणीत) १२—०
२६१ वीरमित्रोदय—तीर्थप्रकाश ९—००
२६२ वीरमित्रोदय—पूजा प्रकाश ८—००
२६३ वीरमित्रोदय—भक्ति प्रकाश ४—००
२६४ वीरमित्रोदय—लक्षणप्रकाश १४—००
२६५ वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश १०—००
२६६ वीरमित्रोदय—व्यवहाराध्याय कलकत्ता ७—५०
२६७ वीरमित्रोदय—व्यवहार प्रकाश १२—००
२६८ वीरमित्रोदय—शुद्धिप्रकाश ६—००
२६९ वीरमित्रोदय—समय प्रकाश ६—००
२७० वीरमित्रोदय—श्राद्धप्रकाश ८—००
२७१ व्यवहार चिन्तामणि—वाचस्पतिमिश्र २५—००
२७२ व्यवहार निर्णय—वरदराज सटिप्पण—के० बी० रंगस्वामी संपादित अंग्रेजी भूमिका सहित ३०—००
२७३ व्यवहार मयूख—(नीलकंठ) मूल १—५०
२७४ व्यवहार मयूख (श्री नीलकंठ) पी० वी० काणे संपादित पाठान्तर तथा अंग्रेजी टिप्पणी सहित १०—००
२७५ व्यवहारमाला—पूना १—५०
२७६ व्रतकोश—जगन्नाथ शास्त्री संग्रहीत २—००
२७७ व्रतचन्द्रिका—हिन्दी गौरीशंकर उपाध्याय २—००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२७८ व्रतराज—हिन्दी टीका सहित जिलददार १६–००
२७९ व्रतार्क—भाषा टीका सहित ८–००
२८० व्रात्यताप्रायश्चित निर्णय तथा व्रात्यता शुद्धि संग्रह २–००
२८१ शांतिमयूख—(नीलकंठ) वायुनंदन संपादित २–५०
२८२ शांतिसार—दिनकरभट ३–५०
२८३ शास्त्रतत्वनिर्णय—नीलकंठ कृत—श्रीसदाशिव कातरे कृत अंग्रेजी भूमिका सहित संपादित ५–००
२८४ शुद्धिमयूख—नीलकंठ—मूल १–००
२८५ श्राद्ध कल्पलता—नन्द पंडित ६–००
२८६ श्राद्धक्रियाकौमुदी—गोविंदानन्द प्रणीत ५–२५
२८७ श्राद्ध चन्द्रिका—दिवाकर भट ४–००
२८८ श्राद्ध मयूख—नीलकंठ—मूल १–५०
२८९ श्राद्धमञ्जरी—बापू भट विरचित ३–००
२९० षडशीति—(आदित्याचार्य) शुद्धिचन्द्रिका टीका ३–००
२९१ सत्यार्थ प्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती ३–००
२९२ सनातन धर्मोद्धार—चार भागों में ४०–००
२९३ सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन १–२५
२९४ समय मयूख—नीलकंठ–मूल २–००
२९५ संस्कार पद्धति—पूना ३–७५
२९६ संस्कार मयूख— १–५०
२९७ संस्कार रत्नमाला—दो भाग संपूर्ण पूना १८–५०
२९८ संस्कार गणपति—श्री रामकृष्णप्रणीत १५–००
२९९ स्मृति कौस्तुभ—अनन्तदेव (सम्वत्सर-दीधिति) ५–००
३०० स्मृति समुच्चय—(२७ स्मृतियों का संग्रह)—पाठान्तर निर्देश आदि सहित संशोधित ७–५०
३०१ स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २–५०
३०२ स्मृतिसारोद्धार—श्री विश्वम्भर त्रिपाठी कृत ८–००
३०३ हिन्दू संस्कार–(हिन्दी)–डा० राजबली पांडे १५–००
३०४ त्रिशच्छलोकी—शंकर शास्त्री विरचित ४–५०
३०५ त्रिस्थली सेतु—तीर्थेन्दु शेखर मोक्ष विचार ०–७५
३०६ त्रिस्थली सेतु—नारायण भट प्रणीत ५–५०

— — — —

महापुराण-उपपुराण

३०७ अग्निपुराण–मूल मात्र संपूर्ण पूना १०–००
३०८ अष्टादश पुराण दर्पण—भाषा ६–००
३०९ अष्टादश पुराण परिचय–श्रीकृष्णमणि २–००
३१० आदि पुराण—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४–५०
३११ कल्कि पुराण—भा० टी० २–००
३१२ काशी खंड—संस्कृत टीका खुला पत्रा १५–००
३१३ काशी खण्ड—भाषा टीका खुला पत्रा २०–००
३१४ काशी खंड—केवल भाषा बुक साइज १०–००
३१५ केदार खंड—मूल बम्बई १०–००
३१६ केदार खंड—भा० टी० ,, २०–००
३१७ केदार खंड—केवल भाषा ,, ९–००
३१८ गरुड़ पुराण—१६ अध्याय भा० टी० खुला २–५०
३१९ गरुड़पुराण—३४ अध्याय भा० टी० ,, १–५०
३२० गरुड़ पुराण –सारोद्धार संस्कृत टीका २–७५
३२१ देवी भगवत मूल—गुटका काशी ६–००
३२२ देवी भागवत—भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ४०–००
३२३ देवी भागवत—केवल भाषा बुक साइज २०–००
३२४ पद्म पुराण—मूल ४ भागों में सम्पूर्ण पूना ३०–००
३२५ पुराण दिग्दर्शन—माधवाचार्य शास्त्री विरचित ८–००
३२६ पुराण विषयानुक्रमणिका–राजनीति १५–००
३२७ पुराणरहस्यम्—(श्री अनदाचरण) संस्कृत १–५०
३२८ पुराण संहिता–आलमंदार संहिता, बृहत्सदाशिव संहिता, सनत्कुमार संहिता काशी ८–००
३२९ पुराणों में गंगा—रामप्रताप त्रिपाठी हिन्दी ३–५०
३३० प्रेमसुधा सागर–भागवत दशमस्कन्ध हिन्दी ३–५०
३३१ ब्रह्मवैवर्तपुराण-मूल बुकसाइज पूना २ भाग १४–२५
३३२ ब्रह्मवैवर्त पुराण—खुलापत्रा बम्बई १८–००
३३३ ब्रह्माण्ड पुराण—खुला पत्रा मूल १४–००
३३४ ब्रह्मोत्तर खंड—भा० टी० ३–५०
३३५ भविष्य पुराण–मूल बुक साइज २५–००
३३६ भागवत—गुटका निर्णय सागर बम्बई ९–००
३३७ भागवत—मोटा अक्षर मूल बड़ा साइज ६–००
३३८ भागवत—सचूर्णिका सं० टीका बम्बई खुला २५–००
३३९ भागवत—चूर्णिका संस्कृत टीका काशी २४–००
३४० भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका खुला २४–००
३४१ भागवत—भाषा टीका सामयिकी पत्रात्मक २०–००
३४२ भागवत–सरस्वती भाषा टीका दृष्टान्त और प्रकाश टिप्पणी से अलंकृत श्रीकृष्ण पूजन, भागवत हवन विधान, प्रत्येक अध्यायसार, प्रतिस्कन्ध श्रवण-माहात्म्य आदि विषयों से विभूषित ३०–००
३४३ भागवत–शालिगराम कृत भा० टी० खुला पत्रा मोटा अक्षर बढ़िया कागज बम्बई ४०–००
३४४ भागवत—भा० टी० बुकसाइज दो भाग—१५–००
३४५ भागवत—सामयिकी भा०टी०–पं० रामतेज १५–००
३४६ भागवत सुधा सागर—केवल भाषा ८–५०
३४७ भागवत—केवल भाषा अनेक रंगीन चित्रों सहित २ भाग इलाहाबाद १६–००
३४८ भागवत—दशमस्कन्ध भा०टी०खुला बम्बई १०–००
३४९ भागवत—दशमस्कन्ध भा०टी० खुला काशी ८–००
३५० भागवत—एकादशस्कन्ध भा०टी०खुला बम्बई ४–००
३५१ भागवत—एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद २ भाग काशी ६–५०
३५२ भागवत एकादशस्कन्ध–हिन्दी १–०० जिल्द १–३७
३५३ भागवत–राधेश्याम तर्ज—श्रीलाल कृत ५–२५
३५४ मत्स्य पुराण—खुला पत्रा मूल १४–००
३५५ मत्स्य पुराण—केवल हिन्दी राम प्रताप २०–००
३५६ मन्त्र भागवत—नीलकंठ सटीक पत्रात्मक ०–८७
३५७ महा भागवत—देवी पुराण मूल खुला पत्रा २–००
३५८ मार्कण्डेय पुराण भा० टी० खुला १५–००
३५९ युग पुराण— २–००
३६० रामाश्वमेध—मूल (पद्मपुराणान्तर्गत) मोटा अक्षर–खुला पत्रा बम्बई ४–२५
३६१ रामाश्वमेध–भा० टी० खुला पत्रा ११–००
३६२ रामाश्वमेध—(पद्मपुराणान्तर्गत) भाषा ४–५०
३६३ लघुभागवतामृत—रूपगोस्वामी कृत भा० टी० ४–००
३६४ ललितोपाख्यान—ब्रह्माण्ड पुराणान्तागत मूल ३–५०
३६५ वामनपुराण—खुला पत्रा मूल ६–००
३६६ वामनपुराण—केवल भाषा वार्तिक ९–००
३६७ वायुपुराण—खुला पत्रा, मोटा अक्षर १२–००
३६८ वायुपुराण–केवल भाषा पं० रामप्रताप शास्त्री १२–००
३६९ विष्णुपुराण—भा० टी० गोरखपुर ४–००
३७० विष्णु धर्मोत्तर पुराण—मूल खुला पत्रा १८–००
३७१ विष्णुधर्मोत्तर–३सरा कांड चित्र प्रकरण—डा० पी० शाह द्वारा सम्पादित २०–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

३७२ शिवपुराण—भा० टी० खुला पत्रा ५०–००
३७३ शिवपुराण—केवल भाषा बम्बई २०–००
३७४ शिवभारत—संस्कृत २–२५
३७५ श्री सुबोधिनी—श्री वल्लभाचार्य ४–५०
३७६ स्कन्दमहापुराण–मूल सम्पूर्ण खुला पत्रा बम्बई नेट ३५०–००
३७७ सुखसागर—(भागवत) सरल भाषा सचित्र २०–००
३७८ सुखसागर—मोटा अक्षर मथुरा १६–०, १२–००
३७९ सुखसागर—मध्यम लखनऊ १०–००
३८० शुकसागर—सरल भाषा लाला शालिगराम कृत सफेद कागज बड़ा साइज बढ़िया बम्बई २८–००
३८१ शुकसागर—ला० शालिग्राम गुटका, बारीक १२–००
३८२ शुक सुधासागर–मोटा अक्षर रंगीन चित्र २०–००
३८३ सौर पुराण—मूल पूना ४–५०
३८४ हरिवंशपुराण—संस्कृत टीका पत्रात्मक २०–००
३८५ हरिवंश पुराण–नीलकंठी सं० टी० बकसाईज ४०–००
३८६ हरिवंश पुराण—भाषा टीका खुला ३२–००
३८७ हरिवंश पुराण भाषा—सम्पूर्ण लखनऊ १६–००
३८८ हरिवंश पुराण—भाषा बंबई १२–००
३८९ हरिलीलामृत–श्रीबोपदेव प्रणीत सटीक २–००

रामायण-महाभारत

३९० अद्भुतरामायणभा० टी० २–००
३९१ अध्यात्म रामायण–मूल २–००
३९२ अध्यात्म रामायण—संस्कृत टीका खुला पत्रा ७–००
३९३ अध्यात्म रामायण–भा० टी० बुक साईज ३–००
३९४ अध्यात्म रामायण–हिन्दी टीका मोटा अक्षर १०–००
३९५ आनन्द रामायण—मूल १०–००
३९६ आनन्द रामायण—भा० टी० बुकसाइज १६–००
३९७ काशीतिहास—पं० भाउ शास्त्री बझे संस्कृत १–५०
३९८ गर्ग संहिता—मूल–खुला ११–००
३९९ गर्ग संहिता—भा० टी० खुला २०–००
४०० जैमिनी अश्वमेध—मूल खुला ४–५०
४०१ जैमिनी अश्वमेध—भा० टी० खुला ११–००
४०२ नासिकेतोपाख्यान–हिन्दी टीका सहित १–००
४०३ भारतसार–केवल मूल मात्र ३–५०
४०४ मन्त्र रामायण—सटीक गुटका २–००
४०५ महाभारत–मूल–संपूर्ण १८ पर्व ४ जिल्दों में गोरखपुर २२–५०
४०६ महाभारत—नीलकंठी संस्कृत टीका संपूर्ण बुकसाइज पूना–दुष्प्राप्य २५०–००
४०७ महाभारत–आदिपर्व–हि० टी० सातवलेकर ७–००
४०८ महाभारत–सभापर्व–भा० टी०–सातवलेकर ३–५०
४०९ महाभारत—शांति पर्व पूर्वार्द्ध–सातवलेकर १०–००
४१० महाभारत-सम्पूर्ण १८ पर्व भाषा टीका सहित ६ जिल्दों में गोरखपुर ६५–००
४११ महाभारत–केवल हिन्दी छोटा टाइप १० जिल्दों में संपूर्ण पं० द्वारकाप्रसाद कृत २०–००
४१२ महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, सम्पूर्ण, मोटा अक्षर सचित्र १० बड़ी जिल्दों में प्रयाग ९०–००
४१३ महाभारत–आर्य संगीत–सरदारयशवन्त सिंह ४–००
४१४ महाभारत की समालोचना–पं सातवलेकर १–५०
४१५ मूल रामायण—भाषा टीका ०–२५
४१६ मूल रामायण—शीलनिरूपणाध्याय सं० हि० ० ६२
४१७ रामाश्वमेध—मूल खुलापत्रा ४–२५
४१८ रामाश्वमेध–भा० टी० खुला पत्रा बम्बई ११–००
४१९ रामाश्वमेध—केवल भाषा वार्तिक ४–५०
४२० वाल्मीकी रामायण—मूल गुटका बम्बई ८–००
४२१ बाल्मीकी रामायण—मूल खुला मोटा अक्षर १७–००
४२२ बाल्मीकी रामायण—मूल–गुटका काशी ८–००
४२३ बाल्मीकी रामायण—गोविन्द राजीय, (भूषण) रामानुजि तनिश्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टय सहित खुला पत्रा रु. ६०–०० बुक साइज ३ बड़ी जिल्दों में मोटा अक्षर ६०–००
४२३ बाल्मीकी रामायण—पं० ज्वालाप्रसाद कृत भा० टी० खुला बम्बई ४०–००
४२४ बाल्मीकी रामायण—भाषा टीका काशी २४–००
४२५ बाल्मीकि रामायण—हिन्दी भाषानुवाद सहित–१० भाग में–पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी २४–००
४२६ बाल्मीकि रामायण–बालकांड–पं०सातवलेकर ५–००
४२७ बाल्मीकि रामायण—अयोध्याकांड–भा०टी० ४–००
४२८ बाल्मीकि रामायण—किष्किन्धा सातवलेकर ४–००
४२९ बाल्मीकि रामायण—अरण्यकांड–सातवलेकर ४–००
४३० बाल्मीकि रामायण–युद्धकांड २भागसातवलेकर ८–००
४३१ बाल्मीकि रामायण–उत्तरकांड सातवलेकर ४–००
४३२ बाल्मीकि रा०–सुन्दरकाण्ड–मूल गु० बम्बई २–५०
४३३ बाल्मीकि रामायण–सुन्दरकांडमूल काशी २–००
४३४ बाल्मीकि रामायण–सुन्दर कांड–मूल–खुला ४–००
क४३५ बाल्मीकि रा०–सुन्दरकांड भा०टी०रामतेज ३–००
४३६ बाल्मीकि रा०–सुन्दरकांड भा०टी० पत्रात्मक ५–५०
४३७ बाल्मीकि रामायण–केवल भाषा मोटा अक्षर दो जिल्दों में बम्बई २५–००
४३८ बाल्मीकि रा०–भाषा मोटा अक्षर लखनऊ २२–००
४३९ बाल्मीकि रामायण—सम्पूर्ण भाषा इलाहाबाद १३–००
४४० रामायण कालीन समाज–हिन्दी ४–००
४४१ रामायणकालीन संस्कृति–हिन्दी ४–००

व्रत, कथा, महात्म्य आदि

४४२ अनन्त व्रत कथा–भा० टी० ०–५०
४४३ अन्नपूर्णा व्रत कथा–भा० टी० ०–३७
४४४ अक्षय नवमी व्रत कथा–भा० टी० ०–१३
४४५ आदित्य व्रत कथा–भा० टी० ०–१९
४४६ इतिहास–गुरु खालसा हिन्दी ५–००
४४७ उत्तर काशी माहात्म्य ०–३१
४४८ ऋषि पञ्चमी व्रत कथा—भा० टी० ०–५०
४४९ एकादशी माहात्म्य– भा० टी० ३–०
४५० एकादशी महात्म्य केवल भाषा ०–७५
क४५१ करवा चतुर्थी–भा० टी० ०–२५
४५२ कृष्ण जन्माष्टमी–भा० टी० ०–३७
४५३ कार्तिक महात्म्य–भा० टी० १–५०, २–०, ३–०
४५४ कार्तिक महात्म्य–३५ अध्याय क्षेमंकारी ४–५०
४५५ कार्तिक शक्ल रविषष्ठी व्रत कथा ०–१९
४५६ काशी यात्रा–भाषा, सचित्र ०–८७
४५७ काशी केदार महात्म्य– ा० टी० ३–००
४५८ गणेश चतुर्थी माघ मास–हिन्दी टीका ०–१३
४५९ गणेशचतुर्थी भाद्र मास–हिन्दी टीका ०–१३
४६० गया महात्म्य–गया पद्धति सहित–हिन्दी टीका १–७५
४६१ गया महात्म्य—मूल ०–८७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४६२ चन्दनषष्ठी–सूर्य षष्ठी कथा हिन्दी टीका सहित ०–२५
४६३ चान्द्रायण व्रत कथा–हिन्दी टीका सहित ०–३१
४६४ चित्रगुप्त कथा–हिन्दी टीका ०–१३
४६५ जन्माष्टमी व्रतकथा–भा० टी० ०–३७
४६६ जीवित्पुत्रिका–व्रतकथा–भा० टी० ०–१९
४६७ ज्येष्ठमासमहात्म्य–भा० टी० ३–००
४६८ पञ्चकोशी या त्रा ०–३१
४६९ पुरुषोत्तम महात्म्य–भा० टी० अधिक ३–०, २–७५
४७० प्रेमसागर—भाषा सचित २–०, २–५०, ३– ४–००
४७१ प्रेमसुधासागर—भाषा सचित्र गोरखपुर ३–५०
४७२ बहुला व्रतकथा–भा० टी० ०–१९
४७३ बुद्धाष्टमी व्रतकथा–भा० टी० ०–३१
४७४ भक्तमाल–नाभाजी सटीक ३–५०
४७५ भक्तमाल–रामरसिकावली कवित्त दोहा १०–००
४७६ भाद्रपद गणेश चतुर्थी–भा० टी० ०–१९
४७७ भारतीय व्रतोत्सव—हिन्दी ३–००
४७८ भीष्मपञ्चक व्रत प्रयोग ०–२५
४७९ मङ्गला गौरी व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
४८० महालक्ष्मी व्रतकथा— भा०टी० ०–२५
४८१ माघ महात्म्य–भा ०टी०, ३, २–२५ २–५०
४८२ माघ भादो गणेश चौथ ०–१९
४८३ मुक्ता भरण सप्तमी–भा० टी० ०–२५
४८४ मार्गशीर्ष महत्म्य—भा० टी० ३–००
४८५ रविपीठ व्रत कथा—भा० टी० ०–१३
४८६ रामनवमी व्रतकथा— ०–१९
४८७ वट सावित्री व्रत कथा—भा० टी० ०–३७
४८८ वामन द्वादशी व्रत कथा— वायुनन्दन ०–१९
४८९ विश्राम सागर— ५–००
४९० व्यतीपात कथा—मूल ०–१९
४९१ व्यतीपात कथा—भा० टी० ०–३७
४९२ व्रतराज—भा० टी० १६–००
४९३ व्रतार्क—भा० टी० ८–००
४९४ वैशाख महात्म्य—भा० टी० ३–००
४९५ शनि प्रदोष–पञ्च प्रदोष व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
४९६ शिवरात्री व्रत कथा—भा० टी० ०–१३
४९७ शिवरात्रि महात्म्य—भा० टी० ०–७५
४९८ श्रावण मास महात्म्य—भा० टी० ४–००
४९९ सङ्कट गणेश चतुर्थी व्रत कथा—मूल ०–४४
५००क संकट गणेश चतुर्थी भा० टी० ०–७५, १–२५
५०१ सत्यनारायण इतिहास समुच्चय—०–६२, १–००
५०२ सत्यनारायण पूजा कथा—मूल ०–२५
५०३ सत्यनारायण—व्रतकथासप्ताध्यायी भा०टी० ०–४४
५०४ सत्यनारायण कथा—भा० टी० ५ अध्याय ०–३१
५०५ सत्यनारायण–भा०टी०५ अध्याय वायुनन्दन ०–३७
५०६ सत्यनारायण कथा—भाषा राधेश्याम ०–५०
५०७ सावित्री व्रत कथा–भा० टी० ०–३७
५०८ सोमवती अमावस्या कथा—भा० टी० ०–५०
५०९ सोमावती कथा—भा० टी० ०–३१
५१० हरितालिका व्रत कथा—भा० टी० ०–२५
५११ हरिलीलामृत—बोपदेव २–००
५१२ हलषष्ठी व्रत कथा—भा० टी० ०–१३
५१३ होलिका कथा—भा० टी० ०–१९

वेदान्त

(शांकर, रामानुज, वल्लभाचार्य आदि)

५१४ अच्युत लेखमाला–विद्वानों के लेख हिन्दी २–००
४१५ अणुभाष्य–वल्लभाचार्य प्रणीत श्रीधरकृत बालबोधिनी टीका सहित दो भागों में ६–२५
५१६ अद्वैत ब्रह्म सिद्धि–(सदानन्द यति) ४–६९
५१७ अद्वैतरत्नरक्षणम्–(मधसूदन सरस्वती) ०–७५
५१८ अद्वैत तत्त्व शुद्धि–अद्वैतामोदादि परीक्षा पर्याय–म० म० अनन्त कृष्ण शास्त्री कृत १५–००
५१९ अद्वैत सिद्धान्त सार संग्रह–सदानन्द ६–००
५२० अद्वैत सिद्धि–(मधुसूदन सरस्वती) गौड़ ब्रह्मानन्दी, विट्ठलेशीयोपाध्यायी तथा सिद्धि नामक व्याख्याओं व अनन्त कृष्ण शास्त्री संग्रहीत न्यायामृताद्वैतसिद्धि तरङ्गिणी लघु चन्द्रिका सहित २५–००
५२१ अद्वैतामोद–वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३–००
५२२ अद्वैतामृत–भा० टी० १–००
५२३ अध्यात्म प्रकाश—भाषा ०–३७
५२४ अनुभूति प्रकाश—विद्यारण्य विरचित मूल २–००
५२५ अनुभव प्रकाश–(बनानाथकृत) हिन्दी पद्यों में १–७५
५२६ अपरोक्षानुभूति–भा० टी० बम्बई १–२५
५२७ अपरोक्षानुभूति–हिन्दी टीका सहित गोरखपुर ०–१५
५२८ अभिलाष सागर—भाषा ४–००
५२९ आत्मबोध–(शंकराचार्य) अन्वय–भावार्थसहित ०–५०
५३० आनन्दामृत वर्षिणी–स्वामी आनन्दगिरि भाषा २–००
५३१ ओंकारमहिमाप्रकाश–(ऊंकार मे वर्णाक्षर) १–५०
५३२ उपदेश साहस्री–(शंकराचार्य प्रणीत) भा०टी० २–००
५३३ काथ बोध–(दत्तात्रेय समुदायानुगत)–सटीक ०–५०
५३४ कायपरिशुद्धि–वासुदेव शास्त्री प्रणीत २–००
५३५ क्रम दीपिका—केशव भट ६–००
५३६ कुण्डलिया–गिरधर– (१०० कुण्डलिया छंद) ०–१९
५३७ कुंडलिया–गिरधर (नीति, वैराग्य उपदेश आदि विषयक ४५७ कुण्डलियां छंद) बबई १–००
५३८ कृष्णोपदेश–(भगवद्गीता भाषा छंदों में) ०–७५
५३९ गूढ़ार्थ दीपिका–बनपति सूरी ८–००
५४० चद्रकान्त–(वेदान्त) भाषा इच्छाराम सूर्यराम देसाई ३ खंडों में ३०–००
५४१ चैतन्य चरितावली–५ भाग सचित्र ४–३७
५४२ ढ़ाईहजार अनमोल बोल–हिन्दी ०–६२
५४३ तत्वचिन्तामणि–भा० टी० जयदयाल ५–९४
५४४ तत्वदीपन–(पञ्चपादिका विवरण पर व्याख्या) अखंडानन्द मुनि कृत १२–००
५४५ तत्वप्रदीपिका–(चित्सुखी) नयन प्रसादिनी व्याख्या तथा स्वा० योगीन्द्रानन्द कृत सटिप्पणसरल हिन्दी अनुवाद सहित काशी १२–००
५४६ तत्वबोध शंकराचार्य भा०टी० ०–३७, ०–२२५, ०–३१
५४७ तत्व सन्दर्भ–भा०टी० १–५०
५४८ तत्वानुसंधान –भाषा स्वामी चिदघनानन्द ७–००
५४९ दर्शन सर्वस्व–शंकर चतन्य भारती प्रणीत २–२५
५५० दहरविद्या प्रकाशिका–(शिवेन्द्र सरस्वती) ०–५०
५५२ दास बोध–भाषा ३–००
५५३ दृष्टान्त दीपक—(दृष्टान्त संख्या ४३२) भाषा २–०
५५४ दृष्टान्त मंजूषा–भाषा स्वा० परमानन्द २–००
५५५ न्याय मकरंद–आनन्द बोध व्याख्या ८–००
५५६ नववा भक्ति–हिन्दी ०–१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

५५८ [illegible] टीका सहित काशी १–७५
५५९ निर्णय विलास–भाषा पद्य २–५०
५६० पंचदशी—केवल भाषा श्री आत्मस्वरूप ६–००
५६१ पंचदशी—पं० मिहिरचंद कृत हिन्दी टीका ६–००
५६२ पंचीकरण—केवल भाषा ३–००
५६३ परमार्थ पत्रावली—भाषा जयदयाल १–५०
५६४ पक्षपात रहित–अनुभव प्रकाश स्वामी विशुद्धानन्द जी–काली कमली वाले ८–००
५६५ प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य (आत्मबोध–प्रबंधानुभूति–तत्वो०) भा० टी० ०–७५
५६६ प्रणवकल्प–(स्कन्दपुराणान्तर्गत) प्रकाश भाष्य २–००
५६७ प्रत्यक्षतत्व चिन्तामणि–सदानन्द व्यासकृत तथा स्वोपज्ञ व्याख्या सहित ५–००
५६८ पूजातत्व–म० म० श्री गोपीनाथ जी कविराज द्वारा प्रकाशित अध्यात्म जीवन व साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी ४–००
५६९ प्राणसंगली–श्री गुरुनानक साहिब–संत सम्पूर्ण सिंह जी कृत टिप्पणी सहित ३ भाग में ८–००
५७० प्रकरणग्रन्थसंग्रह–श्रीशंकराचार्य के अनेक ग्रन्थ १२–५०
५७१ प्रमेय रत्नावली–बलदेव कृत २–५०
५७२ प्रस्थान भेद–मधुसूदन सरस्वती कृत ०–२५, ०–३१
५७३ प्रस्थान रत्नाकर–(पुरुषोत्तमजी) ४–००
५७४ प्राणतत्व –भाषा १–००
५७५ प्रेमपत्तन–चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १–२५
५७६ प्रेम योग—वियोगी हरी हिन्दी १–५०
५७७ प्रेम दर्शन–भा० टी० (भक्तिसूत्र) ०–३१
५७८ बृहदारण्यक वार्तिकसार—श्री विद्यारण्य मुनि विरचित–भा० टी० सहित दो भाग १२–००
५७९ ब्रह्मवाद संग्रह–शुद्धाद्वैत परिष्कार (वल्लभाचार्य सम्मत)—भा० टी० १–००
५८० ब्रह्ममीमांसा भाष्य–अर्थात् निम्बार्काचार्य प्रणीत ब्रह्मसूत्र पर वेदान्त पारिजात सौरभ भाष्य २–००
५८१ ब्रह्मसिद्धि–मंडनमिश्र–शंखपाणि व्याख्या ७–७५
५८२ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य–पाठान्तर, टिप्पणी मूल ८–००
५८३ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य–भामती, कल्पतरु–परिमल व्या-
५८४ ब्रह्मसूत्र–शंकर–आनन्दगिरि २ भाग पूना १८–००
५८५ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य, रत्नप्रभा, भामती, न्याय २०–००
५८६ ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य–चतुःसूत्र्यन्त पूर्णानन्दीयव्याख्या द्वितीय अध्याय द्वितीय पाद तक ८–००
५८७ ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्यम्–चतुःसूत्र्यन्त पूर्णानन्दीय व्याख्या—श्री गोविन्दानन्द प्रणीत रत्नप्रभा व्याख्या तथा वाचस्पति मिश्र कृत भामती ११–००
५८८ ब्रह्मसूत्र–विज्ञान भिक्षुभाष्य सम्पूर्ण १२–००
५८९ ब्रह्मसूत्र–भाष्य निर्णय–श्री चिद्घनानन्द पुरी विरचित तृतीयपाद तक ५–६२
५९० ब्रह्मसूत्रवृत्ति–(ब्रह्मतत्वप्रकाशिका) सदाशिवेन्द्र ३–५०
५९१ ब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्ति–श्री रामानन्दप्रणीद २–००
५९२ ब्रह्मसूत्र–तात्पर्य विवरण श्री भैरव शर्मा २–२५
५९३ ब्रह्मसूत्र—मरीचिका वृत्ति ४–००
५९४ ब्रह्मसूत्र दीपिका–शंकरानन्द विरचित ४–००
५९५ ब्रह्मसूत्र–सुन्दर भट द्वैताद्वैतसिद्धान्त सेतुका वृत्ति तथा देवाचार्य प्रणीत सिद्धान्त जान्हवी टीका सहित ६–००
५९६ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–शंकर शिष्य प्रणीत अद्वैत मंजरी १–००
५९७ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्यार्थरत्नमाला सुब्रह्मण्यकृत ६–२५
५९८ ब्रह्मसूत्रवृत्ति–हरिदीक्षित कृत ३–७५
५९९ ब्रह्मसूत्र–ब्रह्मामतवर्षिणी ६–७५
६०० ब्रह्मसूत्र –श्रीगोविन्दानन्द कृत भाष्यार्थ प्रदीपिका (हिन्दी) टीका सहित (प्रथमाध्याय मात्र) ४–००
६०१ ब्रह्मसूत्र–भाष्य सिद्धान्त संग्रह १–५०
६०२ ब्रह्मसूत्र–रत्नप्रभा भोले बाबाकृत हिन्दी अनुवाद सहित केवल तीसरा भाग ५–५०
६०३ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य (चतुः सूत्री) भाषानुवाद २–२५
६०४ ब्रह्मसूत्रभाष्य–श्री कंठाचार्यकृत शिवार्कमणदीपक सहित सम्पूर्ण दो भागों में २५–००
६०५ ब्रह्मसूत्र–मराठी टीका सहित ३ भाग में ३६–००
६०७ बोधैक्य सिद्धि–अच्युतराय सटीक ६–००
६०८ भक्त नामावली ०–१९
६०९ भक्ति चन्द्रिका– शांडिल्य सूत्र व्या० दो भाग १–२२
६१० भक्ति चन्द्रिका–भाषा पद्यात्मक–गणेश सिंह १–००
६११ भक्ति दर्शन (शांडिल्य)–स्वामी ज्ञानानन्दकृत १–२५
६१२ भक्तिरसार्णव–(जनार्दन) तथा नाम महात्म्य ०–३२
६१३ भक्तिप्रकाश–गोसांमक–भा० टी० गोपालदास २–००
६१४ भवत्यधि करण माला–(नारायण तीर्थकृत) ०–६२
६१५ भक्ति मुक्तावली–गुरुपाद शेखर कृत १–००
६१६ भक्ति रसायन–मधुसूदन–सटीक ३–००
६१७ भक्ति रसामृत सिन्धु–(रूप गोस्वामी) सटीक ४–००
६१८ भवगन्नाम कौमुदी–लक्ष्मीधर कृत–प्रकाश टीका ०–७५
६१९ भगवन्नाम महात्म्य–(रघुनाथ यति) सटीक १–३७
६२० भगवत चर्चा–हनुमान दास पोद्दार–६ भाग सादा ४–६ जिल्द ६–३१
६२१ भगवान पर विश्वास–भाषा ०–२५
६२२ भव रोग की रामबाण दवा–भाषा ०–३१
६२३ भामती–(ब्रह्मसूत्रशंकरभाष्यव्याख्या) वाचस्पति ३–५०
६२४ भावरसामत–(संत गुलाब सिंह) भाषा पद्यात्मक ०–३७
६२५ भावरसामृत–बोधप्रकाश स्वा० गलाबसिंह ०–५६
६२६ भेद साम्राज्य–श्री रंग रामानुज विरचित १–५०
६२७ मध्वतन्त्र मुख मर्दन–अप्पय दीक्षित विरचित २–५०
६२८ मध्वतन्त्रमुख मर्दन–अप्पय दीक्षित कृत १–५०
६२९ मध्व मुखालंकार–वनमालि मिश्र विरचित ०–७५
६३० मध्व मंत्र रत्नाकर–टी० आर० कृष्णाचार्य ५–००
६३१ महानय प्रकाश–शितिकंठ (शाक्त मत) ०–६२
६३२ महावाक्यरत्नावली–(दर्शनोपनिषत्सार भत) ०–५०
६३३ महावाक्यरत्नावली–अष्टोत्तराशतोपनिषत्सार ०–३७
६३४ महावाक्य विवरण–भा० टी० १–१३
६३५ मोक्षसाधन और योगाभ्यास सान्याल ०–३७
६३६ यतीन्द्रमत दीपिका–श्रीनिवासदास प्रकाश व्या.स. २–०
६३७ यतीन्द्रमत दीपिका–सटिप्पण ०–४४
६३८ योग रसायन भाषा १–२५
६३९ योगवासिष्ठ-तात्पर्य प्रकाश–सं०टी० खुला २५–००
६४० योगवासिष्ठ–भा०टी० सम्पूर्ण ५ भाग में स्थूलाक्षर ४८–०० प्रथम भाग के अतिरिक्त अन्य भाग पृथक २ भी मिलते हैं द्वितीय १०–००, तृतीय १०–० चतुर्थ १०–०० पांचवां ८–००
६४१ योगवासिष्ठ–भाषा–२ भाग में बम्बई २५–००
६४२ योगवासिष्ठ–हिन्दी भाषा २ भाग लखनऊ २२–००
६४३ योगवासिष्ठ–सार भाषा वार्तिक बम्बई ४–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

६४४ योगवासिष्ठ और उसके सिद्धान्त–डा०आत्रेय १०–००
६४५ योगानन्द सत्संग–भाषा पद्य-सरलानुवाद सहित २–५०
६४६ यमतत्व समीक्षा ४–५०
६४८ युक्तिप्रकाश–भाषा साधु निश्चलदास २–००
६४८ रत्नपञ्चक–शंकराचार्य प्रणीत–सभाष्य ०–३७
६४९ लघुयोगवासिष्ठ–वासिष्ठ चन्द्रिका व्याख्या सहित ६–०
६५० लघुवासुदेवमनन–(भाषा)–वासुदेव यतीन्द्र विरचित अद्वैत सिद्धान्त ग्रंथ ०–८७
६५१ लोक परलोक सुधार-भाषा ५ भाग २–२५
६५२ व्याख्यान रत्नमाला–पं० बलदेवप्रसाद मिश्र ३–५०
६५३ वाक्यवृत्ति–शंकराचार्यप्रणीत–विश्वेश्वर टी० ०–७५
६५४ विचार–चन्द्रोदय–पीताम्बरी भाषा बम्बई ३–००
६५५ विचार चन्द्रोदय–स्वा० निगमानन्द सरल हिन्दी १–२५
६५६ विचार दीपक–ब्रह्मानन्द स्वामी–भाषा २–००
६५७ विचार माला–स्वा० गोविन्द दास सटीक २–००
६५८ विचार सागर–निश्चलदास प्रणीत–निगमानन्द परमहंसकृत सरल हिन्दी व्याख्या सहित नेट ३–५०
६५९ विचार सागर–पीताम्बर टीका बम्बई १०–००
६६० विद्वन्मण्डन–विट्ठलनाथ दीक्षित–सुवर्णसूत्र व्या५–००
६६१ विवरणोपन्यास–रामानन्द सरस्वती– ४–००
६६२ विवरण प्रमेय संग्रह–(विद्यारण्य) हिन्दीटीका ६–००
६६३ विवेक मार्त्तण्ड–विश्वरूपदेव ०–६२
६६४ विवेक चूड़ामणि–भा० टी० बम्बई २–२५
६६५ विवेक चूड़ामणि–भा० टी० गोरखपुर ०–३१
६६६ विशिष्टाद्वैताधिकरण माला–पं० सुदर्शनाचार्य १–००
६६७ वेदान्त कौमुदी–रामाद्वयाचार्य प्रणीत–(ब्रह्मसूत्र शाकर भाष्य चतुःसूत्री की विषद व्याख्या) १३–५०
६६८ वेदान्त कौस्तुभ–प्रभा सटीक ९–००
६६९ वेदान्त छन्दावली–५ भाग–भोले बाबा हिन्दी २–३७
६७० वेदान्त दर्शन–भा० टी० स्वामी दर्शनानंद ३–००
६७१ वेदान्त दर्शन–ब्रह्ममुनि भाष्य सहित ३–००
६७२ वेदान्त दर्शन–(माधवाचार्य)–श्री भाष्यानुसार वेदांत पदार्थ प्रकाश भाषा व्याख्या सहित २–५०
६७३ वेदान्त दर्शन–भा० टी० गोरखपुर २–००
६७४ वेदान्तदर्शन–(ब्रह्मसूत्र की भूमिका) म० म० गोपीनाथ कविराज १–००
६७५ वेदांत रत्न मंजषा–(निम्बार्काचार्य विरचित दशश्लोकी की व्याख्या)–पुरुषोत्तमाचार्य ४–००
६७६ वेदांत सूत्र मुक्तावलि–ब्रह्मानंद सरस्वती–पूना ३–५६
६७७ वेदांत संज्ञा–भा० टी० ०–८७
६७८ वेदान्तसार–(सदानंद) भावबोधिनी सं०हि० १–५०
६७९ वेदांतसार–जयाख्य संस्कृत टीका तथा शिवकुमारदेव कृत हिन्दी टीका सहित २–५०
६८० वेदान्तसार रामानुज–सटिप्पण २–५०
६८१ वेदान्त सिद्धान्त कल्पवल्ली–हिन्दी टीका सहित ०–७५
६८२ वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली–भा० टी० १५–००
३८३ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह–वनमाली कृत ६–००
६८४ वृत्ति प्रभाकर–निश्चलदास भाषा ७–००
६८५ वृत्ति प्रभाकर–स्वा० आत्मानंदकृत सरल हिंदी ६–००
६८६ वैधासिक न्यायमाला–अर्थात् वेदांताधिकारणन्याय माला तीर्थमनि प्रणीत ३–००
६८७ शांकरग्रन्थावलि–५ भाग में (प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्) हर एक का ६–५०
६८८ शंकर दिग्विजय (विद्यारण्य विरचित)–धनपति सूरि कृत डिण्डिमाख्या टीका सहित ९–००
६८९ शांकर पादभूषण–रघुनाथ सूरि–दो भाग १२–५०
६९० शंकराचार्यकृत–प्रकरण ग्रन्थ (संग्रह) ७० ग्रंथ १२–५०
६९१ शतश्लोकी–पूर्णानन्द प्रणीत–संजीवनी भाष्य १–२५
६९२ शुद्धाद्वैत मार्तण्ड–(श्री गिरिधरजी विरचित) प्रकाश व्याख्या तथा प्रमेय रत्नार्णव २–००
६९३ श्रीकरभाष्य–वीर शैव भाष्य २ भाग १८–००
६९४ श्रीभाष्य–यतीन्द्र मत दीपिका श्रीनिवासाचार्य ३–००
६९५ श्री भाष्य—केवल दूसरा भाग १०–००
६९६ श्रीभाष्य प्रकाशिका–श्री निवासाचार्य विर० ६–५०
६९७ श्री सुबोधिनी–श्री वल्लभाचार्य ४–५०
६९८ श्रुत्यंतु कल्पवल्ली–पुरुषोत्तमदास ४–००
६९९ श्रुत्यन्त सुरद्रुम—पुरुषोत्तम ६–००
७०० श्रुति कल्पलता–वामन कृत वेद स्तुति व्याख्या ३–५०
७०१ संक्षेप शारीरिक–अन्वयार्थ प्रकाशिका व्याख्या ८–००
७०२ संक्षेप शारीरिक–मधुसूदनी टीका ८–००
७०३ संक्षेप शारीरिक–सुबोधिनी तथा अन्वयार्थ बोधिनी दो संस्कृत टीक पूना १३–५०
७०४ संक्षेप शारीरिक–नरसिंहाश्रमकृत तत्वबोधिनी ४–६
७०५ संक्षेप शारीरिक–स्वा. रामानंद तथा स्वा. योगीन्द्रानंद कृत संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित १०–००
७०६ सत्यदर्शन–स्वामी कालिकानंद (हिन्दी) ५–००
७०७ सनत्सुजातीय–शंकर भगवत्पाद भाष्य सटीक १–२५
७०८ स्वानुभवादर्श–माधवाश्रम विरचित सटीक ४–००
७०९ स्वरूपानुसन्धान–गौरीशंकर उदयशंकर हिन्दी ५–००
७१० स्वर्ग का विमान–सरल हिन्दी ५–००
७११ सत्तत्वरत्नमाला–सटीक (मध्व) मंत्रात्मक ६–२५
७१२ सत्संग के बिखरे मोती–भाषा ०–७५
७१३ सत्संग माला— ०–२५
७१४ सर्व वेदांत सार संग्रह–(संस्कृत) श्याममुन्दरझा २–०
७१५ साधन पथ–भाषा ०–१६
७१६ साधन संकेत–भाषा ०–५०
७१७ सारसंग्रह–गौड़ वैष्णवसिद्धान्तग्रंथ रूपकविराज ६–००
७१८ सारुक्तावली–(भाषा) ०–७५
७१९ सिद्धान्तदर्शन–विश्वदेवाचार्यकृत निरञ्जनभाष्य २–००
७२० सिद्धान्तलेश संग्रह–भा० टी० ६–००
७२१ सिद्धान्तबिन्दु–(मधुसूदन) पुरुषोत्तम कृत व्याख्या तथा प्रहलाद चन्द्रशेखर कृत अंग्रेजी अनुवाद ११–००
७२२ सिद्धान्त बिन्दु–वासुदेव अभ्यंकर सं०टी० २–५०
७२३ सिद्धान्त बिन्दु–भा० टीका सहित २–७५
७२४ सिद्धान्त बिन्दु–न्यायरत्नावली तथा लघुव्याख्या ५–००
७२५ सिद्धांतसार–रामावतारकृत हिन्दी टीका सहित १–५०
७२६ सिद्धित्रयम्–आत्म सिद्धि २–००
७२७ सुखीजीवन–भाषा ०–५०
७२८ सुन्दर विलास–भाषा पद्य लखनऊ १–००
७२९ सुन्दर विलास „ बंबई २–५०
७३० सूक्तावली–सारुक्तावली भा० टीका १–५०
७३१ सूक्तावली–सारुक्तावली ०–५०
७३२ सूक्तिसुधाकर–भाषा ०–६२
७३३ सूतसंहिता–तात्पर्य दीपिका सहित ७–००
७३४ ज्ञानमाला–भाषा ०–३७
७३५ ज्ञानवैराग्य प्रकाश–स्वा० परमानंद भाषा २–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

७३६ अघोरी तन्त्र–हिन्दी टीका सहित १–००
७३७ अनुष्ठान प्रकाश–चतुर्थी लाल विरचित खुला १२–००
७३८ अष्ट सिद्धि–हिन्दी टीका सहित १–३७
७३९ आनंद लहरी–श्री श्यामानन्द कृत टीका १–२५
७४० इन्द्रजाल भाषा— ३–००
७४१ उड्डीश तन्त्र–भाषा टीका ०–७५
७४२ उड्डामरेश्वर तंत्र—मूल १–७५
७४३ कर्पूरादिस्तोत्र–विमलानन्द स्वामी कृत भूमिका टिप्पणी तथा आ० एवलन कृत अंग्रेजी ४–००
७४४ कार्तवीर्यार्जुनोपासनाध्याय—मूल मात्र ३–५०
७४५ काथ बोध–साजनी कृत टीकोपेत ०–५०
७४६ कामकला विलास–पुण्यानंद विरचित सटीक १–२५
७४७ कामरत्न–हिन्दी भाषा ५–००
७४८ कालीतन्त्र–मूल १–२५
७४९ काली नित्यार्चन–भाषा श्री श्यामनन्द २–००
७५० काली स्वतमंजरी–श्री रमादत्त शुक्ल संपादित २–५०
७५१ कालीस्वरूपतत्व–भाषा श्री श्यामानन्द नाथ ०–३७
७५२ क्रियोड्डीशतंत्र–हिन्दी टीका सहित १–२५
७५३ कौलावली निर्णय—(हिन्दी) श्री रमादत्त शुक्ल ३–०
७५४ क्रम दीपिका–केशव भट कृत काशी ४–५०
७५५ गायत्री तन्त्र–कवचादि युक्त ०–७५
७५६ गायत्री तन्त्र–भाषभाष्य समेत ०–८७
७५७ गायत्री तत्व विमर्श–(भाषा) श्री श्यामानन्द १–००
७५८ गायत्री पंचांग–मूल बंबई २–२५
७५९ गायत्री पुरश्चरण पद्धति–शंकरसूरि विरचित २–२५
७६० गायत्री पुरश्चरण विधि— ०–२५
७६१ गायत्रीपूजापद्धति–(तान्त्रिकी) विभाकराचार्य ०–२५
७६२ गुप्त साधन तंत्र–हिन्दी बम्बई ०–६२
७६३ चक्रपूजा–भाषा (श्री भद्रशील शर्मा) १–५०
७६४ चक्रपूजा के स्तोत्र–श्री भद्रशील शर्मा
७६५ चतुर्विंशति गायत्री ०–५०
७६६ चिद्गगन चन्द्रिका–(महाकवि कालिदास विरचित) त्रिविक्रम तीर्थ सम्पादित १–००
७६७ तत्वनिधि–कृष्ण राज संगृहीत बम्बई ७–००
७६९ तन्त्रसार–कृष्णानन्द अपूर्ण संस्कृत २–००
७७० तंत्रसार–अभिनव गुप्त कृत २–५०
७७१ तंत्रसार संग्रह–(विपनारायणीय) सव्याख्या १५–२५
७७२ तंत्रालोक–अभिनव गुप्त कृता १२ भाग में जयरथ कृत व्याख्या सहित ३९–००
७७३ तंत्रराज तंत्र–प्राण मंजरी कृत सुदर्शन टीका ५–००
७७४ तारा कर्पूरराज स्तोत्र–संस्कृत हिन्दी टीका सहित ०–४४
७७५ तारा नित्यार्चन–भाषा श्री रामादत्त शुक्ल १–५०
७७६ तारा स्तव मंजरी–श्रीरमादत्त शुक्ल सम्पादित १–७५
७७७ तारा स्वरूप तत्व–(भाषा) श्यामानन्द नाथ १–००
७७८ तारा रहस्य–(ब्रह्मानंद विरचित) मूल-काल. १–२५
७७९ दत्तात्रय तंत्र–भा० टी० ०–७५, ०–५०
७८० दशांग दुर्गा–मूल पत्रात्मक १–५०
७८१ दुर्गा पञ्चाङ्ग–मूल–मातृप्रसाद पाण्डेय ०–६२
७८२ दुर्गा पूजा–श्यामा पूजा–पद्धति ०–७५
७८३ दुर्गा सप्तशती–गुटका–मूल १–१३, ०–७५
७८४ दुर्गा सप्तशती–गुटका निर्णयसागर १–०० २–२५
७८५ दुर्गा सप्तशती–पत्रात्मक १–००
७८६ दुर्गा सप्तशती–पत्रात्मक २–००, १–५०, ०–८७
७८७ दुर्गा सप्तशती–मूल बम्बई ला ३–५० जिल्द ४–००
७८८ दुर्गा सप्तशती–लखनऊ सजिल्द १–५०
७८९ दुर्गा सप्तशती–भाषा टीका सहित ३–००, २–५०
७९० दुर्गा–(श्रीसप्तशती गीता) मंत्र, अन्वय, हि० टी० १–२५
७९१ दुर्गा सप्तशती–पंडित रामेश्वर भाषा टीका २–००
७९२ दुर्गोपासनाकल्पद्रुम–मूल खुला पत्रा १२–००
७९३ देवीसूक्त–आंगल अनुवाद सहित ०–५०
७९४ देवी शतकम–म० म० कृष्णनाथ प्रणीत ०–७५
७९५ धन्वन्तरी तंत्रशिक्षा–हिन्दी टीका सहित २–५०
७९६ नित्योत्सव–उमानन्द कृत ६–००
७९७ निष्पन्न योगावलि–(भयाकरगुप्त) बौद्धतन्त्र १०–००
७९८ नेत्रतंत्र–क्षेमराज कृत व्याख्या दो भाग ६–००
७९९ पञ्चमकार तथा भावत्रय–भाषा २–००
८०० परशुराम कल्पसूत्र–रामेश्वर प्रणीत व्याख्या १९–००
८०१ पुरश्चरण दीपिका–(काशीनाथ भट विरचित) ०–३१
८०२ बगला तन्त्रम्–मूल ०–५०
बगला नित्यार्चन–भाषा सहित १–००
८०४ बगला पूजा–पद्धति (वैदिक) १–००
८०५ बगला विधान–पं० विश्वेश्वर दयालु वैद्य ०–२५
८०६ बटुकभैरवोपासनाध्याय–मूल खुला पत्रा ३–००
८०७ बालास्तव मंजरी— १–२५
८०८ बृहत इन्द्रजाल–अर्थात् कौतुकरत्न भण्डागार ४–००
८०९ बृहद्-ब्रह्म संहिता–पूना २–७५
८१० बृहत्सावरतंत्र–शिवोक्त हिन्दी टीका १–००
८११ भगवती गीता–भाषा ३–००
८१२ भुवनेश्वरी नित्यार्चन–भाषा पं० योगीन्द्रकृष्ण २–००
८१३ भैरवोपदेश भाषा–बाबा मोतीलाल जी २–५०
८१४ मन्त्र महोदधि–सव्याख्या यन्त्र सहित पत्रात्मक ९–०
८१५ मंत्रसिद्धि का उपाय–(भाषा) भद्रशील शर्मा १–००
८१६ महानिर्वाणतन्त्र–हिन्दी टीका सहित ८–५०
८१७ महामृत्युञ्जय जपविधि–भा० टी० ०–३७
८१८ महामृत्युञ्जय पञ्चाङ्ग–मातृ प्रसाद पाण्डेय ०–६२
८१९ महायक्षिणी साधन–भा० टी० १–७५
८२० महालक्ष्मी पञ्चाङ्ग मूल ०–८७
८२१ महात्रिपुरा सुन्दरी पूजा कल्प— १–१२
८२२ मातृ उपासना–भाषा श्री रामचरण १–५०
८२३ मालिनी विजय तन्त्र–आगम शास्त्र ३–५०
८२४ माहेश्वर तन्त्र–श्री कृष्णप्रियाचार्य ४–५०
८२५ माहेश्वरी तन्त्र–हिन्दी टीका सहित ०–४४
८२६ मुमुक्षु-मार्ग–१–३ भाग (हिन्दी) ६–००
८२७ मृगेन्द्रतन्त्र–विद्यापाद-योगपाद व्याख्या ३–००
८२८ योगिनी तन्त्र–हिन्दी टीका सहित ७–००
८२९ रत्नगोत्र विभागोमहायानोत्तरतन्त्र– ८–००
८३० रुद्रयामल तन्त्र–भाषा टीका बम्बई १–००
८३१ ललित सहस्रनाम–मूल मात्र बम्बई ०–५०
८३२ ललितसहस्रनाम–सौभाग्य भास्कर भाष्य २–५०
८३३ ललितास्तवमणिमाला–बम्बई ०–५०
८३४ लक्ष्मीतन्त्र–पाञ्चरात्र ३०–००
८३५ वन्देमातरम्–आनन्दमठ १–००
८३६ वंध्यातंत्र—भाषा टीका ०–४४
८३७ वर्ण बीज प्रकाश–(सब तन्त्र ग्रन्थों का कोष) ३–०
८३८ वामकेश्वरीमत विवरण–जयरथ कृत ०–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

८३९ वाममार्ग–हिन्दी भाषा
८४० विनय–सुधा–(सत्यान्वेषी) २–००
८४१ वृत्तमाला स्तुति–ज्ञान श्रीमित्र विरचित १–००
८४२ शाक्तानन्दतरंगिणी–(हिन्दी) मूलधर्मका परिचय ०–७५
८४३ शाक्तानन्द तरंगिणी–बंगला अक्षरों में २–०
८४४ शतचण्डी विधान–भाषा १–७५
८४५ श्यामा पूजा पद्धति–(भाषा) रमादत्त शुक्ल १–७५
८४६ श्यामा सपर्या वासना–भाषा श्यामानन्द नाथ २–००
८४७ शाक्तप्रमोद–दशमहाविद्या का ग्रन्थ मूलमात्र ३–००
८४८ शावर चिन्तामणि १४–००
८४९ शैव प्रमोद–चन्द्रशेखर शुक्ल १–२५
८५० शैव मनोरंजिनी–चारों भाग ०–२५
८५१ श्रीविद्या खड्गमाला— ३–००
८५२ श्रीविद्यानित्यार्चन–भाषा सहित १–००
८५३ श्रीविद्या नित्यान्हिकम— २–५०
८५४ श्रीविद्यामंत्र भाष्य त्रिकाण्ड सारार्थबोधिनी व्या- ५–७५
८५५ श्रीविद्यासपर्या पद्धति–दो भाग १–७५
८५६ श्रीविद्यास्तव मंजरी— ४–५०
८५७ सप्तशती रहस्य–श्यामानन्द नाथ २–५०
८५८ सर्वोल्लास तंत्र—मूलमात्र २–५०
८५९ सात्वत तंत्र— ५–००
८६० साधक का संवाद–भाषा सत्यान्वेषी कृत १–५०
८६१ सावरि तन्त्र–(सेवड़े का जादू) भाषा ३–००
८६२ स्वच्छन्द तंत्र–क्षेमराज कृत व्याख्या सात भाग ३–००
८६३ सौन्दर्य लहरी–स्वा० विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी १६–५०
८६४ सौन्दर्य लहरी–अंग्रेजी अनु. सचित्र अमरीका ५–००
८६५ सौन्दर्य लहरी–लक्ष्मीधर व्याख्या–भास्कर भाष्या ३७–५०
८६६ सार्थ सौंदर्य लहरी–(बाबा मोतीलाल) हिन्दी ३–७५
८६७ सौन्दर्य लहरी–कवल्याश्रमकृतया सौभाग्यवर्धन्या लक्ष्मीधराचार्य कृतया लक्ष्मीधरया, कामेश्वर सूरि कृतया अरुणामोदिन्या आंगल अनुवाद २–५०
८६८ सौभाग्य लक्ष्मी–भाषा टीका सहित २५–००
८६९ हनुमदुपासना–मूलमात्र बम्बई १–००
८७० हंसविलास–हंसमिट्टू कृत ३–५०
८७१ हिन्दुओं की पोथी–देवीदत्त शुक्ल ८–०
८७२ ज्ञानार्णव तंत्र–मूलमात्र पूना २–००

स्तोत्र

८७३ अन्नपूर्णा स्तोत्र— ०–१२
८७४ अपराजिता स्तोत्र ०–१९, ०–१९
८७५ अपामार्जनस्तोत्र— ०–२२
८७६ आदित्यहृदय–मोटाअक्षर ०–३७
८७७ आदित्यहृदय–छोटाअक्षर ०–१२
८७८ आदित्यहृदय–नवग्रह सहित ०–०९
८७९ आदित्यहृदय–भाषा टीका ०–४४
८८० आपदुद्धारकबटुकभैरवस्तोत्र ०–१२
८८१ आरतीसंग्रह–भाषा ०–१९
८८२ आलबदार स्तोत्र ०–१२, ०–०६
८८३ ऋणमोचन मंगलस्तोत्र ०–०९
८८४ इन्द्राक्षीस्तोत्र ०–१२
८८५ ककारादि कृष्ण सहस्रनाम १–००
८८६ कमलनेत्र स्तोत्र–भाषा ०–०९
८८७ कर्पूर स्तोत्र स. हिन्दी टीका ०–३१
८८८ कालीकवच स्तोत्र ०–९, ०–१२
८८९ कालिकासहस्रनाम ०–५०
८९० कुञ्जिकास्तोत्र ०–१९
८९१ गंगालहरी–मूल ०–१२
८९२ गंगालहरी–पीयूषलहरी सं० टीका ०–५०, ०–४४
८९३ गंगालहरी–भाषा टीका ०–१९
८९४ गजेन्द्रमोक्ष–भाषा टीका ०–२५
८९५ गणपतिस्तोत्र–गणेशमहिम्न ०–१९
८९६ गणेशकवच ०–१२
८९७ गणेशमहिम्न स्तोत्र ०–०९
८९८ गणेशसहस्रनामावली ०–२५
८९९ गणेश सहस्रनाम–सटीक १–२५
९०० गणेशसहस्रनाम—मूल ०–२५
९०१ गणेश सरस्वती स्तोत्र ०–१२
९०२ गणेशाष्टक ०–०६
९०३ गायत्री रामायण ०–०६
९०४ गायत्री सहस्रनाम–नामावली ०–५०
९०५ गोपाल सहस्रनाम–मूल ०–३७, ०–०५, ०–७१
९०६ गोपाल सहस्र नाम–भा० टी० ०–५०
९०७ गोपाल सहस्रनामावली ०–५०
९०८ चर्पटपंजरी ०–१२
९०९ दत्तात्रयस्तोत्र ०–१२, ०–१९
९१० देवीकवच–भा० टी० ०–१६
९११ देवी सहस्रनामावली ०–२५
९१२ देव्यापराधक्षमापनस्तोत्र ०–१२
९१३ देवीपुष्पांजली स्तोत्र ०–१२, ०–०६
९१४ दुर्गाकवच ०–०९
९१५ नर्मदाष्टक ०–०६
९१६ नवग्रह स्तोत्र विष्णुपंजर ०–०६
९१७ नवग्रहस्तोत्र–बड़ा बम्बई ०–६२
९१८ नवग्रहस्तोत्र–यन्त्रमन्त्र कवच आदि सहित ०–७५
९१९ नारायण कवच ०–१२, ०–१९, ०–२५
९२० नारायण वर्म ०–३१
९२१ नृसिंह कवच ०–१२
९२२ प्रत्यंगिरास्तोत्र ०–१६
९२३ पुरुषोत्तम सहस्रनाम ०–३१
९२४ पञ्चमुखी हनुमान कवच ०–१९
९२५ बद्रीनारायण स्तोत्र ०–१९
९२६ बगुलामुखी स्तोत्र ०–१३
९२७ बटुकभैरव सहस्रनामस्तोत्र ना० ०–५०
९२८ ब्रह्मज्ञानावली ०–०६
९२९ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर–मोटा अक्षर काशी ३–००
९३० ,,,, ,,,, बम्बई ३–५०
९३१ बृहत्स्तोत्ररत्नाकर सचित्र गुटका केवल दूसरा भाग ३–०
९३२ भवानी सहस्रनाम ०–५०
९३३ भवानी मानसिक पूजन ०–१२
९३४ भैरवसहस्रनाम ०–२२
९३५ महाकालशनिमृत्युंजय ०–१२
९३६ महामृत्युंजय जपविधि ०–२५
९३७ ,, ,, प्रकाश ०–६२
९३८ मृत्युञ्जय स्तोत्र ०–१२
९३९ महाविद्यास्तोत्र ०–९, ०–१२
९४० महालक्ष्मीस्तोत्र ०–९, ०–१२
९४१ महालक्ष्म्यष्टक ०–०६
९४२ महिम्नस्तोत्र ०–१२

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक [illegible] (पो० बा० १५८६) दिल्ली-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

९४४ [illegible] ०–१५
९४५ बनमाष्टक ०–०६
९४६ राम सहस्रनाम ०–१६
९४७ रामस्तवराज मूल ०–१९
९४८ „ „ भाषाटीका ०–३७
९४९ रामरक्षास्तोत्र ०–०९
९५० रामनामसहस्रनाम स्तोत्र ०–१३
९५१ ललितासहस्रनाम स्तोत्र ०–५०
९५२ „ सटीक २–५०
९५३ „ नामावली-सहित ०–६९
९५४ लक्ष्मीनारायण हृदय ०–३१, ०–५०
९५५ विष्णु सहस्रनाम मूल ०–०९, ०–५०, ०–४४
९५६ „ भाषा टीका ०–३१
९५७ „ शंकरभाष्य भाषा टीका ०–८७
९५९ „ नामावली ०–३७
९६० „ भगवद्गुणदर्पणभाष्य ८–५०
९६१ शनिस्तोत्र ०–०९
९६२ शिवकवच ०–२५
९६३ शिवसहस्रनाम मूल ०–३१
९६४ शिवस्तोत्र ०–०९
९६५ शिवताण्डव स्तोत्र ०–१२
९६६ शिवताण्डव भाषा टीका ०–१९
९६७ शिवमहिम्न स्तोत्र मूल ०–१२, ०–१९
९६८ „ „ भाषाटीका १०–१९
९६९ „ „ भा०टी०–स्वा० प्रकाशानन्द ०–५७
९७० शिवसहस्रनामावली ०–३७
९७१ शीतलाष्टक ०–०९
९७२ संतानगोपालस्तोत्र ०–०९, ०–२५
९७३ स्तवमाला सभाष्य ३–००
९७४ स्तोत्ररत्नावली हि. टी. ०–५०
९७५ „ रामानुज दो भाग ६–००
९७६ सर्वदेवस्तोत्र ०–१२
९७७ सरस्वती स्तोत्र ०–२५
९७८ सिद्ध सरस्वती स्तोत्र ०–१२
९७९ सूर्यद्वादशस्तवी ०–१६

अच्युत ग्रन्थमाला

९८० भगवन्नामकौमुदी–श्रीलक्ष्मीधर, अनन्तदेव सं० ०–७५
९८१ शुल्वसूत्र–(कात्यायनश्रौत का परिशिष्ट अंश) म. म. पं. विद्याधर गौड़ वि०म० सं० वृत्ति ०–३७
९८२ कात्यायन श्रौतसूत्र–पं. विद्याधर गौड़ कृत सरलसंस्कृत वृत्ति सहित ८–००
९८३ प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि–सदानन्द व्यासकृत स्वोपज्ञ स. व्याख्या सहित दो भाग ५–००
९८४ भक्तिरसामृतसिन्धु–श्रीरूपगोस्वामीप्रणीत श्रीजय गोस्वामीकृत सं. टीका ४–००
९८५ तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रन्थ श्रीदिवाकर विरचित २–००
९८६ परमार्थसार–सटीक–श्रीपतञ्जलि कृत ०–५०
९८७ प्रेमपत्तन–श्री रसिकोत्तमकृत तथा अद्भुत प्रणीत टीका सहित १–२५
९८८ शतपथ ब्राह्मण–माध्यन्दिन सम्पूर्ण मूलमात्र-अनुक्रमणिका सहित ३ भाग स्थूलाक्षर ११–००
९८९ काशीकेदारमाहात्म्य–ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत-हिन्दी टीका सहित ३–००
९९० सिद्धान्तबिन्दु–श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित–भाषानुवाद सहित २–७५
९९१ प्रकरणपञ्चक–श्री शंकराचार्य के आत्मबोध, प्रौढ़ानुभूति, तत्वोपदेश हि. अनु. ०–७५
९९२ ब्रह्मसूत्र–शंकरभाष्य-रत्नप्रभा भाषानुवाद केवल तीसरा भाग मिलता है ५–५०
९९३ विवरण प्रमेय संग्रह–श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित तथा हिन्दी अनुवाद सहित ६–००
९९४ वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली–श्री सदाशिवेन्द्र सरस्वती विरचित भाषा टीका ०–७५
९९५ बृहदारण्यकवार्तिकसार–दो भागों में। श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित हिन्दी टीका १२–००
परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए। केवल प्रमेय परीक्षान्त भाग पृथक। ३–००
९९६ अच्युतलेखमाला–महात्माओं तथा विद्वानों के सुन्दर लेख हिन्दी में २–००
९९७ भगवद्गीता–शांकरानन्द विरचित शंकरानन्दी संस्कृत टीका सहित तथा श्रीमल्लिखाकृत हिन्दी अनुवाद सहित नया संस्करण ८–००
९९८ षट्सन्दर्भ–तत्त्वसन्दर्भ–व्याख्याद्वयोपेत: १–५०
९९९ योगवासिष्ठ–पांच भागों में सम्पूर्ण–सरल हिंदी अनुवाद सहित ४८–००
पृथक् भी मिलते हैं द्वितीय १०) तृतीय १०) चतुर्थ १०) पंचम— ८–००
१००० भागवतएकादशस्कन्ध–प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद २ भाग ६–५०
१००१ नैष्कर्म्यसिद्धि–श्री सुरेश्वराचार्य विरचित हिन्दी अनुवाद सहित १–७५
१००२ शिवस्तुति–श्री गोकुलनाथ विरचित संस्कृत तथा हिंदी अनुवाद सहित ०–६२
१००३ सिद्धान्तलेशसंग्रह–हिन्दी अनुवाद सहित ६–००

ज्योतिष

१००४ अंकविद्या–गोपेशकुमार ओझा हिन्दी ३–००
१००५ अंगविज्जा–प्राकृत भाषा में–मु. पुण्यविजय जीसं. २१–०
१००६ अर्क मार्तण्ड–राज ज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी कुराली वालों की अभूत पूर्ण पुस्तक दूसरा संस्करण विशेष परिवर्द्धित-यन्त्रस्थ। ११–००
१००७ अर्क प्रकाश–भा० टी० ०–६०
१००८ अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्योतिष–भगवानदास भाषा ४–००
१००९ अखण्ड भाग्योदयदर्पण „ „ ३–००
१०१० अर्गल होडाचक्र–भाषा टीका ०–३१
१०११ अहिबल चक्र–हिन्दी टीका सहित ०–२५
१०१२ आर्यासप्तति–(भट्टोत्पल) सटीक ०–५०
१०१३ आशुबोध ज्योतिष ०–३७
१०१४ उपपत्तीन्दुशेखर–शिरोमणि परिष्कार १०–००
१०१५ करणकुतूहल –(भास्कराचार्य) सव्याख्या १–२५
१०१६ करण कौस्तुभ–कृष्णदैवज्ञ ०–७५
१०१७ करणपद्धति–मूल ०–३१
१०१८ करण प्रकाश–ब्रह्मदेव विरचित १–५०
१०१९ करलक्षण–सामुद्रिक–भाषाटीका ०–७५
१०२० कर्मविपाक–नक्षत्रचरणगत भा० टी० ३–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०२१ कुद्दाकारारामाण–(दवराज) स. व्याख्या १–००
१०२२ कुण्डलीदर्पण–हिन्दी–अनुपमिश्र १–५०
१०२३ कुण्डलीशिक्षक–पं० हरदेव ०–३७
१०२४ केतकी ग्रहगणित–केतकर परिमलभाष्य १५–००
१०२५ केवल ज्ञानप्रश्न चूड़ामणि–हिन्दी टीका सहित ४–००
१०२६ केरल तत्त्व प्रश्नसंग्रह–भाषाटीका ०–५०
१०२७ केरल प्रश्न संग्रह–भाषा टीका ०–५०
१०२८ केरलीयजातक–हिन्दी ०–५०
१०२९ केरलीय प्रश्नरत्न–भाषा टीका १–००
१०३० केशवीय जातक पद्धति–भाषा टीका २–७५
१०३१ खण्डखाद्यक– २–५०
१०३२ खण्डखाद्यक–(ब्रह्मगुप्ताचार्य टीका) ३–५०
१०३३ खट कौतुक–भाषाटीका ०–१९
१०३४ गणक तरंगिणी–सुधाकर द्विवेदी १–७५
१०३५ गणित का इतिहास–सुधाकर द्विवेदी हिन्दी २–५०
१०३६ गणितकौमुदी–दो भाग में भाषा २–००
१०३७ गर्गजातक–भाषाटीका ०–३१
१०३८ गर्गमनोरमा–भाषाटीका ०–१९, ०–२२
१०३९ गोलतत्त्व प्रकाशिका–भाषाटीका १–७५
१०४० गोलपरिभाषा–पं० सीताराम ०–२५
१०४१ गोलाध्याय–भास्कराचार्य दो भाग पूना ८–७५
१०४२ गौरीजातक–भाषा टीका ०–२५
१०४३ ग्रहगोचर–भाषाटीका ०–२५
१०४४ ग्रहणफलदर्पण–भा० टी० १–००
१०४५ ग्रहचार निबन्धन–श्रीहरिदत्त १–१२
१०४६ ग्रहफलदर्पण–भाषा टीका १–५०
१०४७ ग्रहरत्नभूषण–रामेश्वरदत्त ०–६२
१०४८ ग्रहलाघव–सं० टीका तथा हिन्दी टीका ३–५०
१०४९ ग्रहलाघव–भा० टी० बम्बई ३–५०
१०५० ग्रहलाघवसारिणी १–७५
१०५१ चन्द्रवाक्यानि–वररुचि ३–००
१०५२ चन्द्रसारिणी–गोरखप्रसाद २–००
१०५३ चमत्कार चिन्तामणि–भाषाटीका ०–५०
१०५४ चमत्कार ज्योतिष १–२५
१०५५ चापीयत्रिकोणगणित–अच्युतानन्द १–५०
१०५६ जयपाहुड–निमित्त शास्त्र–प्राकृत ६–६०
१०५७ जन्मपत्री क फाम (तान का सट) ०–१९
१०५८ जन्मपत्रदीपक–भाषा टीका १–२५
१०५९ जन्मपत्रव्यवस्था–भाषा टीका ०–७५
१०६० जन्मांग नक्षत्रदीपिका–लक्ष्मीनारायण १–५०
१०६१ जातकतत्त्वम्–भाषा टीका ७–००
१०६२ जातक चन्द्रिका–भाषाटीका १–१५
१०६३ जातक पद्धति–भाषा टीका २–७५
१०६४ जातक पारिजात–संस्कृत तथा हिंदी टीका १२–००
१०६५ जातक शिरोमणि–भाषा टीका ३–५०
१०६६ जातक संग्रह–भाषा टीका ५–००
१०६७ जातकाभरण–भाषाटीका काशी ४–००
१०६८ जातकालंकार–संस्कृत तथा हिन्दी टीका १–०, ०–७५
१०६९ जातकालंकार–भा० टी० ०–६५
१०७० जैमिनीय सूत्र–संस्कृत हिन्दी टीका २–००
१०७१ जैमिनीय सूत्र भाषा टीका १–२५
१०७२ ज्योतिनिबन्ध–शिवराज विरचित ६–००
१०७३ ज्योतिषकल्पद्रुम–हिन्दी २–६२
१०७४ ज्योतिषतत्वविवेक निबन्ध–भाषा टीका २–५०
१०७५ ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त ०–३७
१०७६ ज्योतिषतत्त्वसुधार्णव–भाषा टीका ७–००
१०७७ ज्योतिषरत्नमाला— १२–००
५०७८ ज्योतिष विज्ञान–विशुद्धानन्द ६–००
१०७९ ज्योतिषश्यामसंग्रह–भाषा टीका ६–००
१०८० ज्योतिषसर्वसंग्रह–भाषा टीका २–००
१०८१ ज्योतिषसार–भाषा टीका बम्बई ३–००
१०८२ ज्योतिष सिद्धान्तसंग्रह–संस्कृत ३–००
१०८३ ज्योतिस्तत्त्व–भाषा टीका दो भाग ५०–००
१०८४ तत्त्वप्रदीप जातक : भाषा टीका ०–२५
१०८५ ताजिकनीलकंठी–सं० हि० पं० सीताराम ३–५०
१०८६ ताजिकनीलकंठी–जलदगर्जना स० तथा हिन्दी ४–५०
१०८७ ताजिकनीलकंठी–सं० टीका खुला २–००
१०८८ ताजिक नीलकंठी–भाषा टीका बम्बई ३–५०
१०८९ ताजिक भूषण–भाषा टीका १–००
१०९० ताजिक नीलकंठी–संस्कृत टीका २–२५
१०९१ ताजिक संग्रह–भाषा टीका ०–७५
१०९२ तिथि चिन्तामणि–भाषा टीका ०–५०
१०९३ तिथिचिन्तामणि–गणेशदैवज्ञ ०–८७
१०९४ तिलविचार–हिन्दी १–००
१०९५ तेजीमन्दी विचार–हिन्दी रतलाम १–५०
१०९६ दयाविलास–महन्तदयाराम जी ४–००
१०९७ दीपिका–शब्ददीपिका–भाषा टीका ३–५०
१०९८ दैवज्ञ कामधेनु–संस्कृत ४–५०
१०९९ दैवज्ञवल्लभ–भाषा टीका ०–८८
११०० दैवज्ञविनोद–पं० मणीराम ५–२५
११०१ दैवज्ञाभरणम–संस्कृत ६–२५
११०२ द्वात्रिंशद्योगावलीजातक–भा० टी० ०–१२
११०३ धराचक्र–भाषा टीका ०–३९
११०४ नरपतिजयचर्या–सं० टीका ४–२५
११०५ नष्टजन्मांगदीपिका–पंचांगदीपिका ०–३१
११०६ नारदीयसंहिता –भाषाटीका ३–५०
११०७ नन्दिदत्त पंचविंशतिका— ०–१३
११०८ पंचस्वरा–सुबोधिनी सं० १–७५
११०९ पंचांगपद्धति–वायुनंदन ०–३७
१११० पंचांगमंजूषा–भाषा टीका ०–७५
११११ पंचांगविज्ञान–भाषाटीका ०–५०
१११२ पत्रीमार्गप्रदीपिका–वर्षदीपक भाषाटीका २–२५
१११३ पत्रीमार्गप्रदीपिका वर्षदीपकंच–महादेव शर्मा ३–००
१११४ पद्मकोश–भाषा टीका ०–३७
१११५ परीक्षा चक्रावलीभाषाटीका ०–५०
१११६ परीक्षा विचार–हिन्दी ०–१२
१११७ प्रश्नचण्डेश्वर–भाषा टीका १–२५
१११८ प्रश्नज्ञानप्रदीप–भाषा टीका १–५०
१११९ प्रश्नभूषण–संस्कृत हिन्दी टीका ०–७५
११२० प्रश्न वैष्णव–भाषा टीका १–५०
११२१ प्रश्न शिरोमणि–भाषा टीका ३–५०
११२२ प्रश्नांकचूड़ामणि ०–१२
११२३ प्रस्तारचक्र–भाषाटीका ०–१२
११२४ फलित संग्रह–रामयत्न भाषाटीका १–००
११२५ बालबोध ज्योतिष–भाषा टीका १–५०
११२६ बालबोध ज्योतिषसार संग्रह भा० टी० १–२५
११२७ बीजगणित–संस्कृत–हिन्दी टीका ८–००
११२८ बृहज्जातक–भाषाटीका ३–५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

११२९ बृहज्जातक-वैद्यनाथी सटीक २-५०
११३० बृहज्ज्योतिषसार-भाषा टीका ४-५०
११३१ बृहत्संहिता भाषा टीका काशी ९-००
११३२ बृहत्-होडाचक्रविवरण-भाषाटीका ०-५०
११३३ बृहदवकहडाचक्र भा० टी० बंबई ०-८७
११३४ बृहदवनजातक-भाषाटीका २-५०
११३५ बृहदयावनोक्त स्त्रीजातक-भाषाटीका ०-८७
११३६ भद्रबाहुसंहिता-मूलमात्र ५-७५
११३७ भविष्यफलभास्कर-भाषाटीका ३-५०
११३८ भाग्यरहस्य-हिन्दी १-५०
११३९ भारतीय कुण्डली विज्ञान-हिन्दी ४-५०
११४० भारतीय ज्योतिष-नेमिचन्द्र हिन्दी ६-००
११४१ भारतीय ज्योतिष-(दीक्षित) मराठी का हिन्दी अनुवाद ८-००
११४२ भारतीय ज्योतिष का इतिहास-गोरखप्रसाद ४-००
११४३ भावकुतूहल-भाषाटीका ३-००
११४४ भावप्रकाश-भाषा टीका १-२५
११४५ भावफलाध्याय-भाषा टीका ०-२५
११४६ भुवनदीपक-सं० हिन्दी टीका ०-७५
११४७ भृगुसंहिता-मथुरा का छापा इसकी सत्यता असत्यता पर हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं ५०-००
११४८ भृगुसंहिता-योगावली खंड संस्कृत ५-२५
११४९ भृगुसंहिता पद्धति-नवग्रह जन्मांग कुण्डली नवीन रचना १०-००
११५० मकरन्दसारणी-भाषा टीका २-००
११५१ मनुष्यजातक-सव्याख्या २-००
११५२ मयूरचित्रकम्-वराहमिहिर ०-५०
११५३ महाभास्करीयम् (भास्कराचार्य) सव्याख्या २-००
११५४ मेघमाला-भट्टली ०-५०
११५५ मानसागरी-भाषा टीका काशी ७-००
११५६ मानसागरी-भाषा टीका बम्बई ६-००
११५७ मुहूर्तकल्पद्रुम-विट्ठलदीक्षित ०-७५
११५८ मुहूर्त गणपति-भाषा टीका ५-००
११५९ मुहूर्त चिन्तामणि-प्रमिताक्षरा सं० टी० ३-००
११६० मुहूर्त चिन्तामणि-पीयूषधारा ५-००
११६१ मुहूर्त चिन्तामणि-भाषा टीका काशी ३-००
११६२ मुहूर्तचिन्तामणि-भाषा टीका बम्बई २-५०
११६३ मुहूर्तदीपक-सव्याख्या ०-५०
११६४ मुहूर्त प्रकाश-भाषा टीका ३-५०
११६५ मुहूर्तमंजरी-भाषा टीका ०-६२
११६६ मुहूर्तमार्तण्ड-भाषा टीका ३-००
११६७ मुहूर्तसंग्रहदर्पण-भाषा टीका ३-५०
११६८ यन्त्रचिन्तामणि-भा० टी० १-३७
११६९ यन्त्रराज-यन्त्रशिरोमणि (महेन्द्र) २-००
११७० योगार्णव ०-२५
११७१ योगिनी जातक-भाषा टीका ०-३१
११७२ रणदीपक-(कमारगणक) ०-३१
११७३ रत्नगर्भचक्र-भाषाटीका ०-१९
११७४ रत्नदीपिका-लक्ष्मीनारायण १-००
११७५ रत्नदीपिका-रत्नशास्त्र प्राचीन २-२५
११७६ रत्नोद्योत भाषाटीका ०-७५
११७७ रमलगुलजार-केवल हिन्दी ४-००
११७८ रमलनवरत्न-भाषा टीका २-००
११७९ रमलमार्तण्ड-हिन्दी ०-६३
११८० रमलरहस्य ९-००
११८१ रमलशास्त्र-बचाणप्रसाद २-००
११८२ लग्नचन्द्रिका-भाषाटीका २-००
११८३ लग्नप्रदीप-प्रथम भाग ०-३१
११८४ लग्नरत्नाकर-भाषाटीका ०-३७
११८५ लग्नवाराही-भाषा टीका ०-१२
११८६ लघुजातक-सं०हिन्दी टीका १-५०
११८७ लघुजातक-भाषा टीका १-००
११८८ लघुपाराशरी-मध्य पाराशरी भा० टी० १-२५
११८९ लघुपाराशरी-भा० टी० ०-५६
११९० लघुभास्करीय-(भास्कराचार्य) सटीक २-००
११९१ लघुभास्करीय-शंकर विवरण १-८८
११९२ लघुमानस-परमेश्वर व्याख्या ०-८७
११९३ लघुसंग्रह-भाषाटीका १-५०
११९४ लीलावती-विवरण व्याख्या दो भाग ४-७५
११९५ लीलावती-भा० टी० पं० सीताराम ३-००
११९६ वनमाला-भाषा टीका ०-२५
११९७ वर्षदीपकपद्धतीमार्गप्रदीपिका भाषाटीका ३-००
११९८ वर्षपद्धति-मूलमात्र २-००
११९९ वर्षयोगसमूह-भा० टी० १-२५
१२०० वाशिष्ठसंहिता (वृद्धवासिष्ठ) ३-५०
१२०१ वाराहीसंहिता (बृहत्संहिता) भा० टी० ९-००
१२०२ वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम् १-५०
१२०३ वास्तुमुक्तावली-भाषा टीका ०-७५
१२०४ वास्तुरत्नावली-सं० हिं० दोनों टीका २-५०
१२०५ वास्तुराजवल्लभ-भाषा टीका २-५०
१२०६ वास्तुसारिणी-भाषाटीका ३-००
१२०७ विमण्डलवक्रविचार २-००
१२०८ विवाहवृन्दावन-सं० हिं० टीका २-५०
१२०९ विश्वकर्मप्रकाश-भाषा टीका २-५०
१२१० विश्वकर्मविद्याप्रकाश ०-६२
१२११ विंशोत्तरीदशा-रामनरेश प्रसाद १-५०
१२१२ वृन्दावली-भा० टी० ०-५०
१२१३ शकुनविचार ०-२५
१२१४ शनिविचार हिन्दी ०-७५
१२१५ शम्भुहोराप्रकाश-भाषाटीका ४-५०
१२१६ शिवजातक-भाषाटीका ०-१२
१२१७ शिशुबोध-भाषाटीका ०-६२
१२१८ शीघ्रबोध-भाषाटीका १-००
१२१९ शुद्धिदीपिका-भाषा टीका ०-५०
१२२० षटपंचाशिका-सं० हिं० टीका ०-५०
१२२१ सन्ततिसमयविचार-हिन्दी १-००
१२२२ संवत्सरनिर्णय ०-८८
१२२३ संकेतनिधि-सं०हिन्दी टीका ३-५०
१२२४ समरसार-सं० हिन्दी टीका १-७५
१२२५ सरलत्रिकोणमिति-बापुदेव ४-५०
१२२६ सर्वतोभद्रचक्र-भाषा टीका १-५०
१२२७ सर्वार्थचिन्तामणि-भाषा टीका ६-००
१२२८ सर्वसंग्रह-भाषा टीका ४-५०
१२२९ सामुद्रिक दर्पण-हिन्दी १-००
१२३० सामुद्रिकरहस्य-भाषाटीका ३-००
१२३१ सामुद्रिकशास्त्र भाषा टीका ३-००
१२३२ सारावली-भाषा टीका सफेद ९-००
१२३३ सिद्धान्तदैवज्ञविनोद-सं० हिन्दी टीका ५-२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१२३४ सिद्धान्त शिरोमणि–मध्यमाधिकारान्त ३–००
१२३५ सिद्धान्तशिरोमणि–(भास्कराचार्य) वासनाभाष्य ६–०
१२३६ सिद्धान्त शिरोमणि–प्रभा-वासना प्रथमभाग ५–००
१२३७ सिद्धान्तशिरोमणि–ग्रहगणिताध्याय–वासनाभाष्य–शिरोमणिप्रकाश दो भाग ६–५०
१२३८ सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय-वासना भाष्य–मरिचि व्याख्या दो भाग ८–७५
१२३९ सिद्धान्तशेखर–(श्रीपति) सव्याख्या दो भाग २४–३७
१२४० सुगम ज्योतिष प्रवेशिका-गोपेश्वर ५–००
१२४१ सूक्ष्मविषय विज्ञान ०–६०
१२४२ सूर्यसिद्धान्त सं० हिं० टीका ५–००
१२४३ स्त्रीजातक–हिन्दी टीका बड़ा २–५०
१२४४ स्त्रीजातक–भा० टी० काशी १–२५
१२४५ हस्तपरीक्षा–हिन्दी पामिस्ट्री रतलाम ६–५०
१२४६ हस्तरेखाविज्ञान ८–००
१२४७ हस्तसामुद्रिक शास्त्र ६–००
१२४८ हायनचन्द्रोदय भा० टी० ०–५०
१२४९ हायनफलरत्न–भाषा टीका ०–५०
१२५० हायनरत्न–मूलखुला पत्रा ३–५०
१२५१ हायनबोध–भाषाटीका ०–६२
१२५२ हायनभास्कर–भाषा टीका १–००
१२५३ हिन्दु गणितशास्त्र का इतिहास ३–००
१२५४ हनुमान ज्योतिष–भाषा टीका ०–६२

चिकित्सा

१२५५ अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य १०–००
१२५६ अगदतन्त्र–रमानाथ द्विवेदी ०–७५
१२५७ अचार चटनी और मुरब्बा– २–५०
१२५८ अचूक चिकित्सा के प्रयोग–जानकीशरण २–५०
१२५९ अजीर्णतिमिरभास्कर–हिन्दी ०–६२
१२६० अजीर्णमंजरी–हिन्दी टीका ०–४४
१२६१ अञ्जननिदान–मूल ०–१९
१२६२ " " हिन्दी टीका १–००
१२६३ अनुभूतयोगावली १–३०
१२६४ अनुपानदर्पण–हिन्दी टीका २–२५
१२६५ अनुपानविधि–श्याममुन्दर ०–५०
१२६६ अनुभूतयोग–दो भाग म २–००
१२६७ अनुभूतयोगचिन्तामणि–दो भाग डा.गणपतिसिंह ८–२५
१२६८ अनुभूतयोग प्रकाश–गणपति सिंह ६–२५
१२६९ आयुर्वेदचिकित्सा विधान–महेन्द्रनाथ ६–००
१२७० अभिनव वनौषधिदर्पण–(सचित्र) १०–००
१२७१ अभिनव विकृति विज्ञान–रघुवीर २२–००
१२७२ अ० शरीर क्रियाविज्ञान–प्रियव्रतशर्मा ७–५०
१२७३ अभिनव शवच्छेद विज्ञान–हिन्दी १५–००
१२७४ अमरविद्या–गणपति सिंह ३–००
१२७५ अमृतसागर बम्बई ९–००
१२७६ अरिष्टक (रीठा) गुणविधान ०–५०
१२७७ अर्क (आक) गुण विधान–हिन्दी १–५०
१२७८ अर्क प्रकाश–रावण १–७५
१२७९ अर्क प्रकाश–रावण भाषा टीका ३–००
१२८० अर्शरोग चिकित्सा–हिन्दी ०–५०
१२८१ अश्व शास्त्रम्–संस्कृत (नकुल) १२–००
१२८२ अष्टांगसंग्रह–निदान स्थान सटीक ३–००
१२८३ अष्टांगसंग्रह–शरीरस्थान सटीक ३–००
१२८४ अष्टांग संग्रह–(सूत्र स्थान) छांगाणी भा.टी. ८–००
१२८५ अष्टांग संग्रह–अत्रिदेव प्रथम भाग हिन्दी ११–००
१२८६ अष्टांगहृदय–मूल मोटा अक्षर ५–००
१२८७ अश्व वैद्यक (जयदत्त) संस्कृत १–८७
१२८८ अष्टांगहृदय–मूलगुटका काशी ४–००
१२८९ अष्टांगहृदय–हिन्दी टीका सहित. १५–००
१२९० अष्टांगहृदय–दासपंडितसंस्कृत व्या दो भागमें १०–००
१२९१ आदर्श आहार–डा०एस० सी० दास १–००
१२९२ आदर्श भोजन–श्रीकेदारनाथ १–२५
१२९३ आदिशास्त्र अर्थात रतिशास्त्र– १–५०
१२९४ आधुनिक एलोपैथिक गाइड–बंसल ८–५०
१२९५ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान–आशानंद दो भाग २०–००
१२९६ आम्रगुण विधान–डा० गणपति सिंह १–२५
१२९७ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा १–२५
१२९८ आयुर्वेद चिन्तामणि–(निघण्टु) ४–५०
१२९९ आयुर्वेददर्श संग्रह—दामोदर शर्मा २–००
१३०० आयुर्वेद प्रदीप–राजकुमार द्विवेदी १०–००
१३०१ आयुर्वेद विज्ञानसार–हिंदी टीका १–५०
१३०२ आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास–वैद्य सूरमचन्द ८–००
१३०३ आयुर्वेद का इतिहास–अत्रिदेव ३–५०
१३०४ आयुर्वेदसार संग्रह हिन्दी–चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य ७–००
१३०५ आसव विज्ञान–ले० हरिशरनानन्द १–५०
१३०६ आयुर्वेद सुषेणसंहिता–हिन्दी टीका २–००
१३०७ आदर्श एलोपैथिक मैटेरिया मेडिका ११–००
१३०८ आयुर्वेदीय द्रिलोपदेश– २–५०
१३०९ आरोग्य विज्ञान–डा० लक्ष्मीनारायण २–००
१३१० आयुर्वेद सूत्र–पं० रामप्रसाद कृत ०–८७
१३११ आयुर्वेदिक इंजेक्शन चिकित्सा–श्याममुन्दर २–५०
१३१२ आयुर्वेदीय औषध संशोधन–वामणकर १–००
१३१३ आयुर्वेदीय क्रिया शरीर–रणजीतराय ११–००
१३१४ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान–रणजीतराय ६–००
१३१५ आयुर्वेदीय परिभाषा– १–२५
१३१६ आयुर्वेदीय परिभाषा–हिन्दी ०–६२
१३१७ आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान–वै० यादवजी ८–५०
१३१८ आर्गेनन–हिन्दी, डा० सुरेशप्रसाद ४–००
१३१९ आरोग्यप्रकाश–श्रीरामनारायण २–२५
१३२० आरोग्य शिक्षा–पं० मुरलीधर हिंदी ०–७५
१३२१ आसवारिष्ट संग्रह–हिन्दी १–७५
१३२२ औषधियोंका भण्डार–– १०–००
१३२३ इंजेक्शन बुक–बंसल २–००
१३२४ इंजेक्शन–डा० सुरेशप्रसाद १०–००
१३२५ इंजेक्शन तत्त्व प्रदीप–गणपतिसिंह ५–००
१३२६ इन्द्रायणगुणविधान–हिन्दी ०–५०
१३२७ इलाजुलगुर्बा–यूनानी इलाज ३–५०
१३२८ उपचारपद्धति और पथ्य–रवीन्द्र ०–३७
१३२९ उपदंश चिकित्सा–गणेशदत्त १–००
१३३० उपदंशविज्ञान–पं० बालकराम १–००
१३३१ एकऔषधिगुण विधान–गणपति सिंह १–८७
१३३२ एकौषधिचिकित्सा ४–००
१३३३ एनीमा और कैथेटर–डा० सुरेशप्रसाद ०–३७
१३३४ एलोपैथिक गाईड–ले० डा० रामनाथ वर्मा, ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिक संबन्धी आज तक नहीं छपी। यही कारण है कि यह इसका पांचवा संस्करण

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

१३३४ एलोपैथिक चिकित्सा–डा० रामनाथ १२–००
१३३५ एलोपैथिक योगरत्नाकर– ,, १३–००
१३३७ एलोपैथिक निघंटु–अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका–ले० डा० रामनाथ वर्मा परिवर्द्धित चतुर्थसंस्करण १२–००
१३३८ एलोपैथिक सारसंग्रह–ओंकारदत्त १०–००
१३३९ एलोपैथिक चिकित्सा–सुरेशप्रसाद १०–००
१३४० एलोपैथिक पाकेट गाईड–डा० सुरेश ३–००
१३४१ एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका–शिवदयाल १२–००
१३४२ एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा १–५०
१३४३ एलोपैथिक पेटेन्ट मेडिसिन–अयोध्यानाथ पाठक ३–२५
१३४४ एलोपैथिक पेटेन्ट प्रस्क्राईबर–रमानाथ ६–०
१३४५ एलोपैथिक मिक्सचर–राजकुमार २–००
१३४६ एलोपैथिक सफल औषधियां ३–००
१३४७ औषधिगुणधर्म विवेचन–कालेडा बंगला का अजिल्द ३ रु० सजिल्द ४–५०
१३४८ औषध गुणधर्म विज्ञान–हरिशरणानन्द १–००
१३४९ कल्पपचक प्रयोग ०–३०
१३५० कृपीपक्वरसनिर्माण–हरिशरणानन्द ५–००
१३५१ कफ परीक्षा (कफ की परीक्षा पद्धतियों का वर्णन) डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत १–२५
१३५२ कब्ज या कोष्ठबद्धता–बालेश्वर सिंह १–००
१३५३ कब्ज से मलावरोध–महेन्द्रनाथ ०–५०
१३५४ कब्जकोष्ठबद्धता— ०–७५
१३५५ कम्पाउण्डर्ज–द्वारकाप्रसाद ३–००
१३५६ करिकल्पलता–छन्दोबद्ध, हाथियों की चिकित्सा ३–२५
१३५७ कषाय कल्पना विज्ञान १–५०
१३५८ कामकला के भेद–चतुरसेन शास्त्री ५–००
१३५९ काम कुतूहल–हि० टी० ०–६२
१३६० कामरत्न–नित्यनाथ हिन्दी टीका ५–००
१३६१ कामविज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद १–२५
१३६२ कामसूत्र–वात्स्यायन प्रणीत यशोधरकृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० मावताचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी २०–००
१३६३ क्लीनिकल मेडिसिन–एम. बी. बी. एस. तथा पाश्चात्य निदान और चिकित्सा प्रणाली का सम्यक ज्ञान कराने वाला हि०भा० में पहला और अद्वितीय ग्रन्थ अत्रिदेव गुप्त द्वारा, दो हजार पृष्ठ के लगभग संपूर्ण २ भाग २५–००
१३६४ क्वाथमणिमाला–हिन्दी टीका १–५०
१३६५ कालज्ञान–हि० टी० ०–५०
१३६६ काश्यप संहिता–(बृ०) भा० टी० १६–००
१३६७ कीकर गुणविधान– ०–५०
१३६८ कुचुमारतन्त्र–हिन्दी टीका ०–५०
१३६९ कुमारतन्त्र हिन्दी टीका ०–७५
१३७० कुल्लियात–हकीम दलजीतसिंह १–२५
१३७१ कूट मुद्दार ०–२५
१३७२ केलिकुतूहल–मूल संस्कृत ले० म. म. पं० मथुरा प्रसाद दीक्षितकृत संस्कृत में २–००
१३७३ केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य १–२५
१३७४ कोकसार–वैद्यक नारायण प्रसाद ५–००
१३७५ कौमार नत्य–रघुवीरशरण ८–००
१३७६ खूबचन्द चिकित्सा–हिन्दी अनुवाद १–५०
१३७७ गंगयतिनिदान–सरल हिन्दी में निदान विषय बड़ी सरलता से समझाया है। हर रोग का निदान दिया है जिसे अनजान भी समझ सकता है ६–००
१३७८ गांवों में औषधरत्न–प्रथम २–००
द्वितीय ३–५० तृतीय ४–५०
१३७९ गुणों की पिटारी –परमानन्द २–००
३८० गुप्तयोगरत्नावली–डा० गणपति वर्मा २–५०
१३८१ गूलरगुण विकास–(आरोग्यप्रकाश) १–००
१३८२ ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणालीके रोग–श्रीमहेन्द्रनाथहि. १–००
१३८३ ग्राम्य चिकित्सा–श्री केदारनाथ ०–६२
१३८४ ग्रामीणों का स्वास्थ्य–केदारनाथ १–००
१३८५ घर का वैद्य–अमोलकचन्द्र शुक्ल ६–००
१३८६ घर का वैद्य छोटा ०–७५
१३८७ घरेलू चिकित्सा— १–५०
१३८८ घरेलू डाक्टर–नार डाक्टरों द्वारा ४–००
१३८९ घरेलू इलाज ०–५०
१३९० घावचिकित्सा–श्यामसुन्दर हो० १–००
१३९१ घृत गुण विज्ञान–हिन्दी ०–५०
१३९२ चक्रदत्त हिन्दी टीका काशी १०–००
१३९३ चक्रदत्त–भा० टी० बम्बई ७–००
१३९४ चर्याचन्द्रोदय–हिन्दी टीका ४–२५
१३९५ चरक–मूल बंबई ७–००
१३९६ चरकसंहिता–चक्रपाणिकृत आयुर्वेददीपिकाबंबई २२–०
१३९७ चरकसंहिता–आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिंदी अनुवाद सम्पूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में–इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आजतक नहीं छपा। ६ संस्करण ३०–००
१३९८ चरकसंहिता–मूल एवं हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती में अनुवाद, इतिहास, सामान्य विवरण तथा परिशिष्ट आदि सहित ६ भाग ७५–००
१३९९ चरक संहिता का अनुशीलन २–००
१४०० चिकित्सा चन्द्रोदय–ले० हरिदास वैद्य सम्पूर्ण चिकित्सा सात भाग ४८–००
१४०१ चिकित्सातत्वप्रदीप–दो भाग १७–००
१४०२ चिकित्साधातुसार–हिन्दी ०–६०
१४०३ चिकित्सांजन–हिन्दी १–१२
१४०४ जन्मनिरोध–सचित्र ६–००
१४०५ जनस्वास्थ्य विज्ञान ४–००
१४०६ ज्वरचिकित्सा–श्रीमहेन्द्रनाथ २–७५
१४०७ ज्वरतिमिरनाशक–भाषा टीका १–७५
१४०८ ज्वरमीमांसा–ले० श्रीहरिशरणानन्द १–५०
१४०९ ज्वर-विवेचन अर्थात् ज्वरनिदान चिकित्सा आयुर्वेदीय लाक्षणिक चिकित्सा ग्रन्थ पं० लीलाधर १०–००
१४१० ज्वरविज्ञान–(हि०) ३–००
१४११ ज्वरचिकित्सा–अयोध्यानाथ २–००
१४१२ जीवनिक्त विमर्श–ले० हरिश्चन्द्र १–२५
१४१३ जुकाम–ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) १–७५
१४१४ टोटका विज्ञान–केदारनाथ (हि०) ०–३७
१४१५ टोटका अमोलकचन्द ०–७५
१४१६ डाक्टरी गाइड–कविराज प्रेमनारायण ४–००
१४१७ डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा–(एलोपैथी तथा होमियो) (हि०) ४–५०
१४१८ डाक्टरी चिकित्सासार १–२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१४१९ डाक्टरी नुस्खे—
१४२० तपेदिक—श्री महेन्द्रनाथ २–५०
१४२१ तापमान—राजकुमार ४–००
१४२२ तुवर और चालमोगरा— ०–२५
१४२३ तुलसी चिकित्सा विधान— ०–७५
१४२४ तुलसी केदारनाथ पाठक ०–३६
१४२५ तुलसी विज्ञान—सरल भाषा ०–१२
१४२६ थर्मामीटर—हिन्दी ०–५०
१४२७ दन्तविज्ञान (हि०) पं० गोपीनाथ ०–२५
१४२८ द्रव्यगुणविज्ञान—ले० आचार्य यादवजी विक्रमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक) ३–५०
१४२९ द्रव्यगुण विज्ञान—प्रियव्रत १८–००
१४३० द्रव्यगुणशतक—हिन्दी ०–६२
१४३१ दुग्धगुण विधान—हिन्दी १–००
१४३२ दूध से सर्व रोगों के इलाज ०–७५
१४३३ देहाती अनुभूत योग संग्रह— १२–००
१४३४ देहाती इलाज—श्री रमेशवेदी १–००
१४३५ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा सार ६–००
१४३६ देहातियों की तन्दुरुस्ती—केदारनाथ ०–७५
१४३७ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा अमोलक ५–००
१४३८ दैनन्दिनी रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा ४–००
१४३९ दैनिक प्रयोगावली गंगाशरण ३–५०
१४४० दोष कारणत्व मीमांसा—श्रीप्रियव्रत १–००
१४४१ धतूरागुण विधान— ०–७५
१४४२ धात्री विज्ञान २–५०
१४४३ धातुरोग और इसका इलाज—महेन्द्रनाथ १–५०
१४४४ नपुंसकचिकित्सा व यौवन गुप्तरहस्य ३–००
१४४५ नपुंसक चिकित्सा—हिन्दी टीका ०–६०
१४४६ नपुंसकामृतार्णव—हि० टी० २–५०
१४४७ नवपरिभाषा—उपेन्द्रनाथदास १–७५
१४४८ नव्यजन स्वास्थ्यविज्ञान—ले०—डाक्टर मुकुन्द स्वरूप वर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान विषय पर नवीनतम तथा अपटूडेट ग्रन्थ। अनेकों चित्र देकर हर विषयको बड़ी सरलता से समझाया है। विद्यार्थियों को तो इस विषय को समझने के लिये अद्वितीय पुस्तक है।
१४४९ नव्यरोगनिदान माधवनिदान परि० ०–७५
१४५० न्यूमोनिया प्रकाश—देवकरण ०–३७
१४५१ नाड़ी तत्त्व दर्शन—नाड़ी विज्ञान की रहस्यपूर्ण प्रामाणिक पुस्तक—ले० श्री सत्यदेववशिष्ठ ५–००
१४५२ नाड़ीदर्पण—भाषाटीका १–००
१४५३ नाड़ीदर्शन—श्रीवैद्य ताराशङ्करजी कृत आधुनिकतम आविष्कारों सहित सचित्र अत्युपयोगी २–५०
१४५४ नाड़ी परीक्षा—हिन्दी टीका ०–३१
१४५५ नाड़ीविज्ञान —(कणादविरचित) हिं० ०–२५
१४५६ नाड़ी ज्ञानतरंगिणी—अनुपानतरंगिणी २–००
१४५७ नाड़ीज्ञानदर्पण—हिन्दी टीका ०–५०
१४५८ निर्गुण्डीगुणविधान—गणपतिसिंह ०–७५
१४५९ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह १–२५
१४६० नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १–२५
१४६१ नीम के उपयोग १–००
१४६२ नीमगुणविधान—अब्दुल्ला ०–९४
१४६३ नीम चिकित्सा ०–६२
१४६४ नेत्ररक्षा—नेत्ररोग चिकित्सा १–००
१४६५ नेत्ररोगविज्ञान—यादवजी हंसराज १५–००
१४६६ नेत्रसुधार—डा० अग्रवाल ४–००
१४६७ नेत्ररोगचिकित्सा ०–७५
१४६८ पंचभूत विज्ञान—उपेन्द्रनाथ दास ३–००
१४६९ पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य १–००
१४७० पंचसायक—हिं० टीका ३–५०
१४७१ पथ्यापथ्य—(विश्वनाथ) हिं० टी० २–००
१४७२ पथ्यापथ्यनिर्णय—हिन्दी टीका खूबचन्द ०–७५
१४७३ परिभाषा प्रबन्ध—जगन्नाथ प्रसाद २–५०
१४७४ परीक्षित प्रयोग—दो भाग २–००
१४७५ पलाण्डुगुणविधान—हिन्दी ०–५०
१४७६ प्लीहा रोगचिकित्सा—ले० ज्ञानचन्द ०–२५
१४७७ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा ०–३१
१४७८ पशुचिकित्सा— ४–००, ३–००
१४७९ पशुचिकित्सा २–००
१४८० पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज ६–००
१४८१ पशुचिकित्सा विज्ञान—डा० राजेन्द्रसिंह १–८७
१४८२ पशुपालक विज्ञान—राजेन्द्रसिंह १–८७
१४८३ पशु संक्रामक रोग चिकित्सा—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ३–००
१४८४ पशुओं का इलाज— ०–५०
१४८५ पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश १–१२
१४८६ पाकविलास—हिंदी १–००
१४८७ पाकविज्ञान—ऋषिकुमार ३–००
१४८८ पाचन प्रणाली के रोग—महेन्द्रनाथ २–२५
१४८९ पायोरिया चिकित्सा—दाऊदयाल १–००
१४९० पाश्चात्य द्रव्यगुण-विज्ञान—मैटेरिया मेडिका श्री राम सुशीलसिंह कृत २ भागों में ४५–००
१४९१ पीपल गुणविधान—अब्दुल्ला ०–५०
१४९२ पुराने रोगों की गृह चिकित्सा— ४–००
१४९३ पुरुष-रोग—दाऊदयाल १–००
१४९४ पुरुष रोग चिकित्सा—चन्द्रशेखर ३–५०
१४९५ पेटेन्ट प्रेस्क्राइबर—डा० रमानाथ ६–००
१४९६ पेटेण्ट अदविपात—बंसल ६–००
१४९७ पैसे पैसे के चुटकुले—ले० गणपतिसिंह ३–००
१४९८ प्रत्यक्ष शरीर कोष—श्री सेन गुप्त ८–००
१४९९ प्रति संस्कृतनिदान चिकित्सा—संस्कृत १–००
१५०० प्रमेह और अर्श रोग— १–२५
१५०१ प्रताप कंठाभरण १–५०
१५०२ प्रमेह भास्कर—वैद्य किशोरी दत्त ०–१६
१५०३ प्रमेहविवेचन—श्रीमहेन्द्रनाथ हिं० २–००
१५०४ प्रसूति विज्ञान—रमानाथ द्विवेदी ९–००
१५०५ प्राकृतिक पशु चिकित्सा— ०–७५
१५०६ प्राकृतिक चिकित्सा—केदारनाथ गुप्त ४–००
१५०७ प्राकृतिकचिकित्सा—हिं० रामनारायण ०–७५
१५०८ प्रारम्भिक उपचार—गणेशदत्त १–००
१५०९ प्रारंभिक उद्भिद्शास्त्र (वनस्पति) बलवन्तसिंह ४–५०
१५१० प्रारम्भिक भौतिकी—निहालकरण ८–००
१५११ प्रारम्भिक रसायन—फलदेवसहाय ४–५०
१५१२ फलों द्वारा अनुभूत चिकित्सा—गणपतिसिंह ३–२५
१५१३ फलों द्वारा चिकित्सा २–००
१५१४ फिटकरी— ०–३७
१५१५ फिटकरी गुण विधान—ले० अब्दुल्ला १–५०
१५१६ फेफड़ों की परीक्षा, रोग, चिकित्सा—शिवचरण ५–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१५१७ बच्चों कराने का इलाज ०–७५
१५१८ बच्चों की रक्षा–लई कुनें हिन्दी ०–३७
१५१९ बवासीर और उसकी चिकित्सा ०–९४
१५२० बच्चों के रोग और उनका इलाज–महेन्द्रनाथ २–००
१५२१ बबूल चिकित्साविधान–– ०–३७
१५२२ बबूल गुणविधान–मु० अब्दुल्ला ०–२५
१५२३ बरगद–रमेश बेदी ०–७५
१५२४ बस्तिशलाका प्रवेश ०–३७
१५२५ बायोकेमिक चिकित्सा–सुरेश प्रसाद ४–००
१५२६ बायोकेमिक पाकेट गाइड–डा० सुरेशप्रसाद हिं० १–००
१५२७ बालतन्त्र–(कल्याण वैद्य विरचित) २–५०
१५२८ बालरोग चिकित्सा १–००
१५२९ बालरोग चिकित्सा–पं० महावीर १–००
१५३० बालरोग चिकित्सा–ऋषीकुमार ०–७५
१५३१ बोपदेव शतक ०–८७
१५३२ बृहद् बूटी प्रचार वैद्यक २–५०
१५३३ बृहन्निघंटुरत्नाकर हि० टी० प्रथम भाग ८–५०
१५३४ ,, ,, चतुर्थ भाग ८–००
१५३५ ,, ,, पंचम भाग १६–००
१५३६ ,, ,, छठा भाग १२–००
१५३७ ,, ,, ७–८ भाग शालिग्राम निघण्ट भूषण १६–००
१५३९ बृहद्योग तरंगिणी त्रिमल्लभट १६–२५
१५४० बृहत् रसराज सुन्दर हिन्दी १२–००
१५४१ भस्मविज्ञान–हरिशरनानंद १०–००
१५४२ भेलसंहिता–मूल १०–००
१५४३ भारतीय जड़ी-बूटी डा० गनपतसिंह ५–५०
१५४४ भारतीय रस पद्धति–अत्रिदेव १–५०
१५४५ भारतीय जनता का स्वास्थ्य और आयुर्वेद ०–५०
१५४६ भावप्रकाश–पं० लालचन्दजी कृत अद्वितीय हिंदी टीका, विशेष वक्तव्य तथा यूनानी निघण्टु १६–००
१५४७ भावप्रकाशनिघण्टु–सटिप्पण मूल १–५०
१५४८ भावप्रकाशनिघण्टु–आचार्य श्रीविश्वनाथजी द्विवेदी कृत ललितार्थकरी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित परिवर्धित तृतीया-वृत्ति ७–००
१५४९ भावप्रकाश–मूलस्थूलाक्षर ८–००
१५५० भूलोक में अमृत ०–५०
१५५१ भैषज्यकल्पना–ले० श्री अत्रिदेव गुप्त १–७५
१५५२ भैषज्यकल्पना विज्ञान ५–००
१५५३ भैषज्यरत्नावली–अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को खोलने वाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस में हैं उतने आज तक किसी संस्करण में नहीं छपे। सातवां संस्करण बहुत परिवर्धित होकर ग्लेज कागज पर छपा है १२–००
१५५४ भैषजसार–ले० डा० सुरेशप्रसाद २–००
१५५५ भोजन विधि–रोग और पथ्यापथ्य–केदारनाथ २–००
१५५६ भोजन ही अमृत है–ले० श्री महेन्द्रनाथ १–७५
१५५७ मकरध्वज ०–६२
१५५८ मट्ठा उसके गुण तथा उपयोग–– १–००
१५५९ मट्ठा या छाछ १–००
१५६० मदनपाल निघंटु–भाषा टीका बंबई ५–००
१५६१ मधु के उपयोग–केदारनाथ १–००
१५६२ मधुगुणविधान–डा० गणपति सिंह १–५०
१५६३ मन्थरज्वरविज्ञान–श्री हरिशरणानंद २–००
१५६४ मर्मविज्ञान–ले० श्रीरामरक्षपाठक ३–५०
१५६५ मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा–एलोपैथिक २–५०
१५६६ मलावरोध–युगलकिशोर १–२५
१५६७ मलेरिया–श्री मनमोहन धूप–मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) २–२५
१५६८ मलेरिया और कालाजार चिकित्सा १–७५
१५६९ मलेरिया मोतीझरा–युगलकिशोर १–००
१५७० महामारी विवेचन–हिन्दी टीका सहित ०–६०
१५७१ माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट–डा० एम०एल० गुजराल हिन्दी अनुवाद एलोपैथिक चिकित्सा २०–००
१५७२ माधव निदान–सटिप्पण १–५०
१५७३ माधव परिशिष्ट ०–७५
१५७४ माधवनिदान–मधुकोष आतंकदर्पण ७–००
१५७५ माधवनिदान–मधुकोष सं० टीका तथा मधुकोष का हिन्दी अनुवाद सहित पं० दीनानाथ कृतसंपूर्ण तथा प्रश्नपत्र सहित ३ भाग १८–००
१५७६ माधवनिदान–मधुकोष तथा विजयनी हिन्दी १५–००
१५७७ माधवनिदान–माधवी हिन्दी टी० २–५०
१५७८ माधवनिदान–पं० लालचन्द हिन्दी ४–५०
१५७९ माधव निदान–मधुकोष मनोरमा हिन्दी ६–००
१५८० माधवनिदान–पं० दत्तराम चौबे ५–००
१५८१ मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र–बलवन्त सिंह कृत ०–७५
१५८२ मिक्सचर (एलोपैथिक)–डा० सुरेशप्रसाद २–२५
१५८३ मिर्च–ले० रमेशवेदी हिन्दी १–००
१५८४ मिट्टी सब रोगों की रामबाण दवा ०–६५
१५८५ मिडवाइफरी बसन्तीरानी ३–५०
१५८६ मीजान तिब्ब–सर्वाङ्ग चिकित्सा ३–५०
१५८७ मेघविनोद–श्रीमेघमुनिप्रणीत–सरल हिन्दी में। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज – दवाइयां भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें ६–००
१५८८ यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा २–००
१५८९ यूनानी चिकित्सा विधि–अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक हकीम मन्साराम। हर रोग के लिये यूनानी इलाज किस प्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है किस हालत में कौन दवाई देनी। शरीरपरिचय सहित हिंदी १–००
१५९० यूनानी चिकित्साविज्ञान–डा० दलजीत सिंह ८–५०
१५९१ यूनानी चिकित्सासागर–लेखक हकीम मन्साराम–इसमें यूनानी के प्रायः सभी आजमाये हुए नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं अर्थात् यूनानी में जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सब दिया है १०–०
१५९२ यूनानीद्रव्य गुणविज्ञान–दलजीतसिंह २२–००
१५९३ यूनानी शब्दकोष–फारसी से हिन्दी ०–३७
१५९४ यूनानीसिद्धयोगसंग्रह–श्री दलजीत सिंह २–५०
१५९५ यूनानी चिकित्सा सागर–हकीम दलजीत सिंह ४–००
१५९६ योग चिकित्सा–अत्रिदेव गुप्त ३–५०
१५९७ योगचिन्तामणि–हिन्दी टीका सहित ४–००
१५९८ योगतरंगिणी (त्रिमल्लभट कृत) ६–००
१५९९ योग रत्नाकर–मूल संस्कृत ६–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१६०० योगरत्नाकर भा० टी०
१६०१ योगशतक १८–००
१६०२ रतिरत्न प्रदीपिका–मूल ०–६०
१६०३ रतिरहस्य–श्रीकोकोक विरचित सं० १–००
१६०४ रसचिन्तामणि–हिन्दी टीका सहित ३–००
१६०५ रसतन्त्रसार व सिद्धयोग संग्रह— कालेडा बोगला वालों का प्रथम भाग ३–५०
१६०६ " " दूसरा भाग ९–००
१६०७ रसतरंगिणी–लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्र नाथ जीके आदेशानुसार प्राणाचार्य श्री सदानन्द जी विरचित तथा श्री पं० हरिदत्तजी कृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्दजी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका पांचवां संस्करण सफेद कागज पर छपा है। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं सभी जगह पाठ्यग्रन्थ हैं १०–००
१६०८ रसहृदयतन्त्र–भाषा टीका ५–००
१६०९ रस भस्मों की सेवन विधि ०–५०
१६१० रसप्रदीप–हिन्दी टीका सहित ०–५०
१६११ रसरत्नसमुच्चय–मूलसंस्कृत ३–००
१६१२ रसरत्नसमुच्चय–की सरलार्थ संस्कृत टीका ३–७५
१६१३ रसरत्नसमुच्चय–हि० टी० १०–००
१६१४ रसरत्नसमुच्चय–शंकरदयालु भाषा टीका १०–००
१६१५ रसरत्नाकर–भाषापद्य १–००
१६१६ रसराजमहोदधि–सम्पूर्ण पांचों भाग बंबई ८–००
१६१७ रसादिपरिज्ञान–जगन्नाथ प्रसाद २–००
१६१८ रसाध्याय–संस्कृत टीका सहित ०–६२
१६१९ रसामृत–ले० वै० यादवजी त्रिक्रमजी आचार्य। आचार्य जी का यह जीवनपर्यन्त का रसशास्त्र सम्बन्धी अनुभव है। हिन्दी टीका सहित। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्र के पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रसयोग आदि के ठीक निर्माण में उपयुक्तमार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। अभी अभी हाल में प्रकाशित हुआ है ५–००
१६२० रसायनखंड–नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ०–५०
१६२१ रसायनसार–ले० श्यामसुन्दराचार्य ८–००
१६२२ रसार्णव–नाम रसतन्त्र–सटिप्पण २–००
१६२३ रसेन्द्रचिन्तामणि–(ढुंढकनाथ) हिन्दी टीका ३–५०
१६२४ रसेन्द्रपुराण–पं० रामप्रसाद कृत ७–००
१६२५ रसेन्द्रभास्कर–हिन्दी टीका सहित २–५०
१६२६ रसेंद्रसारसंग्रह—सटिप्पण १–५०
१६२७ रसेंद्रसार संग्रह भा. टी. रामप्रसाद ६–००
१६२८ रसेन्द्रसारसंग्रह–विस्तृत हिन्दी घनानन्द पन्त ११–००
१६२९ रसेन्द्रसारसंग्रह–रसायनी भाषाटीका ३–००
१६३० रसेन्द्रसारसंग्रह–रसचन्द्रिका भा० टी० ६–००
१६३१ राजकीय औषध योग संग्रह– ७–००
१६३२ राजनिघंटु–नरहरि कृत संस्कृत टीका ३–१२
१६३३ राजनिघंटु संहिता–धन्वन्तरीयनिघंटु ९–५०
१६३४ राजवल्लभनिघंटु–हिन्दी टीका २–५०
१६३५ रामविनोद–भाषा बंबई २–५०
१६३६ राष्ट्रीयचिकित्सा–सिद्धयोगसंग्रह १–५०
१६३७ रिलेशनशिप–ले० डा० श्यामसुन्दर २–००
१६३८ रीठा गुणविज्ञान ०–५०
१६३९ रोगनामावली–कोष वैद्यकीय मान तौल ३–५०
१६४० रोगी सुश्रुषा–महेन्द्रनाथ २–५०
१६४१ रोगी की सेवा और पथ्य–डा० सुरेश ३–००
१६४२ रोगी परीक्षाविधि–श्री प्रियव्रत ६–००
१६४३ रोगों की अचूक चिकित्सा–जानकीशरण ७–००
१६४४ रोगों की सरल चिकित्सा–विट्ठलदास ३–००
१६४५ रोगी मृत्यु विज्ञान–पं० मथुराप्रसाद १–५०
१६४६ लवंगगुण विधान–डा० गणपतिसिंह ०–२५
१६४७ लवणगुण विधान ०–२५
१६४८ वंगसेन–हिन्दी टीका सहित १८–००
१६४९ वनौषधि चन्द्रोदय–१० भाग ४०–००
१६५० वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा–घर बैठे डाक्टरी ज्ञान कराने वाली अपूर्व पुस्तक। ४०० रोगों का सफल निदान और सिद्ध चिकित्सा। वैद्यों हकीमों के लिये भी समान उपयोगी। डा० रामनाथ वर्मा की प्रशंसित कृति १२–००
१६५१ वसवराजीयम्–पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध भाषा ८–५०
१६५२ वात्स्यायन के योग–केदारनाथ पाठक ०–७५
१६५३ विषचिकित्सादर्पण–हिन्दी ०–५०
१६५४ विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश–हि० टी० १–७५
१६५५ विषविज्ञान–अगदतन्त्र १–७५
१६५६ वीरसिंहावलोक–मूलसंस्कृत ३–५०
१६५७ वृन्दमाधव–सिद्धयोग कण्ठदत्तकृत संस्कृत व्या० १०–००
१६५८ वृन्दवैद्यक–(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ७–००
१६५९ वृक्षकल्पद्रुम अर्थात् पशुचिकित्सा– ३–३७
१६६० वैद्यकीय सुभाषितावली–डा० मेहता २–००
१६६१ वैद्यक परिभाषा प्रदीप–भा०टी०बंबई२–००, १–५०
१६६२ वैद्यकरसराजमहोदधि–सम्पूर्ण ८–००
१६६३ वैद्यजीवन–(लोलिंबराज) हिंदी टीका १–२५
१६६४ वैद्य जीवन–संस्कृत तथा हिन्दी टीका बम्बई २–५०
१६६५ वैद्यमनोत्सव–हिंदी (नैनसुख) ०–५०
१६६६ वैद्यरहस्य–(विद्यापति) हिन्दी टीका ५–००
१६६७ वैद्यवल्लभ–हस्तिरुचिकृत, भाषा टीका १–००
१६६८ वैद्यविनोदसंहिता–शंकरभट ३–२५
१६६९ वैद्यमनोरमा धाराकल्प–हिन्दी टीका १–७५
१६७० व्यवहारायुर्वेद विषविज्ञान–युगलकिशोर ४–५०
१६७१ व्याधिविज्ञान–डा० आशानन्द। रोगों के ज्ञान के लिये अत्युत्तम ग्रन्थ है। अनेकों चित्र सहित प्रथम भाग छठा संस्करण १०–००, दूसरा भाग ९–००
१६७२ शरीर प्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप ५–००
१६७३ शरीरविज्ञान,तात्कालिक चिकित्सा–केदारनाथ १–००
१६७४ शल्य प्रदीपिका–डा० मुकुन्दस्वरूप कृत–सर्जरी अर्थात् शल्य चिकित्सा पर डाक्टर साहिब की यह नवीनतम तथा सविस्तृत पुस्तक है। अनेकों चित्र देकर समझाया गया है। चीर-फाड़ करने के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है। शल्य चिकित्सा को समझने के लिए इससे बढ़ कर पुस्तक आज तक नहीं छपी–७५० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य कपड़े की जिल्द सहित केवल १२–५० है।
१६७५ शहद के गुण और उपयोग–महेन्द्रनाथ ०–७५
१६७६ शार्ङ्गधर संहितामूल अंजन निदान सहित गुटका २–००
१६७७ शार्ङ्गधर संहिता–दो सं० व्याख्या ८–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१६७९ शार्ङ्गधर संहिता–रामप्रसाद हि० टी० ६–००
१६७९ शार्ङ्गधर संहिता–श्यामा हिन्दी टीका ४–००
१६८० शार्ङ्गधर संहिता–भाषाटीका ६–००
१६८१ शालिहोत्र–संस्कृत भोजविरचित ८–००
१६८२ शालिहोत्र–बड़ा सचित्र बम्बई ५–२५
१६८३ शालाक्यतन्त्र–श्रीरमानाथ द्विवेदी ९–००
१६८४ शालिग्रामौषधि शब्दसागर–आयुर्वेदीय शब्दकोष ४–५०
१६८६ शिवनाथसागर हिन्दी–डा० शिवनाथ ७–००
१६८७ शिलाजीत विज्ञान ०–७५
१६८८ शिशुपालन–बलवन्तसिंह १–७५
१६८९ शिशुपालन ०–५०
१६९० शीतला परिहार २–५०
१६९१ शुभसन्ततियोगप्रकाश–हिन्दी टीका २–५०
१६९२ शुस्लर साहब की बारह दवाइयां ३–००
१६९३ श्वासरोग चिकित्सा–गोकुलप्रसाद ०–३७
१६९४ संक्रामक पशुरोगचिकित्सा–डा० राजेन्द्रप्रसाद ३–००
१६९५ संक्रामक रोग विज्ञान ६–००
१६९६ संतरा गुणविधान–हिन्दी ०–३७
१६९७ सचित्र नेत्र रोग विज्ञान–डा० शिवदयाल ८–००
१६९८ संतानशास्त्र–पं० गणेशदत्त ५–००
१६९९ सन्यासी चिकित्सा शास्त्र–अथवा साधू की चुटकी ५–००
१७०० सर्पविषविज्ञान १–२५
१७०१ सरलचिकित्सा–गोयल ३–००
१७०२ सरलचिकित्साविज्ञान ३–२५
१७०३ संक्षिप्त औषधपरिचय–हिन्दी ०–५०
१७०४ संक्षिप्त पारिवारिक चिकित्सा ३–२५
१७०५ संक्षिप्तशल्यविज्ञान–डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी ८–००
१७०६ सिद्धपरीक्षा–पद्धति–प्रथमखण्ड कालेडा बंगला ६–००
१७०७ सिद्धभैषज्यसंग्रह–युगलकिशोर गुप्त ८–००
१७०८ सिद्धमृत्युञ्जययोग–५३ सिद्धप्रयोग १–००
१७०९ सिद्धयोगसंग्रह–आचार्य यादव जी त्रिकमजी २–७५
१७१० सिद्धरसायन–मोरे वैद्यरत्न हि० ५–००
१७११ सुश्रुतसंहिता–मूलशास्त्र परिचायक परिशिष्ट १०–००
१७१२ सुश्रुतसंहिता–कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त कृत हिन्दी अनुवाद तथा पं० लालचन्द जी कृत परिवर्द्धित १५–००
१७१३ सुश्रुतसंहिता–(शारीरस्थान) डा० जे० डी० शर्मा कृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित सचित्र ५–००
१७१४ सुश्रुतसंहिता–केवलशारीरस्थान–डा० घाणेकर १०–००
१७१५ सुश्रुत-सूत्र–निदान डा० घाणेकर १०–००
१७१६ सुश्रुतसंहिता-सूत्रस्थान, नयासं० डा० घाणेकर ९–००
१७१७ सूचावेध–राजकुमार १–५०
१७१८ सूर्यभेदन व्यायाम ०–७५
१७१९ सूचीवेधविज्ञान-आचार्य श्री रमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आज तक नहीं छपा। १००० से ऊपर इंजेक्शन परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण ७–५०
१७२० सूर्यरश्मिचिकित्सा (अर्थात सूर्यकिरण चिकित्सा) १–०
१७२१ सूर्य चिकित्सा ०–३७
१७२२ स्टैथस्कोप नाड़ी परीक्षा–जोशी ०–७५
१७२३ स्वास्थ्य शिक्षा–हरनामदास ०–५०
१७२४ स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा १–२५
१७२५ सोंठ–श्री रामेशवेदी हिन्दी १–५०
१७२६ सौंफ–रामनाथ द्विवेदी ८–५०
१७२७ स्त्री रोगों का सरल इलाज १–५०
१७२८ स्त्री रोगों का सफल इलाज १–५०
१७२९ स्टैथेस्कोपविज्ञान–रामविचार पाण्डेय १–००
१७३० स्टैथेस्कोपविज्ञान–डा० श्यामसुन्दर १–००
१७३१ स्वप्नदोषरक्षक–हिन्दी इन्द्र विरचित ०–५०
१७३२ स्वप्नदोषविज्ञान–सरल हिन्दी २–००
१७३३ स्वास्थ्यविज्ञान–अजमेर १–२५
१७३४ स्वर्णक्षीरी गुणविधान–ले० गणपति ०–७५
१७३५ स्वस्थ्यदत्त समुच्चय-राजेश्वरदत्त हिन्दी टीका ६–५०
१७३६ स्वास्थ्य और जल चिकित्सा–केदारनाथ २–००
१७३७ स्वास्थ्य और व्यायाम–केदारनाथ २–००
१७३८ स्वास्थ्य और सदवृत्त–ले० श्री अत्रिदेव २–००
१७३९ स्वास्थ्य रक्षा–ले० श्री हरिदास वैद्य ५–००
१७४० स्वास्थ्य विज्ञान–ले० डा० घाणेकर ७–५०
१७४१ स्वास्थ्य संहिता–श्रीनानकचन्द हि० २–५०
१७४२ स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग–ले० श्री अत्रिदेव गुप्त –युवतियों के जानने योग्य ३–००
१७४३ स्त्रीचिकित्सा–हिन्दी टीका सहित ०–६०
१७४४ स्त्री रोग विज्ञान–डा० रमानाथ ३–००
१७४५ स्त्री रोग चिकित्सा– १–२५
१७४६ स्त्रीपुरुष संजीवन ०–८७
१७४७ हम सौ वर्ष कैसे जीयें!–केदारनाथ २–००
१७४८ हमारा भोजन–ले० श्री महेन्द्रनाथ ४–००
१७४९ हमारे बच्चे–ले० श्री महेन्द्रनाथ १–७५
१७५० हमारे भोजन की समस्या–रामअवध १–५०
१७५१ हमारे भोजन की समस्या–अत्रिदेव १–७५
१७५२ हमारे शरीर की रचना–ले० श्री त्रिलोकीनाथ वर्मा केवल प्रथम भाग १०–१२
१७५३ हस्तायुर्वेद–पालकाप्य मुनि विरचित ११–००
१७५४ हंसराजनिदान–हिन्दी टीका सहित २–००
१७५५ हारीतक्षादिनिघंट ६–००
१७५६ हारीत संहिता–हिन्दी टीका ८–५०
१७५७ हिकमत प्रकाश-संस्कृत टीका सहित ३–००
१७५८ हितोपदेश वैद्यक–श्रीकण्ठकृत हिन्दी ३–००
१७५९ हृदय परीक्षा–डा० रमेशचन्द्र वर्मा कृत, आधुनिक प्रणालियों से हृदय परीक्षा को सरलतम रूप में समझानेवाली, सचित्र उपयोगी पुस्तक स्टेथ-स्कोप का प्रयोग चुटकी बजाते आ जायगा। २–००
१७६० हैजा चिकित्सा–डा० श्यामसुन्दर १–००
१७६१ हैजा चिकित्सा –०७५
१७६२ होमियोगृह चिकित्सा २–२५
१७६३ होमियो मेटरिया मेडिका ३–५०
१७६४ होमियो इंजक्शन चिकित्सा–ले० डा० सुरेशप्र. १–७५
१७६५ होमियो कम्पेरेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका– ९–००
१७६६ होमियो चिकित्सा विज्ञान–श्यामसुन्दर ३–५०
१७६७ होमियो टाइफ इड चिकित्सा ०–७५
१७६८ होमियो थाइसिस चिकित्सा ०–७५
१७६९ होमियो निमोनिया चिकित्सा ०–७५
१७७० होमियो पशु चिकित्सा–डा० गंगाधर २–१२
१७७१ होमियो पाकेट गाइड–सुरेश प्रसाद १–००
१७७२ होमियोपैथिक इंजेक्शन गाईड ५–००
१७७३ होमियोपैथिक नुस्खा–श्यामसुन्दर १–५०
१७७४ होमियोपथिक पारिवारिक चिकित्सा ०–९०
१७७५ होमियोपैथिक सारसंग्रह— १–००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१७७६ होमियो पारिवारिक चिकित्सा–भट्टाचार्य	१०–०	
१७७७ धारनिर्माण विज्ञान–हरिशरणानन्द	०–७५	
१७७८ त्रिदोषतत्त्वविमर्श–रामरक्ष पाठक	२–६२	
१७७९ त्रिदोषमीमांसा–ले० हरिशरणानन्द	२–५०	
१७८० त्रिदोषालोक–विश्वनाथ द्विवेदी	२–००	
१७८१ त्रिफला–ले० श्री रमेशवेदी	३–२५	
१७८२ त्रिशतिर्वैद्यक–सं० हिं० टीका	२–५०	

गुण तथा उपयोगी सीरीज––

१७८३ दूध	२–००	१७८६ नीम	१–२५
१७८४ आक	२–५०	१७८७ रीठा	०–८७
१७८५ फिटकरी	२–५०	१७८८ धतूरा	१–१२
१७८९ बबूल	०–८७	१८०१ सत्यानाशा	०–७५
१७९० प्याज	०–७५	१८०२ गडूंबा (इंद्रायण)	५८१४
१७९१ घृत	०–८६	१८०३ सौंफ	१–२५
१७९२ पीपल	०–७५	१८०४ गाजर	०–६२
१७९३ अरण्ड	१–२५	१८०५ दही	२–५०
१७९४ बादाम	०–७५	१८०६ प्लांडु	०–७५
१७९५ बरगद	०–८७	१८०७ हल्दी	०–८७
१७९६ धनिया	०–५०	१८०८ मूली	०–७५
१७९७ मेंहदी	०–७५	१८०९ तरबूज	०–६२
१७९८ पियाबांसा	१–२५	१८१० सन्तरा	०–५०
१७९९ नींबू	०–७५	१८११ सेब	०–५०
१८०० नमक	०–५०	१८१२ सिरस	१–१२
१८१३ काडा	०–७५	१८२५ तुलसी	२–५०
१८१४ तम्बाकू	१–२५	१८२६ शहतूत	१–५०
१८१५ कद्दू	०–६२	१८२७ मट्ठा (छाछ)	०–७
१८१६ त्रिफला	१–५०	१८२८ ढाक अमोल	०–७५
१८१७ अनार	०–६२	१८२९ कटली–स्वर्णक्षीरी	–५
१८१८ लहसुन	०–६२		
१८१९ मधु	२–५०		
१८२० गुलाब–अमो	१–००		
१८२१ घीगवार	२–५०		
१८२२ आम के गुण	१–५०		
१८२३ मिर्च	०–६२		
१८२४ अंगूर	०–७५		

आचार्य विकाशचन्द्र सूरि जी द्वारा प्राप्त जैन पर्व निर्णय

वीर संवत् २४८८-८९ आत्म संवत् ६६-६७ शके १८८४ विक्रम संवत् २०१९

सन् १९६२-६३	तिथि	तारीख
श्रीबुद्धिविजय (बुटेराय) जी म.का स्वर्गदिन और श्री विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी म०का जन्मदिन	चैत्र सु. १ गुरु	ता. ५- ४-६२
" सिद्ध चक्र आंबिल ओली शुरु	चैत्र सु. ७ बुध	ता. ११- ४-६२
" महावीर स्वामी का जन्मदिन (जयंति)	चैत्र सु. १३ भौम	ता. १७- ४-६२
" आंबिल ओली पूर्ण-चैत्रपूर्णिमा-सि. का मेला	चैत्र सु. १५ गुरु	ता. ११- ४-६२
" ऋषभदेव वर्षी तप पारणा	वै. सु. ३ रवि	ता. ६- ५-६२
" विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी स्व.दिन	ज्ये. सु. ८ रवि	ता. १०- ६-६२
" चौमासी अट्ठाइ प्रारम्भ	आषा. सु. ७ सोम	ता. ९- ७-६२
" चौमासी चौदस	आषा. सु. १४ सोम	ता. १६- ७-६२
" चौमासी अट्ठाइ सम्पूर्ण	आषा. सु. १५ भौम	ता. १७- ७-६२
" नेमनाथ भगवान का जन्मदिन	श्राव. सु. ५ रवि	ता. ५- ८-६२
" पर्युषणपर्व अट्ठाइ प्रारंभ	भाद्र व. १३ सोम	ता. २७- ८-६२
" कल्पसूत्र गृह स्थापना रात्रि जागरण	" " १४ बुध	ता. २९- ८-६२
" कल्पसूत्र वांचना प्रारंभ	" " ३० गुरु	ता. ३०- ८-६२
" संवत्सरी पर्व	" सु. ४ सोम	ता. ३- ९-६२
" जगद्गुरु विजयवीर सूरि स्वर्गदिन		
श्री युगवीर आ. श्रीविजय वल्लभ सूरि स्वर्गदिन	आ. व. ११ सोम	ता. २४-९-६२
" सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ	" सु. ६ शुक्र	ता. ५-१०-६२
" सिद्धचक्र आंबिल ओली संपूर्ण	" " १५ शनि	ता. १३-१०-६२
" महावीर प्रभु निर्वाण दिवाली पर्व	का.व. ३० रवि	ता. २८-१०-६२
" गौतम स्वामी केवल ज्ञान–वीर सं० २४८९	" सु. १ सोम	ता. २९-१०-६२
" भाई दूज श्रीविजय वल्लभ सूरि जन्म दिन	" " २ भौम	ता. ३०-१०-६२
" ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	" " ५ शुक्र	ता. २-११-६२
" चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	" " ६ शनि	ता. ३-११-६२
" चौमासी चौदश	" " १४ शनि	ता. १०-११-६२
" चौमासी अट्ठाइ पूर्ण कार्तिक पूर्णिमा " सिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुर का मेला	" " १५ रवि	ता. ११-११-६२
" मौन एकादशी (१५० कल्याणक दिन)	मार्ग.सु. ११ शुक्र	ता. ७-१२-६२
" पौष दशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौ. व. १० शुक्र	ता. २१-१२-६२
" मेरुत्रयोदशी ऋषभदेव मोक्ष दिन	माघवदि १३ बुध	ता. २३- १-६३
" चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	फा. सु. ७ शनि	ता. २- ३-६३
" चौमासी चौदश	" " १४ शनि	ता. ९- ३-६३
" चौमासी अट्ठाइ पूर्ण फाल्गुन का तीर्थ मेला	" " १५ रवि	ता. १०- ३-६३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१००० रुपये नकद इनाम

प्रत्येक कार्य में अवश्य सफलता मिलेगी

सूर्य पूर्व की उपेक्षा पश्चिम से निकल सकता है परन्तु इस यन्त्र का प्रभाव खाली नहीं जा सकता। इस महाकाली यन्त्र से सभी मनोकामनायें अवश्य पूर्ण होती हैं। केवल जेब में रखने से ही जिस स्त्री वा पुरुष को चाहें वश में रख सकते हैं। जिस समय इच्छा करें अपने पास उपस्थित करा सकते हैं। भाग्य जाग उठेगा। मुकद्दमे में जीत होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, धन में वृद्धि होगी, नौकरी शीघ्र मिलेगी, कार्य में उन्नति होगी। विगत आत्माओं से बातचीत होगी। संसार के सब कार्य जिन्हें आप करने की इच्छा रखते हो हमारे इस सन्यासी यन्त्र से पूर्ण हो जायेंगे। विश्वास करें इससे बड़े से बड़े काम भी देखते ही देखते पूर्ण हो जाते हैं। एक यन्त्र का रियायती मूल्य १ रुपया २५ न॰ पै॰ तथा तीन यन्त्रों का तीन रुपये। डाक खर्च अलग। स्पैशल २ रुपये ९४ न॰पै॰।

नोट:—मिथ्या सिद्ध करने वाले को एक हजार रुपया नकद इनाम और मूल्य वापिस दे दिया जायेगा। केवल हमारा यह महाकाली असली यन्त्र है। असली यन्त्र इस पते से मंगाइये।

प्रिन्सिपल शाइनिङ्ग मिस्मरेजम हाउस (MB.-62) जालंधर सिटी ३

६) रुपये में घड़ी

१५ ज्यूल रिस्टवाच गारन्टी पाँच वर्ष केवल ६ रुपये में चेन सिस्टम स्कीम द्वारा प्राप्त करें। डाकखर्च १ रु० २५ नये पैसे अलग।

नोट—यह स्कीम अपने हनीमून सेट के व्योपार की प्रगति के लिये जारी की गई है। स्कीम नापसंद होने पर दाम वापिस।

लन्दन ट्रेडिंग एजेन्सी, वाच सप्लायर्स, (MB.-62) जालन्धर सटी—३

त्रिकालदर्शी करामाता दर्पण

किसी भी उम्र का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है, चोरी गई वस्तु व गुमशुदा का पता, बिमार के स्वस्थ होने या न होने का हाल, आने वाले और गुजरे हुए हालात, भावी दुखों से बचने के उपाय, गड़े धन का पता, किसी मश्किल काम का हल होना या न होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना स्वर्गवासी रिश्तेदारों, मित्रों, शहीदों से मलाकात, जिसे कभी न देखा हो या जिसकी स्वप्न में भी आशा न हो उसे आप इसमें आसानी से देख लेंगे। मूल्य मय परचा तरकीब दो रुपये पचास नये पैसे रु० २.५० न॰प॰। दो दर्पण चार रुपये पचास नये पैसे रु० ४.५० न॰ पै॰ महसूल डाक रु० १.१२ न॰ प॰ अलग।

मैनेजर, शाइनिंग मिस्मरेजम हाउस, (MB.-62) जालंधर शहर—३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जो पूछोगे जवाब मिलेगा

आपके भाग्य में क्या लिखा है ?

यदि आप एक साल के अन्दर पेश आने वाले नेक या बद हालात समय से पहले जानना चाहते हैं तो आज ही एक पोस्ट-कार्ड पर किसी दिल पसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें। बस फिर हम ज्योतिष के हिसाब से आपके आने वाले १२ मास के लाभ हानि, किस व्यापार में फायदा, किस प्रकार रोज-गार मिलेगा, नौकरी, उन्नति, तबदीली, स्त्री व सन्तान का सुख, किसी से नया मेल मिलाप, या किसी प्रकार से धन का मिलना, यानी पोस्टकार्ड की तारीख से लेकर १ साल तक होने वाली कुल बातों के खुलासे का मासिक वर्ष फल बनाकर केवल ३ रुपये २५ न.पै. में वी०पी०द्वारा भेज देंगे डाक खर्च अलग। साथ ही बुरे ग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिखा जायगा। एक बार की परीक्षा से ही आप को पता लग जायगा कि ज्योतिष विद्या में हमें कहां तक ज्ञान प्राप्त है।

पंडित देवदत्त शास्त्री, राजज्योतिषी,

(M.B 62) जालन्धर शहर [पंजाब]

अकेले में बैठकर पढ़ने योग्य गुप्त सचित्र

असली कोकशास्त्र

(रंगीन)

नौजवानों की मन मांगी मुरादें, भेद की बातें, नुस्खे स्त्रियों के फोटो चित्र। अगर अपने जीवन को आनन्द पूर्ण बनाना चाहते हैं और आप यह भी चाहते हैं कि आप को हर वस्तु का आसानी से ज्ञान हो जाए तो आप हमसे यह किताब मंगा लें जो आप को हर चीज से परिचित करा देगी। इसके बाद आपको और किताब की आवश्यकता नहीं रहेगी। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। मूल्य रु० २ ७५ न.पै. डाक खर्च अलग।

परिस्तान के चित्र

इसके अन्दर सुन्दर लड़कियों के चित्र हैं। अगर आपने यह चित्र नहीं देखे तो कुछ भी नहीं देखा। हम इन चित्रों का विस्तृत वर्णन नहीं करना चाहते। इसका अनुमान आपको इन चित्रों का सैट मंगाने पर ही होगा। पूरा सैट ५० चित्र। मूल्य रु० २ डाक खर्च अलग।

इण्डियन चैम्बर आफ साइन्स

(M.B. 62) जालन्धर सिटी ३

त्रिकालदर्शी असली करामाती यंत्रक रूमाल सबसे बढ़िया

यह एक सन्यासी का दिया हुआ चमत्कारी रूमाल है इसे केवल अपनी जेब में रखें, ईश्वर की कृपा से आपके दिल की हर मुराद शीघ्र ही पूरी होगी। जिससे आपको मुहब्बत हो या जिससे शादी की इच्छा हो वह घर बैठे बिठाये आपसे मिलने के लिये तड़पने लगेगा। मन चाही सुन्दर स्त्री मिलेगी। राजसभा में मान, मुकद्दमे में जीत, चोरी का पता, परीक्षा में पास होना, दौलत से मालामाल हो जायेंगे। पहेली में नफा होगा। दुश्मन अधीन होंगे। नौकरी जल्दी मिलेगी। अर्थात् दुनियां के सब मुश्किल काम अवश्य पूरे होंगे। आज़मायश करने पर इसके जौहर खुलेंगे। मूल्य असली रूमाल का एक रुपया चुरानवे नये पैसे रु० १ ९० न.पै. तीन रूमाल ५ रु०। डाक खर्च एक या तीन रूमाल पर १.१२ न.पै. अलग। गलत निकले तो दाम वापिस।

प्रोफेसर, शाइनिंग मिस्मरेजम हाउस

(M.B 62) जालन्धर शहर [पंजाब]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

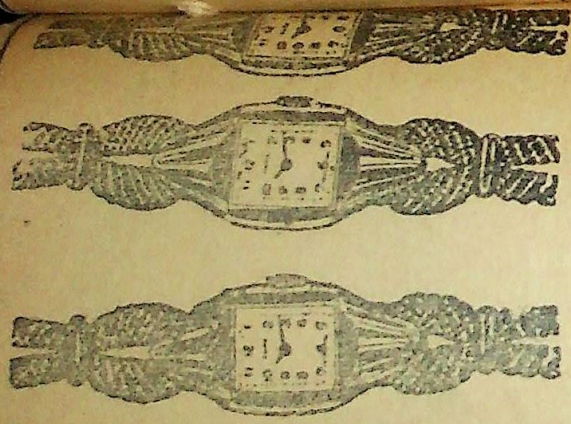

१००० रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

हमारी प्रसिद्ध दवाई "असली जौहर हुस्न" के लगाने से हर जगह के बाल बगैर तकलीफ के दूर हो जाते हैं और फिर उस जगह बाल पैदा नहीं होते। जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और साफ हो जाती है। कीमत प्रति शीशी रु.१.७५ न.पै. डाकखर्च रु.१.१२न पै. अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत पाँच रुपये। इस दवाई को मशहूर करने के लिये हर शीशी के साथ दो अंगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त और दो खूबसूरत म्यूट रिस्टवाच बतौर इनाम मुफ्त भेजी जाती हैं। जल्दी करें और फायदा हासिल करें। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छः म्यूट घड़ियाँ और ६ अंगूठियाँ सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम दी जाती हैं।

★ असली बाल काला तेल न० ५१० सबसे बढ़िया ★

हमारे प्रसिद्ध "बाल काला तेल" नं० ५१० के इस्तेमाल से सफेद बाल काले हो जाते हैं और फिर काले ही पैदा होते हैं। यह बेनज़ीर सन्यासी तोहफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह से न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है। बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है, गंजापन दूर करता है। आँखों और दिमाग को ताकत देता है। याद-दाश्त बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ रु० १.७५ न.पै. एक रुपया पच्छत्तर नये पैसे, डाक खर्च रु० १.१२ न.पै. अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत रु० ५) पाँच रुपया, इस तेल को मशहूर करने के लिये हर एक शीशी के साथ दो फैन्सी म्यूट रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसंद न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है, तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छः म्यूट घड़ियाँ और छः अँगूठियाँ सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम, जल्दी करिये वर्ना ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा।

★ काले गोरे हो गए ★

यदि आप अपने चेहरे या शरीर का रंग काले से गोरा करना चाहते हैं और मुख के बदनुमा दाग, कील, छाइयाँ, झुरियाँ, बदरौनकी, खुश्की आदि को दूर करके चेहरा गुलाब की तरह मुलायम चमकदार खूबसूरत बनाना चाहते हैं, तो हमारा तैयार किया हुआ **"लण्डन ब्यूटी लोशन"** इस्तेमाल करें। इससे आपके जिसम या चेहरे का रंग काले से गोरा हो जायेगा। यह लोशन स्त्रियों और पुरुषों सबको खुश करने वाला तोहफा है। कीमत प्रति शीशी रु० १.९४ न.पै. एक रुपया चुरानवे नये पैसे है। तीन शीशी की कीमत रु० ५। डाक खर्च एक से तीन शीशी तक १.१२ न.पै. अलग। इस दवा को मशहूर करने के लिय एक शीशी के साथ दो फैन्सी म्यूट रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसन्द न हो तो दाम वापिस किया जाता है। जल्दी करें वर्ना ऐसा अवसर हाथ न आवेगा।

मैनेजर, लराडन ट्रेडिंग एजेन्सी (M. B. 62) जालन्धर सिटी–३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०००) रुपये नकद इनाम

जो मांगोगे वही मिलेगा

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तान्त्रिक अँगूठी को पहनने से दिल में आप जिस स्त्री या पुरुष का नाम लेंगे, वह देखते ही देखते फौरन वश में हो जायगा, चाहे कितना पत्थर दिल क्यों न हो सात समुँद्र फाँद, सात ताले तोड़, आपके कदमों में हाज़िर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, मुर्दा रूहों से बात-चीत होगी, ज़मीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्योपार में लाभ होगा, दुष्ट ग्रह शान्त होंगे। बद-किस्मती दूर होगी, खुश-किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

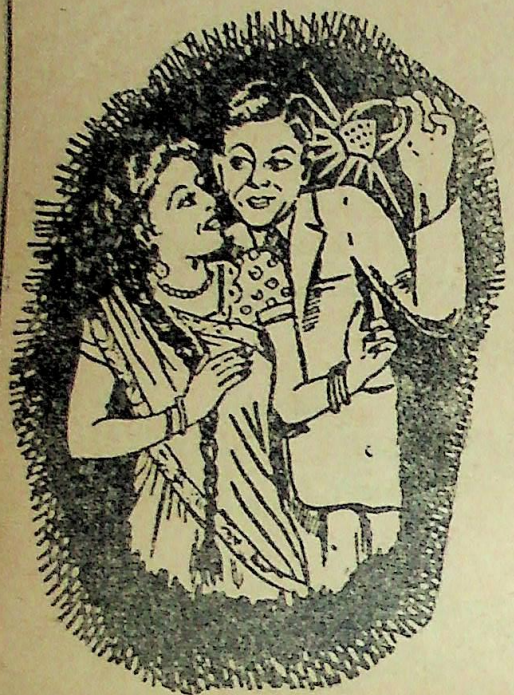

तान्त्रिक अंगूठी रु० १-९४ न. पै. स्पेशल पावरफुल रु० ३-९४ न. पै. तीन रुपये चुरानवे नये पैसे, जिसका २४ घण्टों में फौरन असर होता है। यह तान्त्रिक अँगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के वजाय पश्चिम से उदय हो सकता है लेकिन इस तान्त्रिक अँगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत वापस की गारण्टी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००) नकद इनाम। श्री राम प्रसाद जी इटावा से तथा श्री मोहन लाल जी काशीपुर से लिखते हैं कि राज ज्योतिषी पंडित देवदत्त शास्त्री, तांत्रिकाचार्य, जालन्धर सिटी से मँगवाई हुई तांत्रिक अँगूठी से हमारे कार्य सिद्ध हुए जो बेशुमार कोशिशों से नहीं हो सके थे। ऐसे बहुत से प्रशंसा पत्र प्रतिदिन डाक द्वारा प्राप्त होते रहते हैं और सैकड़ों सर्टीफिकेट मौजूद हैं। एक बार जरूर आज़मायश करें।

राज ज्योतिषी पं० देवदत्त शास्त्री तान्त्रिकाचार्य [M.B. 62] जालंधर सिटी-३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

पांच नये पैसे

आप को अपने स्वास्थ्य की, अपनी शरीरिक अवस्था की या अपनी किसी बीमारी की चिन्ता सता रही है ? आप को, आप के परिवार में या आपके किसी सम्बन्धी को कोई ऐसी शिकायत है जिसे आप किसी से कहते शरमाते और झिझकते हैं ? कोई ऐसा रोग, समस्या या जटिल विकार है जिस का आप इलाज कराना चाहते हैं तो इस का एक ही उपाय है-बिना खर्च का उपाय । आप एक लिफाफा में या पांच नये पैसे के पोस्ट कार्ड पर ही बीमारी के लक्षण रोगी की उमर और दशा लिख कर हमारे पास भेज दें । हमारे चिकित्सा विभाग से आप को मुफ्त सलाह दी जायेगी कि ऐसी हालत में आप को क्या करना चाहिये, क्या दबाये लेना ठीक होगी और क्या पथ्य-परहेज करना होगा । पत्र व्यवहार गुप्त रखा जाता है इस लिये जो कुछ भी हो साफ साफ लिखें ।

हमारे यहां स्त्री पुरुषों की अनेक शिकायतों का इलाज, शक्ति व स्वास्थ्य वर्धक नुस्खे, शरीर के प्रत्येक रोग की विश्वसनीय तथा परीक्षित औषधियां बालों के कई प्रकार के तेल, सौन्दर्य वर्धक पदार्थ तथा अन्य रस, रसायन व दवाइयों का निर्माण होता है । स्त्रियों के लिये हमारी औषधि 'स्त्री कल्याण' तो आज सर्व-प्रसिद्ध है । केवल इस एक औषधि की वार्षिक बिक्री एक लाख रुपये से ऊपर है अब आप स्वयं अनुमान लगा लें कि हमारी दूसरी औषधियां कितनी लाभप्रद व अनुपम होंगी । इस लिये जो बहिन या भाई बीमारी के लक्षण लिखते समय हमें दवा भेजने के लिये भी कहते हैं । उन्हें उचित औषधि उचित दामों में वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दी जाती है ।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

चार नवीन पुस्तकें

यदि आप को उच्च कोटि की सुन्दर पुस्तकें पढ़ना हैं और अपने दामों का सही उपयोग चाहते हैं तो निम्नलिखित पुस्तकें वी-पी द्वारा मंगा लें । हर पुस्तक के साथ यह गारन्टी है कि यदि पसन्द न आवे तो मूल्य वापिस ।

पति पत्नि निर्देशिका:— यह कोई बाजारी अश्लील पुस्तक नहीं, और न ही कोकशास्त्र जैसा गंदा साहित्य है बल्कि दो अमेरीकन डाक्टरों द्वारा लिखित पति पत्नि सम्बंध तथा उनके जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं पर रोचक पुस्तक है । इसमें आप को विवाह, यौन, गुप्त अंग एवं उन के कार्य, पति पत्नि के गोपनीय विषय, आसन, सन्तान उत्पत्ति, वर्थकन्ट्रोल, गृहप्रबन्ध आदि सभी विषयों पर पूर्ण उल्लेख मिलेगा । इस पुस्तक में हर वह बात है जिस को जानने के लिये युवक और युवतियां इच्छुक हैं । मूल्य ५ रुपये ।

आयुर्वेद चिकित्सा सागर:—भारत विख्यात प्रेम प्यारी अग्रवाल कार्यालय के डाक्टर रमेश द्वारा लिखित यह पुस्तक जनसाधारण और वैद्य हकीमों के लिये बड़े काम की वस्तु है । इस में शरीर के हर रोग का पूरा वर्णन और सरल व सफल औषधि विज्ञान है । घरेलू इलाज के लिये यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है । मूल्य ४ रुपये ५० नये पैसे ।

परिवार नियोजन:—दो तीन बच्चों का होना ही वास्तव में विवाहित जीवन का लक्ष्य है यदि आप अधिक सन्तानोत्पत्ति को रोकना चाहते हैं या अपनी इच्छानुसार गर्भाधान चाहते हैं तो यह पुस्तक पढ़ लें । इसमें कुछ ऐसे नुस्खे व उपाय हैं जिन के आधार पर आप बिना किसी कठिनाई के घर पर ही वर्थकन्ट्रोल कर सकते हैं । मूल्य ३ रुपये ।

नव युवक और स्वप्न:— स्वप्नदोष की बीमारी ने आज कल के बहुत से नव युवकों को परेशान कर रखा है । यदि इस बीमारी का तुरन्त इलाज न किया जावे तो आगे चल कर स्वास्थ्य को असीम हानि पहुंचती है । इस पुस्तक में स्वप्नदोष की बीमारी का अपूर्व इलाज दिया गया है और ऐसे सुझाव भी लिखे हैं जिन से रोगी बिना किसी औषधि के ही इस रोग से मुक्त हो सकता है । मूल्य २ रुपये ५० नये पैसे ।

राज कमल पुस्तक मंदिर, बुढलाडा (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

◎ खून साफ करने की अनुपम दवा

आनन्द सालसा

मनुष्य तभी तक स्वस्थ रहता है, जब तक उस का रक्त शुद्ध रहता है। रक्त के बिगड़ते ही अनेक रोग-खाज खुजली, फोड़े-फुन्सी चमला घेर लेते हैं। रक्त में ज्यादा खराबी आने से कुष्ट हो जाता है। इसलिये रक्त शुद्धि की ओर प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को ध्यान रखना चाहिये। रक्त शुद्धि के लिये हमारा 'आनन्द सालसा' बड़ा उपयोगी है। इस के सेवन से रक्त शुद्ध हो जाता है और चर्म रोग दूर हो जाते हैं। अनेक बार की परीक्षित और स्वदेशी बूटियों से बनी अनोखी दवा है। मूल्य ५ रुपये।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

खांसी की अनुपम दवा

कासनी:-खाँसी चाहे नई है या पुरानी खुश्क है अथवा बलगम आती है। काली खाँसी है या कोई और। कासनी का प्रयोग आप चाहे जैसी खाँसी पर कर सकते हैं। पहिले दिन से ही लाभ होने लगेगा और थोड़े ही दिनों में हर तरह की खाँसी, गले की खराबी, कफ आदि दूर हो कर स्वास्थ्य ठीक हो जावेगा। मूल्य एक शीशी ४ रुपये।

सन्यासी मलहम

एक दवा अनेक गुण। इस की मालिश करने से सिर दर्द, सूजन, साँधों में दर्द होना, चोट लगने से रक्त जम जाना, अग्नि, तेल, घी अथवा तेजाब से जलना, शूल, वायु का दर्द, जहरी जन्तु का काटना आदि दर्द दूर होते हैं। मूल्य एक शीशी ४ रुपये।

सन्यासी नसवार

यह बहुत खशबू वाली है और बाज़ारी नसवारों से कहीं अच्छी है। इस के सूंघने से सिर दर्द, नज़ला, जुकाम, सिर भारी रहना, चक्कर आदि रोग दूर हो कर चित्त प्रसन्न हो जाता है और खराब पानी निकल कर सिर हल्का हो जाता है। मूल्य एक शीशी ३ रुपये

◎ गैस और पेट के रोगों में

-: नव रतन :-

समय पर भोजन न करने से, ठीक अनुपान न होने से, बाजारी पदार्थ खाने से हाजमा बिगड़ता है। पेट में गड़बड़ होती है, सिर भारी सा हो जाता है, काम में ध्यान नहीं लगता, बेचैनी रहती है, कब्ज या दस्त लगते हैं। ऐसे रोगों के लिये हमारे यहां एक अत्यन्त गुणकारी आयुर्वेदिक औषधि 'नव रतन' तैयार हुई है जो कि कई वर्षों से प्रसिद्ध और अनेक रोगियों पर परीक्षित है। इस औषधि के सेवन से गैस पैदा होना, गैस चढ़ना, अपचन, पेट में जलन सी रहना अम्लता, शूल, दर्द, पेट फूलना, भोजन के बाद पेट का भारीपन, भूख न लगना आदि दूर हो कर शौच साफ आकर भूख खूब लगती है। पैदा हुई गैस, बादी, वायु को बाहिर निकालती है। पाखाना साफ आता है, खाया हुआ पचाती है। रुधिर बढ़ा कर शरीर को शक्ति देती है और स्वास्थ्य को बढ़ाती है। मूल्य एक शीशी ५ रुपये

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

◎ बच्चों के लिये अनुपम औषधि

-: बच्चा बच्ची :-

इस के सेवन से बालकों की पाचन शक्ति बढ़ती है शरीर पुष्ट हो जाता है। बच्चों की क्षीणता (सूखा रोग) जिससे वे दिन प्रतिदिन दुबले होते जाते हैं, जल्दी दूर हो जाती है। क्षीणता के कारण बच्चे पनपते नहीं उन्हें अपचन बना रहता है। दूध पीते हैं और उल्ट देते हैं। कब्जियत बनी रहती है। दस्त गाढ़ा, हरा, पीला या पतला होता है। हाथ पैर पतले पड़ जाते हैं। दुर्बलता बढ़ जाती है, दांत बड़े दर्द से निकलते हैं, जरा सी ठण्ड से खांसी, कफ, सरदी, बुखार हो जाता है। इन सब लक्षणों में 'बच्चा बच्ची' लाभ करती है। मीठी और स्वादु होने के कारण बालक इस अमृत तुल्य औषधि को बड़े चाव से लेते हैं। मूल्य ३ रुपये ७५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चार प्रकार के तेल

याद रखिये कि निम्नलिखित कोई साधारण, सस्ते, बाजारी तेल नहीं जो त्वचा को हानि दें। बल्कि १०० % शुद्ध जड़ी बूटियों और बहुमूल्य पदार्थों से निर्मित ऐसे तेल हैं, जिन का प्रभाव स्थायी व वास्तविक है। परीक्षा करें।

केश विन्यास—गंज, बाल झड़, सीकरी की अपूर्व चिकित्सा! दवाई की दवाई और सुगन्धित तेल! बालों को लम्बे, घने और सुन्दर बनाने के लिये अति उत्तम। मूल्य एक शीशी ५ रुपये २५ नये पैसे।

केश कल्प— बाल काला तेल! बाल चाहे नज़ला, जुकाम कमजोरी से सफेद हुए हैं या किसी अन्य कारण से – बस इस के लगाने से सफेद बाल प्राकृतिक रूप में काले होने लगते हैं और धीरे धीरे सभी बाल काले हो जाते हैं। मूल्य एक शीशी ५ रुपये।

कपोल विलास— एक प्रकार की क्रीम! चेहरे की कुरूपता, मुहांसे, कील, छाइयां, दाग और धब्बे दूर करने के लिये अति अपूर्व है। काले रंग को निखार कर आकृति को कोमल व सुन्दर बनाता है। सौन्दर्य बढ़ाने के लिये यह बहुत ही उपयोगी है। मूल्य एक शीशी ४ रुपये ७५ नये पैसे।

रूप चर्या— बाल सफा पदार्थ! स्त्रियों के लिये विशेष उपयोगी। बेकार और गन्दे बालों को दो मिन्ट में ही दूर करके त्वचा को साफ व कोमल बनाता है। मूल्य ४ रुपये २५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

-: मुफ्त :-

इस पृष्ठ पर तथा आगामी ७ पृष्ठों पर भारत विख्यात प्रेम प्यारी अग्रवाल, बुढलाडा की प्रसिद्ध व अनेक बार की परीक्षत औषधियों का वर्णन किया गया है इनमें रोगी के लिये अपने रोग की औषधि निश्चित कर लेना कठिन नहीं है फिर भी यदि कोई भाई या बहिन अपनी औषधि स्वयं निश्चित न कर सके या किसी ऐसे रोग का इलाज कराना चाहे जिस का वर्णन इस सूचीपत्र में नहीं है तो उसे चाहिये कि वह अपने रोग या समस्या का पूरा हाल लिख कर हमें भेज दे। हम उनकी सेवा में उचित औषधि उचित दामों में तैयार करके भेज देंगे।

हमारे यहां यह भी नियम है कि जो व्यक्ति हम से एक साथ या ६ मास के अन्दर अन्दर १०० रुपये की औषधियां मंगाता है, उसे एक अत्यन्त सुन्दर ठीक समय देने वाली, गारन्टी पांच साल तस्वीर जैसी हाथ घड़ी या एक टाईमपीस तथा उस के साथ एक बैटरी, एक पैन, एक धूप का चश्मा और एक सैफटी रेज़र कमीशन के रूप में मुफ्त भेंट किया जाता है यदि आप भी इस योजना से लाभ उठाना चाहें तो इस पंचांग में से पढ़ कर हमारी किसी औषधि का आर्डर दें। आर्डर आने पर हम आपका नाम अपनी इनामी लिस्ट में दर्ज दर लेंगे और फिर जब आप १०० रुपये का आर्डर ६ मास में पूरा कर देंगे अपर्युक्त तो सभी इनाम आप को मुफ्त भेजे जायेंगे। दवा चाहे आप अपने नाम से मंगायें या अपने किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर इनाम हर हालत में आप ही को मिलेगा।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कान की दवा

कनकनी:- यह एक प्रकार का तेल है। इस की कुछ बूंदें कान में डालने से कानों के कई रोग जैसे कि कान का बहना, मवाद का निकलना, कानों का भारीपन, मैल और इसी कारण कम सुनाई देना आदि को लाभ होता है। अवश्यकता के समय एक दो बूंद डालने से कान के दर्द को तत्काल आराम मिलता है। कान रोगों की यह उत्तम औषधि है। कीमत एक शीशी ४ रुपये।

पान की गोली

पान कुसमाकर:- पान(ताम्बूल)ही एक ऐसी वस्तु है जिस में चित प्रसन्न करने तथा रक्त को बढ़ाने के गुण हैं। यदि पान में एक गोली 'पान कुसमाकर' भी रख ली जाये तो मुख शीतल व सुगन्धि से भरपूर हो जाता है। यह मुख की दुर्गन्धि को दूर करके चित को प्रसन्न रखता है। दुकानदार व पान के शौकीन इस मसाले का अवश्य उपयोग करें। मूल्य एक शीशी ३ रुपये।

फूलों का इतर

ओटो पुष्प बहार:- यह इतर अनेक प्रकार के ताजे पुष्पों के सार से तैयार होता है। इस की सुगन्ध बहुत मन प्रिय, मन मोहक और मधुरिम है। इस सेन्ट की दो चार बून्दें रुमाल में लगाने से काफी समय तक खशबू नहीं जाती। सच तो यह है कि ओटो पुष्प बहार सेन्टों का उपवन है - जिसे शौकीन मजाज़ वालों को अवश्य मंगाना चाहिये। मूल्य एक शीशी ३ रुपये।

गले की खराबी

कंठ पपीहा:- सिगरिट ज्यादा पीने से, अधिक बोलते या गाते रहने से, अशुद्ध भोजन से गला खराब हो जाता है। आवाज फटने लग जाती है। गले में जलन, दर्द व खरराहट सी होती है। 'कंठ पपीहा' गले की इन खराबियों को दूर करके आवाज को मीठी व प्राकृतिक बनाता है। संगीत प्रेमी, रमायन गीता के पाठकों को इस का सेवन करना चाहिये। मूल्य एक शीशी ४ रुपये।

◎ मधु प्रमेह की बिमारी

नव अमृत

पेशाब में चीनी (शक्कर) आने को मधु प्रमेह कहते हैं। इस रोग में मूत्र गाढ़ा और कुछ मिला हुआ सा आता है और बार २ आने लगता है। पेशाब करने के स्थान पर सफेदी सी जम जाती है। इस बिमारी का यदि आरम्भ में ही ईलाज न किया जावे तो बाद में इस की चकित्सा कठिन ही होती है तथा फिर इस रोग के कारण कई प्रकार की शिकायतें जैसे कि पीठ में दर्द, रग पठ्ठों व जोड़ों में अकड़न, जलन और टांगों में दर्द हो सकती हैं। शरीर में शक्ति व स्फुर्ती कम हो जाती है और नींद भी कम आने लगती है। मधु प्रमेह के इस रोग के लिये तथा इस से उत्पन्न होने वाली अन्य शारीरिक शिकायतों के लिये हमारे यहां 'नव अमृत' नाम की एक औषधि तैयार हुई है जोकि कई बार की परीक्षित और विश्वासनीय है। मूल्य एक शीशी ७ रुपये ७५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

◎ दिमागी शक्ति बढ़ाने वाली

ब्रह्मी रसायण

यह दवा ऐसे व्यक्तियों के लिये है जो बहुत दिमागी काम या पढ़ाई करते हैं और जिन्हें ऐसा लगता है कि उन्हें कुछ याद नहीं रहता, दिमाग थका २ सा रहता है। मानसिक कमजोरी का अनुभव करते हैं और जिन्हें थोड़ी सी सोच विचार से सर में दर्द होने लगता है। प्राय नज़ला, जुकाम और सिर दर्द की शिकायत बनी रहती है दिमाग व सिर भारी २ प्रतीत होता है। ऐसे व्यक्ति यदि 'ब्रह्मी रसायण' का प्रयोग करें तो उन्हें अनुपम लाभ हो सकता है क्योंकि इस दवा में कुछ ऐसे बहुमूल्य पदार्थ व जड़ी बूटियां मिलाई गई हैं जो मानसिक निर्बलता को दूर करके दिमागी शक्ति को बढ़ाने के गुण रखती हैं। लेखक, अध्यापक तथा विद्यार्थी प्राय हम से यह दवा मंगाते रहते हैं और उन्हों ने इस दवा की प्रशंसा की है और इसे सराहा है। मूल्य एक शीशी ५ रुपये २५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जीवन का आनन्द

दो तीन बच्चों का होना ही वास्तव में विवाहित जीवन का लक्ष्य है। अधिक सन्तान होने से स्त्री की सेहत बिगड़ जाती है। उसे कई प्रकार के रोग लग जाते हैं। आर्थिक कठिनाइयां बढ़ती है और जब ठीक रूप में बच्चों की देखभाल नहीं हो सकती तो मन को बहुत कष्ट होता है। इस लिये यदि आप के पास दो तीन बच्चे हैं या आप बिमारी, कमज़ोरी, आर्थिक समस्या अथवा किसी अन्य कारण-वश आगे के लिये या कुछ समय के लिये सन्तान उत्पत्ति को रोकना चाहते हैं तो आप हमसे पत्र व्यवहार करें और लिखें कि आप क्यों और कितने समय के लिये सन्तान का होना बन्द करना चाहते हैं। हमारे मशवरा और सुझाव से आप की यह समस्या हल हो जावेगी। मशवरा की कोई फीस नहीं ली जाती।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

ताकत की कमी

रोग तथा बिमारियाँ

निर्बलता व कमज़ोरी

नवजीवनकल्पा

यदि आप कमज़ोर हैं। दिल धड़कता, सर चकराता, आंखों के आगे अन्धेरा सा आता है, काम काज में दिल नहीं लगता। चेहरा सुस्त, मन मलीन, आकृति उदास, शरीर थका २ सा रहता है। आन्तरिक बल, शारीरिक व स्मरण शक्ति कम हो गई है और आप अपने को कमज़ोर, निर्जीव व थका मांदा अनुभव करते हैं। तो आज ही एक कोर्स 'नव जीवन कल्पा' का मंगा कर सेवन करें। जिस प्रकार स्त्रियों के लिये हमारी औषधि 'स्त्री कल्याण' लाभदायक है उसी प्रकार पुरुषों के स्वास्थ्य, शक्ति और आरोग्य के लिये 'नव जीवन कल्पा' एक प्रकार का अमृत है। बहुमूल्य जड़ी बूटियों, सोना, चान्दी, लोह भस्म, शिलाजीत, बंसलोचन आदि उत्तम पदार्थों से निर्मित इस औषधि का प्रभाव स्थाई, स्वभाविक तथा वास्तविक है। यह एक गुणकारी, आयुर्वैदिक दवा है। इसके सेवन से अशक्ति, निर्बलता, शरीर का दुबलापन, वज़न घट जाना, प्रमेह, धातु क्षीणता, खून की कमी, उत्साह और स्फूर्ति का अभाव आदि विकार मिट कर शरीर पुष्ट, शक्ति सम्पन्न और कान्तिमय हो जाता है। ताजा व शुद्ध खून पैदा होता है। वज़न बढ़ता है, भूख खूब लगती है। पेट के प्रायः कई रोग, शारीरिक एवं स्नायु सम्बन्धी कमज़ोरी दूर होकर ग्रन्थियों और नाड़ियों को ताकत मिलती है। स्फूर्ति का निर्माण होता है और शरीर निरोग व शक्तिशाली बना रहता है। मूल्य १५ दिन की दवा ४ रुपये, पूरा कोर्स दो मास के लिये १० रुपये।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

◎ दमा ◎ श्वास ◎ खांसी

ऐन्टी अस्थमा

यह दवा दमा, श्वास रोग में बहुत गुणकारी है। रोगी को बलगम आती है या खांसते २ हांपनी चढ़ती है और इसी तकलीफ के मारे नींद भी कम आती है। तो रोगी को चाहिये कि यह दवा अवश्य प्रयोग में लाये यह औषधि दमा की बिमारी में लाभ करने के लिये बहुत गुण रखती है। इस दवा के सेवन से न केवल दमा के रोगी को आराम मिलता है बल्कि उस की पाचन शक्ति बढ़ जाती है और वह खाया पीया हज़म करता है जिस से उसकी सेहत बढ़ती है। दमा श्वास रोग के अतिरिक्त यह पुरानी खांसी, काली खांसी, कफ, गले की खराबी, नज़ला और जुकाम में भी लाभप्रद है। मूल्य 'ऐन्टी अस्थमा' एक शीशी ६ रुपये २५ नये पैसे।

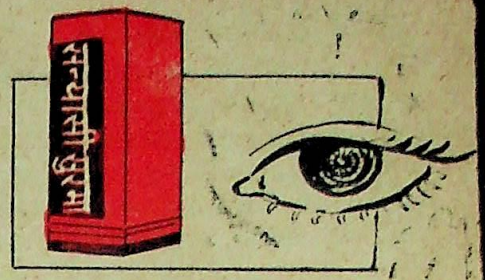

सन्यासी सुरमा

यह सुरमा असली गुलाब, मोती, समीरा और भीमसेनी कपूर से उत्तम जड़ी बूटियों के अर्क में बना है। आंखों में जलन, पानी बहना लाली, धुंधलापन, सूजन, रोहे आदि अनेक नेत्र रोगों पर लाभदायक है। आंखों की रोशनी बढाता है। मूल्य ३ रुपये ७५ नये पैसे।

◎ बवासीर के लिये

ऐन्टी पाईल्ज़

बवासीर बड़ा भयानक रोग है। इस में गुदा के अन्दर या बाहिर मस्से हो जाते हैं - जिन के कारण शौच के समय बहुत तकलीफ होती है। खून पड़ता है। यह दो प्रकार की होती है। खूनी व बादी! परन्तु कैसी भी हो, हमारी 'ऐन्टी पाईल्ज़' इस रोग में बहुत लाभप्रद है। इस के सेवन से पुरानी से पुरानी खूनी-बादी बवासीर में फायदा होता है। पहिले ही दिन से अपना असर दिखाने लगती है। मूल्य एक शीशी ४ रुपये ७५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

◎ सफेद दाग का ईलाज

सन्यासी बुटी

फुलबहरी (सफेद दाग) भी बड़ी खराब बिमारी है यह एक चर्म रोग है जिस से कि शरीर में सफेद दाग या चकते पड़ जाते हैं। यह शरीर के किसी भी भाग पर हो सकती है। इससे मनुष्य कुरूप दिखने लगता है। हमारी 'सन्यासी बूटी' के कुछ ही दिनों के सेवन से बहुत लाभ होता है। सफेदी का रंग बदल कर असली त्वचा का रंग होने लगता है। खुजलाहट और कनकनी भी नष्ट हो जाती है। मूल्य ५ रुपये।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

सन्यासी मंजन

इसके प्रयोग से दांतों की मैल, मसूड़ों से रक्त बहना, मसूड़े फूलना, दांतों में दर्द व टीस, मवाद निकलना, मुख से बदबू आना आदि विकार दूर हो कर दांत साफ, चमकीले और मज़बूत बनते हैं। मूल्य १ शीशी ३ रुपये

सन्यासी चूर्ण

यह नवीन रीति से बनाया गया है। बड़ा मज़ेदार और स्वादिष्ट है। थोड़ा सा चखने से मन प्रसन्न होता है, भूख अच्छी तरह लगती है। पाचन शक्ति बढाता है। पेट के रोगों में बहुत गुणकारी है। मूल्य २ रुपये ७५ नये पैसे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

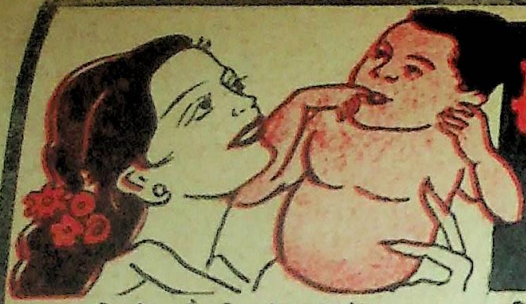

सन्तान दाता

किसी औषधि के बारे में यह कहना कि इस के सेवन से अवश्य सन्तान पैदा होगी, एक व्यर्थ सी बात है। सन्तान उत्पति या तो भाग्य की बात है और या पति, पत्नि की स्वास्थ्य दशा पर निर्भर है। परन्तु यदि पति व पत्नि स्वस्थ हैं उन्हें कोई रोग नहीं तो फिर आयुर्वैदिक ग्रन्थों के अनुसार कुछ ऐसे नुस्खे हैं जो सन्तान उत्पत्ति में सहायक हो सकते हैं। हमारी 'सन्तान दाता, भी ऐसे ही अनुपम नुस्खे से निर्मित एक गुणकारी दवा है जिसके सेवन से कई स्त्रियों के सन्तान पैदा हुई है और उन के पत्र कार्यालय में मौ-द है। यदि आप को भी सन्तान की इच्छा है तो स्त्री को इस दवा का सेवन करा दें। सम्भव है कि आप की निराशा भी आशा में बदल जाये! मूल्य एक शीशी ७ रुपये ७५ नये पैसे।

गर्भ रक्षक

यह दवा ऐसी स्त्रियों के लिये है जिनका गर्भ स्थिर नहीं रहता उन्हें गर्भ तो ठहरता है परन्तु कमजोरी, निर्बलता के कारण नौ मास पूरे होने से पहिले ही खन्डित हो जाता है और यदि बच्चा भी उत्पन्न होता है तो वह बहुत कमजोर जोकि प्राय जीवित नहीं रहता यह दवा गर्भ के दिनों में गर्भ को पुष्ट करती है और स्त्री का स्वास्थ्य बनाये रखती है। गर्भ के दिनों में जिन स्त्रियों का जी मचलाता रहता है और अनेक प्रकार की शिकायतें पैदा हो जाती हैं उन के लिये भी यह दवा गुणकारी है। मूल्य ५ रुपये ७५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

◎ मोटापा कम करने के लिये

-: काया कल्प :-

बेफिकरी, हर समय बैठने से, अधिक आराम या काम काज न करने के कारण बहुत से स्त्री पुरुषों में मोटापा आ जाता है शरीर में चरबी बढ़ जाती है और जिस्म भद्दा प्रतीत होता है थोड़ी ही दूर चलने से सांस फूल जाती है और उस व्यक्ति को अपने शरीर से घृणा सी होने लगती है। कई वर्ष की मेहनत और अनेक जड़ी बूटियों के मिश्रण से हमने मोटापन के लिये एक औषधि 'काया कल्प' तैयार की है। यह औषधि मोटापन कम करने में बहुत सहायक है। इस के सेवन से वज़न कम होने लगेगा और स्वास्थ्य में आकर्षण पैदा होकर शरीर सुन्दर दिखाई देता है। मूल्य ४ रुपये ७५ नये पैसे।

नज़ला जुकाम पर दवा

नज़लीनाः- नजला जुकाम भी एक रोग है जो कई व्यक्तियों को सदा ही सताये रखता है इस के कारण सिर भारी २ रहता है, दिमाग कमजोर होता है, छींकें आती हैं, सिर दर्द रहता है। ठीक इलाज न होने पर दलगम, खाँसी, दमा की शिकायत भी हो सकती है। 'नजलीना' नये व पुराने तथा बिगड़े हुये नजला, जुकाम की शिकायत को फायदा करके मानसिक शक्ति को बढाता है और ऐसे रोगियों को स्वस्थ बनाता है। मूल्य एक शीशी ५ रुपये।

दर्द, वात रोग नाशक

विष्णु तैलः-दर्दों और वात रोगों के लिये यह अति उत्तम तैल है इस के मलने से वातज दर्द कमर का दर्द, पेट का दर्द, छाती और पसली का दर्द, हाथ पैरों का दर्द, घुटनों का दर्द सूजन और सन्निपात आदि रोग दूर हो जाते हैं। अनेक औषधियों से निर्मित वात रोगियों के लिये यह उत्तम दवा है। मूल्य एक शीशी ५ रुपये।

चर्म रोगों की दवा

खारशोः- त्वचा में अनेक प्रकार के कीटाणु होने के कारण जिस्म पर कुष्ट, एक्जिमा, खारिश, खुजली, दाद और फोड़े-फुन्सियाँ हो सकते हैं। हमारा यह तेल त्वचा के उन रोगों के लिये बहुत ही उत्तम है। इसके लगाने से एक्जिमा, कुष्ट, दाद, खारिश और फोड़े फुन्सियाँ भयानक चर्म रोग दूर हो जाते हैं बहुत बार की परीक्षित अनुपम औषधि है मूल्य एक शीशी ४ रुपये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

◎ दमा ◎ श्वास ◎ खांसी

ऐन्टी अस्थमा

यह दवा दमा, श्वास रोग में बहुत गुणकारी है। रोगी को बलगम आती है या खांसते २ हांपनी चढ़ती है और इसी तकलीफ के मारे नींद भी कम आती है। तो रोगी को चाहिये कि यह दवा अवश्य प्रयोग में लाये यह औषधि दमा की बिमारी में लाभ करने के लिये बहुत गुण रखती है। इस दवा के सेवन से न केवल दमा के रोगी को आराम मिलता है बल्कि उस की पाचन शक्ति बढ़ जाती है और वह खाया पीया हज़म करता है जिस से उसकी सेहत बढ़ती है। दमा श्वास रोग के अतिरिक्त यह पुरानी खांसी, काली खांसी, कफ, गले की खराबी, नज़ला और जुकाम में भी लाभप्रद है। मूल्य 'ऐन्टी अस्थमा' एक शीशी ६ रुपये २५ नये पैसे।

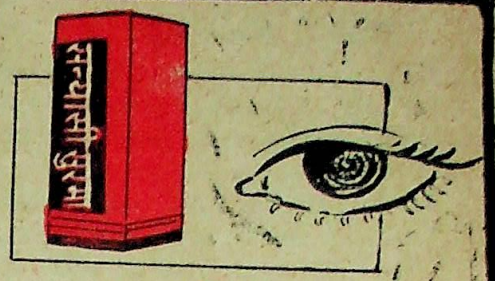

सन्यासी सुरमा

यह सुरमा असली गुलाब, मोती, समीरा और भीमसेनी कपूर से उत्तम जड़ी बूटियों के अर्क में बना है। आंखों में जलन, पानी बहना लाली, धुंधलापन, सूजन, रोहे आदि अनेक नेत्र रोगों पर लाभदायक है। आंखों की रोशनी बढाता है। मूल्य ३ रुपये ७५ नये पैसे।

◎ बवासीर के लिये

ऐन्टी पाईल्ज़

बवासीर बड़ा भयानक रोग है। इस में गुदा के अन्दर या बाहिर मस्से हो जाते हैं - जिन के कारण शौच के समय बहुत तकलीफ होती है। खून पड़ता है। यह दो प्रकार की होती है। खूनी व बादी ! परन्तु कैसी भी हो, हमारी 'ऐन्टी पाईल्ज़' इस रोग में बहुत लाभप्रद है। इस के सेवन से पुरानी से पुरानी खूनी-बादी बवासीर में फायदा होता है। पहिले ही दिन से अपना असर दिखाने लगती है। मूल्य एक शीशी ४ रुपये ७५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

◎ सफेद दाग का ईलाज

सन्यासी बुटी

फुलबहरी (सफेद दाग) भी बड़ी खराब बिमारी है यह एक चर्म रोग है जिस से कि शरीर में सफेद दाग या चकते पड़ जाते हैं। यह शरीर के किसी भी भाग पर हो सकती है। इससे मनुष्य कुरूप दिखने लगता है। हमारी 'सन्यासी बूटी' के कुछ ही दिनों के सेवन से बहुत लाभ होता है। सफेदी का रंग बदल कर असली त्वचा का रंग होने लगता है। खुजलाहट और कनकनी भी नष्ट हो जाती है। मूल्य ५ रुपये।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

सन्यासी मंजन

इसके प्रयोग से दांतों की मैल, मसूड़ों से रक्त बहना, मसूड़े फूलना, दांतों में दर्द व टीस, मवाद निकलना, मुख से बदबू आना आदि विकार दूर हो कर दांत साफ, चमकीले और मज़बूत बनते हैं। मूल्य १ शीशी ३ रुपये

सन्यासी चूर्ण

यह नवीन रीति से बनाया गया है। बड़ा मज़ेदार और स्वादिष्ट है। थोड़ा सा चखने से मन प्रसन्न होता है, भूख अच्छी तरह लगती है। पाचन शक्ति बढाता है। पेट के रोगों में बहुत गुणकारी है। मूल्य २ रुपये ७५ नये पैसे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

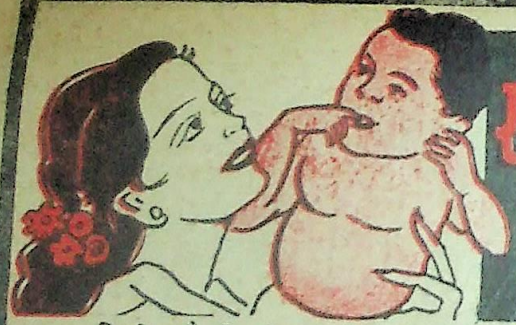

सन्तान दाता

किसी औषधि के बारे में यह कहना कि इस के सेवन से अवश्य सन्तान पैदा होगी, एक व्यर्थ सी बात है। सन्तान उत्पति या तो भाग्य की बात है और या पति, पत्नि की स्वास्थ्य दशा पर निर्भर है। परन्तु यदि पति व पत्नि स्वस्थ हैं उन्हें कोई रोग नहीं तो फिर आयुर्वैदिक ग्रन्थों के अनुसार कुछ ऐसे नुस्खे हैं जो सन्तान उत्पत्ति में सहायक हो सकते हैं। हमारी 'सन्तान दाता, भी ऐसे ही अनुपम नुस्खे से निर्मित एक गुणकारी दवा है जिसके सेवन से कई स्त्रियों के सन्तान पैदा हुई है और उन के पत्र कार्यालय में मौजूद हैं। यदि आप को भी सन्तान की इच्छा है तो स्त्री को इस दवा का सेवन करा दें। सम्भव है कि आप की निराशा भी आशा में बदल जाये! मूल्य एक शीशी ७ रुपये ७५ नये पैसे।

गर्भ रक्षक

यह दवा ऐसी स्त्रियों के लिये है जिनका गर्भ स्थिर नहीं रहता उन्हें गर्भ तो ठहरता है परन्तु कमजोरी, निर्बलता के कारण नौ मास पूरे होने से पहिले ही खन्डित हो जाता है और यदि बच्चा भी उत्पन्न होता है तो वह बहुत कमजोर जोकि प्राय जीवित नहीं रहता यह दवा गर्भ के दिनों में गर्भ को पुष्ट करती है और स्त्री का स्वास्थ्य बनाये रखती है। गर्भ के दिनों में जिन स्त्रियों का जी मचलाता रहता है और अनेक प्रकार की शिकायतें पैदा हो जाती हैं उन के लिये भी यह दवा गुणकारी है। मूल्य ५ रुपये ७५ नये पैसे।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, ६५, बुढलाडा (पंजाब)

◎ मोटापा कम करने के लिये

-: काया कल्प :-

बेफिकरी, हर समय बैठने से, अधिक आराम या काम काज न करने के कारण बहुत से स्त्री पुरुषों में मोटापा आ जाता है शरीर में चरबी बढ़ जाती है और जिस्म भद्दा प्रतीत होता है थोड़ी ही दूर चलने से सांस फूल जाती है और उस व्यक्ति को अपने शरीर से घृणा सी होने लगती है। कई वर्ष की मेहनत और अनेक जड़ी बूटियों के मिश्रण से हमने मोटापन के लिये एक औषधि 'काया कल्प' तैयार की है। यह औषधि मोटापन कम करने में बहुत सहायक है। इस के सेवन से वज़न कम होने लगेगा और स्वास्थ्य में आकर्षण पैदा होकर शरीर सुन्दर दिखाई देता है। मूल्य ४ रुपये ७५ नये पैसे।

नज़ला जुकाम पर दवा

नज़लीनाः- नजला जुकाम भी एक रोग है जो कई व्यक्तियों को सदा ही सताये रखता है इस के कारण सिर भारी २ रहता है, दिमाग कमजोर होता है, छींकें आती हैं, सिर दर्द रहता है। ठीक इलाज न होने पर बलगम, खाँसी, दमा की शिकायत भी हो सकती है। 'नजलीना' नये व पुराने तथा बिगड़े हुये नजला, जुकाम की शिकायत को फायदा करके मानसिक शक्ति को बढ़ाता है और ऐसे रोगियों को स्वस्थ बनाता है। मूल्य एक शीशी ५ रुपये।

दर्द, वात रोग नाशक

विष्णु तैलः-दर्दों और वात रोगों के लिये यह अति उत्तम तैल है इस के मलने से वातज दर्द कमर का दर्द, पेट का दर्द, छाती और पसली का दर्द, हाथ पैरों का दर्द, घुटनों का दर्द सूजन और सन्निपात आदि रोग दूर हो जाते हैं। अनेक औषधियों से निर्मित वात रोगियों के लिये यह उत्तम दवा है। मूल्य एक शीशी ५ रुपये।

चर्म रोगों की दवा

खारशोः- त्वचा में अनेक प्रकार के कीटाणु होने के कारण जिस्म पर कुष्ट, एक्जिमा खारिश, खुजली, दाद और फोड़े-फुन्सियाँ हो सकते हैं। हमारा यह तेल त्वचा के उन रोगों के लिये बहुत ही उत्तम है। इसके लगाने से एक्जिमा, कुष्ट, दाद, खारिश और फोड़े फुन्सियाँ भयानक चर्म रोग दूर हो जाते हैं। बहुत बार की परीक्षित अनुपम औषधि है। मूल्य एक शीशी ४ रुपये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्यारी बहिनों

अपना बच्चा ! प्यारा बच्चा ! एक विवाहित स्त्री के लिये सन्तान कितनी प्रिय वस्तु है ! परन्तु आज कितनी ही स्त्रियां ऐसी हैं जो कि सन्तान उत्पत्ति के योग्य हैं किन्तु उनके यहां सन्तान नहीं । विवाह को कई साल बीत चुके हैं, परन्तु इस प्रिय वस्तु को तरसती हैं या एक दो बच्चे पैदा होने के बाद फिर बच्चा पैदा नहीं हुआ । निम्नलिखित नुस्खा ऐसी ही बेऔलाद बहिनों के लिये है । यह गर्भ धारण कराने में अत्यन्त सहायक है । इस के सेवन से न जाने कितनी स्त्रियों के सन्तान पैदा हुई है जो कि अज्ञानता से अपने आप को बांझ समझे हुई थीं । शक्ति, यौवन तथा स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये भी यह दवा बहुत ही गुणकारी है । निरोग रहने के लिये इसे प्रत्येक स्त्री को सेवन करना चाहिये ।

नुस्खा यह है– कपूर, दुधिया, बच, नागरमोथा, मीठा चिरायता, गिलोय, देवदारू, हल्दी, अतीस, दारू-हल्दी, पीपरामूल, चीते की जड़ की छाल, धनिया, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपर, सोंठ, पीपर, गोलमिर्च, सोनामाखी की शुद्ध भस्म, जवाखार, सज्जी खार, सेंधा नोंन, काला नोंन और बिड़नोंन-हर एक ३-३ माशे । निसोथ, दन्ती, तेजपाल, दालचीनी, बीज इलायची, और बन्सलोचन १०-१० माशे । भस्म फौलाद (१०१ आँच की) २० माशे मिश्री २ तोले शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोले और शुद्ध गुगल ५ तोले । सब दवाओं को कूट पीस कर कपड़े से छान करके ३-३ माशे की गोलियां बना लें । एक गोली प्रति दिन दूध के साथ सेवन करें । याद रखिये कि सभी दवायें, विशेष शिलाजीत और भस्म फौलाद लिखे अनुसार होनी चाहियें । अशुद्ध अथवा बाजारू दवाओं से बजाये लाभ के हानि हो सकती है ।

प्रिय पाठको ! आप इसे साधारण दवा मत समझें । यह नुस्खा मेरा स्वयं परीक्षित है और इसे मैं ने हज़ारों बहिनों पर आजमाया है । विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मेरा स्वास्थ्य भी खराब हो गया था । मैं प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी । चेहरे का रंग पीला पड़ गया था । हर समय सिर चकराता, कमर दर्द करती और बदन टूटता रहता था । प्राय समय पेट और नलों में दर्द रहता । मैंने सुपारी पाक, कारडियल राउ कई औषधियां सेवन कीं किन्तु अन्त में इस नुस्खा के प्रयोग से न केवल मेरे निर्बलता सम्बन्धी उपरोक्त विकार ही दूर हो गये बल्कि मेरे हां एक बालक ने भी जन्म लिया । अब मैं इस नुस्खा को अपनी अन्य बहिनों की भलाई के लिये प्रकाशित कर रही हूं । यदि कोई बहिन अज्ञानता या समय के अभाव के कारण स्वयं तैयार न कर सके तो मुझे लिखे मैं उसे इस नुस्खा से निर्मित अपनी दवा 'स्त्री कल्याण' वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी । मूल्य एक शीशी १५ दिन की दवा २ रुपये ८८ नये पैसे ।

सूचना:– यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध कर देगा कि मेरी दवा 'स्त्री कल्याण' उपरोक्त नुस्खा द्वारा तैयार नहीं होती तो उसे एक हज़ार रुपया ईनाम ।

प्रेम प्यारी अग्रवाल, नं० ६५, बुढलाडा (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१०००) रुपये नकद इनाम

जो मागोगे वही मिलेगा

अब आप किसी ओर से निराश न हों इस तांत्रिक अंगूठी को पहनने से दिल में आप जिस पुरुष या स्त्री का नाम लोगे वह देखते हीदेखते फौरन बस में हो जायगा। चाहे वह कितना ही पत्थर दिल क्यों न हो। सात समुद फांदकर सात ताले तोड़कर आपके कदमों में हाजिर होगा। कठोरता तथा शत्रुता को छोड़कर आपकी आज्ञा मानने लगेगा। दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, मृतात्माओं से बातचीत होगी, जमीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत होगी, परीक्षा में पास होगे, व्योपार में लाभ होगा, दुष्ट ग्रह शांत होंगे। बदकिस्मती दूर होगी, खुश किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

तांत्रिक अंगूठी १-१५-० स्पेशल पावरफुल ३-१५-० तीन रुपये पन्द्रह आने जिसका २४ घंटा मे फौरन असर होता है। यह तांत्रिक अंगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय हो सकता है। परन्तु इस तांत्रिक अंगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत वापस की गारन्टी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००)नकद इनाम। एक बार अवश्य आजमायश करें।

प्रिंसिपल बंगाल मिस्मिरेजम हाउस [M. 62] जालन्धर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

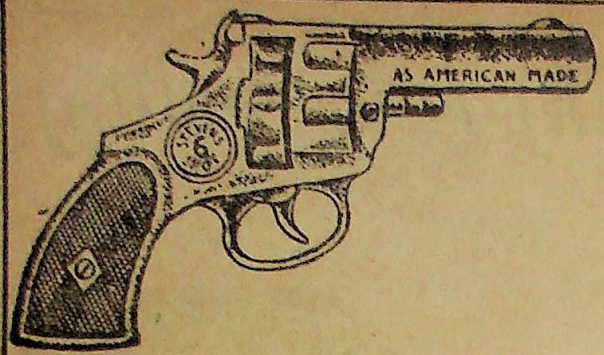

आत्मरक्षा के लिये

अमेरिकन माडल पिस्तौल (लायसैंस की जरूरत नहीं)

इस पिस्तौल के गुण वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है। असली के समान सबसे बढ़िया, असली मेकर, रौबदार गरजती आवाज-नई ईजाद जबर्दस्त ६ फायर वाला। इसको रखने के लिए लायसेंस की जरूरत नहीं! शीघ्र मंगाकर लाभ उठावें। ऐसा अच्छा पिस्तौल दूसरे किसी से नहीं मिल सकता। नापसन्द होने पर कीमत वापिस।

इसमें असली पिस्तौल की तरह कारतूस रखने की चरखी घूमती है जिसमें एक साथ छै शार्ट भरकर एक के बाद दूसरा, इस तरह लगातार ६ फायर बड़े जोर के साथ होते हैं। यह चोरों जंगली जानवरों से जान व माल की रक्षा के लिये भारी सहायक सिद्ध होगा। इसमें आधा इन्च गोलाई के कारतूस चलते हैं। वजन लगभग १५ औंस लम्बाई ७ इन्च। नं० १०५० पिस्तौल मय ७५ कारतूस शार्ट केवल ६॥) नं० १५३२ बढ़िया क्वालिटी असली बढ़िया बना हुआ मय ७५ कारतूस शार्ट कीमत ७॥) महसूल डाक व पैकिंग २) अलग। तीन पिस्तौल एक साथ मंगाने से डाक खर्च माफ। तीन पिस्तौल मंगाने वाले ३) मनिआर्डर से भेजें।

अमेरिकन ट्रेडिंग कम्पनी (M. 62) जालन्धर शहर

१००० नकद इनाम

प्रत्येक कार्य में अवश्य सफलता मिलेगी

सूर्य पूर्व की अपेक्षा पश्चिम से निकल सकता है परन्तु इस यन्त्र का प्रभाव नहीं जा सकता। इस महाकाली जन्त्र सभी मनोकामनायें अवश्य पूर्ण होती है। केवल जेब में रखने से ही जिस स्त्री या पुरुष को चाहें वश में रख सकते हैं। जिस समय इच्छा करे अपने पास उपस्थित करा सकते हैं। भाग्य जाग उठेगा। मुकदमे में जीत होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, धन में वृद्धि होगी, नौकरी शीघ्र मिलेगी, कार्य में उन्नति होगी। काम काज, विगत आत्माओं से बातचीत होगी। संसार के बड़े कार्य जिन्हें आप करने की इच्छा रखते हों हमारे इस सन्यासी जंत्र से पूर्ण हो जायेंगे। विश्वास करें बड़े से बड़े काम भी देखते ही देखते पूर्ण हो जायेंगे। एक जन्त्र का रियायती मूल्य १।) तथा तीन जन्त्रों का स्पेशल मूल्य २ रु. ९४ न. पै. डाकखर्च अलग।

नोट—मिथ्या सिद्ध करने वाले को एक हजार रुपया नकद इनाम और मूल्य भी वापिस दे दिया जायेगा। केवल हमारा यह महाकाली जन्त्र असली है। असली जन्त्र इस पते से मंगवाइये—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिकालदर्शी करामाती दर्पण

किसी भी उमर का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है। चोरी गई वस्तु व गुम शुदा का पता बीमार के स्वस्थ होने या न होने का हाल, आने और गुजरे हुए हालात, भावी दुखों से बचने के उपाय, गड़े धन का पता, किसी मुश्किल काम का हल होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना, स्वर्गवासी माता पिता मित्रों शहीदों से मुलाकात, जिसे कभी न देखा हो या जिसकी स्वप्न में भी आशा न हो उसे आप इसमें आसानी से देख लेंगे। मूल्य मय परचा तरकीब दो रुपया आठ आना २॥) दो दर्पण चार रुपया आठ आना ४॥) रु० मसूल डाक १) अलग। स्पेशल ताकत वाला प्रभावशाली दर्पण तीन रुपया बारह आना यदि गलत साबित हो तो दाम वापिस भेजे जावेंगे। हमारे पास सिर्फ थोड़े दर्पण बाकी हैं। जल्दी मंगवा लें। क्योंकि खतम होने पर किसी कीमत पर नहीं मिलेगा।

प्रिंसिपल बंगाल मिस्मरेजम हाउस, (M. 62) जलन्धर शहर।

केवल ६) में घड़ी

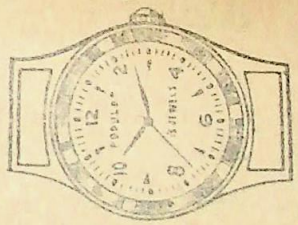

सुन्दर १५ ज्युल्ज रिष्ट वाच गारन्टी १५ साल (चेन सिस्टमस्कीम) आप ६) में हासिल कर सकते हैं। कोई नुक्स पड़ने पर मरम्मत डाकखर्च अलग।

जानसन वाच एण्ड इम्पोर्ट कं०

(M. 62) जालन्धर शहर।

१०,००० रुपये की घड़ियाँ मुफ्त इनाम

नं० ५५५

हमारे प्रसिद्ध अमेरिकन डी लक्स बाल काला तेल नं ५५५ के सेवन से बाल काले हो जाते हैं। वर्षों की मेहनत और तजुर्बा के बाद हम इस तेल को जारी करने वाले हैं। यह तेल बालों को काले करने के अलावा गिरते बालों को रोकता है और बाल घुंघराले तथा लम्बे हो जाते हैं। आंखों और दिमाग को ताकत देता है, अतीव सुगन्धित है, और इस को आजकल के ऐक्टर और ऐक्ट्रैसें प्रति दिन सेवन कर रही हैं मूल्य प्रति शीशी १॥। ≡) तीन शीशी ४॥। ≡) है।

हुस्न न० ६६६

हमारी दूसरी प्रसिद्ध दवाई अकसीर हुस्न नं० ६६६ के सेवन से हर जगह के बाल बिना किसी तकलीफ के दूर हो जाते हैं। वह जगह रेशम की भाँति मुलायम और खूबसूरत निकल आती है, मूल्य एक शीशी १॥। ≡) तीन शीशी ४॥। ≡) है। हमारी दोनों दवाइयों की हर शीशी के साथ ३ अमरीकन न्यू गोल्ड अंगूठियां और २ फैंसी म्यूट रिस्ट वाच जिनकी खूबसूरती और मजबूती की गारंटी ५ साल है और हर तीन शीशी के साथ ९ अमेरिकन न्यू गोल्ड अंगूठियाँ और ६ फैंसी म्यूट रिस्टवाच मुफ्त इनाम दी जावेगी। उसके इलावा हम नये वर्ष की खुशी में घोषित करते हैं कि पहले १००० खरीदारों को बिना मूल्य के केवल डाक खर्च पर ही वी० पी० भेजेंगे, देरी न करें अन्यथा मौका हाथ से निकल जावेगा।

अमृत फार्मेसी (M. 62) जालन्धर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बिल्कुल एकान्त में बैठकर
देखने के काबिल
खुफिया सचित्र

कोकशास्त्र

संसार के सब कोकशास्त्रों से अच्छा हर प्रकार से खरीदने योग्य, सर्वोत्तम दुर्लभ ३२५ रंगीन चित्रों और २२ रंगीन फोटो ब्लाकों वाला यह असली कोकशास्त्र हमसे मिलेगा। बड़े-बड़े कोकशास्त्रों के अनुवाद का पूर्ण निचोड़।

मान्यवर कोकाजी महाराज भूतपूर्व प्रधान मन्त्री काश्मीर रियासत के असली कोकशास्त्रों का पूर्ण अनुवाद। आपने अनेकों विज्ञापन इत्यादि पढ़कर बहुत से कोक मंगवाकर धन नष्ट किया तथा धोखा खाया होगा परन्तु असली चित्र किसी में ना मिले होगें। लेकिन यदि आप असली ९७ योग आसनों के चित्रों वाला मनमाना असली काश्मीरी कोकशास्त्र चाहते हैं तो यह केवल हमारे पास ही है आप शीघ्र वी० पी० द्वारा मंगालें। इसके १८४ योग आसनों की फोटो चित्र, योग आसन तथा १८४ योग आसनों की पूरी व्याख्या दी गई है। एकान्त में बैठकर देखने वाला असली कोकशास्त्र। इस पुस्तक की व्याख्या शिष्टाचार के विरुद्ध है। इसमें आपकों बहुत सी बातें मिलेंगी जो सैकड़ों रुपया व्यय करने पर भी नहीं मिल सकतीं स्मरण रखिये यहां वह असली कोकशास्त्र है जिसे आप चिरकाल से खोज रहे थे और प्राप्त न कर सके थे। यदि आपको वास्तव में असली कोकशास्त्र की आवश्यकता है तो नीचे लिखे पते से शीघ्र मंगवाइये। मूल्य २॥) डाकखर्च अलग।

मंगाने का पता :—फ्रेंच फोटो सप्लाई कम्पनी

जो पूछोगे जवाब मिलेगा

(८)

आपके भाग्य में क्या लिखा है

यदि आप एक साल के अन्दर पेश आने वाले नेक या बुरे हालात समय से पहले जानना चाहते हैं तो आज ही एक पोस्टकार्ड पर किसी दिल पसन्द फूलका नाम लिखकर भेज दें—फिर हम ज्योतिष के हिसाब से आपके आने वाले १२ मास के लाभ हानि, किस प्रकार से व्यापार में फायदा किस प्रकार रोजगार मिलेगा। नौकरी, उन्नति तबदीली, स्त्री व सन्तान का सुख, किसी से मेल मिलाप या किस प्रकार से धन का मिलना, यानी पोस्टकार्ड की तारीख से लेकर १ साल तक होने वाली कुल बातों के खुलासे का मासिक वर्षफल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाकखर्च अलग। साथ ही बुरे ग्रहों के शान्ति का उपाय भी लिखा जायेगा एक बार की परीक्षा से ही आपको पता लग जायेगा कि ज्योतिष विद्या से हमें कहां तक ज्ञान प्राप्त है।

पं० स्वामी सत्यनारायण राज ज्योतिषी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष कार्यालय के लिए

श्री मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाये जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, संतान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का दुःख-सुख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्मदिन, संवत् या उमर अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५) रु० से २५० रु० तक। वर्षफल २॥) रु० से २५) रु० तक। टेवा २॥) रु०। शुद्ध विवाह मुहूर्त प्रश्न और ग्रहमिलाप (कुण्डली मिलान) प्रत्येक की फीस २॥) रु०। भारत के बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, बर्मा, जापान, अमरीका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल टेवा बनाने की फीस ७) रु०। आयुर्निर्णय (अंशायुर्गणित, मारकेश, रोगविचारादि) २५) रु० से १०० रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजने के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस आये बिना कार्यारम्भ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहां तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में होना चाहिए। उर्दू में पत्र लिखने से उत्तर देर में मिलेगा। बेरङ्ग पत्र वापिस किये जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है। विवादास्पद विषय की शास्त्रीय व्यवस्था की फीस ५।) रु०।

मनीआर्डर करते समय कूपन पर अपना कार्य तथा पूरा पता अवश्य लिखना चाहिए।

व्यापार के चान्स—अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के चांस कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी-मन्दीपुरी नहीं मिलती। प्रत्येक वर्ष में आनेवाले सोना, चांदी, बाजरा, गेहूं, रूई २।४ चांस पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिये और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिए।

नोट—जो सज्जन हम से प्रत्यक्ष मिलना चाहें तो वह जवाबी कार्ड भेज कर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना अम्बाला के मध्य सरहिन्द जंकशन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय—ग्रीष्म में ८ से ११ तक, मध्याह्नोत्तर ३ से ६ तक। शीतकाल में १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर से अकेले आकर शांत चित्त में एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड भवन) रेलवे स्टेशन के पास है। निवेदक—मैनेजर पंडित श्रीकृष्ण शर्मा पांडेय शास्त्री।

पता—राजज्यौतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्यौतिषाचार्य

अध्यक्ष—श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, मु. पो. कुराली (जि० अम्बाला) पूर्वी पंजाब

मार्तण्ड अंजन

इस बड़े परिश्रम और बहुमूल्य औषधियों जड़ी बूटियों से निर्माण किये गये दिव्य अंजन के रोजाना सेवन से कोई मोतिया बिन्द आदि रोग नहीं हो सकता। यहां तक कि १०० वर्ष की वृद्धावस्था में भी नेत्रों की तेजस्विता युवावस्था की तरह स्थिर रहती है। पानी जाना, चकाचौंध, खारिश, धुन्ध, गुबार, कम दीखना तथा दूर की वस्तु न दीखना आदि सब नेत्र रोगों के लिए यह चमत्कारी दिव्यौषधि देवता के वरदानस्वरूप सिद्ध हो चुकी है। लिखने पढ़ने का विशेष रूप से काम करने वाले विद्यार्थी, क्लर्क, मुनीम, मोटरचालक, आदि के लिए और स्टुडियो व बिजली के अधिक प्रकाश तथा अधिक सिनेमा देखने से जिनकी आंखें कमजोर हो गई हों उनको तो विशेषरूप से इसका दैनिक सेवन करना चाहिए। याद रखो! दो दो आने की बाजारू सुर्मे की शीशियों से आपकी दृष्टि स्थिर नहीं रह सकती। ऐनकाभ्यासी सज्जन, जिनका नम्बर बढ़ता जाता हो, इस अंजन का सेवन कर अनुभव करें नम्बर नहीं बढ़ेगा। संसार में रहकर सुख से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो इस अंजन को अपना सदैव का साथी बना लीजिए। आंखों की ज्योति के साथ ही जीवन है। पैसे का लोभ छोड़ कर यह सुरमा सेवन करें।

एक तोला की शीशी का मूल्य ७), ६ माशा की शीशी का मूल्य ३॥), पैकिंग डाक खर्च, अलग लगेगा। पूर्ण सेवन विधि शीशी के साथ मिलेगी।

अठराहा मार्तण्ड—जिन स्त्रियों के प्यारे बच्चे होकर मर जाते हों उनको यह दिव्यौषधि गर्भ होने पर शीघ्र सेवन करने से बच्चे शर्तिया निरोग, स्वस्थ एवं दीर्घायु उत्पन्न होंगे। कीमत १०) इस औषधि के साथ अठारहे का सिद्ध यंत्र भी भेजा जाता है जो अपना अचूक प्रभाव रखता है।

पुंसवनी

इस ईश्वरप्रदत्त-प्रभाव-युक्त दिव्यौषधि को गर्भ के तीसरे मास के प्रारम्भ में सेवन करने से पुत्र ही उत्पन्न होता है। मूल्य ५) डाक व्यय पृथक।

निर्माता—एच० आर० वैद्य

मिलने का पता—मैनेजर श्री मार्तण्ड कार्यालय

मु० पो० कुराली (अम्बाला)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण पर विजया व्याख्या

मानस-राजहंस पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी की जीवन-व्यापी साधना का मधुर फल

कविकुल-कमल दिवाकर गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण इतनी सरल है कि साधारण मति का एक बालक भी उसे आनन्द के साथ पढ़ सकता है। परन्तु उनके मार्मिक रहस्य इतना गम्भीर है कि उनका सही अर्थ समझने में बड़ों-बड़ों की बुद्धि चकरा जाती है। प्राचीन एवं नवीन शास्त्री और विद्याओं के दिग्गज विद्वान्, काशीवासी मानसराजहंस पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी ने ५० वर्ष के गम्भीर मनन और अध्ययन के उपरान्त मानस के सब रहस्यों को अपनी टीका और विजया-व्याख्या में स्पष्ट कर दिया है। माने हुए संतों और पण्डितों ने 'मानस-राजहंस' जी की इस व्याख्या को देखकर कहा है कि रामायण की ऐसी मार्मिक गहरी और सही व्याख्या आज तक नहीं हुई—ऐसी व्याख्या मानस-राजहंस जैसा कोई अवतारी पुरुष ही कर सकता था।

ग्रन्थ में मानस-राजहंस जी ने प्रत्येक चौपाई और प्रत्येक दोहे का गद्य में अर्थ करने के उपरान्त अपनी मार्मिक व्याख्या दी है। व्याख्या की भाषा इतनी सरल और सुबोध है कि साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी उसे आसानी से समझ सकता है और भारतीय ज्ञान का ज्ञाता हो सकता है।

ग्रन्थ बड़े साइज के २००० पृष्ठों में सुन्दर अक्षरों में छपा है परन्तु सुविधा के लिए तीन खण्डों में बांटा गया है। ऊपर कपड़े की पक्की जिल्दें बँधाई गई है। सातों काण्डों पर सात मनोरम तिरंगे चित्र हैं। गोस्वामी जी का प्रामाणिक चित्र भी बड़ी खोज के साथ छापा गया है। ग्रन्थ इतना लोकप्रिय हुआ है कि कई उत्सुक सज्जन तो जिल्द बँधने की प्रतीक्षा भी नहीं कर सके, खुले फरमे ही उठा ले गये हैं।

रामचरितमानस के प्रेमी पाठक, प्रचारक और कथावाचक महानुभाव इस दुर्लभ ग्रन्थ को जितनी जल्दी हो सके प्राप्त कर लें। मूल्य प्रचार की दृष्टि से केवल ३०) है।

अर्घ-मार्तण्ड

(तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ)

नया संशोधित, परिवर्धित संस्करण

पञ्चाङ्गकर्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रूई, सूत, वस्त्र, शेयर, ऊन, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, आदि धातु तथा गुड़, खांड, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूंगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल, तेल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूं, चावल, खल्ली, बिनोला, लकड़ी, रंग, आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मंदी के उत्तम अचूक सुनहरे चार्सों के योग सरल हिन्दी भाषा में दिल खोल कर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वे सब तेजी मंदी के अनुभवसिद्ध गुप्तभेद ४० वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं। ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में नहीं मिलेगा। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मंगाकर देखने में देरी न करें। ग्रन्थ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मी प्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिए हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनी मानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य को जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन ही है। ऐसे अनुपम ग्रन्थ को अविश्वास करके न मंगाना दुर्भाग्य ही होता है। व्यापार में हानि उठाये हुए गरीब व्यापारी भी यदि इस ग्रन्थ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे—इसमें सन्देह नहीं। यह सदैव काम आनेवाली पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की जिल्द सहित तैयार हुई है। और हिन्दी तथा उर्दू में छपी है। मूल्य प्रत्येक का ११ रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं गुण की भेंट मात्र है। इस पुस्तक से अनेकों व्यापारियों ने लाभ उठाकर धन्यवाद भेजे हैं और बहुत सज्जनों ने इनाम देकर ग्रन्थ लेखक को सम्मानित भी किया है। ता० ८।६।५४ को श्रीकृष्णभारतीयगुप्त धमोरा से लिखते हैं, "आपके लिखे गये योग तेजी मंदा ९५ प्रतिशत सही हैं, 'अर्घ मार्तण्ड' वास्तव में अमूल्य निधि है।" इत्यादि अनेकों पत्र प्राप्त है। मंगाने की शीघ्रता करें। देर करने से सम्भव है आगामी संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़े।

मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर, पो० बा० १५८६, दिल्ली (फोन नं० २२७६५५)

शाखायें—(१) नेपाली खपड़ा, [illegible] (२) बांकीपुर—पटना

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

File No.

Volume

GOVERNMENT OF INDIA

Ministry of .....

Department of .....
Office

.....SECTION

NOTES/CORRES

Subject

Indexed on .....

Initials .....

Record A/B
Record C. Destroy in .....

To be noted
Not to be noted In Sectional Note Book

Initials of S. O./Supdt. .....

Initials of Clerk .....

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ता २७ | ५ | ८ ३ कन्या दान का समय

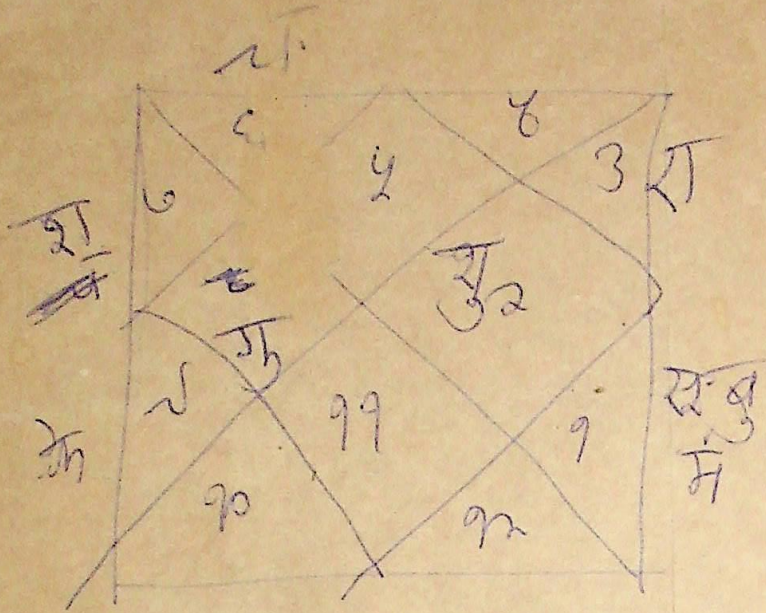

९ | ३६ से २ | १७ बजे दिन में

लग्न १ | १५ से ३ | ३२ तक रहेगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१८ अब्दुलरहमान

१८ =

१८१०१९१९ =

सुब्रह्मण्य

SUBRAHMANYA

SUWDARESAN

SUBRAMANYA

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

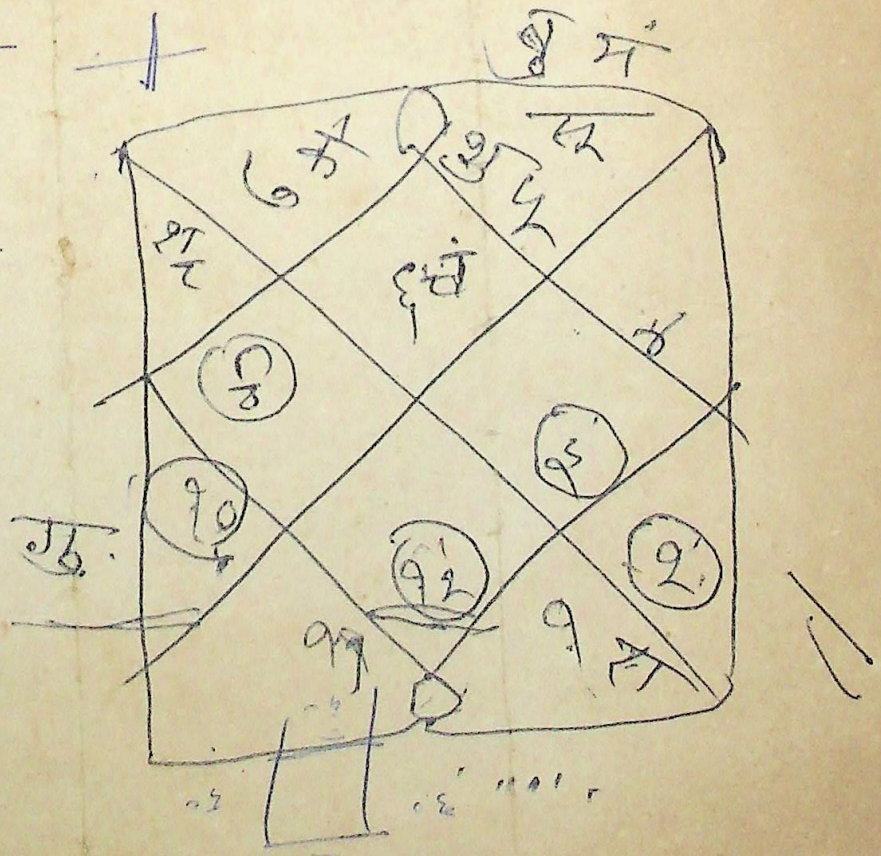

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्र.

सं.या. 6-2/83 SIC 2

सेवायाम्

विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान, भारत सरकार
नई दिल्ली, दि.

विषय:- फरवरी 1983 मासस्य 8, 9 दिनाङ्कयोः सभायोजयिष्यमाणे वैदिक सम्मेलनार्थं निमन्त्रणम्।

सम्मान्याः वेदविद्वांसः

प्रतिवर्षमिव वर्षेऽस्मिन्नपि भारत सर्वकारः "अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलनम्" सभायोजयते।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीरत्न [illegible] "रामायाङ्कयत्"
स्वमस्तद फरवरी मासस्य 8, 9 तारिकायां मद्रासनगरे
(तामिलनाडु) भविष्यति। तत्र भवतां सान्निध्यं प्रार्थ्यते।

एतदर्थं सर्वकारपक्ष द्वारा रेलयानस्य द्वितीयश्रेण्याः
नवुतम मार्गस्य गमनागमनव्ययो, दैनिकयात्राव्ययः,
अनुमानः सप्तमेऽन्न दिवसव्ययश्च तदुपरि च रूप्यकाणां
शतद्वयं दक्षिणा कृत्य संप्रेष्य दास्यते। श्रीमद्भिः निमन्त्रण
स्यास्य स्वीकृतिसूचना स्वयानसमयसूचना च नि-
म्नलिखित संकेतेनावश्यमेव दातव्या :-

1. श्री शिवराम दीक्षितः, प्राचार्यः मद्रास संस्कृत कॉ-
लेज, मैलापुर, मद्रास (600004)
2 श्री रामकृष्णा शर्मा, शिक्षाधिकारी (संस्कृत)
शिक्षा संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, शास्त्रीभवन
नई दिल्ली 110001

भवदीय -
डा. सी. आर. स्वामिनाथन्
शिक्षा उपसलाहकार (संस्कृत)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ॐ भूर्भुवः स्वः गुरुभ्यो नमः

" " कुल देवतायै नमः

" " षष्ठीदेव्यै नमः

" " (१) अश्वत्थाम्ने नमः
अश्वत्थामा नमः

" " (२) बलये नमः

" " (३) व्यासाय नमः

" " (४) हनुमते नमः हनुमन्नमः

" " (५) विभीषणाय नमः

" " (६) कृपाय नमः

" " (७) परशु रामाय नमः

(८) मार्कण्डेयाय नमः

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

10-7-2005 रवि - 15.10 मथुरा

सुत्री / उन्नु

मघा तृतीय चरण

5) 27.00 (6.45
24
3×180

15.10
6.45
7.55
6.45
14.40

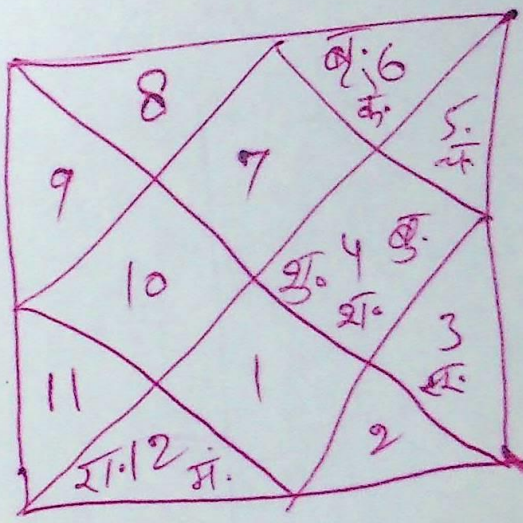

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection